CUET
(PG-Entrance)
प्रश्न पत्र-2024 (हल सहित)

2nd EDITION

चौखम्बा

संस्कृत
परास्नातक–प्रवेशिका

केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एम.ए.-संस्कृत) प्रवेश परीक्षा हेतु
एकमात्र विश्वसनीय पुस्तक



- CUET (PG-Entrance) के नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित प्रत्येक बिन्दु का विश्लेषण
- उदाहरण, आरेख, टेबल आदि माध्यमों से विषयों का सरल प्रस्तुतिकरण
- विषयानुसार प्रश्नों का अभ्यास
- राष्ट्रीय व
एवं संस्कृत
हेतु भी उप

BHU, DU, JNU, AU, JMI & OTHER CENTRAL UNIVERSITIES

आलोक कुमार झा एवं महेश गुरुदत्त

NTA द्वारा निर्धारित संस्कृत (PG-Entrance) के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

विषयानुक्रमणिका

• • •

घटक-1

1 वेद

- वेद शब्द विद् धातु, घञ् प्रत्यय
- वेद का अर्थ-ज्ञान
- वेद को **श्रुति** भी कहा जाता है।
- वेद **आगम** प्रमाण है।
- वेद है-अपौरुषेय
- वेदों को **महर्षि व्यास** ने संकलित किया।
- वैदिक साहित्य को सुविधानुसार चार भागों में विभाजित किया है—
  1. संहिताएँ 2. ब्राह्मण 3. आरण्यक ग्रन्थ 4. उपनिषद्
- महर्षि वेदव्यास ने वेद को चार भागों में विभाजित किया।
- व्यास जी ने अपने शिष्य **पैल** को ऋग्वेद, **वैशम्पायन** को यजुर्वेद, **जैमिनि** को सामवेद और **सुमन्तु** को अथर्ववेद की शिक्षा प्रदान की।
- वेदत्रयी-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद।

वेद	वेद ज्ञाता/ऋत्विक	उपवेद	देवता	मंत्र	प्रतीक
ऋग्वेद	होता	आयुर्वेद	अग्नि	10580	शरीर
यजुर्वेद	अध्वर्यु	धनुर्वेद	वायु	1975	मन
सामवेद	उद्गाता	गान्धर्ववेद	आदित्य	1875	बुद्धि
अथर्ववेद	ब्रह्मा	इतिहासवेद	सोम	5987	आत्मा

- वेद का प्रमुख छन्द-गायत्री

ऋग्वेद

- सबसे प्राचीन

विभाजन	दो क्रम 1. मंडल (10) 2. अष्टक क्रम (8)
विषय	स्तुति
सूक्त	1028
उपनिषद्	ऐतरेय उपनिषद्

विभाजन	दो क्रम 1. मंडल (10) 2. अष्टक क्रम (8)
शाखाएँ	पाँच (शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन) केवल शाकल उपलब्ध
ब्राह्मण	ऐतरेय, शांखायन/कौषीतकि
आरण्यक	ऐतरेय, शांखायन
शिक्षा	पाणिनीय
प्रातिशाख्य	ऋक्प्रातिशाख्य
धर्मसूत्र	वशिष्ठ

❖ वेद के द्रष्टा-ऋषि

यजुर्वेद

विषय	कर्मकाण्ड	
विभाजन	कृष्ण यजुर्वेद (ब्रह्म सम्प्रदाय)	शुक्ल यजुर्वेद (आदित्य सम्प्रदाय)
	विनियोग रहित शुद्ध मंत्र है	व्याख्या, विवरण और विनियोग के साथ मंत्र
शाखाएँ	तैत्तिरीय, मैत्रायणीय, कठ कपिष्ठल	(1) माध्यन्दिन या वाजसनेयि (2) काण्व संहिता
उपनिषद्	तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर महानारायण	**ईशावास्य, बृहदारण्यक**
ब्राह्मण	चार (तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल)	शतपथ ब्राह्मण
आरण्यक	तैत्तिरीय, मैत्रायणी	बृहदारण्यक
शिक्षा	वाशिष्ठी, माण्डव्य, भारद्वाज	याज्ञवल्क्य, माध्यन्दिन
प्रातिशाख्य	तैत्तिरीय	वाजसनेयी
धर्मसूत्र	विष्णु, वशिष्ठ, आपस्तम्ब, बौधायन, वैखानस, हिरण्यकेशी	हारीत, शंख
शुल्बसूत्र	मानव, वाराह, वाधूल, बौधायन, आपस्तम्ब, मैत्रायणी	कात्यायन
श्रौतसूत्र	बौधायन, वाधूल, वाराह, मानव, मैत्री, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, वैखानस, भारद्वाज	

सामवेद

विषय	स्तुतिस्तोम
उपनाम	औद्गात्र वेद
शाखाएँ	1000 (3 उपलब्ध) कौथुमीय, राणायनीय, जैमिनीय या तलवकार
विभाजन	पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक

विषय	स्तुतिस्तोम
उपनिषद्	छान्दोग्योपनिषद्, केनोपनिषद्
ब्राह्मण	पंचविंश, षडविंश, दैवत, वंश, उपनिषद्, जैमिनीय (आर्षेय) या तलवकार
आरण्यक	तलवकार (जैमिनीय शाखा)
शिक्षा	नारदीय
प्रातिशाख्य	पुष्पसूत्र
धर्मसूत्र	गौतम
शुल्बसूत्र	
श्रौतसूत्र	लाट्यायन, द्राह्यायण, जैमिनीय, खादिर, आर्षेय/मशकसूत्र

अथर्ववेद

विषय	रोग निदान, शान्ति
उपनाम	अंगिरस वेद, ब्रह्मवेद, क्षत्रवेद, अथर्वाङ्गिरस वेद, छन्दोवेद, महीवेद, भैषज्यवेद
सूक्त	731 सूक्त, 20 कांड
शाखाएँ	9 शाखाएँ 2 उपलब्ध (पिप्लाद, शौनक)
उपनिषद्	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य
ब्राह्मण	गोपथ
आरण्यक	अनुपलब्ध
शिक्षा	माण्डुकी
प्रातिशाख्य	शौनकीय
धर्मसूत्र	अनुपलब्ध
शुल्बसूत्र	अनुपलब्ध
श्रौतसूत्र	वैतान
गृह्यसूत्र	कौशिक

भारतीय दर्शन

चार्वाक दर्शन

❖ आचार्य-बृहस्पति

❖ लोकायत दर्शन, भौतिकवादी दर्शन, जड़वादी दर्शन

❖ केवल एक प्रमाण-प्रत्यक्ष को मानता है।

❖ नास्तिक दर्शन (वेद को ना मानने के कारण)

❖ **चार पदार्थ**-पृथ्वी, जल, तेज, वायु

❖ **आकाश** को नहीं मानता

- ❖ यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य जीवस्य पुनरागमनं कुतः।
- ❖ **देहात्मवाद**, इन्द्रियात्मवाद, मनसात्मवाद सिद्धान्त चार्वाक के सिद्धान्त है।
- ❖ ईश्वर, आत्मा, परमात्मा और परलोक में विश्वास नहीं करता है।

जैन दर्शन

- ❖ आदि तीर्थंकर-ऋषभदेव
- ❖ अन्तिम-महावीर
- ❖ पार्श्वनाथ जी-23वें तीर्थंकर
- ❖ पदार्थ-7
- ❖ सात पदार्थ-जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष
- ❖ प्रमाण -2 **प्रत्यक्ष, अनुमान**
- ❖ मोक्ष के साधन-3 **सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक चरित्र** (इन्हें **रत्नत्रय** भी कहा जाता है।)
- ❖ जैन साहित्य-प्राकृत भाषा, संस्कृत
- ❖ ग्रन्थ-तत्त्वार्थाधिगम-आचार्य उमास्वामी
- ❖ जैन मूर्तियाँ-पद्मासन, खड्गासन
- ❖ योग की प्रमुख विद्या-**कायोत्सर्ग**
- ❖ **आचार्य कुंदकुंद ने आत्मा को योग कहा है। (निगमसार ग्रन्थ)**
- ❖ आचार्य महाप्रज्ञ के सिद्धान्त-**प्रेक्षाध्यान** एवं **जीवन विज्ञान**
- ❖ प्रमुख सिद्धान्त-**अनेकान्तवाद**, स्याद्वाद और सप्तभङ्गीनयवाद

अनेकान्तवाद :- **अनन्त धर्मकं वस्तु, अनन्त धर्मात्मकमेव तत्वम्**

जड़ पदार्थों में भी जीवन होता है।

- ❖ **स्याद्वाद (सप्तभङ्गीनय):-**

1. स्यात् अस्ति	2. स्यात् नास्ति
3. स्यात् अस्ति नास्ति च	4. स्यात् अव्यक्तव्यम्
5. स्यात् अस्ति अव्यक्तव्यं च	6. स्यात् नास्ति अवयक्तव्यं च
7. स्यात् अस्ति नास्ति अव्यक्तव्यं च	

- ❖ अनेकान्तवाद को ज्ञान की दृष्टि से स्याद्वाद कहा जाता है।
- ❖ भौतिक जड़ पदार्थ को पुद्गल कहा जाता है।
- ❖ अनीश्वरवादी दर्शन
- ❖ सम्प्रदाय-2 श्वेताम्बर, दिगम्बर
- ❖ सम्यक् ज्ञान के भेद-5 मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय, केवल
- ❖ ज्ञान के साधन-2 अपरोक्ष, परोक्ष

- ❖ **परोक्ष ज्ञान-अवधि, मनःपर्याय, केवल**
- ❖ अपरोक्ष ज्ञान-मति, श्रुति
- ❖ सम्यक् चरित्र के भेद-5 अहिंसा, सूनृत (सत्य), अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह

बौद्ध दर्शन

- ❖ संस्थापक-गौतम बुद्ध
- ❖ तीन पिटक-**सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक**
- ❖ सुत्तपिटक-बुद्ध के उपदेश
- ❖ विनयपिटक-आचार-विचार सम्बन्धित ग्रन्थ
- ❖ अभिधम्मपिटक-दार्शनिक विषयों का विवेचन
- ❖ मूल सिद्धान्त-प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकवाद
- ❖ साधन-3 **शील, समाधि, प्रज्ञा**
- ❖ **चार** आर्य सत्य-1 **दुःख** 2 **दुःख समुदय** 3 **दुःख निरोध** 4 **दुःख निरोधगामिनी**
- ❖ दुःख-निवारण के लिए अष्टांगिक मार्ग (अट्ठांगिक मग्गा) हैं।

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
   → प्रज्ञा
3. सम्यक् वाक्
4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव
   → शील
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि
   → समाधि

- ❖ सम्प्रदाय-4
  - ♦ वैभाषिक (बाह्यार्थवाद)
  - ♦ सौत्रान्तिक (बाह्यार्थनुमेयवाद)
  - ♦ योगाचार (**विज्ञानवाद**)
  - ♦ माध्यमिक(**शून्यवाद**)
  - ♦ यह चारों सम्प्रदाय **महायान** और **हीनयान** के अन्तर्गत आते हैं। योगाचार और माध्यमिक दोनों महायान के अन्तर्गत आते हैं।
- ❖ वैभाषिक और सौत्रान्तिक दोनों हीनयान के अन्तर्गत आते हैं।

हीनयान	महायान
व्यक्तिगत मुक्ति के अनुसार कार्य	सर्वमुक्ति हेतु प्रतिबद्ध
बुद्ध को मान्यता महापुरुष रूप में	बुद्ध की मान्यता भगवान रूप में
मूर्तिपूजा का विरोध (पारम्परिक पुरातन रूप से बुद्ध का ध्यान)	मूर्तिपूजा का मार्ग भी अपनाया
ध्यान प्रधान	ध्यान, भक्ति और भाव का मिश्रित रूप

सांख्य दर्शन

- **प्रवर्तक**-कपिल मुनि
- सिद्धान्त-**सत्कार्यवाद** और **परिणामवाद**
- **सांख्य दर्शन के 25 तत्व**
  - **आत्मा** (पुरुष)
  - **अंत:करण** (3) : मन, बुद्धि, अहंकार
  - **ज्ञानेन्द्रियाँ** (5) : नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा, कर्ण
  - **कर्मेन्द्रियाँ** (5) : पाद, हस्त, उपस्थ, पायु, वाक्
  - **तन्मात्रायें** (5) : गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द
  - **महाभूत** (5) : पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश
- ईश्वरकृष्णकृत 'सांख्यकारिका' सांख्यदर्शन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- सांख्यकारिका में कुल 70 कारिका है। इसे हिरण्य सप्तति या सुवर्ण सप्तति के नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य में तीन दु:खों का उल्लेख हुआ है—

1. आध्यात्मिक
2. आधिभौतिक
3. आधिदैविक

- **सत्कार्यवाद**

भारतीयदर्शन में सांख्य के कार्य-कारणवाद को सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है। सत्कार्यवाद के अनुसार प्रत्येक कार्य उत्पत्ति के पूर्व अपने उपादान कारण में अव्यक्त रूप से उपस्थित रहता है।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्।।

1. **असदकरणात्**-असत् कारण से सत् उत्पन्न नहीं होता जैसे-बालू से तेल नहीं निकलेगा।

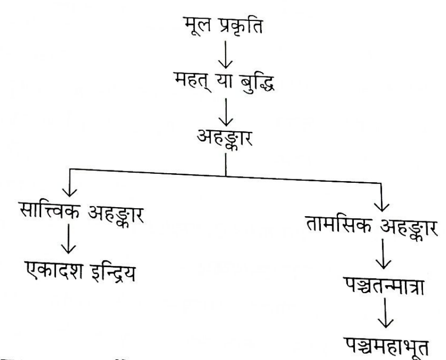
2. **उपादानग्रहणात्**-कार्यविशेष के लिए कारणविशेष को ही ग्रहण करना पड़ता है। जैसे-पट के लिए तन्तु का ही ग्रहण होता है, मिट्टी का नहीं।
3. **सर्वसंभवाभावात्**-सभी कारणों से सब कार्य की सिद्धि नहीं होती है। जैसे चाँदी से सोने के आभूषण सम्भव नहीं है।
4. **शक्तस्य शक्यकरणात्**-जो जिस कार्य के लिए समर्थ है, उससे वही कार्य सम्पन्न होता है। जैसे दूध में बनाने का सामर्थ्य है।
5. **कारणभावात्**-कारण जैसा होने से अर्थात् कारण के सदृश ही कार्य की उत्पत्ति होती है। जैसे -गेहूँ बोने से गेहूँ ही उत्पन्न होता है।

- सांख्यदर्शन 3 प्रमाण स्वीकार किया है- (i) दृष्ट (प्रत्यक्ष) (ii) अनुमान (iii) आप्तवचन (शब्द)
- पूर्ववत, शेषवत, सामान्यतोदृष्ट के भेद से अनुमान प्रमाण के 3 भेद हैं।
- सांख्य के अनुसार वस्तुओं का 8 प्रकार से प्रत्यक्ष नहीं होता है।

अतिदूरात् सामीप्यात् इन्द्रियघातान्मनोऽनवस्थानात्।
सौक्ष्म्याद्व्यवधानात् अभिभवात्, समानाभिहाराच्च।।

1. अत्यधिक दूर होने से	5. सूक्ष्म होने से
2. अत्यधिक समीप होने से	6. बीच में किसी रुकावट के आ जाने से
3. इन्द्रियों के नाश होने से	7. सामान्य वस्तु में मिल जाने से
4. मन की अस्थिरता से	8. अपने कारण से उत्पन्न होने से

- **सांख्य की सृष्टि प्रक्रिया**



- **अव्यक्त तथा व्यक्त पदार्थों का साम्य एवं वैषम्य का निरूपण-**

हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्।
सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं, विपरीतमव्यक्तम्।।

व्यक्त (महत् आदि)	अव्यक्त (प्रकृति)
हेतुमान्	अहेतुमान्
अनित्य	नित्य
अव्यापी	व्यापी
सक्रिय	निष्क्रिय
अनेक	एक
मूलकारण पर आश्रित	अनाश्रित
लिङ्गसहित	लिङ्गरहित
अवयवयुक्त	निरवयव
परतन्त्र	स्वतन्त्र

❖ व्यक्त तथा अव्यक्त का साम्य एवं पुरुष से उसके वैषम्य—

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनम्प्रसवधर्मि।

व्यक्तं, तथा, प्रधानम्, तद्विपरीतस्तथा च पुमान्।।

व्यक्त तथा अव्यक्त	पुरुष
त्रिगुणात्मक	गुण से रहित
अविवेकी	विवेकी
विषयी	अविषयी
सामान्य	असामान्य
अचेतन	चेतन
प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी

❖ सांख्यदर्शन के अनुसार 3 गुण हैं—

1. सत्त्व–प्रीति, हल्का, प्रकाशक
2. रजो–अप्रीति, चञ्चल, उत्तेजक
3. तमो–विषाद, भारी, अवरोधक

❖ **प्रकृति के सत्ता की सिद्धि—**

भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।

कारणकार्यविभागादविभागाद्वैश्वरूपस्य।।

1. भेदानां परिमाणात्–कार्यों के सीमित परिमाण से
2. समन्वयात्–भिन्नपदार्थों में स्थित अनुरूपता
3. शक्तितः प्रवृत्तेः–शक्ति के अनुसार प्रवृत्ति
4. कारणकार्यविभागात्–कारण और कार्य का विभाग प्राप्त होने से
5. अविभागात्–सभी रूपों के एक रूप हो जाने से

❖ **पुरुष के सत्ता की सिद्धि—**

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्यायादधिष्ठानात्।

पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात्कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च।।

1. संघातपरार्थत्वात्–संघातों का दूसरों के लिए होना
2. त्रिगुणादिविपर्यात्–त्रिगुणादि से विपरीत स्वभाव वाला
3. अधिष्ठानात्–त्रिगुण समूह का अधिष्ठाता होने से
4. भोक्तृभावात्–भोग्य एवं भोक्ताभाव से
5. कैवल्यार्थं प्रवृत्तेः–मोक्ष के लिए प्रवृत्ति देखे जाने से

❖ सांख्य का पुरुष अनेक है इसकी सत्ता सिद्ध करने के तीन हेतु है–

जननमरणकरणानां प्रतिनियमाद्युगपत्प्रवृत्तेश्च। पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्याच्चैव।।

1. जन्म, मरण तथा इन्द्रियों की व्यवस्था होने से
2. एक साथ प्रवृत्ति का अभाव होने से
3. तीनों गुणों के भेद के कारण

❖ **पुरुष के धर्म—**

- साक्षित्व
- कैवल्य प्रवृत्ति
- माध्यस्थ्य
- द्रष्टव्य
- अकर्तृत्व

❖ पुरुष–जड़, लंगड़ा

❖ प्रकृति–चेतन, अन्धा

❖ बुद्धि के 8 गुण हैं। (4 सात्विक+ 4 तामसिक)

❖ करण 13 प्रकार के हैं। (11 इन्द्रिय+बुद्धि+अहंकार)

❖ करण के 2 भेद

1. आभ्यन्तरकरण–मन, बुद्धि, अहंकार
2. बाह्यकरण–पञ्च ज्ञानेन्द्रिय + पञ्च कर्मेन्द्रिय

❖ सांख्य का सूक्षशरीर 18 तत्त्वों से निर्मित होता है।

❖ सूक्ष्मशरीर को लिङ्गशरीर भी कहते हैं।

❖ प्रत्यय सर्ग (बुद्धिसर्ग)के कुल 50 भेद हैं।

❖ भौतिक सृष्टि के 14 भेद।

❖ पुरुष को विवेकज्ञान होना ही अपवर्ग है।

❖ ऐकान्तिक और आत्यान्तिक दुःख की निवृत्ति ही कैवल्य है।

- मोक्ष प्रकार -2 जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति
- सांख्यदर्शन ईश्वर की सत्ता स्वीकार **नहीं** करता है।

योगदर्शन

- प्रणेता-महर्षि पतञ्जलि
- आधार ग्रन्थ-योगसूत्र
- योग दर्शन में पाद-4 समाधि पाद, साधन पाद, विभूति पाद, कैवल्य पाद
- तत्त्व स्वीकार्य- 26 (25 तत्त्व सांख्य + 1 ईश्वर)
- प्रमाण-3 **प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द**

पातञ्जल योगसूत्र

यह चार पादों या भागों में विभक्त है—

- समाधि पाद (51 सूत्र)
- साधन पाद (55 सूत्र)
- विभूति पाद (55 सूत्र)
- कैवल्य पाद (34 सूत्र)

कुल सूत्र = 195

चित्त की भूमियाँ:

मूढ़	तमोगुणप्रधान	सामान्य भूमियाँ
क्षिप्त	रजोगुणप्रधान	
विक्षिप्त	सत्त्वगुणप्रधान	
एकाग्र	विशुद्ध सत्त्वगुणचित्त	योगभूमियाँ
निरुद्ध	सम्पूर्ण वृत्तियों का निरोध	

अष्टाङ्गयोग:

बहिरङ्ग:-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार

अन्तरङ्ग:-धारणा, ध्यान और समाधि

तप:स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोग:

तप+स्वाध्याय+ईश्वरप्रणिधान= क्रियायोग

शौच +सन्तोष+क्रियायोग=नियम

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि

1. **यम**- तत्राहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमा:

जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना: सार्वभौमा महाव्रतम्

2. **नियम**- शौचसंतोषतप:स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:

यम	लाभ
अहिंसा	सभी प्राणियों के प्रति वैर का त्याग।
सत्य	योगी को अपनी क्रिया में सफलता प्राप्त होती है।
अस्तेय	सभी रत्न प्राप्त होते हैं।
ब्रह्मचर्य	वीर्य लाभ होता है।
अपरिग्रह	जन्म एवं उसके कारणों का ज्ञान हो जाता है।

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्याग: सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्

अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभ:

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथंता सम्बोध:

नियम	फल
शौच	अन्त:करण शुद्धि जिससे इन्द्रियों पर विजय प्राप्त और आत्म तत्त्व के साक्षात्कार की योग्यता
सन्तोष	सर्वोत्तम सुख की प्राप्ति
तप	चित्त की अशुद्धि नष्ट हो जाती है।
स्वाध्याय	विद्वान, योगी एवं सिद्ध दर्शन
ईश्वर प्रणिधान	समाधि सिद्धि

शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्ग:

संतोषादनुत्तम: सुखलाभ:

कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपस:

3. **आसन:**

स्थिरसुखमासनम्। (योगसूत्र 2.46)

स्थिर और सुखपूर्वक बैठना आसन कहलाता है।

4. **प्राणायाम:**

तस्मिनसतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेद:। (योगसूत्र 2.49)

उसकी (आसनों) की स्थिरता होने पर श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति को रोकना प्राणायाम कहलाता है।

तत: क्षीयतेप्रकाशावरणम्। (योगसूत्र 2.52)

प्राणायाम के अभ्यास से प्रकाश पर पड़ा आवरण दूर हो जाता है।

5. प्रत्याहार:

स्वविषया सम्प्रयोगेचित्त स्वरूपाकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः। (योगसूत्र 2.54)

अपने विषयों के साथ इन्द्रियों का सम्बन्ध न होने पर चित्त के स्वरूप के समान ही सभी इन्द्रियाँ निरुद्ध हो जाती हैं।

6. धारणा:

देशबन्धचित्तस्तधारणा। (योगसूत्र 3.1)

किसी एक स्थान विशेष में चित्त को बाँधना धारणा कहलाता है।

7. ध्यान:

तत्रप्रत्ययैकतानताध्यानम्। (योगसूत्र 3.2)

उस देश में ध्येय विषयकज्ञान या वृत्ति का निरन्तर एकसमान बने रहना ध्यान है।

8. समाधि:

जिसकी समस्त बाह्यवृत्तियाँ क्षीण हो चुकी हैं ऐसे स्फटिकमणि की भाँति निर्मलचित्त का जो पुरुष, ग्रहण (अन्तःकरण और इन्द्रियाँ) तथा पञ्चमहाभूत और विषय में स्थित हो तदाकार हो जाना है। यह सम्प्रज्ञात समाधि है।

स्थूलता से सूक्ष्मता के आधार पर सम्प्रज्ञात समाधि के चार भेद होते हैं।

वितर्कविचारानन्दास्मितानुगमात्सम्प्रज्ञातः। (योगसूत्र 1.17)

वितर्क, विचार, आनन्द और अस्मिता यह चारों सम्प्रज्ञात समाधि के अन्तर्गत आते हैं।

वितर्कानुगतसमाधि:

- **सवितर्कानुगतसमाधिः**-शब्द, अर्थ एवं ज्ञान के विविध प्रकारों से मिश्रित सवितर्क नामक समाधि है।

तत्रशब्दार्थज्ञानविकल्पैःसंकीर्णासवितर्कासमापत्तिः (योगसूत्र 1.42)

- **निर्वितर्कानुगतसमाधिः**-यह शब्द एवं ज्ञान की भावना से रहित केवल अर्थमात्र होती है।

स्मृतिपरिशुद्धौस्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासानिर्वितर्का (योगसूत्र 1.43)

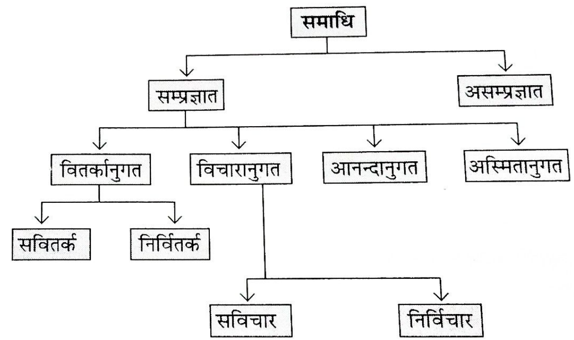
स्मृति के निवृत्त हो जाने पर अपने ग्रहण रूप से शून्य हुई जैसी केवल अर्थ का भान कराने वाली चित्तवृत्ति की स्थिति का नाम निर्वितर्क है।

विचारानुगत:

एतयैवसविचारानिर्विचारा च सूक्ष्मविषयाव्याख्याता (योगसूत्र 1.44)

इसी से सूक्ष्म पदार्थों में की जाने वाली सविचार और निर्विचार समाधि का भी वर्णन किया गया है।

- **सविचारसमाधिः**-शब्दादि तन्मात्राओं एवं अन्तःकरण को विषय बनाकर समाधि को प्राप्त करना।
- **निर्विचारसमाधिः**-मात्रधर्मी के स्वरूप का ज्ञान प्रदान कराने वाली भावना।
- **आनन्दानुगतसम्प्रज्ञातसमाधिः**-विचारानुगत सम्प्रज्ञात के अभ्यास करते हुए सत्व गुण की अधिकता से आनन्दस्वरूप अहंकार की प्रतीति होने पर आनन्दानुगत सम्प्रज्ञात समाधि है।
- **अस्मितानुगतसम्प्रज्ञातसमाधिः**-आनन्द से भी रहित केवल अस्मिता मात्र का ध्येय करने से प्राप्तसमाधि—



मैत्री	सुख
करुणा	दुःख
मुदिता	पुण्य
उपेक्षा	अपुण्य

सिद्धियों की प्राप्ति के पाँच मार्ग—

जन्म, औषधि, मन्त्र, तप, समाधि।

कर्म के प्रकार:- चार

शुक्ल	पुण्य कर्म
कृष्ण	पाप कर्म
शुक्ल कृष्ण	पाप और पुण्य अर्थात् मिश्रित
अशुक्ल अकृष्ण	न पाप और न पुण्य

न्याय दर्शन

- प्रणेता – महर्षि गौतम
- अन्य नाम-अक्षपाद दर्शन, तर्कशास्त्र, प्रमाणशास्त्र
- पदार्थ-16
- प्रमाण-4 प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
- प्रमुख सिद्धांत – **आरंभवाद**
- न्याय सूत्र भाषा के लेखक- वात्स्यायन
- न्यायशास्त्र के भाग- 2 प्राचीन न्याय शास्त्र, नव्यन्याय शास्त्र
- **जीवनमुक्ति** को नैयायिक स्वीकार नहीं करते
- नैयायिक ज्ञान की प्रत्यक्षता को स्वीकार करते हैं।

वैशेषिक दर्शन

- प्रणेता- कणाद
- उपनाम- औलूक्य दर्शन
- प्रमाण-2 प्रत्यक्ष, अनुमान
- पदार्थ- 7
- गुण-24
- कर्म-5
- द्रव्य-9
- अभाव-4
- विशेष नामक विलक्षण पदार्थ को मानने के कारण इसे वैशेषिक दर्शन कहा जाता है।

तर्क-संग्रह

पदार्थाः (सप्त)	द्रव्यम् (नव)	गणुः (चतुर्विंशतिः)	कर्म (पञ्च)	सामान्यं (द्विविधम्)	विशेषः (अनन्ताः)	समवायः (एकः)	अभावः (चतुर्विधः)

द्रव्य

द्रव्याणि	लक्षणम्	भेदः	विभागः
पृथिवी	गन्धवती	नित्या-परमाणुरूपा अनित्या-कार्यरूपा	कार्यरूपाः त्रिविधा। शरीरम्-अस्मदादीनाम्। इन्द्रियं-गन्धग्राहकं घ्राणं नासाग्रवर्ति। विषयो मृतपाषाणादिः।

द्रव्याणि	लक्षणम्	भेदः	विभागः
आपः	शीतस्पर्श वत्यः	नित्या-परमाणुरूपा अनित्याकार्यरूपा	कार्यरूपाः त्रिविधाः। शरीरं-वरुणलोके। इन्द्रियं-रसग्राहकं रसनं जिह्वाग्रवर्ति। विषयः-सरित्समुद्रादिः।
तेजः	उष्णस्पर्शवत्	नित्यम् अनित्यम्	कार्यरूपं त्रिविधं। शरीरम्-आदित्य लोकम्। इन्द्रियं-रूपग्राहकं चक्षुः कृष्णताराग्रवर्ति। विषयः-चतुर्विधः। भौमं-वह्न्यादिकम्। दिव्यम् अबिन्धनं विद्युदादि परिणामहेतुः ओदर्यम् आकरजं-सुवर्णादि।
वायुः	रूपरहितः स्पर्शवान्	नित्यः अनित्यः	कार्यरूपः त्रिविधः शरीरं वायुलोके। इन्द्रियं-स्पर्शग्राहकं त्वक्सर्वशरीरवर्ति। विषयोवृक्षादिकम्पनहेतुः। वायवः प्राण आपान व्यान उदान समानाः। हृदि प्राणः गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले। उदानः कण्ठदेशे स्याद् व्यानः सर्वशरीरगः।।
आकाशम्	शब्दगणुकम्	एकं विभु नित्यञ्च	सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वं विभुत्वम्। मूर्तत्वं च क्रियावत्त्वम्। पृथिवी अप् तेजः वायु मनांसि मूर्तानि + पृथिवी अप् तेजः वायु आकाशेति पञ्चक भूतपदवाच्यम्। भूतत्वं नाम बहिरिन्द्रियग्राह्यविशेषगुणवत्त्वम्। अत्र यत् लिखितं तन्न अनित्यरूपम्।
कालः	अतीतादिव्यवहार हेतुः	स चैको विभुर्नित्यश्च	

द्रव्याणि	लक्षणम्	भेदः	विभागः
दिक्	प्राच्यादिव्यवहारहेतुः	सा चैका विभ्वी नित्या च।	दिक् चतुर्विधा– 1. प्राची–उदयाचलसन्निहिता या दिक्। 2. प्रतीची–अस्ताचलसन्निहिता या दिक्। 3. उदीची–मेरोः सन्निहिता या दिक्। 4. आवाची–मेरोर्व्यवहिता या दिक्।
आत्मा	ज्ञानाधिकरणम्	परमात्मा, जीवात्मा	तत्रेश्वरः सर्वज्ञः परमात्मैक एव। जीवात्मा प्रतिशरीरं भिन्नो विभुर्नित्यश्च।
मनः	सुखाद्युपलब्धिसाधन-मिन्द्रियम्	अनन्तं परमाणुरूपं नित्यं च	

गुण

गुण	लक्षणम्	भेदः	स्थानम्
रूपम्	चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणः	शुक्ल नील पीत रक्त हरित कपिश चित्रभेदात् सप्तविधम्	पृथिवीजलतेजोवृत्ति। तत्र पृथिव्यां सप्तविधम् अभास्वरशुक्लं जले। भास्वरशुक्लं तेजसि।
रसः	रसनग्राह्यो गुणः	मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्तभेदात् षड्विधः।	पृथिवी जलवृत्तिः। पृथिव्यां षड्विधः जले मधुर एव
गन्धः	घ्राणग्राह्यो गुणः	त्रिविधः। शीत उष्ण अनुष्णाशीताः	पृथिवीमात्रवृत्तिः
स्पर्शः	त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणः	त्रिविधः। शीत–उष्ण–अनुष्णाशीताः	पृथिवी अप् तेजः वायुवृत्तिः। शीतो जले उष्णस्तेजसि अनुष्णाशीतः पृथिवी वाय्वोः।

गुण	लक्षणम्	भेदः	स्थानम्
संख्या	एकत्वादिव्यवहारहेतुः	एकत्वादिपरार्धपर्यन्ता	नवद्रव्यवृत्तिः एकत्वं नित्यमनित्यं च। नित्यगतं नित्यम्। अनित्यगतमनित्यम्। द्वित्त्वादिकं तु सर्वत्राऽनित्यमेव
परिमाणम्	मानव्यवहारासाधारण-कारणम्	चतुर्विधम् अनु महद् दीर्घ ह्रस्वम्	नवद्रव्यवृत्तिः
पृथक्त्वम्	पृथग्व्यवहारासाधारण-कारणम्		नवद्रव्यवृत्तिः
संयोगः	संयुक्तव्यवहारहेतुः		नवद्रव्यवृत्तिः
विभागः	संयोगनाशको गुणः		नवद्रव्यवृत्तिः
परत्वम्	परव्यवहारासाधारण-कारणम्	तत् द्विविधं दिकृतं काल-कृतं दूरस्ते दिक्कृतं परत्वं ज्येष्ठे कालकृतं परत्वम्	पृथिव्यादिचतुष्टय मनो वृत्ति।
अपरत्वम्	अपरव्यवहारासाधारण-कारणम्	तत् द्विविधं दिक्कृतं कालकृतम् समीपस्थे दिक्कृतमपरत्वम् कनिष्ठे कालकृतमपरत्वम्	पृथिव्यादिचतुष्टय मनो वृत्ति।
गुरुत्वम्	आद्यपतनासमवायि-कारणम्		पृथिवीजलवृत्ति
द्रवत्वम्	आद्यस्यन्दनासमवायि-कारणम्	द्विविधम्। सांसिद्धिकं –जले नैमित्तिकं– पृथिवीतेजसोः पृथिव्याम् घृतादावग्नि संयोगजं तेजसि सुवर्णादौ	पृथिव्यप्तेजोवृत्ति
स्नेहः	चूर्णादि पिण्डीभाव-हेतुर्गुणः		जलमात्रवृत्तिः
शब्दः	श्रोत्रग्राह्यो गुणः	द्विविधः ध्वन्यात्मकः भेर्यादौ वर्णात्मकः संस्कृतभाषादिरूपः	आकाशमात्रवृत्तिः

गुण	लक्षणम्	भेदः	स्थानम्
बुद्धिर्ज्ञानम्	सर्वव्यवहारहेतुर्गुणः	द्विविधा-स्मृतिः, अनुभवश्च। स्मृतिः संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानम्। द्विविधा-यथार्था, अयथार्था। प्रमाजन्या यथार्था। अप्रमाजन्या अयथार्था। अनुभवः तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः अनुभव : - द्विविधः यथार्थः प्रमा तद्वति तत्प्रकारकः अनुभवः रजते इदं रजतमिति ज्ञानम् अयथार्थः अप्रमा तदभाववति तत्प्रकारकः अनुभवः शुक्तौ इदं रजतमिति ज्ञानम्।	बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
सुखम्	सर्वेषामनुकूलतया वेदनीयं		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
दुःखम्	सर्वेषां प्रतिकूलतया वेदनीयं		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
इच्छा	कामः		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणा
द्वेषः	क्रोधः		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
प्रयत्नः	कृतिः		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
धर्मः	वेदविहितकर्मजन्यः		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः
अधर्मः	निषिद्धकर्मजन्यः		बुद्ध्यादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः

गुण	लक्षणम्	भेदः	स्थानम्
संस्कारः		1. वेगः- पृथिव्यादि-चतुष्टयमनोवृत्तिः 2. भावना-अनुभवजन्या स्मृतिहेतुः आत्ममात्रवृत्तिः 3. स्थितिस्थापकः- अन्यथा कृतस्य पुनस्तदवस्थापकः कटादिपृथिवीवृत्तिः	

कर्मादि

पदार्थ	लक्षणम्	वृत्तिः	भेदः
कर्म	चलनात्मकम्	पृथिव्यादिचतुष्टय-मनोमात्रवृत्ति	ऊर्ध्वदशसंयोगहेतु-रूपक्षेपणम्। अधोदेशसंयोगहेतुपक्षेपणम्। शरीरसंनिकृष्टसंयोगहेतुरा-कुञ्चनम्। विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम्। अन्यत्सर्वं गमनम्।
सामान्यम्	नित्यमेकम-नेकानुगतम्	द्रव्यगुणकर्मवृत्ति	द्विविधम् परम् अपरम्। परं सत्ता अपरं द्रव्यत्यादि।
समवायः	नित्यसम्बन्धः	अयुतसिद्धवृत्तिः ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमविनश्यदपरा आश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ। यथा अवयवाऽवयविनौ गुणगुणिनौ क्रियाक्रियावन्तौ जातिव्यक्ती विशेषनित्यद्रव्ये।।	
अभावः		1. प्रागभावः 2. प्रध्वंसाभावः 3. अत्यन्ताभावः 4. अन्योन्याभावः	अनादि : सान्तः प्रागभावः। सादिरनन्तः प्रध्वंस : त्रैकालिकसंसर्ग अवच्छिन्नप्रतियोगिताकः अत्यन्ताभावः। तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकः अन्योन्याभावः।

अनुभवपरिचयः

अनभुवः	लक्षणम्	भेदः
	तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवः	प्रत्यक्षम् अनुमितिः उपमितिः शाब्दः
यथार्थः		
अयथार्थः	तदभाववति तत्प्रकारकोऽनुभवः	1. संशयः एकस्मिन् धर्मणि विरुद्धनानाधर्म वैशिष्ट्यावगाहिज्ञानम्। यथा स्थाणुर्वा पुरुषो वेति इति। 2. विपर्ययः मिथ्याज्ञानम्। शुक्तौ इदं रजतं इति। 3. तर्क : व्याप्यारोपेण व्यापकारोपः। यदि वह्नि न स्यात्तर्हि धूमोऽपि न स्यात्।

प्रमाणपरिचयः

प्रमाकरणं प्रमाणम्। असाधारणं कारणं करणम्। कार्यनियतपूर्ववृत्तिः कारणम्। कार्यं प्रागभावप्रतियोगि।

प्रमितिः	प्रत्यक्षम्	अनुमितिः	उपमितिः	शाब्दः
प्रमाणम्	प्रत्यक्षम्	अनुमानम्	उपमानम्	शब्दः
लक्षणम्	इन्द्रियार्थसन्नि-कर्षजन्यं ज्ञानम्	परामर्शजन्यं ज्ञानम्।	संज्ञासंज्ञिसम्बन्ध ज्ञानम्।	वाक्यार्थज्ञानम् आप्तवाक्यं शब्द
लक्षणम्	प्रत्यक्षज्ञानकरणम्	अनुमितिकरणम् पटस्य तन्तुरूप पटरूपस्य।	उपमितिकरणम्	शाब्दज्ञानकरणम्
करणम्	इन्द्रियम्	व्याप्तिज्ञानम्	सादृश्यज्ञानम्	पदज्ञानम्
कारणम्	समवायिकारणम्	असमवायिकारणम्	निमित्तकारणम्	
लक्षणम्	यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते	कार्येण कारणेन वा एकस्मिन् अर्थे समवेतं सत् कारणम्	तदुभयभिन्नं कारणम्	
उदाहरणम्	तन्तवः पटस्य पटश्च स्वगतरूपादेः	तन्तसुंयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य।	तुरीवेमादिकम्	

प्रत्यक्ष

प्रत्यक्षम्	लक्षणम्	उदारहणम्
1. सविकल्पकम्	सप्रकारकं ज्ञानम्	डित्योऽयं ब्राह्मणोऽयम्
2. निर्विकल्पकम्	निष्प्रकारकं ज्ञानम्	इदं किञ्चित्

सन्निकर्षः

सन्निकर्षः (प्रत्यक्षज्ञानहेतुः)	उदाहणम्
संयोगः	चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः
संयुक्त समवायः	चक्षुषा घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः
संयुक्त समवेतसमवायः	चक्षुषा रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः
समवायः	श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः
समवेतसमवायः	शब्दत्वसाक्षात्कारे समवेतसमवायः
विशेषणविशेष्यभावः	अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः

अथानुमानपरिच्छेदः

❖ अनुमितिकरणमनुमानम्। परामर्शजन्यं ज्ञानमनुमितिः।

नाम	लक्षणम्	अवयवः
परामर्श : (व्यापारः)	व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानम्	
व्याप्तिः (करणम्)	यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निरिति साहचर्यनियमो	
अनुमान		
1. स्वार्थानुमानम्	स्वानुमितिहेतुः	
2. परार्थानुमानम्	यत्तु स्वयं धूमादग्निमनुमाय परप्रतिपत्त्यर्थ पञ्चावयववाक्यं प्रयुज्यते।	**प्रतिज्ञा** पर्वतो वहिनमान् **हेतुः** धूमवत्वात् **उदाहरणम्** यो यो धूमवान् स स वह्निमान् यथा महानसः **उपनयः** तथा चायम् **निगमनम्** तस्मात्तथेति।

❖ स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योर्लिङ्गपरामर्श एव करणं तस्माल्लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्।

❖ लिङ्गं त्रिविधम् अन्वयव्यतिरेक, केवलान्वयि केवलव्यतिरेकि चेति।

लिङ्ग

	नाम	लक्षणम्	उदाहणम्
1.	केवलान्वयि	अन्वयेन व्यतिरेकेण वा व्याप्तिमत्	वह्नौ साध्ये धूमवत्त्वम्
2.	केवलव्यतिरेकि	अन्वयमात्रव्याप्तिकम्	घटोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्
3.	अन्वयव्यतिरेकि	व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकम्	पृथिवी इतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्त्वात्

	नाम	लक्षणम्	उदाहरणम्
		पक्ष	
1.	पक्षः	सन्दिग्धसाध्यवान्	धूमवत्त्वे हेतौ पर्वतः
2.	सपक्षः	निश्चितसाध्यवान्	धूमवत्त्वे हेतौ महानसः
3.	विपक्षः	निश्चितसाध्याभाववान्	धूमवत्त्वे हेतौ महाह्रदः

हेत्वाभासः

- ❖ सव्यभिचार-विरुद्ध-सत्प्रतिपक्ष-असिद्ध-बाधिताः पञ्चहेत्वाभासाः।
- ❖ सव्यभिचारोऽनैकान्तिकः।
- ❖ स त्रिविधः-साधारण-असाधारण-अनुपसंहारिभेदात्।

पञ्चहेत्वाभासाः

	1. सव्यभिचार	
नाम	**लक्षणम्**	**उदाहरणम्**
साधारणोऽनैकान्तिकः	साध्याभाववद्वृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः	पर्वतो वह्निमान्प्रमेयत्वादिति
असाधारणोऽनैकान्तिकः	सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिः असाधारणः	शब्दो नित्यः शब्दत्वादिति
अनपुसंहारी	अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितो-ऽनुपसंहारी	सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति
	2. विरुद्धः	
विरुद्धः	साध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः	शब्दो नित्यः कृतकत्वादिति
	3. सत्प्रतिपक्षः	
सत्प्रतिपक्ष	यस्य साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः	शब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दत्ववत् शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात् घटवत्
	4. असिद्धिस्त्रिविधः	
आश्रयासिद्धः	आश्रयासिद्धो अत्र गगनाविन्दमाश्रयः स च नास्त्येव। स्वरूपासिद्धो यथा शब्दो गुणश्चाक्षुषत्वात्।	गगनारविन्दं सुरभि अरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत्
स्वरूपासिद्धः		शब्दः अनित्यः चाक्षुषत्वात् रूपवत्
व्याप्यत्वासिद्धः	सोपाधिको हेतुः व्याप्यत्वासिद्धः उपाधिः साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वम्	पर्वतो धूमवान् वह्निमत्त्वात् अत्र आर्द्रेन्धनसंयोगः उपाधिः

	5. बाधितः	
बाधितः	यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः	वह्निरनुष्णो द्रव्यत्वात् जलवत्

पूर्व मीमांसा

- ❖ प्रणेता- **आचार्य जैमिनी**
- ❖ उपनाम- **धर्ममीमांसा**
- ❖ पक्ष-प्रतिपक्ष को लेकर वेदवाक्यों के निर्णीत अर्थ के विचार का नाम **मीमांसा** है।
- ❖ मंत्र और ब्राह्मण वेद के पूर्वभाग होने के कारण उनके अर्थ और उपयोग की मीमांसा का नाम- **पूर्वमीमांसा**
- ❖ मीमांसा का अर्थ है- विचार
- ❖ ईश्वर को स्वीकार नहीं करता- मीमांसा
- ❖ मीमांसा दर्शन जगत् को मानता है- सत्य
- ❖ मीमांसा दर्शन आत्मा को मानता है- अमर
- ❖ कर्मकांड पर आधारित है- मीमांसा
- ❖ मीमांसा का प्रमुख उद्देश्य है- धर्म की व्याख्या करना
- ❖ कुमारिलभट्ट प्रमाण मानते हैं-6
- ❖ प्रभाकर प्रमाण मानते हैं-5
- ❖ जैमिनी सूत्र में अध्याय की संख्या- 16

उत्तर मीमांसा

- ❖ प्रणेता-**महर्षि बादरायण**
- ❖ उपनाम- **वेदांत दर्शन, ब्रह्म मीमांसा, शारीरिक मीमांसा**
- ❖ इसमें केवल वेद (आरण्यकों और उपनिषदों के) वाक्यों के अर्थ का निरूपण करने के साथ जीव, जगत् और ब्रह्म संबंधी दार्शनिक समस्याओं पर भी विचार किया गया है।
- ❖ सिद्धान्त यह है कि **जड़ जगत का उपादान और निमित्त कारण चेतन ब्रह्म** है। जैसे मकड़ी अपने अन्दर से ही जाल तानती है, वैसे ही ब्रह्म भी इस जगत् को अपनी ही शक्ति द्वारा उत्पन्न करता है।
- ❖ वेद के उत्तर भाग आरण्यक और उपनिषद् के वाक्यों का समन्वय **बादरायण** ने ब्रह्मसूत्र नामक ग्रंथों में किया, अतएव उसका नाम- **'उत्तरमीमांसा'**
- ❖ **उत्तरमीमांसा, 'शारीरिक मीमांसा'** -इसमें शरीरधारी आत्मा के लिए उन साधनों और उपासनाओं का संकेत है जिनके द्वारा वह अपने ब्रह्मत्व का अनुभव कर सकता है।
- ❖ **'वेदान्त दर्शन'**-वेद के अन्तिम भाग के वाक्यों के विषयों का समन्वय किया गया है।

❖ '**ब्रह्ममीमांसा**' अथवा '**ब्रह्मसूत्र**' इस कारण पड़ा कि इसमें विशेष विषय ब्रह्म और उसके स्वरूप की मीमांसा है।

❖ प्रमुख सिद्धांत- **मायावाद**

❖ साधन-4- 1. **नित्य-अनित्यवस्तु विवेकः** 2. **इहामुत्रार्थफलभोगविरागः** **3. शमादिषट्क संपत्तिः 4. मुमुक्षुत्व** (साधन चतुष्टय)।

❖ षड् सम्पति **शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान** एवं **श्रद्धा**।

शम	इन्द्रियों के विषयों से मन का हटाना
दम	बाह्य इन्द्रियों का उनके विषयों से हटाना
उपरति	विधि पूर्वक विहित कर्मो का त्याग करना
तितिक्षा	सर्दी-गर्मी इत्यादि द्वन्द्वों को सहना
समाधान	नियन्त्रित मन को श्रवणादि विषयों में भली प्रकार लगाना
श्रद्धा	गुरु एवं वेद वाक्यों में विश्वास करना

वेदान्तानुसार कर्म

करणीय	अकरणीय
1. नित्य-प्रतिदिन किए जाने वाले	1. **काम्य**-किसी विशेष कामना हेतु किए जाने वाले कर्म
2. नैमित्य-विशेष अवसरो पर किए जाने वाले जात्येष्टि कर्म (जन्म पर किए जाने वाले होम इत्यादि कर्म)	2. **निषिद्ध कर्म**- जिन कर्मों को करने की शास्त्रों में मनाही है। यथा-गोवध, ब्रह्म हत्या आदि।
3. प्रायश्चित को या दोषों को नष्ट करने वाले कर्म। यथा-चन्द्रायण व्रत	
4. उपासना कर्म- होम, शाण्डिल्य विद्यादि।	

❖ सत्यं ब्रह्म जगत् मिथ्या- आचार्य शंकर

❖ वेदांत का मूल ग्रंथ- ब्रह्म सूत्र

❖ ब्रह्मसूत्र के भाष्यकार- **आचार्य शंकर**

❖ ब्रह्मसूत्र के अध्याय-4

❖ अध्याय नाम :-

1. ब्रह्मविषयक 2. पुष्टि, खण्डन, स्वयंमत 3. साधना 4. मुक्ति

प्रस्थानत्रयी

❖ प्रस्थानत्रयी=उपनिषद्+श्रीमद्भगवद्गीता+ब्रह्मसूत्र

❖ **उपनिषद्** शब्द का साधारण अर्थ है - 'समीप उपवेशन' या समीप बैठना (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना)।

❖ यह शब्द 'उप', 'नि' उपसर्ग तथा, 'सद्' धातु से निष्पन्न हुआ है।

❖ सद् धातु के तीन अर्थ हैं : **विवरण**-नाश होना; **गति**-पाना या जानना तथा **अवसादन**-शिथिल होना।

❖ उपनिषद् में ऋषि और शिष्य के बीच बहुत सुन्दर और गूढ संवाद है जो पाठक को वेद ज्ञान के मर्म तक पहुँचा देता है।

❖ उपनिषदों की संख्या 108 बताई गई है।

❖ विषय की गम्भीरता तथा विवेचन की विशदता के कारण 13 उपनिषद् विशेष मान्य तथा प्राचीन माने जाते हैं।

❖ जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने 10 पर अपना भाष्य लिखा है—

1. ईश 2. ऐतरेय 3. कठ 4. केन
5. छान्दोग्य 6. प्रश्न 7. तैत्तिरीय 8. बृहदारण्यक
9. मांडूक्य और 10. मुण्डक।

❖ उन्होंने निम्न तीन को प्रमाण कोटि में स्थान दिया है—

1. श्वेताश्वतर 2. कौषीतकि तथा 3. मैत्रायणी।

उपनिषद्

❖ **उपनिषद्** शब्द का साधारण अर्थ है— 'समीप उपवेशन' या 'समीप बैठना (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना)।

❖ यह शब्द 'उप्, 'नि' उपसर्ग तथा, 'सद्' धातु से निष्पन्न हुआ है।

❖ सद् धातु के तीन अर्थ हैं: विवरण-नाश होना; गति-ज्ञान को प्राप्त होना तथा अवसादन-शिथिल होना।

❖ इनमें मुख्य रूप से 'आत्मविद्या/ब्रह्मविद्या' का प्रतिपादन है।

❖ इनकी संख्या 108 है, जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने 10 उपनिषदो पर अपना भाष्य लिखा है।

ईशावास्योपनिषद्

❖ शुक्ल यजुर्वेद का चालीसवाँ (40) अध्याय

❖ ईश्वर के गुणों का वर्णन एवं अधर्म त्याग का उपदेश।

❖ 18 मन्त्र

❖ प्रथम मन्त्र **ईशावास्यमिदं सर्वं** से आरम्भ होने के कारण उपनिषद् का नाम ईशावास्योपनिषद् है।

1. **सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड परमात्मा द्वारा ही व्याप्त है।** उसके द्वारा त्यागरूप जो भी तुम्हारे लिए प्रदान किया गया है उसे अनासक्त रूप से भोगो। किसी के भी धन की इच्छा मत करो।

2. इस लोक में **शास्त्रनियत कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।** तुम्हारे लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। इस प्रकार कर्म मनुष्य में लिप्त नहीं होते।
3. असूर्य सम्बन्धी जो लोक और योनियाँ हैं, वे अज्ञान और अन्धकार से आच्छादित हैं। जो मनुष्य आत्म का हनन करते हैं, वे मरकर उन्हीं लोकों को प्राप्त होते हैं।
4. वह आत्मतत्त्व अविचलित, एक तथा मन से भी तीव्र गति वाला है। इसे इन्द्रियाँ प्राप्त नहीं कर सकतीं, क्योंकि यह उन सबसे पहले है। वह स्थिर होते हुए भी सभी गतिशीलों का अतिक्रमण किये हुए है। उसी की सत्ता में ही वायु समस्त प्राणियों के प्रवृत्तिरूप कर्मों का विभाग करता है।
5. वह आत्मतत्त्व चलता है और नहीं भी चलता। वह दूर है और समीप भी है। वह सबके अंतर्गत है और वही सबके बाहर भी है।
6. **जो मनुष्य समस्त भूतों को आत्मा में ही देखता है और समस्त भूतों में भी आत्मा को ही देखता है, वह फिर किसी से भी घृणा कैसे कर सकता है।**
7. **जिस स्थिति में मनुष्य के लिए सब भूत आत्मा ही हो गए उस समय एकत्व देखने वाले उस ज्ञानी को क्या मोह और क्या शोक रह जाता है।**
8. वह आत्मा परम तेजोमय, शरीरों से रहित, अक्षत, स्नायु से रहित, शुद्ध, शुभाशुभकर्म-सम्पर्कशून्य, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वोत्कृष्ट और स्वयंभू है। वही अनादि काल से सब अर्थों की रचना और विभाग करता आया है।
9. **जो अविद्या की उपासना करते हैं, घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। जो विद्या में रत हैं वे मानो उससे भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं।**
10. विद्या का फल अन्य है तथा अविद्या का फल अन्य है। ऐसा हमने उन धीर पुरुषों से सुना है, जिन्होंने हमें वह समझाया था।
11. **जो विद्या और अविद्या दोनों को ही एक साथ जानता है, वह अविद्या से मृत्यु को पार करके विद्या से अमृतत्व को प्राप्त हो जाता है।**
12. जो असम्भूति की उपासना करते हैं, वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं, और जो सम्भूति में ही रत हैं, वे मानो और भी अधिक अन्धकार में प्रवेश करते हैं।
13. सम्भूति का फल अन्य है और असम्भूति का फल अन्य है। ऐसा हमने उन धीर पुरुषों से सुना है, जिन्होंने हमें वह समझाया था।
14. जो सम्भूति और विनाशशील दोनों को ही एक साथ जानता है, वह विनाशशील की उपासना से मृत्यु को पार करके अविनाशी की उपासना के द्वारा अमृतत्व को प्राप्त हो जाता है।
15. वह, सत्य का मुख, स्वर्णरूप ज्योतिर्मय पात्र से ढका हुआ है। हे पूषन ! तू उस आवरण को हटा दे, जिससे कि सत्यधर्मी को उसका दर्शन हो सके।

16. हे जगत पोषक सूर्य ! हे एकाकी गमन करने वाले ! यम (संसार का नियमन करने वाले), सूर्य (प्राण और रस का शोषण करने वाले), हे प्रजापतिनंदन ! आप ताप (दु:खप्रद किरणों को) हटा लीजिये और आपका अत्यन्त मंगलमय रूप है उस को मैं देखता हूँ जो वह पुरुष (आदित्य मण्डलस्थ) है वह मैं हूँ।

ईश्वर के गुण	अर्थ	ईश्वर के गुण	अर्थ
शाश्वत	अनादि	अपापविद्ध	पाप रहित
शुक्र	प्रकाशवान	कवि	भविष्यदर्शी
अकाय	काया रहित	मनीषी	सर्वज्ञ एवं ज्ञानस्वरूप
अव्रण	घाव रहित	परिभू	सभी स्थानों पर विद्यमान
अस्त्राविर	बिना नाड़ियों का	स्वयंभू	आदि/अन्त से रहित
शुद्ध	विशुद्धियों रहित	पूषन	सभी का पोषण करने वाला
यम	सबका नियन्त्रण करने वाला	प्राजापत्य	प्रजापति के प्रिय

विद्या, अविद्या, सम्भूति और असम्भूति का फल

क्रिया		फल
केवल उपासना	अविद्या या असम्भूति	गहरे अन्धकार में प्रवेश
	विद्या या सम्भूति	और गहरे अन्धकार में प्रवेश
संयुक्त उपासना	अविद्या (कर्म) और विद्या (ज्ञान)	अविद्या से मृत्यु से पार होना
		विद्या से अमृतत्व प्राप्ति

- **अविद्या या असम्भूति**- विनाशशील स्त्री, पुत्र, धन, कीर्ति को ही एकमात्र सुख समझने के कारण जन्म-मरण के चक्कर में पड़ना ही गहरा अन्धकार है।
- **विद्या या सम्भूति**-शास्त्र के वास्तविक अर्थों को समझे बिना, श्रद्धा का अभाव। दूसरों को भी वाग्जाल में फँसाकर उनमें भी अश्रद्धा उत्पन्न करते है।

प्रमुख मन्त्र

ईशावास्यम् इदं सर्वम् यत्किञ्चज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।। 1।।
असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा आवृताः।
तांस्ते प्रेत्य अभिगच्छन्ति ये के च आत्म हनः जनाः।। 3।।
तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तत् उ अन्तिके।
तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः।। 5।।
यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति।
सर्वभूतेषु च आत्मानं ततो न विजुगुप्सते।। 6।।

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वम् अनुपश्यतः।। 7।।
अन्धं तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम उपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।। 9।।
विद्यां च अविद्यां च यः तत् वेद उभयम् सह।
अविद्यायां मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते।। 11।।
अन्धं तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिम् उपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।। 12।।
वायुः अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तं शरीरम्।
क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतँ स्मर।। 17।।

केनोपनिषद्

- वेद—सामवेद जैमिनीय शाखा।
- उपनाम—तलवकार या जैमिनीय उपनिषद्।
- खण्ड—4
- 'केनेषितं पतति मनः' से आरम्भ होने के कारण केनोपनिषद् नाम।

प्रथमखंड

1. यह मन किसकी इच्छा से प्रेरित होकर अपने विषयों में गिरता है? यह प्राण किसके द्वारा प्रयुक्त होने पर चलता है? यह वाणी किसके द्वारा इच्छा किये जाने पर बोलती है? कौन देव नेत्रों तथा कानों को प्रेरित करता है?
2. जो कानों का भी कान, **मन का भी मन** और वाणी की भी वाणी है, वही प्राणों का भी प्राण और चक्षु का भी चक्षु है। इस तथ्य को जानकर **धीर पुरुष मृत्यु के पश्चात् मुक्त होकर अमर हो जाते हैं।**
3. उस ब्रह्म तक आंखें, वाणी और मन पहुँच ही नहीं सकते। अतः उस ब्रह्म के विषय में शिष्य को किस प्रकार उपदेश देना चाहिए, यह हम नहीं जानते; यह हमारी बुद्धि में नहीं आता। वह विदित एवं अविदित से अन्य ही है, ऐसा हमने अपने पूर्व पुरुषों से सुना है, जिन्होंने हमें उसका उपदेश दिया था।
4. जो वाणी से प्रकाशित नहीं हो सकता, किंतु जिससे वाणी प्रकाशित होती है उसी को ब्रह्म समझना चाहिए। यह जिस विशेष नाम युक्त ईश्वर (जैसे- इंद्र, अग्नि, वायु, विष्णु, रुद्र आदि)की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।
5. जिसके विषय में मन मनन नहीं कर सकता, परंतु जिसकी सत्ता से मन मनन करने की सामर्थ्य रखता है, ऐसा कहा जाता है, उसी को ब्रह्म समझो। जिस विशेष नामयुक्त ईश्वर की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।

6. जिसे कोई नेत्र नहीं देखता, किंतु जिसकी सहायता से नेत्र अपने विषय को देखते हैं, उसी को ब्रह्म समझो, जिस विशेष नाम युक्त ईश्वर की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।
7. जिसे कोई कान नहीं सुनता, परंतु जिसकी सहायता से कान सुनने का कार्य करते हैं, उसी को ब्रह्म समझो। जिस विशेष नाम युक्त ईश्वर की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।
8. जो नासिका में स्थित प्राण, वायु का विषय नहीं बन सकता, अपितु जिससे प्राण अपने विषय (सूँघना) कार्य करते हैं, उसी को ब्रह्म समझो। जिस विशेष नाम वाले ईश्वर की लोग उपासना करते हैं, वह ब्रह्म नहीं है।

द्वितीय खंड

1. यदि तुम यह समझते हो कि तुम ईश्वर को अच्छी तरह जानते हो, तो निश्चय ही तुम ब्रह्म का अल्प रूप ही जानते हो। इसका जो रूप तुम जानते हो और जो रूप देवताओं में जाना जाता है, वह भी अल्प ही है। अतः तुम्हारे लिए ब्रह्म विचार करने योग्य है। इस पर एकांत में विचार करने के अनंतर शिष्य ने कहा कि, 'वह अब ईश्वर को जाना गया है।'
2. मैं न तो यह मानता हूँ कि मैं ब्रह्म को अच्छी तरह जान गया हूँ और न यही समझता हूँ कि उसे नहीं जानता हूँ। इसलिए मैं उसे जानता भी हूँ और नहीं भी जानता हूँ। हम शिष्यों में ब्रह्म के विषय में जिसकी यह धारणा है कि मैं उसे जानता भी हूँ और नहीं भी जानता हूँ, वही ब्रह्म को जानता है।
3. ब्रह्म जिसे ज्ञात नहीं है, उसी को ज्ञात है। जिसको ज्ञात है, वह उसे नहीं जानता, क्योंकि वह जानने वालों को बिना जाना हुआ और न जानने वालों का जाना हुआ है। अन्य वस्तुओं के समान दिखाई न पड़ने के कारण वह इंद्रियों का विषय नहीं बन सकता।
4. सभी इंद्रियाँ ब्रह्म की सत्ता से ही कार्य करती हैं, अतः प्रत्येक इंद्रिय के विषय से उसका ही बोध होता है, इसी से वह जाना जाता है, यही उसका ज्ञान है। इसी ब्रह्मज्ञान से अमरता प्राप्त होती है। अमरता स्वयं से ही प्राप्त होती है; विद्या तो केवल अज्ञान के अंधकार को दूर करने में सहायक सिद्ध होती है।
5. यदि इसी जन्म में ब्रह्म को जान लिया जाए, तब तो ठीक है। यदि ऐसा न हो पाए तो यह प्राणी के लिए सर्वाधिक हानि की बात है। ज्ञानी लोग प्रत्येक प्राणी में ब्रह्म की सत्ता को देखकर, मृत्यु के पश्चात् अमर हो जाते हैं।

तृतीय खंड

1. यह प्रसिद्ध है कि पूर्व कथित लक्षणों वाले परब्रह्म ने देवताओं के लिए विजय प्राप्त की थी। कहते हैं कि उस ब्रह्म की विजय से देवताओं ने विजय प्राप्त की थी।

2. तब देवताओं ने सोचा यह विजय उनके निजी प्रयत्नों से मिली है। कहते हैं कि वह ब्रह्म देवताओं के मनोभावों को जान गया और उनके सामने यक्ष के रूप में प्रादुर्भाव हुआ। यक्ष के रूप में आए हुए उस ब्रह्म को लोग नहीं पहचान सके कि यह कौन है?
3. वे देवता अग्नि से बोले, 'हे अग्नि यह ज्ञात करो कि यह यक्ष कौन है?' अग्नि ने स्वीकृति दे दी।
4. अग्नि यक्षरूपी ब्रह्म के पास गया, यक्ष ने अग्नि से पूछा, 'तुम कौन हो।' इस पर अग्नि ने उत्तर दिया, '**मैं अग्नि हूँ। मेरा नाम जातवेदा भी है।**'
5. इस पर यक्ष ने पूछा, 'हे जातवेदा, तेरे नाम के अनुरूप तुझमें कौन-सी शक्ति है?' अग्नि ने उत्तर दिया, 'पृथ्वी में दिखाई देनेवाले इस समस्त चराचर को मैं जला सकता हूँ। आकाश में स्थित वस्तुएँ भी मुझसे जल सकती हैं।'
6. यक्ष ने अग्नि को एक तिनका दिया और कहा, 'इसे जलाकर दिखाओ।' अग्नि उस तिनके में प्रविष्ट हुआ, किंतु अपनी संपूर्ण शक्ति से भी उसे न जला सका और लौटकर देवताओं के पास चला आया तथा उनसे बोला, 'यह यक्ष कौन है? मैं इस तथ्य का पता न लगा पाया।'
7. तदनंतर देवताओं ने वायुदेव को आज्ञा दी, 'हे वायु, अब तुम मालूम करो कि यह यक्ष कौन है?' वायु 'बहुत अच्छा' कहते हुए चल पड़ा।
8. वायु यक्ष के पास गया। इस पर यक्ष ने प्रश्न किया, 'तुम कौन हो?' यह पूछे जाने पर वायु ने कहा, '**मैं वायु हूँ, मुझे मातरिश्वा** भी कहते हैं।'
9. तब यक्ष ने पूछा, 'हे वायु! तुझमें क्या शक्ति है?' वायु ने कहा, 'पृथ्वी में जो कुछ भी है, उसे मैं उड़ा सकता हूँ।'
10. तब यक्ष ने एक तिनका देते हुए वायु से कहा, 'इसे उड़ाओ' इस पर वायु तिनके के पास गया, किंतु अपनी पूरी शक्ति से भी उसे उड़ा नहीं सका। तब वह भी देवताओं के पास लौट आया और बोला, मैं इस बात को नहीं जान पाया कि यह यक्ष कौन है?
11. तब देवताओं ने इंद्र से कहा, 'हे मेघवन! अब तुम इस बात का पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है?' 'बहुत अच्छा' कहकर इंद्र यक्ष के पास गया, किंतु यक्ष इंद्र के सामने से अंतर्धान हो गया।
12. जिस आकाश में वह यक्ष अंतर्धान हुआ था, इंद्र भी वहीं गया। इन्द्र ने उस शोभामयी स्त्री '**हिमालय की पुत्री उमा (ब्रह्म विद्या) से पूछा, यह यक्ष कौन है?**'

चतुर्थ खंड

1. उस विद्या देवी ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'यह ब्रह्म है, इसकी विजय से ही तुम महिमामय हुए हो।' ऐसा कहते हैं कि तभी इंद्र ने जाना कि वह ब्रह्म था।
2. अग्नि, वायु और इंद्र इन तीनों देवताओं ने ही सबसे पहले यह जाना कि 'यह ब्रह्म है तथा इन तीनों ने ही सर्वप्रथम उसका स्पर्श किया था। वे अन्य देवताओं से श्रेष्ठ माने गए।'

3. इंद्र ने सर्वप्रथम समीपस्थ ब्रह्म का स्पर्श किया और जाना कि यह ब्रह्म है, अतः वह सभी देवताओं में प्रमुख माना गया।
4. यह उस ब्रह्म का उपासना-संबंधी उपदेश है, जो पलक झपकने अथवा विद्युत चमकने के समान उत्पन्न हुआ। यह उस ब्रह्म का अधिदेवता रूप है।
5. अब अध्यात्म उपासना का उपदेश इस प्रकार है कि मन को गतिमान कहा जाता है। यह ब्रह्म इस प्रकार मन से ही बार-बार ब्रह्म का स्मरण होता है तथा निरंतर संकल्प किया जाता है।
6. उस ब्रह्म ही वन अर्थात् भजन करने योग्य है, अतः उसकी वन नाम से उपासना करनी चाहिए। जो उसे इस तरह जानता है, उसी को सभी प्राणी अच्छी तरह चाहने लगते हैं।
7. शिष्य द्वारा गुरु से उपनिषद् शिक्षा के विषय में अनुरोध किया गया। अतः इस शिक्षा को देने के बाद गुरु ने कहा-'मैं तुम्हें ब्रह्म विषयक उपनिषद् का ज्ञान दे चुका हूँ। अब तुम्हें ब्रह्म जाति संबंधी उपनिषद् का ज्ञान दूँगा।'
8. उस ब्राह्मी उपनिषद् की तप, दम, कर्म, वेद, और संपूर्ण वेदांग (व्याकरण, ज्योतिष, छंद आदि) यह सब प्रतिष्ठा है तथा सत्य उसका घर है।
9. जो निश्चयपूर्वक इस उपनिषद् को इस प्रकार जानता है, वह अपने पापों को नष्ट करके अनंत और महान स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है—
   - सर्वप्रथम यक्ष के सम्मुख कौन गया- **अग्नि**
   - अग्नि के पश्चात् यक्ष के सम्मुख कौन गया-**वायु**
   - अग्नि का अन्य नाम केनोपनिषद् में क्या है-**जातवेदा**
   - वायु का अन्य नाम केनोपनिषद् में क्या है- **मातरिश्वा**
   - सर्वप्रथम ब्रह्म को किसने जाना-**इन्द्र ने।**

प्रमुख मन्त्र/मन्त्रांश

- **केनोषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः। केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति।। 1.1।।**
  किसके द्वारा प्रेरित किया हुआ मन अपने विषयों तक पहुँचता है? किसके द्वारा नियोजित किया हुआ यह श्रेष्ठ प्राण चलता है? किसके द्वारा प्रेरित की हुई वाणी को मनुष्य बोलते हैं? कौन-सा अव्यक्त देव हमारे नेत्रों और कानों को कार्य में नियुक्त करता है?
- **यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।। 1.5।।**
  मन से जिसका मनन नहीं किया जा सकता; अपितु मन जिसकी महत्ता से मनन करता है।
- **नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।। 2.2।।**
  हमने ब्रह्म को भली-भाँति जान लिया है ऐसा नहीं मानते और न ही ऐसा है की हम उसे पूर्णतया नहीं जानते।

- **तस्मै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा** वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम्।। 4.8।।
- प्रतिबोधविदितं मतममृतत्त्वं हि विन्दते। आत्मना विन्दते वीर्यं **विद्यया विन्दते** ऽमृतम्।। 2.4।।

मुण्डक उपनिषद्

- अथर्ववेद शौनक शाखा का उपनिषद्
- यह तीन मुण्डकों में विभाजित है।
- ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को अध्यात्म का उपदेश दिया।
- ब्रह्म उपदेश का क्रम= ब्रह्मा→अथर्वा→अंगिरस्→सत्यवाह→अंगिरा→शौनक
- विद्या के भेद-दो- 1. परा 2. अपरा
- अपरा विद्या-वेद-वेदांग
- परा विद्या-ब्रह्मज्ञान
- वेदांगों का वर्णन किया गया है।
- ब्रह्म के व्यक्त रूपों का वर्णन-द्वितीय मुण्डक में
- द्वैतवाद का वर्णन-तृतीय मुण्डक में

प्रमुख मन्त्र/मन्त्रांश

- **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया** समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
  तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यन श्वनन्नन्यो अभिचाकशीति। । 3.1.1
  साथ-साथ रहने वाले तथा सख्यभाव वाले दो पक्षी एक ही वृक्ष पर रहते हैं। उनमें से एक उसके पिप्पल अर्थात् कर्म का स्वाद ग्रहण करता है और दूसरा निराहार रहकर अर्थात् केवल दृष्टा भाव से देखता है।
- **सत्यमेव जयते** नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः। 3.1.6
  सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं सत्य से ही देवयान मार्ग परिपूर्ण है।
- **ब्रह्मवेद ब्रह्मैव भवति।** 3.2.9
  ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्मरूप हो जाता है।
- ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम-शान्ति मन्त्र

बृहदारण्यकोपनिषद्

- शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को बृहदारण्यक उपनिषद् कहा जाता है।
- सबसे विशाल उपनिषद्
- गद्यात्मक
- गार्गी एवं याज्ञवल्क्य का राजा जनक की सभा में प्रश्नोत्तर संवाद

- याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम-मैत्रेयी

अध्याय	विषय
प्रथम	अश्वमेध यज्ञ, आत्मा से जगत् उत्पत्ति, मृत्यु सम्पूर्ण पदार्थों का ग्रास
द्वितीय	बालाकि, काशीराज और अजातशत्रु का संवाद
तृतीय	याज्ञवल्क्य का अन्य दार्शनिकों से संवाद
चतुर्थ	याज्ञवल्क्य द्वारा जनक को ब्रह्म विषयक उपदेश
पञ्चम	ब्रह्मा, प्रजापति, गायत्री, परलोक आदि के विषय में चर्चा
षष्ठ	श्वेतकेतु, आरुणि, प्रवाहण जैबलि के मध्य संवाद

प्रमुख मन्त्रांश

- अहं ब्रह्माऽस्मि
- **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मामृतं गमय।। 1.3.28।।**
- हमें असत् से सत् की ओर ले चलो, हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, हमें मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।
- **पूर्णमिदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।**
  पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
  वह पूर्ण है, यह (जगत्) भी पूर्ण है। उस पूर्ण ब्रह्म से ही यह पूर्ण विश्व प्रादुर्भाव हुआ है। उस पूर्ण ब्रह्म में से इस पूर्ण जगत् को निकाल लेने पर भी पूर्ण ब्रह्म ही शेष रह जाता है।

कठोपनिषद्

- कृष्ण यजुर्वेद कठ शाखा का उपनिषद्
- गद्यात्मक एवं पद्यात्मक शैली
- अध्याय -2
- प्रत्येक अध्याय में वल्ली-3
- यह उपनिषद् यम नचिकेता के प्रश्न प्रतिप्रश्न के रूप में है।
- **वाजश्रवस्** लौकिक कीर्ति की इच्छा से **विश्वजित** याग का अनुष्ठान करते हैं।
- विश्वजित यज्ञ को ही सर्ववेदस, सर्वमेध कहा जाता है।
- वाजश्रवस् के अन्य नाम-**उद्दालक, आरुणि, गौतम, द्वयामुष्यायण।**
- वाजश्रवा के पास कुछ गायें पीतोदक (जो जल पी चुकी हैं), जग्धतृण (जो घास खा चुकी हैं अर्थात जिनमें घास खाने की सामर्थ्य नहीं है), दुग्धदोहा (जिनका दूध दुह लिया गया है) निरिन्द्रिय (जिनकी प्रजनन शक्ति समाप्त हो गयी है) और दुर्बल थी। पिता उन गायों को यदि दान करते हैं तो निश्चय ही पुण्य नहीं प्राप्त होगा, जिससे किया जा रहा यज्ञ विफल न हो वैसा मुझे करना चाहिए यह सोचकर उसका पुत्र नचिकेता अपने पिता

से, 'मुझे किसे दान देंगे' ऐसा दो तीन बार प्रश्न करता है। तब क्रोधित होकर पिता ने 'यम को दूँगा' ऐसा बोला।

- तीन दिन बाद यम लौटे तो उन्होंने पूरी तरह थके और भूखे, मगर पक्के इरादे वाले इस छोटे से बालक को देखा। वह बिना हिले-डुले वहाँ बैठा हुआ था। वह भोजन की तलाश में इधर-उधर भी नहीं गया था। वह बस वहाँ बैठकर यम की प्रतीक्षा कर रहा था। यम इस बालक के दृढ़ निश्चय से बहुत प्रभावित हुए, जो तीन दिन से प्रतीक्षा कर रहा था, वह भी बिना कुछ ग्रहण किए। वह बोले, 'मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि तुम तीन दिन से मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो। तुम्हें क्या चाहिए? मैं तुम्हें तीन वरदान देता हूँ। अपनी इच्छा बताओ, तुम क्या चाहते हो?'
- नचिकेता यम के घर तीन दिन तक प्रतीक्षा करता है।
- यम उसे **तीन वर** माँगने को कहते हैं।
- नचिकेता का प्रथमवर-मेरे **पिता मेरे प्रति शांत संकल्प वाले, प्रसन्नचित और क्रोध रहित हो।**
- द्वितीयवर-स्वर्ग लोक प्रदान करने वाली अग्नि विद्या का ज्ञान। अग्नि विद्या का ज्ञान प्राप्त कर नचिकेता उसे यथा स्वरूप यम को बता देता है जिस कारण प्रसन्न होकर यम **अग्नि का एक नाम नचिकेता** भी प्रसिद्ध होगा वर देते हैं।
- तृतीयवर-**मृत्यु के पश्चात् आत्मा की सत्ता सम्बन्धी ज्ञान** माँगता है।
- इस प्रश्न पर यमाचार्य कहते हैं कि यह बहुत सूक्ष्म विषय है और सरलता से जानने योग्य नहीं है। इसे त्याग कर तुम 100 वर्ष की आयु वाले पुत्र-पौत्रों, पशु, हाथी, स्वर्ण, घोड़े, राज्य माँग लो।
- नचिकेता सभी भौतिक सुखों की निन्दा करता है और उन्हें मनुष्य की समस्त इन्द्रियों को नष्ट करने वाला बताता है। वह कहता है कि धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं होता।
- मनुष्य जीर्ण होने के कारण मरणधर्मा है।

नचिकेता प्रश्नः- किस तरह शरीर से होता है ब्रह्म का ज्ञान व दर्शन?

यमराज उत्तरः- मनुष्य शरीर दो आँखें, दो कान, दो नाक के छिद्र, एक मुँह, ब्रह्मरन्ध्र, नाभि, गुदा और शिश्न के रूप में 11 दरवाजों वाले नगर की तरह है, जो ब्रह्म की नगरी ही है। वे मनुष्य के हृदय में रहते हैं। इस रहस्य को समझकर जो मनुष्य ध्यान और चिंतन करता है, उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होता है। ऐसा ध्यान और चिंतन करने वाले लोग मृत्यु के बाद जन्म-मृत्यु के बंधन से भी मुक्त हो जाता है।

नचिकेता प्रश्नः- क्या आत्मा मरती या मारती है?

यमराज उत्तरः- जो लोग आत्मा को मारने वाला या मरने वाला मानते हैं, वे वास्तव में आत्मा को नहीं जानते और भटके हुए हैं, क्योंकि आत्मा न मरती है, न किसी को मार सकती है।

नचिकेता प्रश्नः- कैसे हृदय में माना जाता है परमात्मा का वास है?

यमराज उत्तरः- मनुष्य का हृदय ब्रह्म को पाने का स्थान माना जाता है। यमदेव ने बताया मनुष्य ही परमात्मा को पाने का अधिकारी माना गया है। उसका हृदय अंगूठे की माप का होता है। इसलिए इसके अनुसार ही ब्रह्म को अंगूठे के आकार का पुकारा गया है और अपने हृदय में भगवान का वास मानने वाला व्यक्ति यह मानता है कि दूसरों के हृदय में भी ब्रह्म इसी तरह विराजमान है। इसलिए दूसरों से घृणा नहीं करनी चाहिए।

नचिकेता प्रश्नः- आत्मा का स्वरूप क्या है?

यमराज उत्तरः- शरीर के नाश होने के साथ जीवात्मा का नाश नहीं होता। आत्मा का भोग-विलास, नाशवान, अनित्य और जड़ शरीर से इसका कोई लेना-देना नहीं है। यह अनन्त, अनादि और दोष रहित है। इसका कोई कारण है, न कोई कार्य अर्थात् इसका न जन्म होता है, न मरती है।

नचिकेता प्रश्नः- आत्मा-परमात्मा के ज्ञान को नहीं जानने वाले व्यक्ति है उन्हें कैसे फल भोगना पड़ता है?

यमराज उत्तरः- जिस तरह वर्षा का जल एक ही होता है, लेकिन ऊंचे पहाड़ों पर बरसने से वह एक जगह नहीं रुकता और नीचे की ओर बहता है, कई प्रकार के रंग-रूप और गंध में परिवर्तित होता है। उसी प्रकार एक ही परमात्मा से जन्म लेने वाले देव, असुर और मनुष्य भी भगवान को अलग-अलग मानते हैं और अलग मानकर ही पूजा करते हैं। बारिश के जल की तरह ही सुर-असुर कई योनियों में भटकते रहते हैं।

नचिकेता प्रश्नः- ब्रह्म का स्वरूप कैसा है, वह कहाँ से और कैसे प्रकट होते हैं?

यमराज उत्तरः- ब्रह्म प्राकृतिक गुणों से एकदम भिन्न हैं, वे स्वयं प्रकट होने वाले देवता हैं। इनका नाम वसु है। वे ही अतिथि बनकर हमारे घरों में आते हैं। यज्ञ में पवित्र अग्नि और उसमें आहुति देने वाले भी वसु देवता ही होते हैं। इसी तरह सभी मनुष्यों, श्रेष्ठ देवताओं, पितरों, आकाश और सत्य में स्थित होते हैं। जल में मछली हो या शंख, पृथ्वी पर पेड़-पौधे, अंकुर, अनाज, औषधि हो या पर्वतों में नदी, झरने और यज्ञ फल के तौर पर भी ब्रह्म ही प्रकट होते हैं। इस प्रकार ब्रह्म प्रत्यक्ष देव हैं।

नचिकेता प्रश्नः- आत्मा रहित होने के पश्चात् शरीर में क्या रह जाता है?

यमराज उत्तरः- जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तो उसके साथ प्राण और इन्द्रिय ज्ञान भी निकल जाता है। मृत शरीर में क्या शेष रहता है, यह दृष्टिगोचर तो कुछ नहीं आता, लेकिन वह परब्रह्म उस शरीर में रह जाता है, जो हर चेतन और जड़ प्राणी में विद्यमान हैं।

नचिकेता प्रश्नः- मृत्यु के बाद आत्मा को क्यों और कौन सी योनियाँ मिलती हैं?

यमराज उत्तरः- यमदेव के अनुसार अच्छे और बुरे कामों और शास्त्र, गुरु, संगति, शिक्षा और व्यापार के आधार पर पाप-पुण्य होते हैं। इनके आधार पर ही आत्मा मनुष्य या पशु इत्यादि के रूप में नया जन्म प्राप्त करती है।

नचिकेता प्रश्नः- आत्मज्ञान और परमात्मा का स्वरूप क्या है?

यमराज उत्तर:- अविनाशी प्रणव यानी ऊँकार ही परमात्मा का स्वरूप है। ऊंकार ही परमात्मा को पाने के सभी आश्रयों में सबसे सर्वश्रेष्ठ और अंतिम माध्यम है। सारे वेद कई तरह के छन्दों व मंत्रों में यही रहस्य बताए गए हैं। जगत में परमात्मा के इस नाम व स्वरूप की शरण लेना ही सबसे श्रेष्ठ मार्ग है।

ब्रह्म प्राप्ति हेतु मार्ग

आत्मा	रथी
शरीर	रथ
बुद्धि	सारथी
मन	लगाम
इन्द्रिय	घोड़े
विभिन्न विषय	मार्ग

प्रमुख मंत्र/मन्त्रांश

- **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो** (धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं होता)
- **अजो नित्यः शास्वतोऽयं पुराणो।**
  आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है।। 1.2.18 ।।
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
  बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।। 1.3.3 ।।
  आप आत्मतत्त्व को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को रथ संचालक सारथी तथा मन को लगाम मानना चाहिए।
- **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**
  क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।। 1.3.14 ।।
  हे मनुष्यों उठो, जागो, ज्ञानी मनुष्य के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञानी मनुष्य तत्त्वज्ञान के मार्ग को लांघने की कठिन धारा के दुर्गम को सरल बनाते हैं।
  अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति।। 2.1.12 ।।
- **एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति।**
  तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।। 2.2.12 ।।
  सभी शरीरधारियों में निवास करने वाला तथा सबको वश में रखने वाला परब्रह्म एक होते हुए भी अनेक रूप धारण कर लेता है। जो विद्वान सदा अपने अन्तःस्थल में स्थित उस परब्रह्म के दर्शन करते हैं, उनको ही शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है।
- **न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं।**
- **यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।**
  बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्।। 2.3.10 ।।

जब मन के साथ पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ स्थित हो जाती हैं और बुद्धि भी चेष्टा से रहित हो जाती है, उस स्थिति को परमगति कहा जाता है।

- **तां योगमिति मन्यन्ते।। 2.3.11 ।।**
  इन्द्रियों की स्थिर धारणा का नाम ही योग है।

माण्डूक्योपनिषद्

- अथर्ववेदीय उपनिषद्
- सबसे छोटा उपनिषद्-12 मंत्र
- ऊँकार की महत्ता का वर्णन
- आत्मा के चार पाद- 1. जाग्रत 2. स्वप्न 3. सुषुप्ति 4. तुरीय

जाग्रतावस्था	स्वप्नावस्था	सुषुप्तावस्था	तुरीयावस्था
प्रथम पाद	दूसरा पाद	तीसरा पाद	चौथा पाद
बहि प्रज्ञ (जिसका ज्ञान बाह्य जगत् में फैला है)	अन्तःप्रज्ञ (जिसका ज्ञान सूक्ष्म जगत् में है)	एकीभूत (जो एकरूप हो)	अदृश्य, अव्यवहार्य, अग्राह्य, अलक्षण, अचिन्त्य (जिसका चिन्तन न कर सके),
वैश्वानर-विश्व को धारण करने वाला	तैजस-प्रकाश का स्वामी	प्राज्ञ-विज्ञानस्वरूप	अद्वैत
स्थूल जगत् का भोक्ता	सूक्ष्म जगत् का भोक्ता	कारण अवस्था, आनन्दमय	अचिन्त्य
सात अंग, 19 मुख	सात अंग, 19 मुख	चेतोमुख (प्रकाश ही जिसका मुख है)	शान्त, शिव, अद्वैत
प्रथम पाद-अ मात्रा	द्वितीय पाद-उ मात्रा	तृतीय मात्रा-म् मात्रा	मात्रा रहित प्रणव
सभी भोगों की प्राप्ति होना	कुल में ब्रह्म को जानने वाले हो जाते है, ज्ञान परम्परा को उन्नत करता है।	सम्पूर्ण जगत् का ज्ञाता	परमात्मा में प्रविष्ट हो जाता है।

- 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 प्राण, 4 अन्तःकरण =19 मुख

प्रमुख मंत्र/मन्त्रांश

- **ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं०-1** ऊँ यह अक्षर अविनाशी है।
- **एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्यौ हि भूतानाम्।। 6 ।।**
  वह ब्रह्म ही सबका ईश्वर है, वह सर्वज्ञ अन्तर्यामी और सम्पूर्ण जगत् का कारण भूत है। वही सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश का कारण है।

ऐतरेय उपनिषद्

- सम्बन्धित वेद-ऋग्वेद
- ऐतरेय आरण्यक के द्वितीय आरण्यक के 4 से 6 अध्यायों का नाम-ऐतरेय उपनिषद्।
- कुल अध्याय-3
- सर्वप्रथम परब्रह्म विद्यमान था। उसने सृष्टि रचने की इच्छा होने पर चार लोकों की रचना की—
  - अम्भ=द्युलोक मर=पृथ्वी लोक
  - मरीचि =अन्तरिक्ष लोक आपस्= जल

इनके लिए फिर परब्रह्म ने **जल से हिरण्यगर्भ** को निर्मित किया। फिर उस हिरण्यगर्भ से विभिन्न अङ्गों-उपाङ्गों से विभिन्न देवता प्रकट हुए। प्रकट हुए देवताओं ने ब्रह्म से शरीर की कामना की सबसे पहले गौ का फिर घोड़ों का उसके उपरान्त मनुष्य का शरीर लेकर आया गया (जिसमें निवास की व्यवस्था की गई)।

शरीर का अङ्ग	अङ्ग से आविर्भाव	प्रकट लोकपाल
मुख	वाणी	अग्नि
नासिका	प्राण	वायु
चक्षु	चक्षु	आदित्य
श्रोत्र	श्रोत्र	दिशा
त्वचा	रोम	औषधि
हृदय	मन	चन्द्रमा
नाभि	अपान वायु	मृत्यु
शिश्न	वीर्य	जल

- फिर ब्रह्म ने उन शरीर में स्थान पाए देवताओं के लिए अन्न की व्यवस्था की इन्द्रियों एवम् मन के असफल प्रयास के पश्चात् उसे **अपान वायु** से ग्रहण किया गया।
- **परमब्रह्म ने उस शरीर में मूर्धा अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र से प्रवेश किया।** विदीर्ण किया हुआ द्वार होने के कारण इसे **विदृति** कहा जाता है।
- उस मनुष्य ने परब्रह्म को देखा। देखने के कारण परमात्मा का नाम इन्द्र है।
- पुरुष के तीन जन्मों का निर्देश दिया गया है। (द्वितीय अध्याय में)—
  - प्रथम-वीर्य का स्त्री गर्भ में जाना
  - द्वितीय-जन्म लेना
  - तृतीय-मृत्यु उपरान्त पुनः जन्म लेना
  - वामदेव जी के द्वारा गर्भ में ही तीनों जन्मों को जान लिया जाता है।
- आत्मा के स्वरूप का वर्णन-तीसरे अध्याय में।

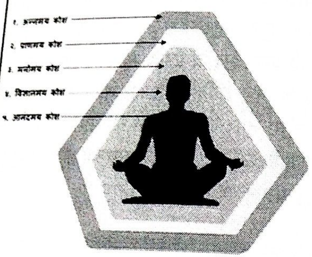
- आत्मा कौन है?
- हृदय, मन, संज्ञान, आज्ञा देने की शक्ति, विज्ञान, मेधा, दृष्टि, धृति, मति, मनीषा, वेग, स्मृति, संकल्प, मनोरथ शक्ति, प्राण शक्ति काम एवं वश—ये उस आत्मा के ही बोधक लक्षण हैं। यह प्रज्ञान ही ब्रह्मा, इन्द्र, प्रजापति, समस्त देवगण, पञ्चमहाभूत तथा उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज आदि सब प्रकार जीव-जन्तु हैं। यही हाथी, घोड़े, मनुष्य तथा सम्पूर्ण स्थावर जंगम जगत् है। इस प्रकार यह सारा संसार प्रज्ञान में स्थिति है, प्रज्ञान से ही प्रेरित होने वाला है और स्वयं भी प्रज्ञानस्वरूप ही है, तथा प्रज्ञान ही ब्रह्म है।
- **प्रज्ञानं ब्रह्म। 3.1.3** प्रज्ञान को ही ब्रह्म कहा गया है।

तैत्तिरीयोपनिषद्

- **तैत्तिरीय आरण्यक के सप्तम, अष्टम एवं नवम प्रपाठक** को तैत्तिरीय उपनिषद् कहा जाता है।
- तीन प्रपाठक- **शिक्षावल्ली, ब्रह्मवल्ली, भृगुवल्ली**
- शिक्षा का महत्त्व-शिक्षावल्ली में
- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान-शिक्षा की व्याख्या (6)
- अकारादि-वर्ण (अ से ह् तक)
- उदात्तादि-स्वर (उदात, अनुदात और स्वरित)
- ह्रस्वादि-मात्रा (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत)
- शब्द उच्चारण के समय होने वाला प्रयत्न-बल (बाह्य और आभ्यन्तर)
- एक ही नियम से उच्चारण करना-साम
- संहिता ही संतान है।
- संहिता को पाँच अधिकरणों में विभाजित किया गया है- अधिलोक, अधिज्योतिष, अधिविध, अधिप्रज, अध्यात्म

ब्रह्मवल्लीः-पञ्चकोश की अवधारणा

कोश	कोश सिर	दक्षिण पंख	वाम पंख	धड़ (आत्मा)	आश्रय	शरीर
अन्नमय	सिर	दाँया	बाँया	धड़	पूँछ	स्थूल शरीर
प्राणमय	प्राण	बाँया	अपान	आकाश	पृथिवी	सूक्ष्म शरीर
मनोमय	यजुः	ऋक्	साम	आदेश	अथर्व	
विज्ञानमय	श्रद्धा	ऋत	सत्य	योग	महः	
आनन्दमय	प्रिय	मोद	प्रमोद	आनन्द	ब्रह्म	कारण शरीर



पंचकोश

पञ्चकोशः- शरीर के आवरण है जिनमें से अन्नमयकोश सबसे बाहरी आवरण है। यह स्थूल शरीर को चिन्हित करता है—

- ❖ प्राणमय, मनोमयकोश और विज्ञानमय कोश इसके बाद आते हैं। यह सभी सूक्ष्म शरीर है।
- ❖ आनन्दमय कोश सबसे अन्दर और कारण शरीर है।

प्रमुख मन्त्र/मन्त्रांश

- ❖ **ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।**
  वह परमात्मा हम दोनों की साथ-साथ रक्षा करे। हम दोनों का साथ-साथ पोषण करे। हम दोनों एक साथ पराक्रम करें। हमारा अध्ययन तेज युक्त हो। हम परस्पर द्वेष भाव से दूर हो।
- ❖ **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म** (ब्रह्म सत्य ज्ञानस्वरूप और अनन्त है)
- ❖ **अन्नं भूतानां ज्येष्ठम्** (अन्न सब भूतों में श्रेष्ठ है।)

भृगुवल्ली

- ❖ वरुण का अपने पुत्र भृगु से ब्रह्म विषयक संवाद।
- ❖ **भृगु** का प्रश्न-ब्रह्म का तत्त्व समझाएँ।
- ❖ **वरुण** का उत्तर- तात् ! अन्न, प्राण, नेत्र, श्रोत्र, मन और वाणी यह सभी ब्रह्म की उपलब्धि के द्वार हैं।
- ❖ जिससे सभी प्राणी उत्पन्न होकर, जिसके बल पर जीते हैं और जिसमें अन्त में मिल जाते हैं। वह ब्रह्म है।

- ❖ पिता के आदेश से भृगु ने तप किया और क्रम से अन्न, प्राण, मन, विज्ञान और आनन्द को ब्रह्म जाना। यह सभी वास्तव में पञ्चकोश ही है, जिन्हें ऋषि भृगु ने स्थूल से आरम्भ करके आनन्द के क्रम में जानकर ब्रह्म को जान लिया।
- ❖ **अन्नं न निन्द्यात्** (अन्न की निन्दा न करें।)
- ❖ **प्राणो वा अन्नम्।** (प्राण ही अन्न है।)
- ❖ **अन्नं न परिचक्षीत** (अन्न की अवहेलना न करें।)

प्रमुख मन्त्रांश

- ❖ सत्यं वद। धर्मं चर।
- ❖ स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
- ❖ मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।
- ❖ आचार्य देवो भव।
- ❖ अतिथिदेवो भव।

प्रश्नोपनिषद्

- ❖ अथर्ववेदीय उपनिषद्
- ❖ यह पिप्पलाद शाखीय ब्राह्मण भाग के अन्तर्गत आता है।
- ❖ महर्षि पिप्पलाद ने सुकेशा आदि छः ऋषियों के प्रश्नों के उत्तर दिए, इसलिए इसका नाम प्रश्नोपनिषद् है।
- ❖ परब्रह्म को जानने की इच्छा से महर्षि पिप्पलाद के पास गए, महर्षि ने उन्हें एक वर्ष तक श्रद्धा, ब्रह्मचर्य और तपस्या से एक वर्ष निवास करने के उपरान्त प्रश्न करने का आदेश दिया।

गोत्र/पिता/स्थान	जिज्ञासु	प्रश्न	उत्तर
कात्यायन	कबन्धी	प्रजा किससे उत्पन्न होती है?	प्रजापति द्वारा उत्पन्न रयि और प्राण से
भृगु/विदर्भ देशीय	वैदर्भि/भार्गव	1. प्रजा को कुल कितने देवता धारण करते हैं? 2. कौन-2 इसे प्रकाशित करते हैं? 3. कौन सब देवों में सर्वश्रेष्ठ है?	1. पञ्च महाभूत धारक है। 2. चौदह देवता शरीर के प्रकाशक है (5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार- 4 अन्तःकरण) 3. प्राण सबसे श्रेष्ठ है।

गोत्र/पिता/स्थान	जिज्ञासु	प्रश्न	उत्तर
कौशल देश निवासी	आश्वलायन	1. प्राण स्वयं किससे उत्पन्न होता है? 2. वह शरीर में कैसे प्रवेश करता है? 3. शरीर में अपने आप को विभक्त करके किस प्रकार स्थित रहता है? 4. शरीर से निकलकर किस प्रकार दूसरा शरीर धारण करता है? 5. बाह्य संसार को किस प्रकार धारण करता है? 6. मन, इन्द्रिय आदि आध्यात्मिक जगत् को किस प्रकार धारण करता है?	1. आत्मा से 2. मन से 3. पञ्च भोगों में विभक्त करके 4. उदान से 5. उदान के भौतिक तेज के द्वारा 6. प्राण तेज और चित्त के द्वारा
गर्ग गोत्र	गार्ग्य/सौर्यायणी	1. मनुष्य शरीर में कौन-कौन सोते हैं? 2. कौन-कौन जागते रहते हैं? 3. यह कौन देवता स्वप्नों को देखता है? 4. यह सुख किसे प्राप्त प्राप्त होता है? 5. यह सब किसमें सम्पूर्णता स्थित रहते हैं?	1. मन 2. प्राण 3. मन 4. सत्त्व युक्त आत्मा 5. आत्मा
शिबि	सत्यकाम	मृत्युपर्यन्त ओंकार का ध्यान करने पर व्यक्ति किसे जीत लेता है?	एक मात्रा की उपासना से-मनुष्यलोक दो मात्राओं-चन्द्रलोक पूर्ण ऊँकार से-ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।
भारद्वाज	सुकेशा	सोलह कलाओं से युक्त पुरुष कहाँ रहता है?	शरीर

❖ महर्षि पिप्लाद ने संवत्सर, महीना, दिन-रात का जोड़ा, अन्न को प्रजापति माना है।

रयि	प्राण
भोग्य	भोक्ता
चन्द्रमा	आदित्य
रात	दिन
कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
दक्षिणायन	उत्तरायण
पितृयान	देवयान
प्रवृत्ति मार्ग	निवृत्ति मार्ग
प्रेय मार्ग	श्रेय मार्ग

❖ प्राण पितरों के लिए प्रथम स्वधा है।

❖ जीवात्मा हृदय में निवास करता है। हृदय मूलरूप से सौ नाड़ियों का समूह है, उन एक-एक नाड़ी से एक सौ शाखाएँ हैं तथा पुनः प्रत्येक शाखा नाड़ी की बहत्तर-बहत्तर हजार प्रतिशाखा नाड़ियाँ होती हैं। इस प्रकार शरीर में कुल **बहत्तर करोड़ नाड़ियाँ हैं** जिनमें व्यान वायु विचरण करता है।

विभिन्न प्राण और उनके निवास स्थान (तीसरे प्रश्न के अन्तर्गत)		भौतिक जगत् में प्राण प्रतीक
अपान	गुदा एवं उपस्थ	पृथ्वी
प्राण	मुख, नासिका, नेत्र, श्रोत्र	आदित्य
समान	शरीर के मध्य में	आकाश
व्यान	शरीर की नाड़ियों में	वायु
उदान	ऊर्ध्वगामी नाड़ी में	तेज

❖ छठे प्रश्न में कोसलदेश के राजकुमार हिरण्यनाभ का वर्णन मिलता है।

❖ सृष्टिक्रम- ईश्वर ने सर्वप्रथम निर्माण किया प्राण-श्रद्धा-पञ्च महाभूत (आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी)-मन-अन्न से वीर्य-तप-मन्त्र-कर्म-विभिन्न लोक-नाम को क्रमशः रचित किया। (16 कलाएँ)

❖ गद्यात्मक उपनिषद्

❖ **अन्नं वै प्रजापति**

छान्दोग्य उपनिषद्

❖ सामवेद के तलवकार शाखा का उपनिषद्

❖ 8 अध्याय-154 खण्डों में विभक्त है।

❖ गद्यात्मक

- ❖ साम एवं उद्गीथ की महत्ता का वर्णन-प्रथम अध्याय
- ❖ ऊँ की उत्पत्ति का वर्णन-द्वितीय अध्याय में
- ❖ सूर्य उपासना का वर्णन-तृतीय अध्याय
- ❖ सत्यकाम, जाबालि, रैवत के आख्यान-चतुर्थ अध्याय
- ❖ श्वेतकेतु, आरुणेय, प्रवाहण जैबलि संवाद-पञ्चम अध्याय
- ❖ बृहदारण्यक की विभिन्न कथा-षष्ठम अध्याय
- ❖ नारद, सनत्कुमार संवाद का-सप्तम अध्याय
- ❖ भूतों का रस पृथ्वी है। पृथ्वी का रस जल है। जल का रस ओषधियाँ हैं, ओषधियों का रस पुरुष है, पुरुष का रस वाक् है, वाक् का रस ऋक् है। ऋक् का रस साम है और साम का रस उद्गीथ है।
- ❖ शाण्डिल्य विद्या का वर्णन
  - ♦ तृतीय प्रपाठक, चौदहवाँ खण्ड
  - ♦ यह **सारा जगत निश्चय ब्रह्म ही** है, यह उसी से उत्पन्न होने वाला, उसी में लीन होने वाला और उसी में चेष्टा करने वाला है- इस प्रकार शान्त होकर उपासना करे, क्योंकि पुरुष निश्चय ही क्रतुमय- निश्चयात्मक है, इस लोक में पुरुष जैसे निश्चय वाला होता है वैसा ही यहाँ से मरकर जाने पर होता है। अतः उस पुरुष को निश्चय करना चाहिए।
  - ♦ वह ब्रह्म मनोमय, प्राणशरीर, प्रकाशस्वरूप, सत्यसंकल्प, आकाशशरीर, सर्वकर्मा, सर्वकाम, सर्वगन्ध, सर्वरस, इस सम्पूर्ण जगत को सब ओर से व्याप्त करने वाला, वाग्-रहित और सम्भ्रमशून्य है।
- ❖ प्राण एवं अपान की संधि व्यान है, जिसकी उपासना करनी चाहिए।

प्रमुख मंत्रांश

- ❖ तत्त्वमसि
- ❖ सर्वं खल्विदं ब्रह्म
- ❖ विज्ञानमानन्दं ब्रह्म
- ❖ इतिहास पुराण पञ्चं वेदानाम्

वेदाङ्ग

- ❖ वेदार्थ ज्ञान में सहायक शास्त्र को ही वेदांग कहा जाता है।
- ❖ वेदाङ्ग 6 हैं—

  1. शिक्षा, 2. कल्प, 3. व्याकरण, 4. निरुक्त, 5. छन्द, 6. ज्योतिष।

- ❖ छन्द को वेदों का पाद, कल्प को हाथ, ज्योतिष को नेत्र, निरुक्त को कान, शिक्षा को नाक, व्याकरण को मुख कहा गया है—

  छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
  ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
  शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
  तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

- ❖ वेदाङ्गों के नाम तथा क्रम का सर्वप्रथम वर्णन मुण्डकोपनिषद् में मिलता है।
- ❖ वेद-वेदाङ्ग अपरा विद्या है।
  - ♦ **शिक्षा-**

"स्वरवर्णाद्युच्चारण प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा"।

अर्थात् जिसके द्वारा हमें वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान होता है, उन्हें हम शिक्षा कहते हैं।

- ❖ शिक्षा को वेदरूपी पुरुष का घ्राण बताया है-"**शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य**"।
- ❖ तैत्तिरीयोपनिषद् मे शिक्षा के 6 अङ्गों का विवेचन हुआ है—

  1. वर्ण, 2. स्वर, 3. मात्रा, 4. बल, 5. साम, 6. सन्तान।

- ❖ वर्णों के स्थान आठ हैं - (1) जिह्वा, (2) कंठ, (3) मूर्धा, (4) जिह्वामूल, (5) दंत, (6) नासिका, (7) ओष्ठ और (8) तालु।

  कण्ठः - अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - (अ्, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्,ः = विसर्गः)

  तालुः - इचुयशानां तालुः - (इ, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्)

  मूर्धा - ऋटुरषाणां मूर्धा - (ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र्, ष्)

  दन्तः - लृतुलसानां दन्तः - (लृ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल्, स्)

  ओष्ठः - उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ - (उ, प्, फ्, ब्, भ्, म्, उपध्मानीय प्, फ्)

  नासिका च - ञमङणनानां नासिका च (ञ्, म्, ङ्, ण्, न्)

  कण्ठतालुः - एदैतोः कण्ठतालुः - (ए, ऐ)

  कण्ठोष्ठम् - ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - (ओ, औ)

  दन्तोष्ठम् - वकारस्य दन्तोष्ठम्

  जिह्वामूलम् - जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् (जिह्वामूलीय क्, ख्)

  नासिका - नासिकानुस्वारस्य (ं = अनुस्वारः)

  इन आठ स्थानों में से यथायोग्य रीति से, जहाँ से जैसा होना चाहिए वैसा, वर्णोच्चार करने की शिक्षा पाणिनीय शिक्षा देती है। अतः हम इसको '**वर्णोच्चार शिक्षा**' भी कह सकते हैं।

❖ **प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ—**

ऋग्वैदिक शिक्षा-पाणिनीय शिक्षा

यजुर्वैदिक शिक्षा-याज्ञवल्क्य शिक्षा

सामवेद के शिक्षा-नारदीय शिक्षा

अथर्ववेद के शिक्षा-मण्डूकी शिक्षा

❖ कल्प—

जिन ग्रन्थों में यज्ञ के प्रयोगों की कल्पना या समर्थन किया जाये, उन्हें कल्प के नाम से जाना जाता है-"**कल्पयन्ते समर्थ्यन्ते यज्ञ-यागादि प्रयोगाः यत्र इति कल्पः**"।

❖ कल्प को वेदरूपी पुरुष का हाथ स्वीकार किया गया है-"**हस्तो कल्पोऽथपठ्यते**"।

❖ विषय की दृष्टि से कल्पसूत्रों को चार भागों में विभक्त किया गया है—

1. श्रौतसूत्र-यज्ञों, दर्शपौर्णमास, चातुर्मास्य, सोमयाग, वाजपेय आदि का वर्णन।
2. गृह्यसूत्र- सोलह संस्कारों का वर्णन।
3. धर्मसूत्र-आचार, व्यवहार और प्रायश्चित का वर्णन।
4. शुल्बसूत्र- रेखागणित का वर्णन।

❖ **व्याकरण—**

'व्याकरण वह वेदाङ्ग है, जो पदों की प्रकृति तथा प्रत्यय का उपदेश देकर पदों के स्वरूप का परिचय कराता है'—"**व्याक्रियन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्**"।

❖ व्याकरण को वेदरूपी पुरुष का मुख स्वीकार किया है-"**मुखं व्याकरणं स्मृतम्**"।

❖ व्याकरण के 5 मुख्य प्रयोजनों का उल्लेख मिलता है- 1. रक्षा, 2. ऊह, 3. आगम, 4. लघु और 5. असंदेह—

1. व्याकरण का अध्ययन किया जाता है है वेदों की रक्षा हेतु।
2. ऊह का अर्थ है-कल्पना। वैदिक मन्त्रों में न तो लिंग है और न ही विभक्तियाँ। लिंगों और विभक्तियों का प्रयोग वही कर सकता है जो व्याकरण का ज्ञाता हो।
3. आगम का अर्थ है- श्रुति। श्रुति कहती है कि ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि वह वेदों का अध्ययन करें।
4. लघु का अर्थ है-शीघ्र उपाय। वेदों में अनेक ऐसे शब्द हैं जिनकी जानकारी एक जीवन में सम्भव नहीं है। व्याकरण वह साधन है जिससे समस्त शास्त्रों का ज्ञान हो जाता है।
5. असंदेह का अर्थ है-संदेह न होना। संदेहों को दूर करने वाला व्याकरण होता है, क्योंकि वह शब्दों का समुचित ज्ञान करवाता है।

❖ **व्याकरण की परम्परा-**

ब्रह्मा→बृहस्पति→इन्द्र→भारद्वाज→अन्य ऋषि।

❖ सम्प्रति व्याकरण का प्रतिनिधि ग्रन्थ-पाणिनीय व्याकरण

♦ **निरुक्त**- निरुक्त 'निघण्टु के ऊपर लिखी गई टीका है, जिसका कार्य है, वैदिक पदों की निरुक्ति(व्युत्पत्ति) बतलाना।

❖ महाभारत शान्ति पर्व के अनुसार निघण्टु के प्रणेता प्रजापति कश्यप है।

❖ निरुक्त को वेदरूपी पुरुष का श्रोत्र (कान स्वीकार किया है-"**निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते**"।

❖ निघण्टु में कुल पाँच अध्याय हैं।

❖ सम्प्रति यास्क रचित 'निरुक्त' ही निरुक्त वेदाङ्ग का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कुल 14 अध्याय है।

♦ **छन्द**- छन्द का उदेश्य वैदिक मन्त्रों के समुचित पाठ की सुरक्षा करना है।

❖ छन्दवेदाङ्ग को वेद रूपी पुरुष के पादों के रूप में स्वीकार किया गया है-"**छन्दः पादौ तु वेदस्य**"।

❖ छन्दवेदाङ्ग का प्रतिनिधि ग्रन्थ 'पिङ्गल' कृत 'छन्द-सूत्र' माना जाता है।

❖ प्रमुख छन्द एवं उसके अक्षर—

गायत्री-24

उष्णिक्-28

अनुष्टुप्-32

बृहती-36

पंक्ति-40

त्रिष्टुप्-44

जगती-48

♦ **ज्योतिष**- वेद की प्रवृत्ति यज्ञ सम्पादन के लिए है, और यज्ञ का विधान विशिष्ट समय की अपेक्षा रखता है। नक्षत्र, तिथि, वार, मास आदि की जानकारी वैदिक कर्मकाण्ड के लिए आवश्यक है, अतः इसके लिए ज्योतिष का अवगाहन आवश्यक है।

❖ ज्योतिष को वेद रूपी पुरुष का नेत्र के रूप में स्वीकार किया गया है-"**ज्योतिषामयनं चक्षुः**"।

❖ आचार्य लगध रचित वेदाङ्ग ज्योतिष के दो प्रतिनिधिग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

ऋग्वेद से सम्बन्धित-आर्षज्योतिष

यजुर्वेद से सम्बन्धित-याजुस् ज्योतिष

रामायण

❖ 24000 श्लोक, अतः इसे **चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता** भी कहा जाता है।

❖ मुख्य छंद-अनुष्टुप्

❖ महर्षि वाल्मीकि कृत

❖ प्रधान रस-करूण

❖ 7 कांड- बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका (युद्ध), उत्तरकाण्ड

काण्ड नाम	सर्ग संख्या	प्रमुख घटना
1. बालकाण्ड	77 सर्ग	✓राम को बला, अतिबला विद्या की प्राप्ति, ताड़का वध, अहल्या उद्धार, राम-विवाह, सगरोपाख्यान, गंगावतरण आख्यान।
2. अयोध्या काण्ड	119 सर्ग	✓वन-प्रवेश, दशरथ मृत्यु, भरत संताप, जाबालि का नास्तिक मत एवं राम द्वारा खण्डन।
3. अरण्य काण्ड	75 सर्ग	✓दण्डकारण्य में प्रवेश, जटायु की रावण द्वारा हत्या, कबन्ध से भेंट, हेमन्त ऋतु का वर्णन, राम विलाप, पम्पा सरोवर दर्शन।
4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग (सबसे छोटा)	✓राम और सुग्रीव का मैत्री, वालि वध, राम का प्रस्रवण गिरि पर चतुर्मास-यापन, लक्ष्मण का कोप।
5. सुन्दर काण्ड	68 सर्ग	✓हनुमान का लङ्का में प्रवेश करना, राम की दी हुई अँगूठी सीता को देना, लङ्का -दहन, वानरों का मधुवन-घर्षण, हनुमान इस काण्ड के नायक हैं जिसका एक नाम सुन्दर भी है।
6. युद्ध काण्ड	128 सर्ग (सबसे बड़ा)	✓राम के शरण मे विभीषण, नल द्वारा समुद्र पर सेतुबन्ध, कुम्भकर्ण, मेघनाद, रावण एवं अन्य राक्षसों का वध, राम द्वारा सूर्य पूजा।
7. उत्तर काण्ड	111 सर्ग	✓सीता परित्याग, राजा नृग, उर्वशी, वसिष्ठ आख्यान, शम्बूक वध।
कुल सर्ग	**645 सर्ग**	

- रामायण की टीकाएँ—
  - रामायणतत्त्व दीपिका-महेश्वर तीर्थ
  - दीपिका-वैद्यनाथ दीक्षित
  - सर्वार्थसार-वेङ्कटाकृष्णध्वरी
  - रामायण तिलक-नागोजीभट्ट
  - तिलक-रामवर्मा

महाभारत

- रचियता-महर्षि वेद व्यास
- पिता-पराशर ऋषि
- माता का नाम-सत्यवती
- यमुनाद्वीप में जन्म होने के कारण व्यास को **द्वैपायन** कहा जाता है।
- शरीर से कृष्ण होने के कारण **कृष्णमुनि** कहा जाता है।

- जन्मस्थान-उत्तरापथ हिमालय।
- व्यास ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।
- लेखक-गणेश जी।
- श्लोक- लगभग एक लाख दस हजार (1,10000) इसलिए इसे **शत-साहस्री संहिता** भी कहा जाता है।
- प्रचारक-वैशम्पायन, शुक, सूत, जैमिनि, पैल।
- पञ्चम वेद
- रीति-पाञ्चाली
- प्रमुख छंद-अनुष्टुप्
- उपनाम-जय संहिता, भारत, महाभारत ग्रंथ।
- जय (8800 श्लोक) भारत (24000 श्लोक) महाभारत (100000 श्लोक)
- जय का प्रवचन-व्यास जी वैशम्पायन को।
- भारत-वैशम्पायन ने जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर।
- महाभारत-प्रवक्ता सौति ऋषि थे जो वैशम्पायन से सुने थे।
- **मंगलाचरण**- नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
  देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।
- महाभारत 18 पर्वों में विभक्त है जिनमें अनेक उपपर्व मुख्य घटनाओं के शीर्षक के रूप में है—

पर्व	अध्याय	प्रमुख घटना	विशेष
आदि	233	✓कौरव, पाण्डव के जन्म वृत्तांत	शकुन्तलोपाख्यान ययात्सुपाख्यान
सभा	81	✓जरासन्ध वध, शिशुपाल वध, जुए में पाण्डवों का पराजय	शिशुपालोपाख्यान
वन	315	✓जयद्रथ द्वारा द्रौपदी का हरण, कर्ण का कवच कुण्डल ले लिया जाना	नलोपाख्यान, रामोपाख्यान, शिवि-उपाख्यान, सावित्री-उपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, किराता-र्जुनीयम्, नलचम्पू
विराट	72	✓पाण्डवों का वेश बदलकर मत्स्यराज विराट के यहाँ रहना, अभिमन्यु और उत्तरा का विवाह	

पर्व	अध्याय	प्रमुख घटना	विशेष
उद्योग	116	✓अम्बा का दूसरे जन्म में द्रुपद के घर शिखण्डी के रूप में जन्म	अम्बोपाख्यान
		✓भीष्म का शरशय्या पर जाना	श्रीमद्भगद्गीता
भीष्म	122		
द्रोण	202	✓अभिमन्यु, जयद्रथ, घटोत्कच तथा द्रोणाचार्य वध	
कर्ण	96	✓कर्ण वध	
शल्य	65	✓अन्तिम दिन के युद्ध के वर्णन	भीम और दुर्योधन का गदा युद्ध
सौप्तिक	18	✓कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पांच पुत्र वध	दुर्योधन का प्राण त्यागना
स्त्री	27	✓स्त्री विलाप, मृतकों का श्राद्ध	
शान्ति	365 (सबसे बड़ा)	✓राजधर्मानुशासन,	पराशरगीता, हंस गीता
अनुशासन	166	✓भीष्म का स्वर्गारोहण	शिवसहस्रनामस्तोत्र, विष्णुसहस्रनामस्तोत्र, गजेन्द्र मोक्ष वर्णन
आश्वमेधिक	92	✓युधिष्ठिर का राज्य संचालन	अनुगीता
आश्रमवासिक	39	✓धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी, कुन्ती और विदुर का वन में आश्रम	
मौसल	8	✓कृष्ण का एक व्याध द्वारा भ्रमवश वध	
महाप्रास्थानिक	3 (सबसे छोटा)	✓पाण्डवों के हिमालय यात्रा	
स्वर्गारोहण	5	✓पाण्डवों का दिव्यलोक गमन	भारत-सावित्री उपाख्यान

❖ **महाभारत की टीकाएँ—**

टीका	टीकाकार
विषमश्लोकी	विमलबोध
ज्ञानदीपीका	देवबोध
निगूढार्थ पदबोधिनी	नारायण
लक्षाभरणटीका	वादिराज
भारत-भावदीप	नीलकण्ठ

पुराण

'पुराण' का शाब्दिक अर्थ है – 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। 'पुरा' शब्द का अर्थ है – अनागत एवं अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है – कहना या बतलाना। रघुवंश में पुराण शब्द का अर्थ है **"पुराण पत्रापगमागन्तरम्"** एवं वैदिक वाङ्मय में **"प्राचीनः वृत्तान्तः"** दिया गया है। अमरकोष आदि प्राचीन कोशों में पुराण के पाँच लक्षण माने गये हैं—सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय, पुनर्जन्म), वंश (देवता व ऋषि सूचियाँ), मन्वन्तर (चौदह मनु के काल), और वंशानुचरित (सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरित)।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

- **सर्ग** – पंचमहाभूत, इन्द्रियगण, बुद्धि आदि तत्त्वों की उत्पत्ति का वर्णन।
- **प्रतिसर्ग** – ब्रह्मादिस्थावरान्त संपूर्ण चराचर जगत् के निर्माण का वर्णन।
- **वंश** – सूर्यचन्द्रादि वंशों का वर्णन।
- **मन्वन्तर** – मनु, मनुपुत्र, देव, सप्तर्षि, इन्द्र और भगवान् के अवतारों का वर्णन।
- **वंशानुचरित** – प्रति वंश के प्रसिद्ध पुरुषों का वर्णन।

❖ पुराणों की संख्या प्राचीन काल से **अठारह** मानी गयी है। पुराणों में एक विचित्रता यह है कि प्रायः प्रत्येक पुराण में अठारहों पुराणों के नाम और उनकी श्लोक-संख्या का उल्लेख है। देवीभागवत में नाम के आरंभिक अक्षर के निर्देशानुसार 18 पुराणों की गणना इस प्रकार की गयी हैः

❖ **मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।**
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।।

❖ म-2, भ-2, ब्र-3, व-4।
अ-1, ना-1, प-1, लिं-1, ग-1, कू-1, स्क-1।।

❖ 'विष्णुपुराण' के अनुसार अठारह पुराणों के नाम इस प्रकार हैं–ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शैव (वायु), भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड और ब्रह्माण्ड।

पुराण	श्लोकों की संख्या
ब्रह्मपुराण	14000
पद्मपुराण	55000
विष्णुपुराण	13000
शिवपुराण	24000
श्रीमद्भावतपुराण	18000
नारदपुराण	25000

पुराण	श्लोकों की संख्या
मार्कण्डेयपुराण (सबसे छोटा)	9000
अग्निपुराण	15000
भविष्यपुराण	14500
ब्रह्मवैवर्तपुराण	18000
लिंगपुराण	11000
वराहपुराण	24000
स्कन्दपुराण (सबसे बड़ा)	81000
वामनपुराण	10000
कूर्मपुराण	17000
मत्स्यपुराण	14000
गरुड़पुराण	19000
ब्रह्माण्डपुराण	12000

1. **ब्रह्मपुराण** : इसे "**आदिपुराण**" भी कहा जाता है। प्राचीन माने गए सभी पुराणों में इसका उल्लेख है। इसमें श्लोकों की संख्या अलग- 2 प्रमाणों से भिन्न-भिन्न है। 10,000,12,000 और 13,787 ये विभिन्न संख्याएँ मिलती है। इसका प्रवचन नैमिषारण्य में लोमहर्षण ऋषि ने किया था। इसमें सृष्टि, मनु की उत्पत्ति, उनके वंश का वर्णन, देवों और प्राणियों की उत्पत्ति का वर्णन है। इस पुराण में विभिन्न तीर्थों का विस्तार से वर्णन है। इसमें कुल 245 अध्याय हैं। इसका एक परिशिष्ट सौर उपपुराण भी है, जिसमें उड़ीसा के कोणार्क मन्दिर का वर्णन है।
2. **पद्मपुराण** : इसमें कुल 641 अध्याय और 48,000 श्लोक हैं। मत्स्यपुराण के अनुसार इसमें 55,000 और ब्रह्मपुराण के अनुसार इसमें 59,000 श्लोक थे। इसमें कुल खण्ड हैं-(क) सृष्टिखण्ड : 5 पर्व, (ख) भूमिखण्ड, (ग) स्वर्गखण्ड, (घ) पातालखण्ड और (ङ) उत्तरखण्ड। इसका प्रवचन नैमिषारण्य में सूत उग्रश्रवा ने किया था। ये लोमहर्षण के पुत्र थे। इस पुराण में अनेक विषयों के साथ विष्णुभक्ति के अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। इसका विकास 5 वीं शताब्दी माना जाता है।
3. **विष्णुपुराण** : इसमें विष्णु को परम देवता के रूप में निरूपित किया गया है। इसमें कुल छः खण्ड हैं, 126 अध्याय, श्लोक 23,000 या 24,000 या 6,000 हैं। इस पुराण के प्रवक्ता पराशर ऋषि और श्रोता मैत्रेय हैं।
4. **वायुपुराण** : इसमें 112 अध्याय, 11,000 श्लोक हैं। इस पुराण का प्रचलन मगध-क्षेत्र में बहुत था। इसमें **गया-माहात्म्य** है। इसमें कुल चार भाग है : (क) प्रक्रियापाद - (अध्याय-1-6), (ख) उपोद्घात : (अध्याय-7 - 64), (ग) अनुषङ्गपाद:-(अध्याय-65-99), (घ) उपसंहारपाद:-(अध्याय-100-112)। इसमें

सृष्टिक्रम, भूगो, खगोल, युगों, ऋषियों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, ऋषिवंशों,, वेद की शाखाओं, संगीतशास्त्र और शिवभक्ति का विस्तृत निरूपण किया गया है।

5. **भागवतपुराण** : यह सर्वाधिक प्रचलित पुराण है। इसे सभी दर्शनों का सार "**निगमकल्पतरोर्गलितम्**" और विद्वानों का परीक्षास्थल "**विद्यावतां भागवते परीक्षा**" माना जाता है। इसमें श्रीकृष्ण की भक्ति के सन्दर्भ में बताया गया है। इसमें कुल 12 स्कन्ध, 335 अध्याय और 18,000 श्लोक हैं। इसका रचनाकाल 6ठी शताब्दी माना जाता है।
6. **नारद (बृहन्नारदीय) पुराण** : इसे महापुराण भी कहा जाता है। इसमें वैष्णवों के उत्सवों और व्रतों का वर्णन है। इसमें 2 खण्ड है : (क) पूर्व खण्ड में 125 अध्याय और (ख) उत्तर-खण्ड में 82 अध्याय हैं। इसमें 18,000 श्लोक हैं। इसके विषय मोक्ष, धर्म, नक्षत्र, एवं कल्प का निरूपण, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, गृहविचार, मन्त्रसिद्धि,, वर्णाश्रम-धर्म, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि का वर्णन है।
7. **मार्कण्डेयपुराण** : इसे प्राचीनतम पुराण माना जाता है। इसमें इन्द्र, अग्नि, सूर्य आदि वैदिक देवताओं का वर्णन किया गया है। इसके प्रवक्ता मार्कण्डय ऋषि और श्रोता क्रौष्टुकि शिष्य हैं। इसमें 138 अध्याय और 7,000 श्लोक हैं। इसमें गृहस्थ-धर्म, श्राद्ध, दिनचर्या, नित्यकर्म, व्रत, उत्सव, अनुसूया की पतिव्रता-कथा, योग, दुर्गा-माहात्म्य आदि विषयों का वर्णन है।
8. **अग्निपुराण** : इसके प्रवक्ता अग्नि और श्रोता वसिष्ठ हैं। इसी कारण इसे अग्निपुराण कहा जाता है। इसे भारतीय संस्कृति और विद्याओं का महाकोश माना जाता है। इसमें इस समय 383 अध्याय, 11,500 श्लोक हैं। इसमें विष्णु के अवतारों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त शिवलिंग, दुर्गा, गणेश, सूर्य, प्राणप्रतिष्ठा आदि के अतिरिक्त भूगोल, गणित, फलित-ज्योतिष, विवाह, मृत्यु, शकुनविद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण, कोशनिर्माण आदि नाना विषयों का वर्णन है।
9. **भविष्यपुराण** : इसमें भविष्य की घटनाओं का वर्णन है। इसमें दो खण्ड है:-(क) पूर्वार्ध:-(अध्याय-41) तथा (ख) उत्तरार्ध:-(अध्याय-171)। इसमें कुल 15,000 श्लोक हैं। इसमें कुल 5 पर्व है:-(क) ब्राह्मपर्व, (ख) विष्णुपर्व, (ग) शिवपर्व, (घ) सूर्यपर्व (ङ) प्रतिसर्गपर्व। इसमें मुख्यत: ब्राह्मण-धर्म, आचार, वर्णाश्रम-धर्म आदि विषयों का वर्णन है। इसका रचनाकाल 500 ई. से 1200 ई. माना जाता है। घटनाओं के आधार पर इसे सबसे बाद का माना जाता है।
10. **ब्रह्मवैवर्तपुराण** : यह वैष्णव पुराण है। इसमें श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन किया गया है। इसमें कुल 18,000 श्लोक है और चार खण्ड हैं : (क) ब्रह्म, (ख) प्रकृति, (ग) गणेश तथा (घ) श्रीकृष्ण-जन्म।
11. **लिङ्गपुराण** : इसमें शिव के 28 अवतारों की कथाओं के साथ शिव उपासना का विस्तृत वर्णन किया गया हैं इसमें 11,000 श्लोक और 163 अध्याय हैं। इसे पूर्व और उत्तर

नाम से दो भागों में विभाजित किया गया है। इसका रचनाकाल आठवीं-नवीं शताब्दी माना जाता है।

12. **वराहपुराण** : इसमें विष्णु के वराह-अवतार का वर्णन है। पाताललोक से पृथिवी का उद्धार करके वराह ने इस पुराण का प्रवचन किया था। इसमें 24,000 श्लोक सम्प्रति केवल 11,000 और 217 अध्याय हैं।

13. **स्कन्दपुराण** : यह पुराण शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय, सुब्रह्मण्य) के नाम पर है। यह सबसे बड़ा पुराण है। इसमें कुल 81,000 श्लोक हैं। इसमें दो खण्ड हैं। इसमें छः संहिताएँ हैं-सनत्कुमार, सूत, शंकर, वैष्णव, ब्राह्म तथा सौर। सूतसंहिता पर माधवाचार्य ने "तात्पर्य-दीपिका" नामक विस्तृत टीका लिखी है। इस संहिता के अन्त में दो गीता ब्रह्मगीता (अध्याय-12) और सूतगीता:-(अध्याय 8) भी हैं। इस पुराण में सात खण्ड हैं-(क) माहेश्वर, (ख) वैष्णव, (ग) ब्रह्म, (घ) काशी, (ङ) अवन्ती, (रेवा), (च) नागर (ताप्ती) तथा (छ) प्रभास-खण्ड। काशीखण्ड में "गंगासहस्रनाम" स्तोत्र भी है। इसका रचनाकाल 7 वीं शताब्दी है। इसमें भी पुराण के 5 लक्षण का निर्देश नहीं मिलता है।

14. **वामनपुराण** : इसमें विष्णु के वामन-अवतार का वर्णन है। इसमें 95 अध्याय और 10,000 श्लोक हैं। इसमें चार संहिताएँ हैं-(क) माहेश्वरी, (ख) भागवती, (ग) सौरी, (घ) गाणेश्वरी। इसका रचनाकाल 9वीं से 10वीं शताब्दी माना जाता है। इसमें कुरुक्षेत्र के आस-पास के सभी तीर्थों का वर्णन किया गया है।

15. **कूर्मपुराण** : इसमें विष्णु के कूर्म-अवतार का वर्णन किया गया है। इसमें चार संहिताएँ हैं-(क) ब्राह्मी, (ख) भागवती, (ग) सौरा, (घ) वैष्णवी। सम्प्रति केवल ब्राह्मी-संहिता ही मिलती है। इसमें 6,000 श्लोक हैं। इसके दो भाग हैं, जिसमें 51 और 44 अध्याय हैं। इसमें पुराण के पाँचों लक्षण मिलते हैं। इस पुराण में ईश्वरगीता और व्यासगीता भी है। इसका रचनाकाल छठी शताब्दी माना गया है।

16. **मत्स्यपुराण** : इसमें पुराण के पाँचों लक्षण घटित होते हैं। इसमें 291 अध्याय और 14,000 श्लोक हैं। प्राचीन संस्करणों में 19,000 श्लोक मिलते हैं। इसमें जलप्रलय का वर्णन हैं। इसमें कलियुग के राजाओं की सूची दी गई है। इसका रचनाकाल तीसरी शताब्दी माना जाता है।

17. **गरुड़पुराण** : यह वैष्णवपुराण है। इसके प्रवक्ता विष्णु और श्रोता गरुड़ हैं, गरुड़ ने कश्यप को सुनाया था। इसमें विष्णुपूजा का वर्णन है। इसके दो खण्ड हैं, जिसमें पूर्वखण्ड में 229 और उत्तरखण्ड में 35 अध्याय और 18,000 श्लोक हैं। इसका पूर्वखण्ड विश्वकोशात्मक माना जाता है।

18. **ब्रह्माण्डपुराण** : इसमें 109 अध्याय तथा 12,000 श्लोक है। इसमें चार पाद हैं-(क) प्रक्रिया, (ख) अनुषङ्ग, (ग) उपोद्घात, (घ) उपसंहार। इसकी रचना 400 ई.- 600 ई. मानी जाती है।

कवयः

भास

- त. गणपति शास्त्री ने 1912 में त्रिवेन्द्रम् भास द्वारा लिखित तेरह नाटकों की खोज की है।
- कृतियाँ:- उदयन कथा मूलक -प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्ता।
- रामायण मूलक - प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक।
- महाभारत मूलक - ऊरुभंगम्, दूतवाक्यम्, पञ्चरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभारम्।
- लोकमूलक:- अविमारक, चारुदत्तम्।
- भास की उपाधियाँ - कविताकामिनिहास, अग्निमित्र (ज्वलनमित्र), भासो हास।

अश्वघोष

जन्म -साकेत (अयोध्या)

चीन तथा तिब्बत भाषा के अनुवादों में **बुद्धचरित** पूरे 28 सर्गों में उपलब्ध है, परंतु मूल संस्कृत में केवल 14 सर्गों में ही मिलता है।

इनके नाम से प्रख्यात अनेक ग्रन्थ हैं, परंतु प्रामाणिक रूप से अश्वघोष की साहित्यिक कृतियाँ केवल चार हैं—

- बुद्धचरितम्
- सौन्दरानंदकाव्यम्
- गंडीस्तोत्रगाथा
- शारिपुत्रप्रकरणम्
- सम्राट कनिष्क के राजकवि अश्वघोष
- उपाधि :-आर्यभदन्त, महाकवि, महावादी, महापंडित, महाराज

कालिदास

- पत्नी-विद्योतमा
- श्वसुर-शारदानन्द
- मित्र- राजा कुमारदास
- समय-ई०पू० प्रथम शताब्दी
- जन्मस्थान-उज्जयिनी (मिथिला/काश्मीर/बंगाली)
- आश्रयदाता-चन्द्रगुप्तविक्रमादित्य
- जाति-ब्राह्मण
- प्रिय छन्द-उपजाति
- प्रिय अलङ्कार-उपमा

- रचनायें-
  1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य)
  2. कुमारसम्भवम (महाकाव्य)
  3. मालविकाग्निमित्र (नाटक)
  4. विक्रमोर्वशीय (त्रोटक)
  5. मेघदूत (खण्डकाव्य)
  6. रघुवंश (महाकाव्य)
  7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- तीन नाटक (रूपक)-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्,
- दो महाकाव्य-रघुवंश और कुमारसंभवम्
- दो खण्डकाव्य-मेघदूतम् और ऋतुसंहार
- **प्रशस्तियाँ:-**
  1. निर्गतासु वा कस्य कालिदास्य सूक्तिषु-**बाणभट्ट (हर्षचरित)**
  2. साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
     शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला-कालिदासोक्ति-**गोवर्धनाचार्य (आर्यसप्तशती)**
  3. कविकुलगुरु: कालिदासो विलास:-**जयदेव (प्रसन्नराघव)**
  4. एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
     शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।। -**राजशेखर (सुक्तिमुक्तावली**
  5. उपमा कालिदासस्य-**उद्भट**

भारवि

- काल छठी-सातवीं शताब्दी
- रचना -किरातार्जुनीयम् (किरात और अर्जुन की कथा)
- रचनाकाल -पश्चिमी गंग राजवंश के राजा दुर्विनीत तथा पल्लव राजवंश के राजा सिंहविष्णु के शासनकाल के समय।
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य उनकी महान रचना है। इसे एक उत्कृष्ट श्रेणी की काव्यरचना माना जाता है।
- यह काव्य किरातरूपधारी शिव एवं पांडुपुत्र अर्जुन के बीच के धनुर्युद्ध तथा वाद-वार्तालाप पर केंद्रित है।
- संस्कृत में किरातार्जुनीयम् की कम से कम 37 टीकाएँ हुई हैं, जिनमें मल्लिनाथ की टीका **घण्टापथ** सर्वश्रेष्ठ है।
- सन् 1912 में **कार्ल कैप्लर** ने हारवर्ड ओरियेंटल सीरीज के अंतर्गत किरातार्जुनीयम् का जर्मनी भाषा में अनुवाद किया।
- 18 सर्ग

- **सहसा विदधीत न क्रियामविवेक: परमापदां पदम्।**
  वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धा: स्वयमेव सम्पद:।। 30।।
  (किरातार्जुनीयम्, द्वितीय सर्ग)

(किसी कार्य को बिना सोचे-विचारे अनायास नहीं करना चाहिए। विवेकहीनता आपदाओं का परम आश्रय है। गुणों की लोभी संपदाएँ अच्छी प्रकार से विचार करने वाले का स्वयमेव वरण करती हैं, अर्थात् उसके पास स्वयं चली आती हैं।)

- उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

सुबन्धु

- **वासवदत्ता** नामक एकमात्र गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु बाणभट्ट के कुछ पूर्ववर्ती थे।
- बाणभट्ट ने 'कवीनागलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया' लिखकर इनकी रचना का संकेत किया है।
- समय-550-600 ई०
- प्रिय अलंकार-श्लेष
- रीति-गौडी
- वासवदत्ता का कोई विभाजन नहीं है, अत: इसे **कथा** की श्रेणी में रखा गया है।
- नायक-कन्दर्पकेतु, नायिका-वासवदत्ता
- नायक के मित्र -मकरन्द
- सुबन्धु की प्रशंसा 'राघवपाण्डवीय' में कविराज ने और श्रीकण्ठचरित में मंख ने की है।
- सुबन्धु ने अपने सम्बन्ध में **सुजनैकबन्धु:** के अलावा कुछ नहीं कहा है।

भट्टि

- दक्षिण भारत में यदि भारवि छठी शताब्दी ई० के उत्तरार्ध में अपनी कीर्ति-कौमुदी से सम्पन्न थे तो उसी काल में पश्चिम भारत भट्टि की यश सुरभि से सुवासित था।
- रचना-**रावणवध**
- काव्य श्रेणी-महाकाव्य
- भट्टि की प्रसिद्धि के कारण यह महाकाव्य मूल नाम से अधिक भट्टिकाव्य के नाम से जाना जाता है।
- इस महाकाव्य में संस्कृत साहित्य के दो महान परम्पराओं रामायण एवं पाणिनीय व्याकरण का समिश्रण है।
- आश्रयदाता-राजा श्रीधरसेन
- स्थान-वलभी (गुजरात)
- समय-600 ई०
- रावणवध महाकाव्य—

- उपजीव्य-रामायण
- कुल सर्ग-22
- मुख्य रूप से 4 काण्ड—
  - प्रकीर्णकाण्ड
  - अधिकारकाण्ड
  - प्रसन्नकाण्ड
  - तिङन्तकाण्ड

शूद्रक

- ❖ वास्तविक नाम-शिमुक या सिमुक
- ❖ समय-प्रथम शताब्दी ई०पू०
- ❖ आयु-100 वर्ष 10 दिन
- ❖ शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था
- ❖ भक्त-शिव-पार्वती
- ❖ शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- ❖ महाकवि शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्यदृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर अश्वमेध यज्ञ भी किया था।
- ❖ प्रथम नाटककार जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को आधार बनाकर लिखा।
- ❖ रीति-वैदर्भी
- ❖ एकमात्र रचना-**मृच्छकटिकम्**
- ❖ कुल अङ्क-10
- ❖ विधा-प्रकरण
- ❖ प्रधान रस-शृंगार
- ❖ नायक-चारुदत्त (धीरप्रशांत)
- ❖ नायिका-भृता, वसन्तसेना

भवभूति

- ❖ पिता का नाम -**नीलकंठ**
- ❖ माता का नाम -**जतुकर्णी**
- ❖ गुरु का नाम **'ज्ञाननिधि'**
- ❖ उपनाम:-**श्रीकण्ठ**
- ❖ भवभूति द्वारा रचित तीन नाटक प्राप्त होते हैं–

महावीरचरितम्:- रामविवाह से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा।

- ❖ वीर रस प्रधान

उत्तररामचरितम् :- सात अंकों में राम के उत्तर जीवन को, जो अभिषेक के बाद आरंभ होता है, चित्रित किया गया है।

मालतीमाधवम् :- 10 अंकों का प्रकरण है जिसमें मालती और माधव की कल्पनाप्रसूत प्रेमकथा है।

माघ

- ❖ पिता का नाम- दत्तक
- ❖ माघे सन्ति त्रयो गुणाः

रचना- शिशुपालवध

- ❖ 20 सर्ग, 1800 श्लोक
- ❖ महाकाव्य में कालिदास की उपमा, भारवि का अर्थगौरव और दंडी (या श्रीहर्ष) का पदलालित्य तीनों एकत्र समन्वित हैं।
- ❖ **उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
  दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।
- ❖ शिशुपालवध मे रेवतक पर्वत की हाथी से और हाथी के बंधे घंटे की तुलना नहीं, बल्कि रेवतक पर्वत के दोनों ओर जो सूर्य और चन्द्रमा है उसकी उपमा स्वर्ण और रजत से निर्मित घंटे से की गई है! अतः माघ को **घंटा माघ** कहा जाता है।

बाणभट्ट

- ❖ बाणभट्ट का वंश किससे प्रारम्भ होता है? – **दधीचि तथा सरस्वती के पुत्र**
- ❖ बाणभट्ट की रीति क्या है? – **पांचाली**
- ❖ बाणभट्ट की बहिन का नाम क्या है? – **मालती**
- ❖ बाणभट्ट के अनुसार सज्जन पुरुष श्रेष्ठ वचनों से किसके समान मन हरण करते हैं? **मणि नूपुरों सदृश**
- ❖ बाणभट्ट ने अपने गुरु का क्या नाम बताया है? – **भर्तु (भत्सु)**
- ❖ बाणभट्ट शैव कौन थे – **शिव के उपासक**
- ❖ बाण के पूर्वजों का निवास कहाँ था? – **प्रीतिकूट नामक ग्राम**
- ❖ प्रीतिकूट किस नदी के तट पर था? – **हिरण्यवाह या शोणनाद**
- ❖ बाण की पत्नी किसकी बहन थी? – **मयूर भट्ट**
- ❖ बाण की बहन का क्या नाम था? – **मालती**
- ❖ ह्वेनशांग किस काल में में भारत में रहा? – **629-645**
- ❖ सूर्यशतकं किसकी रचना है? – **मयूर भट्ट**

- **हर्षवर्धन ने बाणभट्ट को 'महानयं भुजङ्ग' कहा।**
- हर्षवर्धन का काल क्या है? – **606-648**
- हर्षवर्धन के समय कौन विदेशी भारत भ्रमण पर आया? – **ह्वेनसांग**
- बाणभट्ट की रचनाएँ-**कादम्बरी, हर्षचरितम्, चण्डीशतकम्, मुकुटताडितक, पार्वतीपरिणय।**

बाण की उपाधियाँ

- **वश्यवाणी कविचक्रवर्ती**-हर्षवर्धन
- बाण के लिए '**वाणी बाणो बभूव**' किसने कहा है? – **गोवर्धनाचार्य**
- सोडढल ने बाण के लिए क्या कहा है? – **बाणः कविनामिह चक्रवर्ती**
- बाणस्तु पंचानन किसने कहा है? – **श्रीचंद्रदेव**
- **कविताकामिनीकौतुक**- जयदेव
- **पञ्चबाणस्तु बाणः**-जयदेव
- **गद्य सम्राट्**-बलदेव उपाध्याय
- **कवितातरुगहनविहरणमयूरः** – वामनभट्टबाण
- **कविताकाननकेसरी** -चन्द्रदेव
- **तुरङ्गबाण** -आलोचक
- **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**- समालोचक
- **गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति** -आलोचक
- **भट्टबाणस्य भारतीम्**- गङ्गादेवी
- **वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य** - धर्मदास

दण्डी

- सातवीं शती के उत्तरार्ध या आठवीं शती के प्रारम्भ
- रचनाएँ-दशकुमारचरित, काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरी
- प्रपितामह- **दामोदर पंडित**
- अवन्तिसुन्दरीकथा -प्रौढ़ गद्यकाव्य
- **काव्यादर्श**-काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ
- **दशकुमारचरित**-गद्यकाव्य

श्री हर्ष

- 12वीं सदी
- शृंगार के कला पक्ष के कवि
- माता का नाम मामल्ल देवी

- पिता- श्री हीर
- उपाधि – नवभारती, कविपण्डित
- रचना – **नैषधीयचरितम्**

रचना

- महाकाव्य का मूल आधार-महाभारत
- नल और दमयंती के पूर्वराग, विरह, स्वयंवर, विवाह और नवदंपतिमिलन एवं संगमकेलियों का वर्णन हुआ है।
- नल (धीरोदात्त)
- वैदर्भी रीति
- 22 सर्ग
- शृंगार रस
- '**विजय प्रशस्ति**', '**गौडोवींशकुलप्रशस्ति**' तथा '**छिंदप्रशस्ति**' नामक तीन प्रशस्तिकाव्यों के तथा '**अर्णव वर्णन**' और 'नवसाहसांकचरित' चंपू काव्यों के भी वे प्रणेता थे।
- '**खण्डनखण्डखाद्यम्**' नामक ग्रंथ अद्वैत वेदान्त की अति प्रकृष्ठ और प्रौढ़ रचना मानी जाती है।
- दार्शनिक ग्रंथः– '**स्थैर्यविचारप्रकरण**' और '**शिवशक्तिसिद्धि**'।

कल्हण

- समय–1150 ई०
- कश्मीर के महाराज हर्षदेव (1068–1101) के महामात्य चंपक के पुत्र और संगीत के प्रसिद्ध विद्वान कनक के अग्रज थे।
- रचना–राजतरंगिणी (लगभग 8000 श्लोक)
- राजतरंगिणी' का शाब्दिक अर्थ है – **राजाओं की नदी,** जिसका भावार्थ है – 'राजाओं का इतिहास या समय-प्रवाह'।
- यह **आठ तरंगों** में विभक्त है।
- राजतरंगिणी के प्रथम तरंग में बताया गया है कि सबसे पहले कश्मीर में पांडवों के सबसे छोटे भाई **सहदेव** ने राज्य की स्थापना की थी।
- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **औरेल स्टीन** (Aurel Stein) ने पण्डित **गोविन्द कौल** के सहयोग से राजतरंगिणी का अंग्रेजी अनुवाद कराया।
- महाराजा जयसिंह के काल में कल्हण ने राजतरंगिणी की रचना की।

• • •

घटक-2

शब्दरूप

अस्मद्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् / मा	आवाम् / नौ	अस्मान् / नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् / मे	आवाभ्याम् / नौ	अस्मभ्यम् / नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत
षष्ठी	मम/मे	आवयोः / नौ	अस्माकम् / नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् / त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान् / वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् / ते	युवाभ्याम् / वाम्	युष्मभ्यम् / वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव/ते	युवयोः / वाम्	युष्माकम् / वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बलिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बलिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बलिकायै	बलिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पंचमी	बालिकायाः	बलिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके!	हे बालिके!	हे बालिकाः!

किम् (पुंलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरुणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पंचमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुनयोः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

"अस्मद् (मैं)"

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम/मे	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

"युष्मद् (तुम)"

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्/वाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मतः
षष्ठी	तव/ते	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (वह) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स:	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य :	तयो:	तेषाम
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु
सम्बोधन	–	–	–

तद् (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ता:
द्वितीया	ताम्	ते	ता:
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि:
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्य:
पञ्चमी	तस्या:	ताभ्याम्	ताभ्य:
षष्ठी	तस्या:	तयो:	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयो:	तासु
सम्बोधन	–	–	–

तद् (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

एतद् (यह) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एष:	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्/एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतै:
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य:
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य:
षष्ठी	एतस्य	एतयो:/एनयो:	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयो:/एनयो:	एतेषु

यद् (जो) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	य:	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यै:
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्य:
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्य:
षष्ठी	यस्य	ययो:	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययो:	येषु

यद् (जो) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	या:
द्वितीया	याम्	ये	या:
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभि:
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्य:
पंचमी	यस्या:	याभ्याम्	याभ्य:
षष्ठी	यस्या:	ययो:	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययो:	यासु

किम् (क्या) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	क:	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

किम् (क्या) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	का:
द्वितीया	काम्	के	का:
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य:
पंचमी	कस्या:	काभ्याम्	काभ्य:
षष्ठी	कस्या:	कयो:	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयो:	कासु

किम् (क्या) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कै:
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्य:
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्य:
षष्ठी	कस्य	कयो:	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयो:	केषु

इदम् (यह)पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:	एषु

इदम् -स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमा:
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमा:
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभि:
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्य:
पंचमी	अस्या:	आभ्याम्	आभ्य:
षष्ठी	अस्या:	अनयो:	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयो:	आसु

इदम् -नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभि:
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
षष्ठी	अस्य	अनयो:	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयो:	एषु

धातु

संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं (verbs) के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु ही संस्कृत शब्दों के निर्माण के लिए मूल तत्त्व (Basic Material) है। इनकी संख्या लगभग 3356 है। धातुओं के साथ उपसर्ग, प्रत्यय मिलकर तथा सामासिक क्रियाओं के द्वारा सभी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि) का निर्माण होता है। अन्य अर्थों में कहा जाए तो संस्कृत का लगभग प्रत्येक शब्द अन्ततः धातुओं के रूप में तोड़ा जा सकता है।

'धातु' शब्द स्वयं 'धा' में 'तिन्' प्रत्यय जोड़ने से बना है।

व्याकरणशास्त्र में पाँच अंगों की परम्परा दिखती है। इसीलिए 'पञ्चाङ्ग व्याकरण' भी प्रसिद्ध है। पाँच अंग ये हैं— सूत्रपाठ, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ तथा लिंगानुशासन। इन पाँच अंगों में से धातुपाठ अतिमहत्वपूर्ण है। प्रायः सभी शब्दों की व्युत्पत्ति धातुओं से की जाती है। कहा गया है - सर्व च नाम धातुजमाह।

भ्वादिगण का प्रथम गण है तथा परस्मैपदी धातु हैं। सभी भ्वादिगण धातु के धातु रूप इसी प्रकार बनते हैं जैसे- अचर्, अस्, गम्, घ्रा, जि, पठ्, भज्, यज्, लिख्, वद्, स्था, सेव्, श्रु, सद् आदि।

धातुओं से निष्पन्न शब्द

- (1) कृ (करना)
  - **संज्ञा** : कार्य, उपकरण, कर्मन्, प्रक्रिया
  - **विशेषण** : कर्मठ, सक्रिय, उपकारी
  - **क्रिया** : करोति, नमस्कुरु, प्रतिकरोमि, कुर्मः
- (2) भू (होना)
  - **संज्ञा** : भवन, प्रभाव, वैभव, भूत, उद्भव, भविष्य
  - **विशेषण** : भावी, भावुक, भावात्मक, भौगोलिक
  - **क्रिया** : भविष्यति, अभवं, अभव, संभवेत्, संभवामि
- (3) गम् (जाना)
  - **संज्ञा** : गति, आगन्तुक, जगत्, संगम, प्रगति, अन्तर्गामित्व, गन्ता
  - **विशेषण** : गमनशील, सर्वगत, निर्गामी, सुगम
  - **क्रिया** : संगच्छ, निर्गच्छति, उपगमिष्यामि

धातुओं को सकर्मक और अकर्मक इन दो भागों में विभाजित किया गया है। जिस धातु अर्थात् क्रिया के साथ कर्म लगा हो वो सकर्मक और जिनके साथ कर्म न लगा हो वो अकर्मक कहलाती है। जैसे-रामः पठति। राम पढ़ता है। यहाँ प्रश्न उत्पन्न होगा कि राम क्या पढ़ता है? रामः रामायणं पठति। पठति क्रिया के साथ रामायणं यह कर्म है। अतः यह पठ् धातु सकर्मक है। इसी प्रकार रामः शेते (राम सोता है) में राम क्या सोता है? यह प्रश्न समाप्त हो जाता है कि राम क्या सोता है? कर्म लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

धातुओं का वर्गीकरण

पाणिनीय धातुपाठ में धातुओं के निम्नलिखित वर्ग हैं-

भ्वादि (भू+आदि)	अदादि (अद्+आदि)	जुहोत्यादि	दिवादि	स्वादि
तुदादि	रुधादि	तनादि	क्र्यादि (क्री+आदि)	चुरादि

- **परस्मैपदी धातुएँ**:-जिन क्रियाओं का फल कर्ता को छोड़कर अन्य (कर्म) को मिलता है, उन्हें परस्मैपदी धातु कहते हैं। यथा-गम्, पठ्।
- **आत्मनेपदी धातुएँ**:- जिन क्रियाओं का फल सीधा कर्ता पर पड़ता हो उन्हें आत्मनेपदी कहते है। जो धातु अनुदात्तेत् अर्थात् अनुदात्त की इत्संज्ञा वाला हो और जो धातु ङित् हो, ऐसे धातुओं से आत्मनेपद का प्रयोग करना चाहिए। यथा-लभ् (प्राप्त करना), नी (ले जाना)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

उभयपदः-जो क्रियाएँ परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों प्रकार के रूप रखती है, वे उभयपदी कहलाती हैं। यथा-कृ, नी इत्यादि।

जैसे— पाण्डु के सभी पुत्रों को 'पाण्डव' कहकर काम चला लिया जाता है वैसे ही परस्मैपद और आत्मनेपद कहकर नौ-नौ प्रत्ययों का नाम ले लिया जाता है, अलग-अलग अट्ठारहों प्रत्यय नहीं गिनाना पड़ता।

भू-भव् धातु (होना)

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम पुरुष	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

अस् (होना)

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि. सत्तात्	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यम पुरुष	स्या:	स्याताम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

दृश्-पश्य धातु का अर्थ है 'देखना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु:
मध्यम पुरुष	पश्ये:	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

गम्-गच्छ धातु का अर्थ है 'जाना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
मध्यम पुरुष	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

पच् धातु का अर्थ है 'पकाना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचत:	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथ:	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचाव:	पचाम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

अद् धातु का अर्थ है 'भोजन करना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्वः	अद्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

हन् धातु का अर्थ है 'मारना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

ब्रू धातु का अर्थ है 'बोलना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
मध्यम पुरुष	ब्रवीषि	ब्रुथः	ब्रुथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रुवः	ब्रूमः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

दा धातु का अर्थ है "देना"

❖ धा धातु (धारण करना) दा के समान जुहोत्यादि में आने के कारण दा के समान ही शब्द निर्माण करेगी।

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

दिव् धातु का अर्थ है "जुआ खेलना, चमकना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उत्तम पुरुष	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम पुरुष	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम पुरुष	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

नश् धातु का अर्थ है "नाश होना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उत्तम पुरुष	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्य:	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयु:
मध्यम पुरुष	नश्ये:	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

चि/चिञ् धातु का अर्थ है "चुनना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुत:	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोसि	चिनुथ:	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुव:	चिनुम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यत:	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथ:	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्याव:	चेष्याम:

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनो:	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिनवम्	अचिनुव	अचिनुम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनु	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुया
मध्यम पुरुष	चिनुया:	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

शक् धातु का अर्थ है "सकना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुत:	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथ:	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुव:	शक्नुम:

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यत:	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथ:	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्याव:	शक्ष्याम:

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

तुद् धातु का अर्थ है 'दुःख देना'

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

क्षिप् धातु का अर्थ है "फेंकना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
मध्यम पुरुष	क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ
उत्तम पुरुष	क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्षेप्स्यसि	क्षेप्स्यथः	क्षेप्स्यथ
उत्तम पुरुष	क्षेप्स्यामि	क्षेप्स्यावः	क्षेप्स्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्षिपत्	अक्षिपताम्	अक्षिपन्
मध्यम पुरुष	अक्षिपः	अक्षिपतम्	अक्षिपत
उत्तम पुरुष	अक्षिपम्	अक्षिपाव	अक्षिपाम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षिपतु	क्षिपताम्	क्षिपन्तु
मध्यम पुरुष	क्षिप	क्षिपतम्	क्षिपत
उत्तम पुरुष	क्षिपाणि	क्षिपाव	क्षिपाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्षिपेत्	क्षिपेताम्	क्षिपेयुः
मध्यम पुरुष	क्षिपेः	क्षिपेतम्	क्षिपेत
उत्तम पुरुष	क्षिपेयम्	क्षिपेव	क्षिपेम

रुध् धातु का अर्थ है "रोकना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्द्धन्ति
मध्यम पुरुष	रुणत्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध
उत्तम पुरुष	रुणमि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरुणत्	अरुन्द्धाम्	अरुन्द्धन्
मध्यम पुरुष	अरुणः	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध
उत्तम पुरुष	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्द्धन्तु
मध्यम पुरुष	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
उत्तम पुरुष	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
मध्यम पुरुष	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उत्तम पुरुष	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

भिद् धातु का अर्थ है "काटना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति
मध्यम पुरुष	भिनत्सि	भिन्थः	भिन्थ
उत्तम पुरुष	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भेत्स्यति	भेत्स्यतः	भेत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	भेत्स्यसि	भेत्स्यथः	भेत्स्यथ
उत्तम पुरुष	भेत्स्यामि	भेत्स्यावः	भेत्स्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, *Past Tense*)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभिनत्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्
मध्यम पुरुष	अभिनः	अभिन्तम्	अभिन्त
उत्तम पुरुष	अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भिनत्तु	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
मध्यम पुरुष	भिन्द्धि	भिन्तम्	भिन्त
उत्तम पुरुष	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
मध्यम पुरुष	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उत्तम पुरुष	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

तन् धातु का अर्थ है "फैलाना/विस्तार करना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तन्वः	तन्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतनवम्	अतन्व	अतन्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तनवानि	तनवाव	तनवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम पुरुष	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

कृ धातु का अर्थ है "करना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

ज्ञा धातु का अर्थ है "जानना"

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम पुरुष	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम पुरुष	जानामि	जानीवः	जानीमः

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम पुरुष	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम पुरुष	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम पुरुष	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उत्तम पुरुष	जानानि	जानाव	जानाम

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञेयात्	ज्ञेयास्ताम्	ज्ञेयासुः
मध्यम पुरुष	ज्ञेयाः	ज्ञेयास्तम्	ज्ञेयास्त
उत्तम पुरुष	ज्ञेयासम्	ज्ञेयास्व	ज्ञेयास्म

जन् (पैदा करना)

1. लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायमहे

2. लृट् लकार (भविष्यत काल, Future Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

3. लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आजायत्	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

4. लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में, Imperative Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

5. विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में, Potential Mood)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथा:	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

सन्धि

दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो विकार होता है उसे 'सन्धि' कहते हैं। इस प्रकार की सन्धि के लिए दोनों वर्णों का निकट होना आवश्यक है, क्योंकि दूरवर्ती शब्दों या वर्णों में सन्धि नहीं होती है। वर्णों की इस निकट स्थिति को ही सन्धि कहते हैं। अत: संक्षेप में यह समझना चाहिए कि दो वर्णों के पास-पास आने से उनमें जो परिवर्तन या विकार होता है उसे संस्कृत व्याकरण में सन्धि कहते हैं।

व्याकरण:- शास्त्र में सन्धि करने के अपने नियम होते हैं। वर्णों के सन्धि के माध्यम से परस्पर मिल जाने से उनमें विशेष परिवर्तन हो जाता है, सन्धि करे या नहीं करें, इस विषय में आचार्य का स्पष्ट निर्देश है कि—

आवश्यक (नित्य):- एक शब्द के भिन्न-भिन्न अवयवों में, धातु और उपसर्ग में तथा समास में सन्धि आवश्यक रूप से करनी ही चाहिये।

विवक्षा (ऐच्छिक):- एक ही वाक्य के पृथक् - पृथक् शब्दांश में सन्धि करना या न करना सन्धि करने वाले की इच्छा पर निर्भर करता है।

विशेष:- अल्प विराम या पूर्ण विराम होने के बाद सन्धि नहीं होती। पद्य में सन्धि आवश्यक रूप से करनी चाहिये अन्यथा छन्दो - दोष माना जाता है।

सूत्र और वार्तिक ही व्याकरण शास्त्र हैं और जो भी कार्य यहाँ होगा, वह सूत्रों के आदेश पर ही होगा।

प्रकार स्थूल रूप से सन्धि तीन प्रकार की होती है :

1. स्वर सन्धि, 2. व्यञ्जन - सन्धि, 3. विसर्ग - सन्धि

सन्धि

स्वर सन्धि

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक्+अच=यण्** इ/ई +अच् (असमान) =य् उ/ऊ+ अच् (असमान) = व् ऋ+अच् (असमान) = र् लृ+ अच् (असमान) =ल्	• यदि +अपि =यद्यपि • मधु +अरि: =मध्वरि: • पितृ + आदेश =पित्रादेश: • लृ+आकृति:=लाकृति:
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायाव:	**एच् +अच् = अयवायाव** ए+अच=अय् ओ+ अच् = अव् ऐ +अच् =आय् औ + अ = आव्	• ने +अनम् = नयनम् • पो+अन:= पवन: • नै +अक: = नायक: • पौ +अक:= पावक:
3. गुण सन्धि	आद्गुण:	**आत्+अच=गुण** अ/आ+इ/ई=ए अ/आ +उ/ऊ= ओ अ/आ+ऋ/ॠ=अ अ/आ+लृ=अल्	• रमा+ईश: = रमेश: • हित +उपदेश: =हितोपदेश: • देव+ ऋषि: = देवर्षि: • तव +लकार = तवल्कार:
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत+एच् =वृद्धि** अ/आ+ए/ऐ=ऐ अ/आ+ओ/औ=औ	• सदा+ एव =सदैव • महा+ऐश्वर्यम्= महैश्वर्यम् • जल+ओघ: = जलौघ: • महा+औषधि: = महौषधि:
5. दीर्घ सन्धि	अक: सवर्णे दीर्घ:	**अक्+अक्=दीर्घ** अ+आ +अ/आ = आ इ/ई+ इ/ई=ई उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ ऋ/ॠ+ऋ/ॠ=ॠ	• हिम+ आलय:= हिमालय: • रवि इन्द्र: = रवीन्द्र: • भानु + उदय: = भानूदय: • मातृ ऋणम् = मातृणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङ: पदान्तादति	**एङ्+अ=पूर्वरूप** ए+अ=(ऽ) पूर्वरूप ओ+अ=(ऽ) पूर्वरूप	• हरे अव= हरेऽव • विष्णो+अव =विष्णोऽव

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु =पररूप प्र, उप+ए, ओ धातु=पररूप प्लुत/	• प्र+एजते =प्रेजते • उप+ओषति = उपोषति
8. प्रकृति भाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्रगृह्य+अच्=प्रकृतिभाव	• हरी + एतौ = हरी एतौ • विष्णू + इमौ= विष्णू इमौ • गङ्गे+अम् = गङ्गे अम्

व्यञ्जन सन्धि

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
1. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स तवर्ग+श चवर्ग = श चवर्ग	• रामस् +चिनोति = रामश्चिनोति • सत्+चित् = सच्चित्
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	सत वर्ग+ष टवर्ग = ष टवर्ग	• रामस्+षष्ठः=रामष्षष्ठः • रामस्+टीकते=रामष्टीकते • तत् + टीका=तट्टीका • षट् +आननः=षडाननः • जगत्+ईशः=जगदीशः
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश आदेश	• छेद+ता = छेत्ता • लिभ् + सा= लिप्सा
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल्+ख =च	• हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे • त्वम्+करोषि=त्वं करोषि
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म्+हल्=अनुसार (ं)	
6. तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग+ल्=ल्	• उद्+लेख=उल्लेखः • तद्+लीनः=तल्लीनः
7. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार+यय्=परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	• गं+गा=गङ्गा • मं+चः=मञ्चः
8. अनुनासिक सन्धि	यरोऽनुनासिकेऽ-नुनासिको वा	य +अनुनासिक= अनुनासिक	• जगत्+नाथः=जगन्नाथः • दिक्+नागः=दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

सन्धि	सन्धिसूत्र	सूत्र का अर्थ	उदाहरण
1. सत्व सन्धि	विसर्जनीयस्य सः	विसर्ग(:)+ख =स्	• रामः+चलति=रामस्+ चलति • रामश्चलति • निः+चयः निस्+चयः निश्चयः
2. रुत्व सन्धि	ससजुषो रुः	पदान्त सकार/ सजुष्=रु	• कविस्+अयम् कवि रु+अयम् कवि र् अयम् कविरयम्
3. उत्व सन्धि	अतो रोरप्लुताद-प्लुते	अ+रु+अ=उ	• शिवस्+अर्च्यः= शिव रु+अर्च्यः शिव र्+अर्च्यः शिव उ+अर्च्यः शिवो+अर्च्यः शिवोऽर्च्यः • मनस्+रथः=मनोरथः
4. रलोप सन्धि	रोरि	र्+र्=पूर्व र् का लोप	• बालकास्+रमन्ते= बालका र्+रमन्ते बालका रमन्ते
5. रेफ को विसर्ग	खरवासनयोर्विस-र्जनीयः	र्+ख =विसर्ग (:) र्+33=विसर्ग (:)	• राम +खादति=रामः खादति

समास प्रकरण

समास की परिभाषा

समसनं समास- अर्थात संक्षिप्त होने को समास कहते हैं।

"अनेकपदानामेकपदीभवनं समासः"— अनेक पदों का मिलकर एक पद होना समास है।

समास के भेद

समासः पञ्चधा - समास पाँच प्रकार के होते हैं।

1. केवल समास-"विशेषसंज्ञा-विनिमुर्क्तः केवल समासः"

इस समास में समास तो होता है किंतु समास विशेष की संज्ञा नहीं होती है।

विशेषसंज्ञा - अव्ययीभावादिरूपास्ताभिर्विनिर्मुक्त इत्यर्थः।

अर्थात अव्ययीभाव आदि संज्ञा से विनिर्मुक्त का नाम केवल समास है।

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
भूतपूर्वः	जो पहले हो चुका हो	पूर्वं भूतः	पूर्व अम् भूत् सु	'सह सुपा'
वागर्थाविव	वाणी और अर्थ के समान	वागर्थौ इव	वागर्थ औ इव	इवेन समासो विभक्त्य-लोपश्च(वार्तिक)

2. **अव्ययीभावसमास-"पूर्वपदार्थप्रधानः"** इस समास में पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता होती है।

इस समास में प्रायः अव्यय पूर्व में होता है।

❖ **सूत्र-** "अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु"

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	विशेष
अधिहरि	हरि में	हरौ इति	हरि ङि अधि	विभक्ति अर्थ में
अधिगोपम्	गोप में	गोपि इति	गोपा ङि अधि	विभक्ति अर्थ में
उपकृष्णम्	कृष्ण के समीप	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	समीप अर्थ में
सुमद्रम्	मद्रदेशवासियों की समृद्धि	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	समृद्धि अर्थ में
दुर्यवनम्	यवनों की समृद्धि का अभाव	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् दुर्	व्यृद्धि अर्थ में
निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्षिका आम् निर्	अर्थाभाव अर्थ में
अतिहिमम्	हिम का अत्यय=पिघलना	हिमस्य अत्ययः	हिम ङस् अति	अत्यय अर्थ
अतिनिद्रम्	निद्रा इस समय उचित नहीं है।	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति	असम्प्रति अर्थ में
इतिहरि	नाम की प्रसिद्धि अर्थ में	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति	शब्दप्रादुर्भाव अर्थ में
अनु विष्णु	विष्णु के पीछे	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु	पश्चात अर्थ में
यथा — अनुरूपम्	रूप के योग्य	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	योग्यता अर्थ में
प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ के प्रति	अर्थं अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	वीप्सा अर्थ में
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	पदार्थानतिवृत्ति
सहरि	हरि के सदृश	हरेः सादृश्यम्	हरि ङस् सह	सादृश्य अर्थ में

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	विशेष
अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठ के क्रम से	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	ज्येष्ठस्य ङस् अनु	आनुपूर्व्य अर्थ में
सचक्रम्	चक्र के साथ एक ही काल में	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	यौगपद्य अर्थ में
ससखि	सखा के समान	सदृशः सख्या	सखि टा सह	सादृश्य अर्थ में
सक्षत्रम्	क्षत्रियों के अनुरूप	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह	सम्पत्ति अर्थ में
सतृणम् (अत्ति)	तिनके को भी छोड़े बिना सम्पूर्ण खाता है।	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह	साकल्य अर्थ में
साग्नि (अधीते)	अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है।	अग्नि ग्रन्थ पर्यन्तम्	अग्नि टा सह	अन्त अर्थ में

❖ **सूत्र-"नदीभिश्च"**

पञ्चगङ्गम्	पाँच गङ्गाओं का समूह	पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	पञ्चन् आम् गङ्गा आम्
द्वियमुनम्	दो यमुना नदी के धाराओं का समूह	द्वयोर्यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्

उपशरदम्	शरद् ऋतु के समीप वाली ऋतु	शरदः समीपम्	शरद् ङस् उप	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
प्रतिविपाशम्	विपाशा नदी के सम्मुख	विपाशं विपाशं प्रति	विपाश अम् प्रति	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
उपजरसम्	बुढ़ापे के निकट	जरायाः समीपम्	जरा ङस् उप्	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
उपराजम्	राजा के समीप	राज्ञः समीपम्	राजन् ङस् उप्	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
अध्यात्मम्	आत्मा में	आत्मनि इति	आत्मन् ङि अधि	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
उपचर्मम्/उपचर्म	चमड़े के समीप	चर्मणः समीपम्	चर्मण ङस् उप	अव्ययं विभक्ति०सूत्र से
उपसमिधम्/उपसमित्	समिधा के पास	समिधः समीपम्	समिध ङस् उप	टच् प्रत्यय न होने पर उपसमित्

तत्पुरुष समास

"प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीयः" इसमें उत्तर पद तथा उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान होता है।

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
द्वितीया तत्पुरुष				
कृष्णाश्रित:	कृष्ण का आश्रय लिया हुआ।	कृष्णं श्रित:	कृष्ण अम्+श्रित सु	द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:
अरण्यातीत:	वन को पार किया हुआ।	अरण्यम् अतीत:	अरण्य अम्+अतीत सु	द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:
कूपपतित:	कुएँ में गिरा हुआ	कूपं पतित:	कूप अम्+पतित सु	द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:
ग्रामगत:	गाँव गया हुआ।	ग्रामं गत:	ग्राम अम्+गत सु	द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:
दु:खापन्न:	दु:ख को प्राप्त हुआ	दु:खम् आपन्न:	दु:ख अम्+आपन्न सु	द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नै:
तृतीया तत्पुरुष				
शङ्कुलाखण्ड:	सरौते से काटा हुआ	शङ्कुलया खण्ड:	शङ्कुला टा+खण्ड सु	तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
धान्यार्थ:	धान्य से अर्थ	धान्येन अर्थ:	धान्य टा+अर्थ सु	तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन
हरित्रात:	हरि के द्वारा रक्षित	हरिणा त्रात:	हरि टा+त्रात सु	कर्तृकरणे कृता बहुलम्
नखभिन्न:	नाखूनों से चीरा गया	नखै: भिन्न:	नख भिस्+भिन्न सु	कर्तृकरणे कृता बहुलम्
नखनिर्भिन्न:	नाखूनों से फाड़ा गया	नखै: निर्भिन्न:	नख भिस्+भिन्न सु	कृद्ग्रहणे गतिकारक-पूर्वस्यापि ग्रहणम्
चतुर्थी तत्पुरुष				
यूपदारु	खम्भे के लिए लकड़ी	यूपाय दारु	यूप ङे +दारु सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित-सुखरक्षितै:
द्विजार्थ:	ब्राह्मण के लिए दान	द्विजाय अयम्	द्विज ङे+अर्थ सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितै: से विकल्प तथा अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् से नित्य

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
भूतबलि:	भूतों के लिए बलि	भूतेभ्यो बलि:	भूत भ्यस्+बलि सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित-सुखरक्षितै:
गोहितम्	गायों का हित	गोभ्यो हितम्	गो भ्यस्+हित सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित-सुखरक्षितै:
पञ्चमी तत्पुरुष				
चोरभयम्	चोर से भय	चोरात् भयम्	चोर ङसि+भय सु	पञ्चमी भयेन
स्तोकान्मुक्त:	थोड़े से मुक्त हुआ	स्तोकात् मुक्त:	स्तोक ङसि+मुक्त सु	'स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छ्राणि' से अलुक् समास।
अन्तिकादागत:	समीप से आया हुआ	अन्तिकाद् आगत:	अन्तिक ङसि+आगत सु	'स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छ्राणि क्तेन' से अलुक् समास।
अभ्याशादागत:	समीप से आया हुआ	अभ्याशात् आगत:	अभ्याश ङसि+आगत सु	'स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छ्राणि' से अलुक् समास।
दूरादागत:	दूर से आया हुआ	दूरात् आगत:	दूर ङसि+आगत् सु	'स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छ्राणि' से अलुक् समास।
कृच्छ्रादागत:	कष्ट से आया हुआ	कृच्छ्रात् आगत:	कृच्छ् ङसि+आगतसु	स्तोकान्तिकदूरार्थ-कृच्छ्राणि
षष्ठी तत्पुरुष				
राजपुरुष:	राजा का आदमी	राज्ञ: पुरुष:	राजन ङस्+पुरुष सु	षष्ठी
आत्मज्ञानम्	आत्मा का ज्ञान	आत्मन् ज्ञानम्	आत्मन ङस्+ज्ञान सु	षष्ठी
मनोविकार:	मन का विकार	मनस: विकार:	मनस् ङस्+ +विकार सु	षष्ठी
सत्सङ्गति	सज्जनों की सङ्गति	सतां सङ्गति	सत् आम्+सङ्गति सु	षष्ठी

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
पूर्वकाय:	शरीर का अगला आधा भाग	पूर्वं कायस्य	काय ङस् +पूर्व सु	पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे से तत्पुरुष समास
अपरकाय	शरीर का दूसरा भाग	अपरं कायस्य	काय ङस्+अपर सु	"पूर्वापरा ....."
अर्धपिप्पली	पिप्पली का आधा भाग	अर्धं पिप्पल्या:	पिप्पली ङस्+अर्ध सु	"अर्धं नपुंसकम्"
सप्तमी तत्पुरुष				
अक्षशौण्ड:	पासाओं से खेलने में चतुर	अक्षेषु शौण्ड:	अक्ष् सुप् +शौण्ड सु	"सप्तमी शौण्डै:"
काव्यनिपुण:	काव्यशास्त्र में निपुण	काव्ये निपुण:	काव्य ङि +निपुण सु	"सप्तमी शौण्डै:" सूत्र से सप्तमीतत्पुरुष समास
तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण				
वेदविद्वान	वेद को जानने वाला	वेदं विद्वान्	वेद अम्+विद्वस् सु	द्वितीया समास करके वेद - विद्वान् शब्द बना है (द्वि. त.)
मदान्ध:	मद से अन्धा	मदेन अन्ध:	मद टा+अन्ध सु	तृतीया तत्पुरुष समास
धर्मनियम:	धर्म के लिए नियम	धर्माय नियम:	धर्म ङे +नियम सु	चतुर्थी तत्पुरुष
द्विजेतर:	ब्राह्मण से अलग	द्विजाद् इतर:	द्विज ङसि+इतर से	पञ्चमी तत्पुरुष
पूर्वेषु कामशमी	पूर्वेषुकामशमी नामक प्राचीन एक गाँव	पूर्वा चासौ इषुकामशमी	पूर्वा सु +इषुकामशमी सु	दिशावचक तथा संज्ञावाचक होने के कारण "दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्" से समास हुआ।
सप्तर्षय:	सात ऋषियों की संज्ञा	सप्त च ते ऋषय:	सप्तन् जस+ऋषि जस्	"दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्"
पौर्वशाल:	पूर्व दिशा वाली शाला में होने वाली	पूर्वस्यां शालायां भव:	पूर्व ङि+शाला ङि	तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
पञ्चगवधन (द्विगु+ बहुव्रीहि)	पाँच गाय धन हैं जिसका वह व्यक्ति	पञ्चगावो धनं यस्य	पञ्चन् जस्+गो जस् धन सु	अनेकमन्यपदार्थे से बहुव्रीहि
पञ्चगवम्	पाँच गायों का समूह	पञ्चानां गवां समाहार:	पञ्चन् आम्+गो आम्	तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च

कर्मधारय समास				
नीलोत्पलम्	नील कमल	नीलम् उत्पलम्/ नीलं च तद उत्पलम्	नील सु+उत्पल सु	विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
कृष्णसर्प:	काला साँप	कृष्ण: सर्प:/ कृष्णश्चासौ सर्प:	कृष्ण सु+सर्प सु	विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से बहुलता अर्थ में नित्य समास
घनश्याम:	बादल की तरह श्याम वर्ण वाले श्रीकृष्ण	घन इव श्याम:	घन सु+श्याम सु	उपमानानि सामान्यवचनै:
मध्यपदलोपी समास				
शाकपर्थिव:	शाक को प्रिय मानने वाला राजा	शाकप्रिय: पार्थिव:	शाक प्रिय सु+पार्थिव सु	शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्
देवब्राह्मण:	देवता का पूजन करने वाला ब्राह्मण	देवपूजको ब्राह्मण:	देवपूजक सु+ब्राह्मण सु	शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्
नञ् तत्पुरुष				
अब्राह्मण:	ब्राह्मण से भिन्न	न ब्राह्मण:	न ब्राह्मण सु	नञ:
अनश्व:	घोड़े से भिन्न	न अश्व:	न अश्व सु	नञ:

तत्पुरुष के शेष उदाहरण					
कु	कुपुरुष:	निन्दित पुरुष:	कुत्सित: पुरुष:	कु पुरुष सु	कुगति प्रादय:

तत्पुरुष के शेष उदाहरण					
समस्त पद		अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
गति	ऊरीकृत्य	स्वीकार करके	ऊरी कृत्वा		कुगति प्रादय:
	शुक्लीकृत्य	सफ़ेद करके य अशुक्ल को शुक्ल करके	अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	शुक्ल अम् कृत्वा	कुगतिप्रादय:
	पटपटाकृत्य	पटत् पटत् इस प्रकार शब्द करके	पटत् पटत् इति कृत्वा	पटपटा+ कृत्वा	कुगतिप्रादय:
प्रादि	सुपुरुष:	सुन्दर पुरुष	शोभन: पुरुष:	सु पुरुष सु	कुगतिप्रादय:
प्राचार्य:		दूर गया हुआ आचार्य/श्रेष्ठ आचार्य	प्रगत: आचार्य:	प्र आचार्य सु	प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया
अतिमाल:		माला का अतिक्रमण	मालाम् अतिक्रान्त:	माला अम् अति	अत्यादय: क्रान्ताद्यर्थे द्वितीया
अवकोकिल:		कोयल से कुंजित प्रदेश	अवक्रुष्ट: कोकिलया	कोकिला टा+अव	अवादय: क्रुष्टाद्यर्थे तृतीया
पर्यध्ययन:		अध्ययन से थका हुआ या घबराया हुआ	परिग्लान: अध्ययनाय	अध्ययन ङे+परि	पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या
निष्कौशाम्बि:		कौशाम्बी नगरी से निकला हुआ	निष्क्रान्त: कौशम्ब्या:	कौशाम्बी ङसि+नि	निरादय: क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या
कुम्भकार:		घड़े को बनाने वाला	कुम्भं करोति	कुम्भ अम्+कृ	उपपदमतिङ्
व्याघ्री		विशेष रूप से सूँघने वाली	विशेषेण जिघ्रति		उपपदमतिङ्
अश्वक्रीति		घोड़े के द्वारा खरीदी गई वस्तु, भूमि आदि	अश्वेन क्रीता	अश्व टा क्रीत	कर्तृकरणे कृताबहुलम्
कच्छपी		कच्छ से पीने वाली	कच्छेन पिबति	कच्छ टा+पा	उपपतमतिङ
द्वयङ्गुलम्		दो अंगुल के बराबर	द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य	द्वि औ +अङ्गुलि औ	तद्धितार्थोत्तर-पद-समाहारे च

तत्पुरुष के शेष उदाहरण				
समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
निरङ्गुलम्	निकल गई अंगुली से जो अँगूठी आदि	निर्गत अङ्गुलिभ्य:	नि +अङ्गुलि +भ्यस्	निरादय: क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या
अहोरात्र:	दिन-रात	अहन् च रात्रिश्च अनयो: समाहार:	अहन् सु+रात्रि सु	चार्थे द्वन्द्व: से द्वन्द्व समास
सर्वरात्र:	सारी रात	सर्वा चासौ रात्रि:	सर्वा सु+रात्रि सु	विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
पूर्वरात्र:	रात का पहला भाग	पूर्वं रात्रे:	पूर्व सु+रात्रि ङस्	पूर्वपराधरोत्तर०
सङ्खयातरात्र:	गिनी गई रात	सङ्खयाता चासौ रात्रि:	सङ्खयाता सु+रात्रि सु	पूर्वकालैक सर्व०
द्विरात्रम्	दो रातों का समूह	द्वयो: रात्र्यो: समाहार:	द्वि ओस्+रात्रि ओस्	तद्धितार्थोत्तर-पद-समाहारे च

बहुव्रीहि समास

"प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुब्रीहि:"।

इसमे पूर्व और उत्तर पद को छोड़ कर अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है।

बहुव्रीहि समास					
समस्त पद		अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
व्यधिकरण बहुव्रीहि	कण्ठेकाल:	कण्ठ में काल अथवा नील वर्ण है जिसका कण्ठ (शंकर जी/ नीलकण्ठ पक्षी)	कण्ठे कालो यस्य स:	कण्ठ ङि+काल सु	अनेकमन्यपदार्थे
समानाधि-करण बहुव्रीहि	प्राप्तोदक:	प्राप्त हो गया है जल जिस ग्राम को	प्राप्तं उदकं यं	प्राप्त सु+उदक सु	अनेकमन्यपदार्थे
	ऊढरथ:	ढो चुका है रथ जिस घोड़े ने	ऊढ: रथ: येन	ऊढ सु+रथ सु	अनेकमन्यपदार्थे
	उपहत पशु:	जिसको पशु भेंट चढ़ाया गया है वह,	उपहत: पशु यस्मै	उपहत सु+पशु सु	अनेकमन्यपदार्थे

समस्त पद		अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
समानाधिकरण बहुव्रीहि	उद्धृतौदना	निकाल लिया गया है भात जिससे	उद्धृतः ओदनः यस्याः	उद्धृत सु+पशु सु	अनेकमन्यपदार्थे
	पीताम्बरः	पीले वस्त्र हैं जिसके वह (विष्णु)	पीतम् अम्बरम् अस्ति यस्य सः	पीत सु+अम्बर सु	अनेकमन्यपदार्थे
	वीरपुरुषः	वीर पुरुष है जिस ग्राम में	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन्	वीर जस्+पुरुष जस्	अनेकमन्यपदार्थे
प्रपर्णः		जिसके पत्ते अच्छी तरह झड़ चुके हैं,	प्रपतितानि पर्णानि यस्मात्	प्रपतित जस्+पर्ण जस्	अनेकमन्यपदार्थे
अपुत्रः		जिसका पुत्र नहीं है, वह पुत्रहीन पुरुष	अविद्यमानः पुत्रो यस्य सः	अविद्यमान सु+पुत्र सु	नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः
चित्रगुः		चितकबरी गायों वाला व्यक्ति	चित्राः गावः यस्य	चित्रा जस्+गो जस्	अनेकमन्यपदार्थे
रूपवद्भार्यः		रूपवती स्त्री वाला पुरुष	रूपवती भार्या अस्ति यस्य	रूपवती सु+भार्या सु	अनेकमन्यपदार्थे
कल्याणीपञ्चमाः		जिन रातों में पाँचवीं रात कल्याणदायिनी है, ऐसी सभी रातें	कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणाम्	कल्याणी सु+पञ्चमी सु	अनेकमन्यपदार्थे
स्त्रीप्रमाणः		स्त्री जिसके लिए प्रमाण हो, वह पुरुष	स्त्री प्रमाणी यस्य सः	स्त्री सु+प्रमाणी सु	अनेकमन्यपदार्थे
दीर्घसक्थः		दीर्घ ऊरुओं वाला पुरुष	दीर्घे सक्थिनी स्तः यस्य	दीर्घ औ+सक्थि औ	अनेकमन्यपदार्थे
जलजाक्षी		कमल की तरह सुन्दर आँख वाली स्त्री	जलजे इव अक्षिणी यस्याः	जलजा औ+अक्षि औ	अनेकमन्यपदार्थे

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
द्विमूर्धः	दो सिर है जिसके वह पुरुष	द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	द्वि औ+मूर्धन् औ	अनेकमन्यपदार्थे
त्रिमूर्धः	तीन सिर हैं जिसके वह पुरुष	त्रयो मूर्धानो यस्य सः	त्रि जस्+मूर्धन् जस्	अनेकमन्यपदार्थे
अन्तर्लोमः	अन्दर रोम है जिसके ऐसा पुरुष	अन्तर्लोमानि यस्य सः	अन्त +लोमन् जस्	अनेकमन्यपदार्थे
बहिर्लोमः	बाहर रोम है जिसके ऐसा वस्त्र	बहिर्लोमानि यस्य सः	बहिस्+लोमन् जस्	अनेकमन्यपदार्थे
व्याघ्रपात्	बाघ के पैरों के समान पैर वाला	व्याघ्र पादौ इव पादौ यस्य सः	व्याघ्रपाद औ+पाद औ	अनेकमन्यपदार्थे
द्विपात्	दो पैरों वाला पुरुष	द्वौ पादौ यस्य सः	द्वि औ+पाद औ	अनेकमन्यपदार्थे
सुपात्	सुन्दर पैरों वाला पुरुष	सु शोभनौ पादौ यस्य सः	सु पाद+औ	अनेकमन्यपदार्थे
उत्काकुत्	उठे हुए तालु वाला	उद्गतं काकुदं यस्य सः	उत्+काकुद् सु	अनेकमन्यपदार्थे
विकाकुत्	विकृत तालु वाला पुरुष	विकृतं काकुदं यस्य सः	वि+काकुद् सु	अनेकमन्यपदार्थे
पूर्णकाकुत्/पूर्णकाकुदः	पूर्ण तालु वाला पुरुष	पूर्णं काकुदं यस्य सः	पूर्ण सु+काकुद् सु	अनेकमन्यपदार्थे
सुहृन्मित्रम्	शोभन हृदय वाला पुरुष	सु शोभनं हृदयं यस्य सः	सु+हृदय सु	अनेकमन्यपदार्थे
दुहृदमित्रः	दुष्ट हृदय वाला मित्र	दु दुष्टं हृदयं यस्य सः	दु +हृदय सु	अनेकमन्यपदार्थे
व्यूढोरस्कः	चौड़ी छाती वाला पुरुष	व्यूढम् उरो यस्य	व्यूढ सु+उरस् सु	अनेकमन्यपदार्थे
प्रियसर्पिष्कः	जिसको घी प्रिय हो	प्रियं सर्पिः यस्य	प्रिय सु+सर्पिस् सु	अनेकमन्यपदार्थे

समस्त पद	अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
युक्तयोग:	सफल हुआ है योग जिसका	युक्तो योगो यस्य	युक्त सु+योग सु	अनेकमन्यपदार्थे
कृतकृत्य:	कर लिया है अपना कर्तव्य जिसने	कृतं कृत्यं येन	कृत सु+कृत्य सु	अनेकमन्यपदार्थे
महायशस्क: महायशा:	बड़े यश वाला व्यक्ति	महद् यश: यस्य	महत् सु+यशस् सु	अनेकमन्यपदार्थे

द्वन्द्व समास

"प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः।"

अर्थ- समास के लिए जितने शब्द लिए गए हैं उन सभी शब्दों का अर्थ प्रधान होता है।

द्वन्द्व समास					
समस्त पद		अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
धवखदिरौ		धव और खदिर के वृक्ष	धवश्च खदिरश्च	धव सु खदिर सु	चार्थे द्वन्द्वः
रामकृष्णौ		राम और कृष्ण	रामश्च कृष्णश्च	राम सु कृष्ण सु	चार्थे द्वन्द्वः
संज्ञापरिभाषाम्		संज्ञा और परिभाषा का समूह	संज्ञा च परिभाषा च अनयो: समाहार:	संज्ञा सु परिभाषा सु	चार्थे द्वन्द्वः
राजदन्ता:		दाँतों का राजा अर्थात् सामने के दाँत	दन्तानां राजा	दन्त आम् राजन् सु	चार्थे द्वन्द्वः
धर्मार्थौ/अर्थधर्मौ		धर्म और अर्थ	धर्मश्च अर्थश्च	धर्म और अर्थ	चार्थे द्वन्द्वः
हरिहरौ	द्वन्द्वे घि	हरि और हर अर्थात् विष्णु और शिव	हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	चार्थे द्वन्द्वः
ईशकृष्णौ	अजाद्यन्तम्	ईश और कृष्ण	ईश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	चार्थे द्वन्द्वः

द्वन्द्व समास					
समस्त पद		अर्थ	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समास विधायक सूत्र
शिवकेशवौ	अल्पाच्तरम्	शिव और केशव	शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	चार्थे द्वन्द्वः
पितरौ/मातपितरौ		माता और पिता	माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	चार्थे द्वन्द्वः
प्राणि	पाणिपादम्	हाथ और पैर का समूह	पाणी च पादौ च	पाणी औ पाद औ	चार्थे द्वन्द्वः
तूर्य	मार्दङ्गिक-वैणिकम्	मृदङ्ग वादक और वेणुवादकों का समूह	मार्दङ्गिकाश्च वैणविकाश्च	मार्दङ्गिक जस् वैणविक जस्	चार्थे द्वन्द्वः
सेना	रथिकाश्वा-रोहम्	रथिकों और घुड़सवारों का समूह	रथिकाश्च अश्वारोहश्च	रथिक जस् अश्वारोह जस्	चार्थे द्वन्द्वः
वाक्त्वचम्		वाणी और त्वचा का समुदाय	वाक् च त्वक् च	वाच् सु त्वच् सु	चार्थे द्वन्द्वः
त्वक्स्रजम्		त्वचा और माला का समुदाय	त्वक् च स्रक् च तयो: समाहार:	त्वच् सु स्रक् सु	चार्थे द्वन्द्वः
शमीदृषदम्		शमी और पत्थर का समुदाय	शमी च दृषत् च	शमी सु दृषद् सु	चार्थे द्वन्द्वः
वाक्त्विषम्		वाणी और कान्ति का समुदाय	वाक् च त्विट् च तयो: समाहार:	वाच् सु त्विष् सु	चार्थे द्वन्द्वः
छत्रोपानहम्		छाते और जूते का समूह	छत्रं च उपानहौ च तेषां समाहार:	छत्र सु उपानह औ	चार्थे द्वन्द्वः
प्रावृट्शरदौ		बिजली और ठण्डी	प्रावृट् च शरच्च	प्रावृट् च शरच्च	चार्थे द्वन्द्वः

कारक प्रकरण

क्रियान्वयित्वं कारकत्वम् – अर्थात क्रिया के साथ जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं।

कर्त्ता (प्रथमा विभक्ति) का सूत्र – 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा'

केवल प्रातिपादिक अर्थ, लिङ्ग, परिमाण एवं वचन (संख्या) का जहाँ बोध कराना हो, वहाँ प्रथमा विभक्ति होती है। प्रत्येक पद के अर्थ को प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। किसी के नाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या जाति को बोध हो रहा हो वह प्रतिपदिकार्थ है। अब क्रमशः इनके उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

प्रातिपदिकार्थ- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः और ज्ञानम्, ये सभी प्रातिपादिकमात्र के उदाहरण हैं। जैसे- कृष्णः रावणं हतः। कृष्ण ने रावण को मारा।

लिङ्गमात्र इति - लिङ्गमात्र के उदाहरण अनियत लिङ्ग शब्द हैं। जैसे- तटः तटी तटम् - यहाँ जाति और द्रव्य से अधिक लिङ्गमात्र अर्थ की प्रतीति होती है, इसलिए यहाँ प्रथमा विभक्ति हुई। तट शब्द अनियत लिंग है, इसका कोई नियत लिंग नहीं है, यह कभी पुल्लिंग, कभी स्त्रीलिंग और कभी नपुंसकलिंग होता है।

परिमाणेति - परिमाण मात्र में - द्रोणो व्रीहिः। यहाँ परिमाण अर्थ में द्रोण शब्द में प्रथमा विभक्ति होगी।

वचनमिति - वचन संख्या को कहते हैं। संख्यावाचक शब्दों से संख्या अर्थ में ही प्रथमा विभक्ति होती है। विभक्ति के द्वारा प्रातिपादिक संख्या का अनुवाद होता है, जैसे- एकः द्वौ, बहवः।

सम्बोधने च - सम्बोधन का बोध कराने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- हे राम !

उदाहरण -

सः गृहं गच्छति। वह घर जाता है।

रमा फलं खादति। रमा फल खाती है।

हे राम ! अत्र आगच्छ। हे राम ! यहाँ आओ।

कर्म कारक

द्वितीय विभक्ति विधायक सूत्र-कर्मणि द्वितीया

कर्म संज्ञा विधायक सूत्र-कर्तुरीप्सिततमं कर्म

1. अकथितं च -

अप्रधान या गौण कर्म को अकथित कर्म कहते हैं। सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण आदि कारकों की जहाँ अविवक्षा हो वहाँ उनकी कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यह कर्म कभी अकेला प्रयुक्त नहीं होता, वरन् सदैव मुख्य कर्म के साथ ही प्रयुक्त होता है। संस्कृत भाषा में इस तरह की **सोलह (16) धातुएँ** हैं, उनके प्रयोग में एक तो मुख्य कर्म होता है और दूसरा अविवक्षित गौण कर्म होता है। इस गौण कर्म में भी द्वितीया विभक्ति होती है। ये धातुएँ ही द्विकर्मक धातुएँ कही जाती हैं। जो निम्नलिखित हैं—

दुह्याचपच्दण्ड्रुदण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रू शासुजिमथ्मुषाम।
कर्मयुक् स्यादकथित तथा स्यानीहृकृष्वहाम।।

दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना, घेरना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना, चयन करना), ब्रू (कहना, बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (हरण करना), कृष् (खींचना), वह् (ढोकर ले जाना)। इन 16 **धातुओं** में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है—

1. दुह् (दुहना) - **श्यामः गां दोग्धि।** श्याम गाय से दूध दुहता है।
2. याच् (माँगना) - **महेशः हरिं कलमं याचते।** महेश हरि से कलम माँगता है।
3. पच् (पकाना) - **रमा तण्डुलान् ओदनं पचति।** रमा चावलों से भात पकाती है।
4. दण्ड् (दण्ड देना) - **राजा सेवकं शतं दण्डयति।** राजा सेवक को सौ रुपये का दण्ड देता है।
5. रुध् (रोकना, घेरना) - **ग्वालः व्रजं गामम् अवरुणद्धि।** ग्वाला व्रज में गाय को रोकता है।
6. प्रच्छ् (पूछना) - **अध्यापकः छात्रान् प्रश्नं पृच्छति।** अध्यापक छात्रों से प्रश्न पूछता है।
7. चि (चुनना, चयन करना) - **मालाकारः वृक्षं पुष्पं चिनोति।** माली वृक्ष से पुष्प चुनता है।
8. ब्रू (कहना, बोलना) - **गुरु शिष्यं धर्मं ब्रूते।** गुरु शिष्य से धर्म कहता है।
9. शास् (शासन करना, कहना) - **गुरु शिष्यं धर्मं शास्ति।** गुरु शिष्य से धर्म कहता है।
10. जि (जीतना) - **रविः महेशं शतं जयति।** रवि महेश से सौ रुपये जीतता है।
11. मथ् (मथना) - **देवाः क्षीरनिधिं सुधां मथ्नान्ति।** देवता क्षीरसागर से अमृत मथते हैं।
12. मुष् (चुराना) - **चौरः मोहनं धनं मुष्णाति।** चोर मोहन से धन चुराता है।
13. नी (ले जाना) - **अशोकः अश्वं ग्रामं नयति।** अशोक घोड़े को गाँव ले जाता है।
14. हृ (हरण करना) - **सः कृपणं धनं हरति।** वह कंजूस के धन को हरता है।
15. कृष् (खींचना) - **कृषकः क्षेत्रं वृषभं कर्षति।** किसान खेत में बैल को खींचता है।
16. वह् (ढोकर ले जाना) - **गर्दभः ग्रामं भारं वहति।** गधा गाँव में बोझा ढोकर ले जाता है। **(देखें चित्र अग्रिम पृष्ठ)**

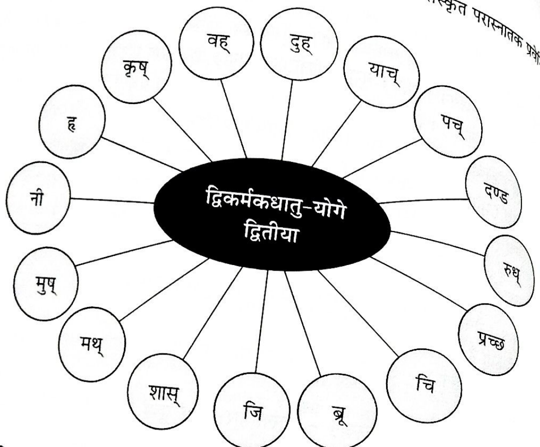
2. अधिशीङ्स्थासां कर्म

'अधि' उपसर्ग पूर्व शीङ् (सोना), स्था (ठहरना) एवं आस् (बैठना) धातुएँ आती हैं तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

विष्णुः समुद्रम् अधिशेते। विष्णु समुद्र में सोते हैं।

सः छात्रावासम् अधितिष्ठति। वह छात्रावास में ठहरता है।

शिवः कैलाशम् अध्यास्ते। शिव कैलाश पर बैठते हैं।



3. अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि

अभितः (सब ओर से), परितः (चारों ओर से), समया (निकट), निकषा (समीप), हा (धिक्कार या विपत्ति आने पर), प्रति (ओर) शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

नदीम् अभितः वृक्षाः सन्ति। नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।

ग्रामं परितः उद्यानानि सन्ति। गाँव के चारों ओर उद्यान हैं।

नगरं समया निकषा वा नद्यः सन्ति। नगर के निकट अथवा समीप नदी है।

हा दुर्जनम्। हाय दुष्ट।

दीनं प्रति दयां कुरु। गरीब के प्रति दया करो।

4. प्रत्यनुधिङ्निकषान्तरान्तरेणयावद्भिः

प्रति (ओर), अनु (पीछे), धिक् (धिक्कार), निकषा (निकट), अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना), यावत् (तक) आदि शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

रामम् अनु सीता गच्छति। राम के पीछे सीता जाती है।

धिक् दुष्टं जनम्। दुष्ट व्यक्ति को धिक्कार है।

अन्तरा त्वां मां हरिः। तुम्हारे और मेरे बीच मे हरि हैं।

अन्तरेण हरिं न सुखम्। हरि के बिना सुख नहीं।

नगरं यावत् नदीम् अस्ति। नगर तक नदी है।

5. उपान्वध्याङ्वसः

उप, अनु, अधि, आङ् (आ) उपसर्गपूर्वक वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

गोपालः नगरम् उपवसति। गोपाल नगर में रहता है।

श्यामः गृहम् अनुवसति। श्याम घर के पीछे रहता है।

विष्णुः वैकुण्ठम् अधिवसति। विष्णु वैकुण्ठ में रहते हैं।

हरिः वैकुण्ठम् आवसति। हरि वैकुण्ठ में रहते हैं।

6. अभिनिविशश्च

जब अभि और नि ये दोनों उपसर्ग विश् धातु में जो आधार हैं, तो इसके आधार की कर्म संज्ञा होती है और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

रमेशः सन्मार्गम् अभिनिविशते। रमेश सत्मार्ग में लगता है।

7. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

समय और दूरी की निरन्तरता बताने वाले कालवाची और मार्गवाची (दूरीवाची) शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

क्रोशं कुटिला नदी। पूरे कोस तक नदी टेढ़ी है।

सा मासम् अधीते। वह महीने भर पढ़ता है।

8. क्रियाविशेषणे द्वितीया

क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

पिकः मधुरं गायति। कोयल मधुर गाती है।

पवनः मन्दं-मन्दं वहति। हवा धीरे-धीरे बहती है।

(देखें द्वितीयाविभक्ति चित्र अग्रिम पृष्ठ)

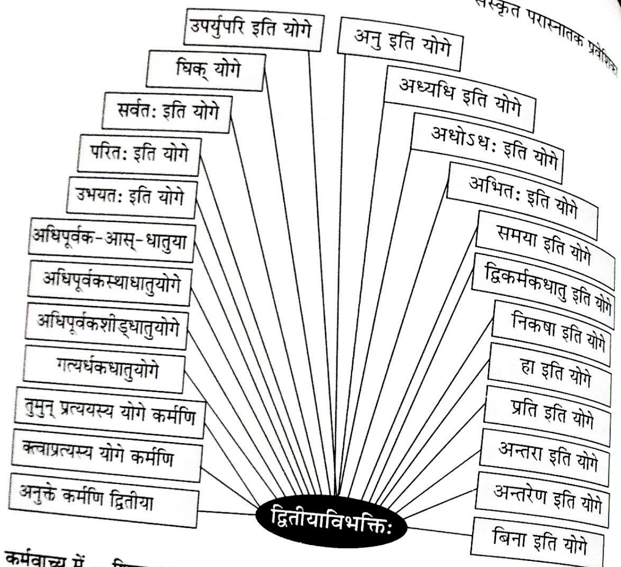
करण कारक

(तृतीया विभक्ति) का सूत्र – 'साधकतमं करणम्, कर्तृकरणयोस्तृतीया।'

क्रिया की सिद्धि में जो सर्वाधिक सहायक कारक हो, उसकी करण संज्ञा (नाम) होती है और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। अनुक्त कर्ता अर्थात् कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता में तथा करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

मदनः कलमेन लिखति। मदन कलम से लिखता है।

इस वाक्य में मदन कर्ता है और वह कलम की सहायता से लिख रहा है इसलिए कलम सहायक कारक है।



कर्मवाच्य में – शिशुना चन्द्रः दृश्यते। बच्चा चन्द्रमा को देखता है।

भाववाच्य में – तेन हस्यते। वह हँसता है।

1. अपवर्गे तृतीया

कार्य की समाप्ति या फल प्राप्ति के अर्थ में कालवाचक और मार्गवाचक शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः मासेन संस्कृतं शिक्षितम्। उसने महीने भर में संस्कृत सीख ली।

केशवः त्रिक्रोशेन उत्तररामचरितं पठितम्। केशव ने तीन कोस जाते-जाते उत्तररामचरित पढ़ ली।

2. सहयुक्तेऽप्रधाने

सह, साकम्, समम् और सार्धम् शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

पिता पुत्रेण सह गच्छति। पिता पुत्र के साथ जाता है।

रमा गीतया साकं पठति। रमा गीता के साथ पढ़ती है।

गुरुः छात्रेण समं गतः। गुरु छात्र के साथ गया।

केशवः स्वमित्रैः सार्धं क्रीडन्ति। केशव अपने मित्रों के साथ खेलता है।

3. येनाङ्गविकारः

अङ्गी के जिस विकृत अङ्ग से अङ्ग विकार लक्षित होता है उस विकृत अङ्ग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः कर्णेन बधिरः अस्ति। वह कान से बहरा है।

दीपकः पादेन खञ्जः अस्ति। दीपक पैर से लगड़ा है।

सूरदासः नेत्राभ्याम् अन्धः आसीत्। सूरदास आँखों से अन्धा था।

4. इत्थंभूतलक्षणे

जिस चिह्न से किसी का ज्ञान होता है उस चिह्नवाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

सः जटाभिः तापसः प्रतीयते। वह जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है।

गोविन्दः पुस्तकैः छात्रः प्रतीयते। गोविन्द पुस्तकों से छात्र ज्ञात होता है।

5. हेतौ

हेतु अथवा कारण के अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे- अध्ययनेन वसति

विद्यया यशः वर्धते। विद्या से यश बढ़ता है।

पुण्येन प्रभु प्राप्यते। पुण्य से प्रभु मिलते हैं।

6. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्

पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

जलेन विना मत्स्याः न जीवन्ति। जल के बिना मछलियाँ जीवित नहीं रहती।

7. निषेधार्थक 'अलम्'

अलम् शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

अलं कलहेन। कलह मत करो।

8. प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानाम्

प्रकृति आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

रविः प्रकृत्य साधुः अस्ति। रवि प्रकृति से सज्जन है।

श्यामः आकृत्या सुन्दरः अस्ति। श्याम आकृति से सुन्दर है।

9. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यनरस्याम्

किसी के साथ तुलना किये जाने के अर्थ में जो शब्द प्रयुक्त होते हैं, उनमें विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है। पक्ष में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

सीतायाः मुखं चंद्रेण तुल्यम् अस्ति। सीता का मुख चन्द्रमा के समान है।

सम्प्रदान कारक

(चतुर्थी विभक्ति) का सूत्र – 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने।'

दान के कर्म द्वारा कर्ता जिसे उपकृत अर्थात् खुश करता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा (नाम) होती है और सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण – सः विप्राय गां ददाति। वह ब्राह्मण के लिए गाय देता है।

इस वाक्य में वह कर्ता है और दान क्रिया के कर्म गौ के द्वारा विप्र (ब्राह्मण) को उपकृत करता है, अतः विप्र में सम्प्रदान संज्ञा हुई और उससे चतुर्थी विभक्ति हुई।

1. नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च

नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण), स्वाहा (आहुति), स्वधा (बलि), अलम् (समर्थ, पर्याप्त), वषट् (आहुति) के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

हरये नमः। हरी (भगवान) को नमस्कार है।

प्रजाभ्यः स्वस्ति। प्रजा का कल्याण हो।

अग्नये स्वाहा। अग्नि के लिए आहुति।

पितृभ्यः स्वधा। पितरों के लिए अन्नादि।

दैत्येभ्यः हरिः अलम्। दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं।

इन्द्राय वषट्। इन्द्र के लिए आहुति।

2. स्पृहेरीप्सितः

स्पृह (चाहना) धातु के योग में ईप्सित अर्थात् जिस वस्तु को चाहा जाता है, उस वस्तु में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

सा पुष्पेभ्यः स्पृह्यति। वह पुष्प की इच्छा करती है।

3. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह (द्रोह करना), ईर्ष्या (ईर्ष्या करना), असूय् (गुणों में दोष निकालना या जलना) धातुओं एवं इनके समान अर्थ वाली धातुओं के योग में जिसके प्रति क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या और असूया की जाती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

गुरुः शिष्याय क्रुध्यति। गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।

सेवकः नृपाय द्रुह्यति। सेवक राजा से द्रोह करता है।

दुर्जनः सज्जनाय ईर्ष्यति। दुर्जन सज्जन से ईर्ष्या करता है।

प्रणयः अशोकाय असूयति। प्रणय अशोक की निन्दा करता है।

4. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

रुचि के अर्थ वाली धातुओं के योग में जिसको वस्तु अच्छी लगती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

भक्ताय रामायणं रोचते। भक्त को रामायण अच्छी लगती है।

बालकाय मोदकं रोचते। बालक को लड्डू अच्छा लगता है।

5. धारेरुत्तमर्णः

धारि धातु के अर्थ में उत्तमर्णः (कर्ज देने वाला) में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

सोहनः रमेशाय शतं धारयति। सोहन रमेश के सौ रुपये का ऋणी है।

6. तादर्थ्ये चतुर्थी

जिसके लिए कोई चीज हो या जिसके लिए कोई क्रिया की गयी हो उसे तादर्थ्य कहते हैं। इसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

सः मुक्तये हरिं भजति। वह मुक्ति के लिए हरि को भजता है।

7. तुमर्थाच्च भाववचनात् चतुर्थी

तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

भोजनाय गृहं गच्छति बालकः। भोजन करने के लिए बालक घर जाता है।

8. श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः

श्लाघ् (स्तुति करना), ह्नुङ् (छिपना, दूर करना), स्था (ठहरना), शप् (उलहना देना) आदि धातुओं के प्रयोग में, जिसे कर्ता अपने भाव का बोध कराना चाहता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

गोपी स्मरात् कृष्णाय शपते। गोपी स्मरण करते हुए कृष्ण को उलाहना देती है।

9. क्लृपि सम्पद्यमाने

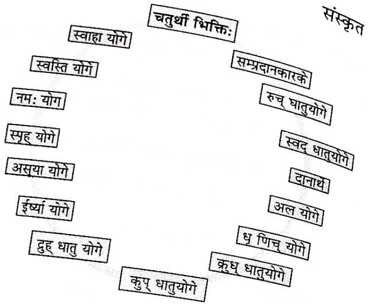
क्लृप्, जन्, भू और सम् पूर्वक धातु के पद के योग में यदि सम्पद्यमान अर्थात् किसी रूप में होने या परिणत होने का भाव रहता है तो चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

भक्तिः ज्ञानाय कल्पते। भक्ति ज्ञान के लिए समर्थ होती है।

10. हितयोगे

हित के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

ब्राह्मणाय हितं कार्यं कुरु। ब्राह्मण के लिए हितकारी कार्य करो।



अपादान कारक

(पञ्चमी विभक्ति) का सूत्र – 'ध्रुवमपायेऽपादानम्, अपादाने पञ्चमी।'

किसी व्यक्ति या वस्तु के अलग होने में जो कारक ध्रुव अर्थात् अचल है, वह अपादान कारक कहलाता है। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण – रमेशः ग्रामात् आयाति। रमेश गाँव से आता है। इस वाक्य में ग्राम अचल है, इसलिये इसकी अपादान संज्ञा हुई और उससे पञ्चमी विभक्ति हुई।

1. जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानाम्

जुगुप्सा (घृणा करना), विराम (रुकना), प्रमाद (असावधानी करना) अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे घृणा आदि की जाती है, उसकी अपादान संज्ञा होती है और अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

सः पापात् जुगुप्सते। वह पाप से घृणा करता है।

रविः अध्ययनात् विरमति। रवि अध्ययन से रुकता है।

सः धर्मात् प्रमाद्यति। वह धर्म से प्रमाद करता है।

2. भीत्रार्थानां भयहेतुः

भय अर्थ वाली और रक्षा अर्थ वाली धातुओं के योग में भय का जो कारण रहता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

बालकः सर्पात् बिभेति। बालक साँप से डरता है।

नृपः दुष्टेभ्यः रक्षति। राजा दुष्टों से रक्षा करता है।

3. पराजेरसोढः

'परा' उपसर्ग पूर्वक 'जि' धातु के योग में असह्य वस्तु की अपादान संज्ञा होती है और उसमें अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

मोहनः अध्ययनात् पराजयते। मोहन अध्ययन से हार मान रहा है।

4. वारणार्थानामीप्सितः

जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु को दूर किया जाए, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

यवेभ्यो गां वारयति, शस्यात् वृषभं वारयति। फ़सल से बैलों को हटाता है।

5. अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति

अन्तर्धि का अर्थ है 'ओट (व्यवधान)', व्यवधान होने पर जिससे अपने आप को छिपाना चाहता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

मातुर्निलीयते कृष्णः। कृष्ण माता से छिपता है।

6. आख्यातोपयोगे

जिससे नियमपूर्वक विद्या सीखी जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

सः उपाध्यायाद् वेदम् अधीते। वह उपाध्याय से वेद पढ़ता है।

7. जनिकर्तुः प्रकृतिः

जो जन्म देता है या उत्पत्ति करता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते। ब्रह्मा प्रजा की उत्पत्ति करते हैं।

8. भुवः प्रभवः

'भू' धातु के योग में जहाँ से कोई चीज उत्पन्न होती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

हिमालयात् गङ्गा प्रभवति। हिमालय से गंगा निकलती है।

9. अन्यारादितर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते

अन्य (दूर), आरात् (समीप), ऋते (बिना), दिक्शब्दा (दिशावाची शब्द), अञ्चूनपद (प्राक्, प्रत्यक्), आच् प्रत्ययान्त (दक्षिणा आदि शब्द) आहि प्रत्ययान्त (दक्षिणाहि आदि शब्द) आदि शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—

गृहात् आरात् क्षेत्रम् अस्ति। घर के समीप खेत है।

ग्रामात् उत्तरस्यां तडागः अस्ति। गाँव से उत्तर में तालाब है।

परिश्रमात् ऋते विद्या न भवति। परिश्रम के बिना विद्या नहीं होती है।

चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः भवति। चैत्र से पहले फाल्गुन होता है।

10. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्

पृथक्, विना, नाना के योग में विकल्प से तृतीया विभक्ति होती है और पक्ष में पंचमी और द्वितीया विभक्ति भी होती है। जैसे—

धर्मात्, धर्मेण, धर्मं वा विना कुत्र सुखं? धर्म के बिना सुख कहाँ?
नगरात् पृथक् आश्रमः अस्ति। नगर से पृथक् आश्रम है।

11. बहिर्योगे पंचमी

बहिः (बाहर) के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—
ग्रामात् बहिः मन्दिरं वर्तते। गाँव के बाहर मन्दिर है।

12. पचम्यपाङ्परिभिः

अप, आङ्, परि इन कर्मप्रवचनीय संज्ञाओं के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—
आमुक्तेः संसारः। मुक्ति तक संसार है।

13. अपेक्षार्थे पञ्चमी

तुलना में जिसे श्रेष्ठ बताया जाए, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—
विद्या धनादपि गरीयसी। विद्या धन से भी श्रेष्ठ है।

(देखें पञ्चमी विभक्ति चित्र अग्रिम पृष्ठ)

सम्बन्ध

(षष्ठी विभक्ति) का सूत्र – 'षष्ठी शेषे'

शेषे का अर्थ है 'बचा हुआ' अर्थात् कर्तादि कारकों से बचा हुआ जो स्व और स्वामी आदि का सम्बन्ध है, वह शेष है। उस सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

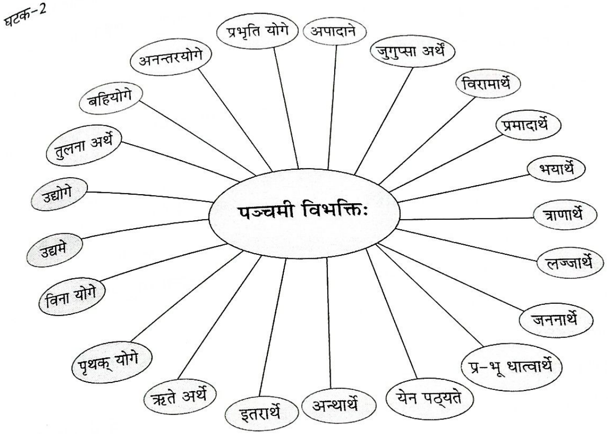
उदाहरण – रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्। राम दशरथ के पुत्र थे। इस वाक्य में दशरथ का राम के साथ सम्बन्ध प्रकट हो रहा है, अतः यहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

1. षष्ठी हेतु प्रयोगे

हेतु शब्द का प्रयोग करने पर प्रयोजनवाचक शब्द एवं हेतु शब्द, दोनों में ही षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे—
सः अन्नस्य हेतोः वसति। वह अन्न के कारण रहता है।

2. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन

दिशावाची अतस् प्रत्यय तथा उसके अर्थ वाले प्रत्यय लगाकर बने शब्दों और पुरस्तात् (सामने), पश्चात् (पीछे), उपरिष्टात् (ऊपर की ओर) और अधस्तात् (नीचे की ओर) आदि शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—



अपादाने	वृक्षात् पत्रं पतति	त्राणार्थे	वीरः बालकं सिंहात् त्रायते
विरामार्थे	सत्यनिष्ठावान् जनः कर्त्तव्यात् न कदापि विरमति	प्रभृतियोगे	शेशवात् प्रभृति न कदापि अनृतमुक्तम्
जुगुप्ता अर्थे	भक्तः पापात् जुगुप्सते	लज्जार्थे	वधुः श्वसुरात् लज्जते
अनन्तरयोगे	सोमवासरात् अनन्तरमागमिष्यामि	जननार्थे	ब्रह्मणः प्रजाः जायन्ते
बहिर्योगे	नगरात् बहिः रमणीपमुद्यानमस्ति	प्र-भू धात्वार्थे	गंगा हिमालयात् प्रभवति
तुलना अर्थे	रामः श्यामात् पटुतरः अस्ति	येन पठ्यते	छात्रः अध्यापकात् अधीते
उद्योगे	उद्योगात् नरः सर्व प्राप्तुमर्हति	अन्यार्थे	ईश्वरात् अन्यः कः रक्षकः
उद्यमे	उद्यमात् विना धनं न लभते	भयार्थे	बालकः कुक्कुरात् विभेति
विना योगे	ज्ञानात् विना न मुक्तिः	प्रमादार्थे	स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यम्
ऋते अर्थे	श्रमात् ऋते कुतः विद्या	इतरार्थे	धर्मात् इतरः कः अवलम्बः
पृथक् योगे	श्रमात् पृथक् कुतः विद्या		

नगरस्य दक्षिणतः देवालयः अस्ति। नगर के दक्षिण की ओर मन्दिर है।

भूम्याः अधः जलम् अस्ति। भूमि के नीचे की ओर जल है।

3. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्तरस्याम्

दूर और समीप अर्थ वाले शब्दों के योग में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। पक्ष में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—

कूपः ग्रामस्य दूरम् अस्ति। कुआँ गाँव से दूर है।

गृहस्य निकटं पुस्तकालयः अस्ति। घर के निकट पुस्तकालय है।

4. अधीगर्थदयेशां कर्मणि

'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इ' धातु (अधीक्) अर्थात् स्मरण अर्थ वाली धातु के साथ कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

भक्तः ईश्वरस्य स्मरति। भक्त ईश्वर को स्मरण करता है।

5. दिवस्तदर्थस्य

'दिव्' धातु का प्रयोग जुआ खेलने के अर्थ में होता है और उसके योग में भी कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

सः शतस्य दीव्यति। वह सौ का जुआ खेलता है।

6. कर्तृकर्मणोः कृतिः

कृदन्त शब्द अर्थात् जिनके अन्त में कृत् प्रत्यय तृच् (तृ), अच् (अ), घञ् (अ), ल्युट् (अन्), क्तिन् (ति), ण्वुल् (अक्) आदि रहते हैं। ऐसे शब्दों के कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

मेघदूतं कालिदासस्य कृतिः अस्ति। मेघदूत कालिदास की कृति है।

बालानां रोदनं बलम्। बच्चों का रोना ही बल है।

7. क्तस्य च वर्तमाने

भूतकालवाचक 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द जब वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है, तब षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

अहमेव मतो महीपतेः। राजा मुझे ही मानते हैं।

8. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्

तुलनावाची शब्दों के योग में षष्ठी अथवा तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

रमा गीतायाः (गीतया वा) तुल्या अस्ति। रमा गीता के समान है।

सत्यस्य (सत्येन) तुल्यं तपः नास्ति। सत्य के समान तप नहीं है।

9. जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्

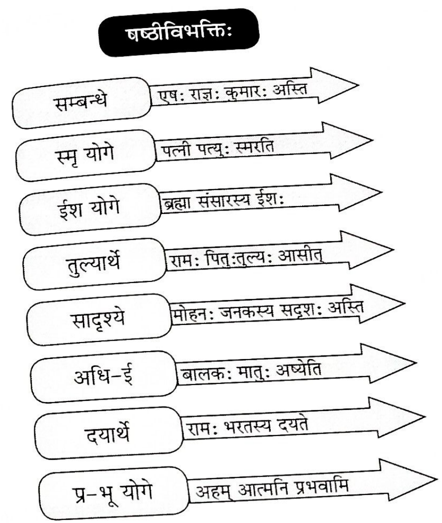
हिंसार्थक जासि, नि, तथा प्र उपसर्गपूर्वक हन्, क्रथ, नट् और पिज् धातुओं के कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—

राजा अपराधिनः प्रहन्तुं आदेशं ददाति। राजा अपराधी को मारने का आदेश देता है।

10. कृत्यानां कर्तरि वा

कृत्य प्रत्ययों के योग में कर्ता में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। पक्ष में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

मया मम वा सेव्यो हरिः। मेरे द्वारा हरि सेवनीय है।



अधिकरण कारक

(सप्तमी विभक्ति) का सूत्र – 'आधारोऽधिकरणम् सप्तम्यधिकरणे च।'

कर्ता और कर्म के द्वारा उनमे स्थित क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं।

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।

उदाहरण – वृक्षे काकः तिष्ठति। वृक्ष पर कौआ बैठा है। इस वाक्य में 'वृक्षे' में अधिकरण कारक है, इसलिए यहाँ सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

1. साध्वसाधु प्रयोगे च

'साधु' तथा 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में जिसके प्रति साधुता अथवा असाधुता प्रदर्शित की जाती है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

साधुः कृष्णो मातरि। कृष्ण माता के प्रति अच्छा है।

असाधुः कृष्णो मातुले। कृष्ण मामा के प्रति बुरा है।

2. यस्य च भावेन भावलक्षणम्

जब एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होती है, तब पूर्व क्रिया और उसके कर्ता में सप्तमी विभिक्ति होती है। जैसे—

गोषु दुह्यमानासु गतः। जब गाय दुही जा रही थी तब वह गया।

सूर्ये अस्तं गते सर्वे बालकाः स्वगृहम् अगच्छन्। सूर्य अस्त होने पर सभी बालक अपने घर चले गए।

3. यतश्च निर्धारणम्

जाति, गुण, क्रिया और संज्ञा आदि के द्वारा अनेक में से यदि किसी एक वस्तु की महत्ता बताई जाए तो वहाँ षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती हैं। जैसे—

गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा। गायों में कृष्णा बहुत दूध वाली होती है।

छात्राणां छात्रेषु वा रमेशः पटुः। छात्रों में रमेश चतुर है।

जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः। जीवों में मानवलोग श्रेष्ठ हैं।

ऋषिषु वाल्मीकिः श्रेष्ठः। ऋषियों में वाल्मीकि श्रेष्ठ हैं।

4. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः

साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

निपुणो राज्ञो सेवकः। राजा का सेवक निपुण है।

5. यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी

जिससे अधिक हो और जिसका स्वामित्व कहा जाए उसमें कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

उप परार्धे हरेर्गुणाः। हरि के गुण असंख्य हैं।

अधि भुवि रामः। राम भूमि के स्वामी हैं।

6. अवच्छेदे सप्तमी

शरीर के किसी भी अंग में यदि सप्तमी विभक्ति लगी रहती तो उसे 'अवच्छेदे' कहते हैं। जैसे—

करे गृहीत्वा कथितः। हाथ में लेकर कहा।

7. निमित्तात् कर्मयोगे वा सम्प्रदाने सप्तमी या निमित्तार्थे सप्तमी

क्रिया का कर्म मौजूद हो तो जिस प्रयोजन को लेकर काम किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। चमड़े के लिए चीते को मारता है।

8. अध्वनि प्रथमा सप्तम्यौ

यदि व्यवधान या दूरी का बोध होता हो तो मार्ग वाचक शब्द में प्रथमा और सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—

जयपुरनगरम् दिल्लीतः बहुषु क्रोषेषु बहवः क्रोशाः वा स्थितम्। जयपुर नगर दिल्ली से कई कोस दूर स्थित है।

9. कुशलनिपुणप्रविनपण्डितश्च योगे सप्तमी

जिस कार्य में कोई व्यक्ति कुशल, निपुण, प्रवीण और पंडित हो, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—

श्रीकृष्णः वंशीवादने प्रवीणः। श्रीकृष्ण वंशी बजाने में प्रवीण हैं।

मम माता भोजनस्य पाचने कुशला। मेरी माता खाना बनाने में कुशल है।

भीमः गदाविद्यायां निपुणः आसीत्। भीम गदा विद्या मे निपुण थे।

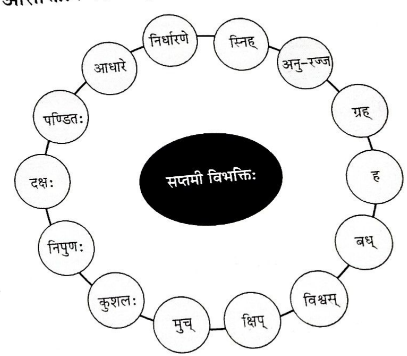
राघवः संस्कृतव्याकरणे पण्डितः अस्ति। राघव संस्कृत व्याकरण में पंडित है।

10. अभिलाषानुरागस्नेहासक्ति योगे सप्तमी

जिसमें मनुष्य की अभिलाषा, अनुराग, स्नेह या आसक्ति हो, उसमें सप्तमी विभक्ति होती हैं। जैसे—

माता पुत्रे स्निह्यति। माता पुत्र को प्रेम करती है।

मम संस्कृतविषये आसक्तिः। मेरी संस्कृत विषय में आसक्ति है।



स्त्री प्रत्यय

स्त्री प्रत्यय प्रकरण लघुसिद्धान्त कौमुदी का अन्तिम प्रकरण है। सामान्यतया जो शब्द पुँल्लिङ्ग में हो उसे स्त्रीलिङ्ग में बनाने के लिए अथवा स्वाभाविक स्त्रीलिङ्गबोध हेतु स्त्री प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। यहाँ स्त्री प्रत्ययों की संख्या लगभग कुल 7 है-टाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ् और ति। क्रमशः उदाहण अधोलिखित है।

सूत्र- अजाद्यतष्टाप्

शब्द	मूलपद+स्त्री प्रत्यय
अजा	अज +टाप्
एडका	एडक्+टाप्
अश्वा	अश्व+टाप्
चटका	चटक+टाप्
मूषिका	मूषक+टाप्
बाला	बाल+टाप्
वत्सा	वत्स+टाप्
होडा	होड+टाप्
मन्दा	मन्द+टाप्
विलाता	विलात+टाप्
मेधा	मेध+टाप्
गङ्गा	गङ्ग+टाप्
सर्वा	सर्व+टाप्

❖ **सूत्र-उगितश्च**

भवती/ भवन्ती	भवत+ङीप्
पचन्ती	पचत+ङीप्
दीव्यन्ती	दीव्यत्+ङीप्

❖ **सूत्र-टित्-ढ-अण्-अञ्-द्वयसच्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरप:**

टित्	नदी	नद+ङीप्
	देवी	देव+ङीप्
	कुरुचरी	कुरुचर+ङीप्
ढ	सौपर्णेयी	सौपर्णेय+ङीप्
अण्	ऐन्द्री	ऐन्द्र+ङीप्
अञ्	औत्सी	औत्स+ङीप्

द्वयसच्	ऊरुद्वयसी	ऊरुद्वयस+ङीप्
दघ्नञ्	ऊरुदघ्नी	ऊरुदघ्न+ङीप्
मात्रच्	ऊरुमात्री	ऊरुमात्र+ङीप्
तयप्	पञ्चतयी	पञ्चतय+ङीप्
ठक्	आक्षिकी	आक्षिक+ङीप्
ठञ्	प्रास्थिकी	प्रास्थिक+ङीप्
कञ्	यादृशी	यादृश+ङीप्
क्वरप्	इत्वरी	इत्वर+ङीप

❖ **वार्तिक-** नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम्

नञ्	स्त्रैणी	स्त्रैण+ङीप्
स्नञ्	पौंस्नी	पौँस्न+ङीप्
आढ्यङ्करणी		आढ्यङ्करण+ङीप्
तरुणी		तरुण+ङीप्
तलुनी		तलुन+ङीप्

❖ **सूत्र-यञश्च**

गार्गी	गार्ग्य+ङीप्

❖ **सूत्र-वयसि प्रथमे**

कुमारी	कुमार+ङीप्
किशोरी	किशोर+ङीप्

❖ **सूत्र-द्विगो:**

त्रिलोकी	त्रिलोक+ङीप्
त्रिफला त्र्यनीका	टाप्

❖ **सूत्र-वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो न:**

एनी	एत+ङीप्

- एता–एत+टाप्
- रोहिता–रोहित+टाप्

❖ **सूत्र-षिद्गौरादिभ्यश्च**

गार्ग्यायणी	गार्ग्यायण + ङीष्
नर्तकी	नर्तक + ङीष्
गौरी	गौर + ङीष्
अनड्वाही	अनडुह + ङीष्
अनडुही	अनडुह + ङीष्

❖ **सूत्र- वोतो गुणवचनात्**

मृद्वी	मृदु + ङीष्
पट्वी	पटु+ङीष्

❖ **सूत्र- बह्वादिभ्यश्च**

बह्वी	बहु+ङीष्

❖ **वार्तिक-कृदिकारादक्तिन्**

रात्री	रात्रि+ङीष्

❖ **वार्तिक- सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके**

शकटी	शकटि + ङीष्

❖ **सूत्र- पुंयोगादाख्यायाम्**

गोपी	गोप्+ङीष्

- गोपालिका-गोपालक+टाप्
- सर्विका-सर्वक+टाप्
- कारिका-कारक+टाप्
- अश्वपालिका-अश्वपालक+टाप्
- बहुपरिव्राजिका-बहुपरिव्राजक+टाप्
- धनक्रीता-धनक्रीत+टाप्

❖ **वार्तिक-सूर्याद् देवतायां चाब्वाच्यः**

सूर्या	सूर्यस्य देवता स्त्री (सन्ध्या)	सूर्य+चाप्
सूरी	सूर्यस्य मानुषी स्त्री (कुन्ती)	सूर्य+ङीष्

❖ **सूत्र-इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्**

इन्द्राणी	इन्द्र+आनुक्+ङीष्
वरुणानी	वरुण+आनुक्+ङीष्
शर्वाणी	शर्व+आनुक्+ङीष्
रुद्राणी	रुद्र+आनुक्+ङीष्
भवानी	भव+आनुक्+ङीष्
मृडानी	मृड+आनुक्+ङीष्

❖ **वार्तिक- हिमारण्ययोर्महत्त्वे**

हिमानी	हिम+आनुक्+ङीष्

❖ **वार्तिक-यवाद् दोषे**

यवानी	दुष्टो यवो यवानी	यव+आनुक्+ङीष्

❖ **वार्तिक- यवनाल्लिप्याम्**

यवनानी	यवनानां लिपिः यवनानी	यवन+आनुक्+ङीष्

❖ **वार्तिक- मातुलोपाध्याययोरानुग्वा (आनुक् का आगम विकल्प से)**

मातुलानी	मातुल+आनुक्+ङीष्
मातुली	मातुल+ङीष्
उपाध्यायानी	उपाध्याय+आनुक्+ङीष्
उपाध्यायी	उपाध्याय+ङीष्

❖ **वार्तिक-आचार्यादणत्वं च (णत्व का निषेध)**

आचार्यानी	आचार्यस्य स्त्री	आचार्य+आनुक्+ङीष्

❖ **वार्तिक- अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे**

अर्याणी	अर्य+आनुक्+ङीष्
अर्या	अर्य+टाप्
क्षत्रियाणी	क्षत्रिय+आनुक्+ङीष्
क्षत्रिया	क्षत्रिय+टाप्

❖ **सूत्र-क्रीतात् करणपूर्वात्**

वस्त्रक्रीति	वस्त्रक्रीत+ङीष्

❖ सूत्र- स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्

अतिकेशी	अतिकेश+ङीष्
अतिकेशा	अतिकेश+टाप्
चन्द्रमुखी	चन्द्रमुख+ङीष्
चन्द्रमुखा	चन्द्रमुख+टाप्
सुगुल्फ़ा	सुगुल्फ़+टाप्

❖ सूत्र-न क्रोडादिबह्वचः (स्व अङ्ग के साथ ङीष् प्रत्यय का निषेध)

कल्याणक्रोडा	कल्याणक्रोड+टाप्
सुजघना	सुजघन+टाप्

❖ सूत्र-नखमुखात्संज्ञायाम् (ङीष् प्रत्यय का निषेध)

शूर्पनखा	शूर्पनख+टाप्
गौरमुखा	गौरमुख+टाप्

❖ सूत्र-पूर्वपदात्संज्ञायामगः (न=ण)

संज्ञायाम्	ताम्रमुखी	ताम्रमुख+टाप्

❖ सूत्र- जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्

तटी	तट+ङीष्
वृषली	वृषल+ङीष्
कठी	कठ+ङीष्
बह्वृची	बह्वृच+ङीष्
मुण्डा	मुण्ड+टाप्
हयी	हय+ङीष्
गवयी	गवय+ङीष्
मुकयी	मुकय+ङीष्
मनुषी	मनुष्य+ङीष्
मत्सी	मत्स्य+ङीष्

❖ सूत्र-इतो मनुष्यजातेः

दाक्षी	दाक्षि+ङीष्

❖ सूत्र-ऊङुतः

कुरूः	कुरु+ऊङ्

❖ सूत्र-पङ्गोश्च

पङ्गूः	पङ्गु+ऊङ्

❖ वार्तिक- श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च

श्वश्रूः	श्वशुर+ऊङ्

❖ वार्तिक- ऊरूत्तरपदादौपम्ये

करभोरूः	करभोरु+ऊङ्	उपमानवाची शब्द के साथ

❖ वार्तिक- संहितशफलक्षणवामादेश्च

संहितोरूः	संहितोरु+ऊङ्
लक्षणोरूः	लक्षणोरु+ऊङ्
वामोरूः	वामोरु+ऊङ्
शफ़ोरूः	शफ़ोरु+ऊङ्

❖ सूत्र- शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्

शार्ङ्गरवी	शार्ङ्गरव+ङीन्
बैदी	बैद+ङीन्
ब्राह्मणी	ब्राह्मण+ङीन्

❖ वार्तिक- नृनरयोर्वृद्धिश्च

नारी	नृ+ङीन् नर+ङीन्

❖ सूत्र-युनस्तिः

युवतिः	युवन्+ति

कृदन्त प्रकरण

धातु से दो प्रकार के प्रत्यय होते हैं -पहला तिङ् प्रत्यय दूसरा कृत्।

तिङ् प्रत्याहार है जिसका प्रारंभ- तिप् तस् झि से लेकर इट् वहि महिङ् तक होता है। इनकी संख्या 18 है। यह धातुओं से विहित लकारों के स्थान पर होते हैं।

कृत् प्रत्यय वह है जिनकी कृदतिङ् से धातु संज्ञा होती है।

जैसे - अच्, यत् णमुल्, अनीयर आदि।

धातु से परे होने वाले प्रत्ययो में तिङ् को छोड़कर शेष सारे प्रत्यय कृत् संज्ञक होते हैं।

प्रातिपदिक बनाने के लिए सबसे पहले धातुओं से कृत् प्रत्यय किए जाते हैं। जिससे ये कृदन्त बन जाते हैं।

अनन्तर उसकी कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा करते है।

कृदन्त को चार भागो मे विभाजित किया गया है—

1. कृत्य 2. पूर्व कृदन्त 3. उणादि 4. उत्तरकृदन्त

कृत् संज्ञा के अन्तर्गत सात प्रत्ययो की इसमे कृत्य संज्ञा होने के कारण इस प्रकरण का नाम कृत्य प्रकरण है।

कृत्यप्रत्यय कितने हैं?

तव्यं च तव्यतश्चौवानीयरकेलिमरौ तथा।
यतं ण्यतं क्यपं चापि कृत्यान् सप्त प्रचक्षते।।

यह **सात कृत्य प्रत्यय** होते हैं।

इनका वर्णन क्रम से आगे करेंगे।

अथ कृदन्ते कृत्प्रक्रिया

धातोः।। 3/1/91

आतृतीयाध्यायसमाप्तेर्ये प्रत्ययास्ते धातोः परे स्युः।

अर्थ- तृतीय अध्याय के समाप्ति पर्यंत जो प्रत्यय होते हैं वे धातु से परे होते हैं।

कृत् संज्ञा विधायक सूत्र

कृदतिङिति कृत्संज्ञा।

संनिहिते धात्वधिकारे तिङ्भिन्नः प्रत्ययः कृत्संज्ञः स्यात्।।

अर्थ- इससे कृत् संज्ञा होती है। अर्थात् धातु के अधिकार में। तिङ् से भिन्न प्रत्यय कृत संज्ञक होते हैं।

तृतीय अध्याय के प्रथम पाद के 91 सूत्र से लेकर के तृतीय अध्याय की समाप्ति पर्यंत अर्थात् पाणिनि अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय के चतुर्थ पाद के अंतिम सूत्र (छन्दस्युभयथा) तक जो भी प्रत्यय हो वह धातु के बाद ही हो ऐसा अधिकार यह सूत्र करता है।

वासरूपोऽस्त्रियाम्। सुसं-3/1/94

अस्मिन्धात्वधिकारे ऽसरूपो ऽपवादप्रत्यय उत्सर्गस्य बाधको वा स्यात् स्त्र्यधिकारोक्तं विना।।

अर्थ - किस धातु सूत्र के अधिकार में पढ़े गए असमान रूप अपवाद प्रत्यय उपसर्ग के विकल्प से बाधक होते हैं किंतु यह बात अधिकार के स्त्र्यधिकार में लागू नहीं होती है।

जैसे - अचो यत् से - **यत्**

तव्यत्तव्यानीयरः -से प्राप्त प्रत्ययो को बाधकर होता है। इसीलिए विकल्प से बाधक होते है। चेयः, चयनीयः

कृत्याः।।

ण्वुल्तृचावित्यतः प्राक् कृत्यसंज्ञाः स्युः।।

कर्तरि कृत्।।

अर्थ - ण्वुल्तृचौ से पहले जितने प्रत्यय कहे गए हैं वह कृत्य संज्ञक होते हैं।

कर्तरिकृत्

कृत्प्रत्ययः कर्तरि स्यात्। इति प्राप्ते

अर्थ - कृत प्रत्यय करता अर्थ में होते हैं।

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः।।

एते भावकर्मणोरेव स्युः।।

अर्थ- कृत्य क्त खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म अर्थ में ही होते हैं।

तव्यत् तव्य और अनीयर विधायक सूत्र

तव्यत्तव्यानीयरः।। 3/1/96

धातोरेते प्रत्ययाः स्युः

अर्थ-धातु से यह प्रत्यय होते हैं।

एधितव्यम्, एधनीयं त्वया।

तव्यत्, तव्य प्रत्यय के उदाहरण

एध वृद्धौ धातु - तव्यत्, तव्य प्रत्यय - **एधितव्यम्**

अनीयर प्रत्यय के उदाहरण

एधनीयम्, चयनीयम्, भवनीयम्

भावे औत्सर्गिकमेकवचनं क्लीबत्वं च।

अर्थ- भाव में हमेशा एकवचन और नपुंसकलिंग ही होता है।

चेतव्यश्चयनीयो वा धर्मस्त्वया

सकर्मक चिञ् चयने धातु से - तव्यत्, अनीयर

अनीयर - त्वया पुष्पं चयनीयम्

तव्यत् - चयनीयम्

इससे कर्म मे प्रत्यय होगा।

(वार्तिक - केलिमर उपसंख्यानम्) पचेलिमा माषाः। पक्तव्या इत्यर्थः। भिदेलिमाः सरलाः। भेत्तव्या इत्यर्थः। कर्मणि प्रत्ययः।।

अर्थ - धातुओं से केलिमर प्रत्यय भी कहना चाहिए।

केलिमर प्रत्यय के उदाहरण

डुपचष् पाके धातु से केलिमर

पचेलिमा: माषा: - पकाने योग्य उडद

भिदिर द्वैधीकरणे - केलिमर

भिदेलिमा: सरला: - सीधे काटने योग्य पेड़ आदि

कृत्यल्युटो बहुलम्।। 3/3/113

कृत्य और ल्युट् प्रत्यय बहुलता से होते हैं।

बहुल

क्वचित्प्रवृत्ति: क्वचिदप्रवृत्ति: क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।1।।

अर्थ

1. क्वचित् प्रवृत्ति:

ऐसा सूत्र जहाँ लगना चाहिए वहां तो लगता ही है और जहाँ नहीं लगना चाहिए वहां भी लगने की योग्यता नहीं है वहाँ भी लग जाता है।

2. क्वचित् अप्रवृत्ति: - कहीं-कहीं लगने वाले स्थान पर भी नहीं लगता है।
3. क्वचिद्विभाषा- कहीं-कहीं विकल्प से लगता है।
4. क्वचिद् अन्यद् एव - कहीं-कहीं निर्धारित अर्थ निर्धारित योग्यता के अलावा भी कुछ और ही विधान होता है।

स्नात्यनेनेति स्नानीयं चूर्णम्। -

अर्थ -यहाँ करण अर्थ मे हुआ है।

जिसके द्वारा स्नान करते हैं उबटन चूर्ण।

दीयते ऽस्मै दानीयो विप्र:।।

अर्थ - दा से अनीयर - दानीय:

यत् प्रत्यय विधायक सूत्र

सूत्र-अचो यत्।।

अजन्ताद्धातोर्यत् स्यात्।

चेयम्।।

अर्थ - अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है।

चि धातु से यत् - सार्वधातुकार्धधातुकयो: से गुण

चेयम्

सूत्र - ईद्यति।।

यति परे आत ईत्स्यात्।

अर्थ - यत प्रत्यय के पर होने पर धातु के अंत में विद्यमान आकार के स्थान पर ईकार आदेश होता है।

यत् प्रत्यय के उदाहरण

देयम्। दा +यत् = ईद्यति से ईत्व - गुण- देयम्

ग्लेयम्।। ग्लै धातु से-पहले आदेच उपदेशेऽशिति से आत्व करके ईद्यति से ईत्व-गुण -ग्लेयम्

सूत्र- पोरदुपधात्।।

पवर्गान्ताददुपधाद्यत्स्यात्। ण्यतोऽपवाद:।

अर्थ- प वर्ग अन्त मे हो जिसके अथवा अकार उपधा मे हो ऐसे धातु से यत् होता है।

यत् प्रत्यय के उदाहरण

शप्यम्। - शप आक्रोशे से - यत्

लभ्यम्।। - डुलभष् प्राप्तौ से - यत्

सूत्र- एतिस्तुशास्वृदृजुष: क्यप्।।

एभ्य: क्यप् स्यात्।।

अर्थ - इण् गतौ से ष्टुञ् स्तुतौ शासु अनुशिष्टौ से क्यप् प्रत्यय होता है।

सूत्र -ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्।।

अर्थ - ह्रस्व वर्णों को तुक् का आगम होता है पित कृत के परे होने पर

क्यप् प्रत्यय के उदाहरण

इत्य: -

इण् - क्यप् - तुक् - इत्य:

।स्तुत्य:। - ष्टुञ् से . धात्वादे: ष: स: -स

क्यप् - तुक् स्तुत्य:

शासु अनुशिष्टौ।।

सूत्र - शास इदङ्हलो:।।

शास उपधाया इत्स्यादङि हलादौ क्ङिति।

अर्थ - शास धातु की उपधा के स्थान पर ह्रस्व इकार आदेश होता है। अङ् या हलादि कित् और ङित परे रहने पर।

शिष्यः। -शासु अनुशिष्टौ - क्यप् इत्व - शिष्यः

वृत्यः। वृञ् वरणे - क्यप् - तुक् - वृत्यः

आदृत्यः दृङ् आदरे - क्यप् - तुक् - आदृत्यः

। जुष्यः।। - जुषीप्रीतिसेवनयोः - क्यप् - जुष्यः

सूत्र- मृजेर्विभाषा।।

मृजेः क्यब्वा

अर्थ - मृज से क्यप् विकल्प से होता है।

। मृज्यः।। - मृजू शुद्धौ - क्यप् - मृज्यः

ण्यत् विधायक सूत्र ऋहलोर्ण्यत्।।

ऋवर्णान्ताद्धलन्ताच्च धातोर्ण्यत्।

अर्थ - हलन्त और ऋवर्णान्त धातु से ण्यत् होता है।

ण्यत् प्रत्यय के उदाहरण

कार्यम् -डु कृञ् करणे - ण्यत् - अचोञ्णिति से वृद्धि - कार्यम्

। हार्यम् हृञ् हरणे - ण्यत् अचोञ्णिति से वृद्धि- हार्यम्

। धार्यम्।। धृ - ण्यत् - अचोञ्णिति से वृद्धि - धार्यम्

सूत्र -चजोः कु घिण्ण्यतोः।।

चजोः कुत्वं स्यात् घिति ण्यति च परे।।

चकार और जकार के स्थान पर क वर्ग आदेश होता है। घित् या ण्यत् के परे होने पर।

सूत्र -मृजेर्वृद्धिः।।

मृजेरिको वृद्धिः सार्वधातुकार्धधातुकयोः।

अर्थ - मार्ग्यः।। मृज् धातु से ऋहलोर्ण्यत् से ण्यत्

चजोःकु घिण्णयतोः से कुत्व ग - मृजेर्विभाषा से वृद्धि - मार्ग्यः

सूत्र - भोज्यं भक्ष्ये।।

भोग्यमन्यत्।।

अर्थ - भक्ष्य अर्थ होने पर भुज् से भोज्य का निपातन होता है।

भुज् के दो अर्थ है - पालन अभ्याहार

भुज् से ण्यत् - भक्ष्य - भोज्यम्

भुज् से ण्यत् - पालन अर्थ मे कुत्व होकर - भोग्यम्

तद्धित

तद्धित-प्रत्यय धातु से नहीं होता, अपितु यह शब्दों से होता है। शब्द दो प्रकार के होते हैं:-

1. स्त्री-प्रत्ययान्त शब्द
2. प्रातिपदिक शब्द।

प्रातिपदिक चार प्रकार के होते हैं:-

1. अर्थवान् (अव्युत्पन्न) शब्द---डित्थ, कपित्थ,
2. कृत्प्रत्ययान्त-शब्द--कर्ता, कारक, कार्य,
3. तद्धित-प्रत्ययान्त शब्द---शैव, मनुष्य, धनवान्,
4. समस्त (समास-युक्त) शब्द-राजपुरुषः, उपनगरम्, पीताम्बरः।

इन स्त्री-प्रत्ययान्त शब्दों और चारों प्रकार के प्रातिपदिक शब्दों से तद्धित प्रत्यय होते हैं

----ङ्याप्प्रातिपदिकात्-

तद्धित प्रत्ययों से बने शब्द विशेषण होते हैं, अतः इनका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता है।

1. मतुबर्थ प्रत्यय

मतुप् प्रत्यय के अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं, उन्हें मतुबर्थ प्रत्यय कहते हैं।

(क) मतुप् का "मत्" या "वत्" शेष रहता है। उ और प् हट जाते हैं।

(ख) इसके दो अर्थ होते हैं—

- तस्य अस्ति इति (उसका है)।
- तस्मिन्नस्ति इति (उसमें हैं)।

❖ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्----5.2.94

इसके अतिरिक्त भिन्न अर्थों में भी मतुप् होता है-

1. भूमा (बहुतायत) गोमान् (बहुत गौओं वाला)
2. निन्दा---कुष्ठवान् (कोढ वाला),
3. प्रशंसा---मातृमान्---प्रशंसनीय माला वाला,
4. नित्ययोग (संयुक्त रहना)---क्षीरिणः वृक्षाः---सदा दूध से युक्त रहने वाले वृक्ष,
5. अतिशायने----उदरिणी कन्या ---बड़े पेट वाली कन्या,
6. संसर्ग---दण्डी---दण्ड वाला.
7. अस्ति-विवक्षा (अस्तित्व) ---धनवान्।

(ग) यदि शब्द के अन्त में स् हो, अ या आ हो, सभी वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो मतुप् के "मत" के स्थान पर 'वत्' शेष रहता है।

1. यथा---यशस्+ मतुप्= यशस्वान्
2. रूप+ मतुप्= रूपवान्
3. श्रद्धा+ मतुप्= श्रद्धावान्
4. किम्+ मतुप्= किंवान्

(घ) शेष बचे शब्दों (इकारान्त) से मत शेष रहता है।

1. यथा---शक्ति+मतुप्= शक्तिमान्

(ङ) वाक्य प्रयोग-

1. शक्तिमान् जनः रक्षति सर्वम्।
2. गुणवान् जनः यशः प्राप्नोति।
3. बुद्धिमान् नरः विचारशीलः भवति।
4. धनवान् नरः दानेन शोभते।
5. श्रद्धावान् छात्रः लभते ज्ञानम्।
6. इयं रूपवती कन्या अस्ति।

(च) पुल्लिंग में इसका रूप "भवत्" के अनुसार, स्त्रीलिंग में गौरी के समान और नपुंसकलिंग में "जगत्" के अनुसार रूप चलेंगे।

अत इनिठनौ

2. इनि-प्रत्यय

1. इनि का इन् शेष रहता है।
2. यह भी मतुबर्थ प्रत्यय है। अतः इसके वही अर्थ हैं, जो ऊपर दिखाएँ हैं।
3. उदाहरण:-

दान+इनि = दानी (दानिनी, दानि)

विवेक+इनि =विवेकी (विवेकिनी, विवेकि)

सुख+ इनि = सुखी (सुखिनी, सुखि)

प्राण+ इनि = प्राणी (प्राणिनी, प्राणि)

देह+ इनि = देही (देहिनी, देहि)

क्रोध+ इनि = क्रोधी (क्रोधिनी, क्रोधि)

वाक्य-

अभिमानी मानं लभते।

विज्ञानिनः सदा सम्मान्याः भवन्ति।

लोभी शान्तिं न प्रोप्नोति।

दानिनः धन्याः लोके।

क्रोधिनः विवेकः नश्यति।

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः।

विनोदी जनः सर्वप्रियः भवति।

सर्वे भवन्तु सुखिनः।

व्यवसायिनी इयं बाला।

बुद्धिमान् सर्वत्र पूज्यते।

बलवती हि आशा।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

गुणिनां गुणाः पूजास्थानं भवति।

नैतिकी शिक्षा आवश्यकी।

3. ठक् (इक) प्रत्यय

1. ठक् के स्थान में इक प्रत्यय होता है।
2. यह प्रत्यय भी संज्ञा शब्दों के साथ मिलकर विशेषण बनाता है।
3. इसके तीनों लिंगों में रूप चलते हैं।
4. इनका अकेले प्रयोग कभी नहीं होता।
5. शब्द के आदि स्वर में वृद्धि हो जाती है।

1. अ और आ को आ हो जाता है।

उदाः-

सप्ताह+ इक = साप्ताहिक।

साहित्य+इक = साहित्यिक।

2. इ, ई, ए को ऐ हो जाता है।

उदाः-

दिन+ इक = दैनिक

नीति+ इक = नैतिक

वेद+ इक = वैदिक

3. उ, ऊ, ओ को औ हो जाता है।

उदाः-

उद्योग+ इक = औद्योगिक,

मूल+ इक = मौलिक

लोक + इक = लौकिक

4. ऋ को आ हो जाता है।

उदा:-

वृष+ इक = वार्षिक

❖ **महत्त्वपूर्ण तद्धित प्रत्यय का उदाहरण**

शब्द	प्रत्यय	सूत्र
अधीती	अधीत+इनि	इष्टादिभ्यश्च
आवारपारीण:	अवारपार+ख	राष्ट्राऽवारपाराद् घखौ
आदित्य:	अदिति+ण्य	दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्य:
आधिदैविक	अधिदेव+ठञ्	अध्यात्मादेष्ठञिष्यते
गाङ्ग:	गङ्गा+अण्	शिवादिभ्योऽण्
गार्ग्य:	गर्ग+यञ्	गर्गादिभ्यो यञ्
तदीय:	तद्+छ	वृद्धाच्छ:
दण्डीक:	दण्ड+ठन्	अत इनिठनौ
दण्डी	दण्ड+इनि	अत इनिठनौ
दाक्षि:	दक्ष+इञ्	अत इञ्
धार्मिक:	धर्म+ठक्	धर्मं चरति
पाणिनीयम्	पाणिनी+छ	वृद्धाच्छ:
बन्धुता	बन्धु+तल्	ग्रामजनबन्धुसहायेभ्य: तल्
मीमांसक:	मीमांसा+वुन्	क्रमादिभ्यो वुन्
राष्ट्रिय:	राष्ट्र+घ	राष्ट्रावारपाराद्घखौ
वैनतेय:	विनता+ढक्	स्त्रीभ्यो ढक्
वैयाकरण:	व्याकरण+अण्	तदधीते तद्वेद
शैव:	शिव+अण्	शिवादिभ्योऽण्
सभ्य:	सभा+य	सभाया य:
सामाजिक:	समाज+ठक्	रक्षति
सौम्यम्	सोम+ट्यण्	सोमाट्ट्यण्
स्त्रैणम्	स्त्री+नञ्	स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्

• • •

घटक-3

भरत

भरत के व्यक्तित्व सम्बन्धी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। कुछ प्रमुख जानकारी अधोलिखित है।

- ❖ रचना-नाट्यशास्त्र
- ❖ कुल अध्याय-36
- ❖ श्लोक संख्या-6000 इसी कारण इसे 'षट्साहस्री संहिता' कहा जाता है।
- ❖ समय-400 ई०पू० से 100 ई०पू० तक
- ❖ प्रसिद्ध सूत्र-'**विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति:**'
- ❖ स्वीकृत अलंकारों की संख्या- 4 (उपमा, रूपक, दीपक और यमक)

भामह

भरतमुनि के बाद भामह काव्यशास्त्र के प्रथम आचार्य हुए। भरतमुनि यदि नाट्यशास्त्र का प्रथम आचार्य हैं तो भामह अलङ्कारशास्त्र का प्रथम आचार्य है।

- ❖ पिता- रकृतगोविन
- ❖ स्थायी निवासी-काश्मीर
- ❖ रचना-काव्यालङ्कार
- ❖ कुल परिच्छेद-6
- ❖ श्लोक-400
- ❖ आराध्य-सार्वसर्वज्ञ
- ❖ अनुयायी-बौद्ध धर्म
- ❖ समय-पाँचवीं तथा छठी शताब्दी के मध्य
- ❖ स्वीकृत अलंकारों की संख्या- 38
- ❖ आचार्य भरतमुनि के बाद प्रथम आचार्य भामह ही हैं।
- ❖ काव्यशास्त्र पर काव्यालंकार नामक ग्रंथ उपलब्ध है।
- ❖ यह अलंकार शास्त्र का प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ है।
- ❖ इन्हें अलंकार संप्रदाय का जनक कहते हैं।

- **'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'** इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य परिभाषा है।
- **भामह भट्ट** के नाम से एक ग्रन्थ और मिलता है और वह है वररुचि के 'प्राकृत-प्रकाश' नामक प्राकृत व्याकरण ग्रन्थ की 'प्राकृत मनोरमा' नाम की टीका।
- आचार्य भामह के वर्तमान में दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं– काव्यालङ्कार और प्राकृतमनोरमा।
- **काव्यालङ्कार परिचय** कुल 6 परिच्छेद तथा 400 श्लोक हैं।
- मुख्यरूप से 5 विषयों का प्रतिपादन किया है– काव्य शरीर, अलङ्कार, दोष, न्याय और शब्द शुद्धि।
- **प्रथम परिच्छेद** में उन्होंने 60 श्लोकों द्वारा काव्यशरीर के अन्तर्गत काव्य प्रशंसा, काव्य साधन, काव्य लक्षण, काव्य भेद आदि का निरूपण किया है।
- **द्वितीय एवं तृतीय परिच्छेद** में 160 श्लोकों के माध्यम से 2 शब्दालङ्कार एवं 36 अर्थालङ्कारों का वर्णन किया है। यदि लाटानुप्रास और प्रतिवस्तूपमा, जिनको भामह ने क्रमशः अनुप्रास और उपमा के भेदों में दिखाया है, अलग–अलग करने पर गणना तो लगभग 40 अलंकारों का निरूपण किया गया है।
- **चतुर्थ परिच्छेद** में 50 श्लोकों द्वारा 10 दोषों का वर्णन किया गया है।
- **पंचम परिच्छेद** में 70 श्लोकों के द्वारा न्याय दर्शन से सम्बन्धित प्रमाणादि का विवेचन किया है। काव्य दोष निवारण के लिए न्याय का वर्णन किया गया है।
- **षष्ठ परिच्छेद** में प्रायः 60 श्लोकों के माध्यम से भाषा शुद्धि एवं शब्द शुद्धि की चर्चा की गयी है।
- काव्यालङ्कार ग्रन्थ पर नवमी शताब्दी में आचार्य उद्भट ने '**भामहविवरण**' नाम से एक टीका लिखी थी, किन्तु दुर्भाग्य से आज वह उपलब्ध नहीं है। परवर्ती कई आचार्यों मे आचार्य भामह के इस ग्रन्थ का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है।

दण्डी

आचार्य दण्डी न केवल अलङ्कारशास्त्र के आचार्य के रूप में प्रतिष्ठा पाई, अपितु कवि के रूप में भी महान् यश उपार्जित किया है।

- जीवन वृत्त–नारायण स्वामी

↓

दामोदर (भारवि)

↓

मनोरथ

↓

चार पुत्रों में छोटा वीरदत्त

↓

दण्डी

- भारवि–मनोरथ–वीरदत्त–दण्डी
- माता–गौरी
- अलङ्कारशास्त्रीय रचना–काव्यदर्श
- कुल परिच्छेद–3
- अन्य रचना–दशकुमारचरित, अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचति
- समय–550 ई०–650 ई० के मध्य
- स्वीकृत अलंकारों की संख्या– 37
- प्रथम रचना काव्यादर्श और दूसरी है दशकुमारचरित
- **दशकुमारचरितः**– मूल दशकुमारचरित के प्रथम उच्छ्वास का आरंभ नायक राजकुमार राजवाहन को एक बन्दी के रूप में प्रस्तुत करते हुए होती है। बाद में चम्पा के अभियान में राजवाहन को उसके भूले भटके सभी साथी मिल जाते हैं जो शेष सात उच्छ्वासों में अपनी–अपनी रोमांचकारी एवं कुतूहलजनक घटनाओं को राजवाहन से कहते हैं। दूसरे उच्छ्वास में उपहार वर्मा की कथा आती है जो अत्यंत विस्तृत एवं विनोदपूर्ण हैं। मारीचि नाम के ऋषि तथा वास्तु–पाल नाम के श्रेष्ठी का प्रवंचना बहुत रोचक है। नायक के द्यूतशाला में अनुभव तथा घरों में सेंध लगाना आदि हास्यपूर्ण घटनाएँ हैं। तृतीय उच्छ्वास से लेकर षष्ठ उच्छ्वास तक क्रमशः उपहार वर्मा, अर्थपाल, प्रमति तथा मित्रगुप्त की कथाएँ हैं। तीसरे उच्छ्वास में उपहार वर्मा की कथा है। उसने राज्यापहारी के मन पर अधिकार करके अपनी अदभुत सौन्दर्य देने की शक्ति के विषय में सुझाया। इस प्रकार सौन्दर्यशक्ति के बहाने से उनकी हत्या कर दी तथा अपने पिता के खोए हुए राज्य को वापस लिया। चतुर्थ उच्छ्वास में बतलाया गया है कि अर्थपाल ने अपने पिता के खोए मन्त्रिपद तथा मणिकार्णिका नामक राजकुमारी को प्राप्त किया। पंचम उच्छ्वास में प्रमति श्रावस्ती की राजकुमारी का पाणिग्रहण करता है। युवराज की यात्रा के वर्णन में ग्राम्य तथा नागरिक जीवन का अनेक प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है। षष्ठ उच्छ्वास में मित्रगुप्त के द्वारा खुँह देश की राजकुमारी की प्राप्ति का वर्णन है। इसमें दण्डी ने समुद्र पर किये गये साहसों का वर्णन किया है। सप्तम उच्छ्वास में मंत्रगुप्त की कथा है। इस उच्छ्वास की यह विशेषता उल्लेखनीय है कि इसमें कथावक्ता का ओष्ठ उसकी प्रेयसी द्वारा काटे जाने के कारण ओष्ठ से उच्चार्यमाण **पवर्ग** के वर्णों का प्रयोग नहीं हुआ है। अष्टम उच्छ्वास में विश्रुत के साहसिक कार्यों का वर्णन है जो विदर्भ देश के राजकुमार को उसका खोया हुआ राज्य दिलाता है। इसमें राजनीतिशास्त्र पर परिष्कृत व्यंग्य है। आनन्द एवं सुगम जीवन का सशक्त प्रतिपादन त्रुटिपूर्ण हेतु पर आधारित है। एकाएक प्रारम्भ के समान यहाँ कृति एकाएक समाप्त हो जाती है।
- काव्यादर्श के **प्रथम परिच्छेद** में काव्य के तीन भेद किए गए हैं–(1) गद्य, (2) पद्य तथा (3) मिश्र। गद्य पुनः 'आख्यायिका' और 'कथा' शीर्षक दो उपभेदों में विभाजित है। परंतु उक्त दोनों के लक्षणों में किसी मौलिक अंतर का निर्देश नहीं किया गया है।

कृतिकार ने संस्कृत गद्य साहित्य की भी चार कोटियाँ मानी हैं- 'संस्कृत', 'प्राकृत' 'अपभ्रंश' तथा 'मिश्र'। 'वैदर्भी और 'गौड़ी' नामक दो शैलियों तथा दश गुणों का परिचय भी इसी परिच्छेद में है। रचयिता ने अनुप्रास के भेद गिनाकर उनमें से प्रत्येक के लक्षण एवं उदाहरण भी दिए हैं। 'श्रुत', 'प्रतिभा' तथा 'अभियोग' को दंडी ने कवि मात्र के तीन नियामक गुण माने हैं।

- **द्वितीय परिच्छेद** में अलंकार की परिभाषा, लक्षण और उद्देश्य देने के उपरान्त स्वभावोक्ति, उपमा, रूपक, दीपक, आवृत्ति, आक्षेप, अर्थातरन्यास, व्यतिरेक, विभावना, समासोक्ति, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, हेतु, सूक्ष्म, लेश, क्रम (यथासंख्य), प्रेयस्, रसवत्, ऊर्जस्वी, पर्यायोक्त, समाहित, उदात्त, अपह्नुति, श्लेष, विशेषोक्ति, तुल्ययोगिता, विरोध, अप्रस्तुतप्रशंसा, व्याजस्तुति, निदर्शन, सहोक्ति, परिवृत्ति, आशी, संसृष्टि (संकीर्ण) तथा भाविक इत्यादि 35 अलंकारों के लक्षण, भेद एवं उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।
- **तृतीय परिच्छेद** में 'यमक' का सांगोपांग विवेचन है। साथ ही, चित्रकाव्य, गोमूत्रिका, अर्धभ्रम, सर्वताभेद्र, स्वरनियम, स्थाननियम, वर्णनियम तथा प्रहेलिका इत्यादि के लक्षण एवं उदाहरण भी दे दिए गए हैं। ग्रंथ के अन्त में काव्यदोषों का परिचय है।

वामन

वामन ने रीति को काव्य की आत्मा के रूप में स्वीकार को रीति सम्प्रदाय को जन्म दिया।

- जन्मस्थान-काश्मीर
- राज्यसभा सदस्य-जयापीड के
- समय-750-850 ई० के मध्य
- रचना-काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति
- ग्रन्थ के तीन भाग हैं-सूत्र, वृत्ति तथा उदाहरण
- कुल अध्याय-5, अधिकरण-12
- मुख्य अलङ्कार- उपमा, अन्य सभी उपमा के प्रपञ्च है।

आनन्दवर्धन

सस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास में आनन्दवर्धन का 'ध्वन्यालोक' एक युगान्तकारी ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के द्वारा ध्वनि सिद्धान्त की उद्भावना और प्रतिष्ठा करके आनन्दवर्धन ने काव्यशास्त्र के क्षेत्र में महनीयतम, अजर-अमर स्थान प्राप्त किया है।

- निवासी-काश्मीर
- पिता-नोण या नोणोपाध्याय
- समय-9वीं शताब्दी
- कृतियाँ-देवीशतक, विषमबाणलीला, अर्जुनचरित, तत्त्वालोक, प्रमाणविनिश्चय की टीका की टीका

- प्रमुख रचना-ध्वन्यालोक
- कुल उद्योत-4

कुन्तक

वक्रोक्ति नामक अपूर्व सिद्धान्त का प्रणयन करने के कारण आचार्य कुन्तक का नाम काव्यशास्त्र के इतिहास में अत्यधिक प्रसिद्ध है।

- समय-10वीं शताब्दी
- रचना-वक्रोक्तिजीवित
- कुल उन्मेष-4
- वक्रोक्ति के कुल भेद-6
- अलंकारशास्त्र के एक मौलिक विचारक विद्वान
- अभिधावादी आचार्य
- 'वक्रोक्ति' का अर्थ है- 'वैदग्ध्यभंगीभणिति' अर्थात् 'सर्वसाधारण द्वारा प्रयुक्त वाक्य से विलक्षण कथनप्रकार'।
- वक्रोकिरेव वैदग्ध्यभंगीभणितिरुच्यते।
- कविकर्म की कुशलता का नाम है- 'वैदग्ध्य' या 'विदग्धता'। 'भंगी' का अर्थ- 'विच्छित', 'चमत्कार' या 'चारुता'। 'भणिति' से तात्पर्य है- 'कथन प्रकार' इस प्रकार वक्रोक्ति का अभिप्राय है-'कविकर्म की कुशलता से उत्पन्न होने वाले चमत्कार के ऊपर आश्रित रहने वाला कथन प्रकार।'
- कुन्तक के अनुसार, के प्रतिभाव्यापार का सद्य:प्रसूत फल है।

मम्मट

काव्यशास्त्र के आचार्यों में मम्मट ने अधिक आदर एवं गौरवपूर्ण पद को प्राप्त किया है। मम्मट सरस्वती देवी के अवतार के रूप में भी समझे जाते हैं।

- निवासी-काश्मीर
- पिता-जैयट
- छोटे भाई-कैय्यट और उव्वट
- समय-1050 -1100 ई० के मध्य
- रचना-काव्यप्रकाश
- कुल उल्लास-10
- कारिकायें-142
- स्वीकृत अलंकारों की संख्या (61 अर्थालंकार+6 शब्दालंकार)=67
- आचार्य मम्मट या मम्मटाचार्य ने काव्य प्रकाश को 10 भागों में बाँटा है जिसको उन्होंने प्रथम उल्लास, द्वितीय उल्लास आदि नाम दिए हैं।

- **प्रथम उल्लास** (काव्य-प्रयोजन-कारण-स्वरूप निर्णय)में मंगलाचरण के बाद कविसृष्टि की विशेषताएँ, अनुबंध, काव्य के प्रयोजन, उपदेश की त्रिविध शैली के विषय में बात करते हुए वे मयूरभट्ट, वामन, भामह तथा कुंतक के प्रयोजनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं, कवि तथा पाठक या श्रोता की दृष्टि से काव्य का प्रयोजन के विषय में चर्चा करते हैं तथा भरतमुनि के काव्य प्रयोजन स्पष्ट करते हैं। प्रयोजन के पश्चात् प्रथम अध्याय को उन्होंने विभिन्न आचार्यों के काव्य हेतुओं का विश्लेषण किया है, काव्य के लक्षण बताए हैं और आचार्य विश्वनाथ के उदाहरण की आलोचना करते हुए प्रथम अध्याय की समाप्ति की है।
- **द्वितीय उल्लास** (शब्दार्थ स्वरूप निर्णय)में शब्द क्या है; और उसकी शक्ति क्या है; इस विषय में पूर्ववर्ती आचार्यों के मत का विश्लेषण करते हुए उन्होंने अपनी राय प्रकट की है। उन्होंने शब्द की तीन शक्तियाँ अभिधा, व्यंजना और लक्षणा के विषय में बात की है और व्यंजना को काव्य के लिए सर्वोत्तम गुण सिद्ध किया है।
- **तृतीय उल्लास** (अर्थव्यंजकता निर्णय) में अर्थ की विशद व्याख्या की गई है। अर्थ क्या है; अर्थ के कितने भेद हो सकते हैं; पूर्ववर्ती आचार्यों ने इस विषय में क्या कहा है; और स्वयं उनका इस विषय में क्या विचार है इसका वर्णन किया गया है।
- **चतुर्थ उल्लास** (ध्वनि निर्णय) में काव्य के प्रथम भेद ध्वनि काव्य के विषय में बताते हुए रस, रस की निष्पत्ति, उसके भाव, अनुभावों का विश्लेषण तथा पूर्ववर्ती आचार्यों के साथ उसका समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। रस में व्यंजकता किस प्रकार निर्मित होती है वह श्रोता तक कैसे पहुँचती है तथा ध्वनि से उसका क्या तादात्म्य है यह इस अध्याय में बताया गया है। इस अध्याय में रसवदलंकारों (ऐसे अलंकार जिनसे काव्य में रस की उत्पत्ति होती है) का भी वर्णन है और यह भी बताया गया है कि वे अर्थ व्यंजना में किस प्रकार महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।
- **पंचम उल्लास** (ध्वनिगुणीभूतव्यंग्यसंकीर्णभेद निर्णय)में काव्य के दूसरे भेद गुणीभूत व्यंग्य काव्य के आठ भेद दिए गए हैं। पूर्ववर्ती आचार्यों के साथ उनकी परिभाषा की विवेचना करते हुए काव्य में व्यंजना शक्ति विषयक अनेक आचार्यों की परिभाषा तथा उदाहरण का खंडन-मंडन करते हुए अपने मत का प्रतिपादन किया है।
- **षष्ठ उल्लास** (शब्दार्थचित्र-निरूपण) में काव्य के तीसरे भेद चित्रकाव्य के दो भेद शब्द चित्र और अर्थ चित्र के विषय में बताते हुए पूर्ववर्ती आचार्यों की परिभाषाओं और उदाहरणों की समालोचना प्रस्तुत की गई है।
- **सप्तम उल्लास** (दोष दर्शन)में काव्य के दोषों के विषय में विस्तृत व्याख्या है। श्रुतिकटु आदि 16 दोष गिनाए गए हैं और इनके विषय में विस्तार से चर्चा की गई है।
- **अष्टम उल्लास** (गुणालंकार भेद निर्णय) में काव्य के गुण उनके तीन भेद तीनो भेदों की व्याख्या, आचार्य वामन द्वारा बताए गए दस अर्थ गुणों का खंडन तथा गुणानुसारिणी रचना के अपवादों की विवेचना की गई है।

- **नवम उल्लास** में शब्दालंकारों की परिभाषा, उदाहरण, प्रयोग और अपवादों का वर्णन है।
- **दशम उल्लास** में अर्थालंकारों की परिभाषा, उदाहरण, प्रयोग और अपवादों का वर्णन है।

क्षेमेन्द्र

काव्यशास्त्र में औचित्यमार्ग के प्रतिष्ठा के कारण क्षेमेन्द्र का नाम अधिक प्रसिद्ध है।

- निवासी-काश्मीर
- पिता-प्रकाशेन्द्र
- पितामह-सिन्धु
- समय-11वीं शताब्दी (कश्मीर के राजा अनन्त) (1028-1063 ई०) और राजा कलश (1063-1089 ई०) का राज्यकाल इनके समय में पूर्ण हुआ।)
- उपनाम-व्यासदास
- अन्य कृतियाँ-लगभग 40
- औचित्य के प्रधान रूप से क्षेत्र-27
- 'बोधिसत्त्वावदानकल्पलता' को इनके पुत्र सोमेन्द्र ने एक पल्लव जोड़कर पूरा किया था।

रचनाएँ

1. रामायणमञ्जरी 2. भारतमञ्जरी 3. बृहत्कथामञ्जरी

काव्यशास्त्रीय रचना

1. औचित्यविचारचर्चा 2. कविकण्ठाभरण 3. सुवृत्ततिलक

व्यंग्य

- कलाविलास
- समयमात्रिका
- **देशोपदेश** इसमें आठ उपदेश हैं, दुर्जनवर्णनम्, कदर्यवर्णनम्, वेश्यावर्णनम्, कुट्टनीवर्णनम्, विटवर्णनम्, छात्रवर्णनम्, वृद्धभार्यावर्णनम्, प्रकीर्णवर्णनम्।
- **नर्ममाला** (नर्म=परिहास/हँसी ठट्ठा/दिल्लगी) इसमें तीन परिहास हैं।
- **प्रथम परिहासः** गृहकृताधिपतिः, चाक्रिक या पुंश्चलक, परिपालक, लेखकोपाध्यायः, गञ्जदिविरः, ग्रामदिविरः ;
- **द्वितीय परिहासः** पारदारिकः, जीवनदिविरः, श्रमणिका, दारकोपाध्यायः, मठदैशिक, सभर्तृका, वैद्यः, गणकः, ख्वासपतिः या तूणरक्षको, गुरुः, आस्थानदिविरः, अधिकरणभट्टाः या सात्रिका;
- **तृतीय परिहास** : गुरुभयः, रण्डा, गुरुकृत्यमहत्तमः, वेश्या, चक्षुवैद्यः, शल्यहर्ता, वृद्धवणिक्

नीति काव्य

1. नीतिकल्पतरु 2. दर्पदलन 3. चतुर्वर्गसंग्रह 4. चारुचर्या
5. सेव्यसेवकोपदेश 6. लोकप्रकाश 7. स्तूपवादन

भक्ति

1. अवदानकल्पलता 2. दशावतारचरित

विश्वनाथ कविराज

विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ 'साहित्यदर्पण' में काव्यशास्त्र के दुरूह विषयों को सरलता से समझाया है।

- जन्म-उत्कल (उड़ीसा) के प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में
- पितामह-नारायण
- पिता-चन्द्रशेखर (पिता की दो रचनाएँ—पुष्पमाला और भाषार्णव)
- अनुयायी-वैष्णव मत
- स्वीकृत अलंकारों की संख्या- 38
- प्रशंसासूचक पदवी (उपाधि)—
  - अष्टादशभाषावारविलासिनी भुजंग
  - कविसूक्तिरत्नाकर
  - नारायणचरणारविन्दमधुव्रत
  - साहित्यार्णवकर्णधार
  - ध्वनिप्रस्थापकपरमाचार्य
  - आलङ्कारिकचक्रवर्ती
  - सन्धिविग्रहिक
  - महापात्र

अलंकार

अलंकार शब्द का सामान्यार्थ है- आभूषण। 'अलम्' अव्ययपूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय से निष्पन्न हुआ है। **अलंकार** शब्द की तीन **व्युत्पत्ति** है—

1. **अलंकरोति इति अलंकारः** (अस्यार्थः— शब्दार्थौ सुशोभयति सः)
2. **अलंक्रियते अनेन इति अलंकारः** (अस्यार्थः— शब्दार्थयोः अलंकरणं क्रियते येन)
3. **अलंकरणम् अलंकारः/अलंकृतिः अलंकारः** (अस्यार्थः— अलंकरणस्य भावः एव **अलंकारः**)।

अलंकार की परिभाषाएँ (लक्षण)

- **महर्षि वेदव्यास के अनुसार—**
  अलंकारविहीनं काव्यं विधवास्त्रीसदृशं भवति।
- **अग्निपुराण के अनुसार—**
  अलंकाररहिता विधवैव सरस्वती।
- **वामन (काव्यालंकारसूत्र) के अनुसार—**
  सौन्दर्यमलंकारः।
- महाकवि पीयूषवर्ष जयदेव ने अपने ग्रन्थ 'चन्द्रालोक' में कहा है—
  "अंगीकरोति यः" काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
  असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलंकृती।।
- भामह आचार्य (काव्यालंकार) ने अलंकार के विषय में कहा है—
  "**न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिताननम्**" (आभूषण के बिना सुन्दरी स्त्री भी सुशोभित नहीं होती है)।
- आचार्य दण्डी ने काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार मानते हैं—
  "**काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते**"।
- **आचार्य मम्मट के अनुसार—**
  "उपकुर्वन्ति तं सन्तं ये अंगद्वारेण जातुचित्।
  हारादिवदलंकारास्ते अनुप्रासोपमादयः"।।
- **साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार-**
  "शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः।
  रसादीनुपकुर्वन्तो अलंकारास्तेदंगदादिवत्।।"
- **अलंकारस्य भेदाः**

प्रायः सभी आचार्यो ने शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर स्वीकृत किया है। **अलंकार** उस शब्दार्थ रूपी-काव्यशरीर के शोभाधायक धर्म है। अतः **अलंकार** के आधारभूत शब्द और अर्थ ही है। इसी आधार पर **अलंकार** को दो **प्रकार** का माना गया है—

"ते च द्विविधाः शब्दगताः अर्थगताश्च।"

किन्तु आचार्य विश्वनाथ द्वारा किया गया विभाजन अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है—

1. शब्दालंकारः 2. अर्थालंकारः 3. उभयालंकारः।

1. **शब्दालंकारः**- जो अलंकार शब्दों के सौन्दर्य से काव्य की शोभा बढ़ाते हैं वे शब्दालंकार कहलाते हैं। इसका लक्षण है— 'शब्दपरिवृत्यसहत्वम्' अर्थात् जहाँ शब्द का परिवर्तन करके उसके स्थान पर उसका पर्यायशब्द रख देते हैं तो वह अलंकार ही नहीं दिखाई देता है अर्थात् अलंकार उस शब्दविशेष के कारण से ही था, जो उस शब्द विशेष को परिवर्तित करते ही नष्ट हो गया।

❖ **शब्दालंकार छः हैं—**

1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष
4. वक्रोक्ति 5. पुनरुक्ताभास 6. चित्रालंकार

2. अर्थालंकार:- जो अलंकार अर्थ के सौन्दर्य से काव्य की शोभा बढ़ाते हैं वे अर्थालंकार कहलाते हैं। इसका लक्षण है- **'शब्दपरिवृत्तिसहत्वम्'** अर्थात् जहाँ शब्दपरिवर्तन के बाद भी अलंकार की सत्ता समाप्त नहीं होती है वह अर्थालंकार होता है। जैसे-अर्थान्तरन्यास अलंकार।

3. उभयालंकार:- यह अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित होता है। इसका लक्षण है- **'शब्दपरिवृत्यसहत्वम्'** और **'शब्दपरिवृत्तिसहत्वम्'**। इसमें शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों के गुण सम्मिलित होते हैं।

❖ **प्रमुख अलंकार**

1. अनुप्रासः अलंकार

शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

स्वर की विषमता होने पर भी शब्दसाम्य (वर्ण या वर्णसमूह की आवृत्ति) को अनुप्रास अलङ्कार कहते हैं। अधोलिखित श्लोक में अनुप्रास अलङ्कार है।

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति, ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः।।

इस उदाहरण के वहन्ति, वर्षन्ति, नदन्ति, भान्ति, ध्यायन्ति, नृत्यन्ति, समाश्वसन्ति शब्दों में, न्, त् तथा य् वर्णों की बार-बार आवृत्ति अलग-अलग स्वरों के साथ हुई है; जिससे कविता का सौन्दर्य बढ़ गया है, अत: इस श्लोक में अनुप्रास अलङ्कार है।

❖ अनुप्रास के मुख्य 2 भेद हैं—

1. छेकानुप्रास 2. वृत्यानुप्रास

❖ अन्य भेद लाटानुप्रास भी है।

❖ आचार्य मम्मट के अनुसार लाटानुप्रास के 5 भेद हैं।

❖ विश्वनाथ के अनुसार अनुप्रास के कुल भेद-5

❖ विश्वनाथ का उदाहरण-

आदाय बकुलगन्धानन्धीकुर्वन्पदे पदे भ्रमरान्।
अयमेति मन्दमन्दं कावेरीवारिपावनः पवनः।

2. यमक-अलङ्कार

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।

जब वर्णसमूह की उसी क्रम से पुनरावृत्ति की जाए, किन्तु आवृत्त वर्ण-समुदाय या तो भिन्नार्थक हो अथवा अंशतः या पूर्णतः निरर्थक हो, तो यमक अलङ्कार कहलाता है।

उदाहरण

नवपलाश-पलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपंकजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं-सुरभिं सुमनोभरैः।।

❖ मम्मट के अनुसार प्रमुख भेद-8

❖ सन्दंश, युग्मक, महायमक, पादभावृत्ति, आद्यान्तिक, केवल उत्तरार्ध में समुच्चय, पूर्वार्ध-उत्तरार्द्ध दोनों में समुच्चय, अनियतपादभागवृत्ति।

❖ मम्मट का प्रसिद्ध उदाहरण—

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय।

3. उपमा अलंकार

❖ **साधर्म्यमुपमा भेदे।**

दो वस्तुओं में भेद रहने पर भी, जब उनकी समानता का प्रतिपादन किया जाता है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

रविसंक्रान्तसौभाग्यस्तुषारारुणमण्डलः।
निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते।।

अर्थ- सूर्य के द्वारा संक्रमित किए गए प्रकाश वाला तथा धुन्ध के कारण मलिन कर दिए गए लाल वर्ण वाला चन्द्रमा, श्वास के कारण मलिन दर्पण की तरह प्रकाशित नहीं हो रहा है। यहाँ पर सूर्य के प्रकाश से मलिन चन्द्रमा की उपमा निःश्वासों से मलिन आदर्श (दर्पण) से दी गई है। यह उपमा श्लोक के अर्थ की चारुता की वृद्धि में सहायक है।

❖ उपमा अलंकार में चार उपादान होते हैं—

1. उपमान (जिससे उपमा दी जाय), जैसे— कमलम्
2. उपमेय (जिसकी उपमा दी जाय), जैसे— मुखम्
3. समान धर्म जैसे—मनोज्ञं (मनोज्ञता, सुन्दरता)
4. उपमानवाची शब्द जैसे इव (यथा—वत्, तुल्य, सम आदि)

जहाँ इन चारों का स्पष्ट उल्लेख हो वह पूर्णोपमा कहलाती है, जैसे— उपर्युक्त उदाहरण में। जहाँ इनमें से कुछ लुप्त रहते हैं वह लुप्तोपमा कहलाती है। उपमा के भेद प्रभेद अनेक हैं।

❖ उपमा के मुख्यरूप से 2 भेद होते हैं—

उपमा —
- पूर्णोपमा-6 भेद
- लुप्तोपमा-19 भेद

❖ इस प्रकार उपमा के कुल 25 भेद होते हैं।

4. रूपक-अलङ्कारः

तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।

अतिशय समानता के कारण जहाँ उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाए अथवा उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण

अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

इस वाक्य में प्रयुक्त 'चन्द्रमुख' शब्द में मुख पर चन्द्रमा का आरोप होने से रूपक अलंकार है। प्रस्तुत पुस्तक के तृतीय पाठ की अधोलिखित पंक्ति में रूपक अलङ्कार है— जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्। यहाँ 'मुखपुण्डरीक' शब्द में मुख पर पुण्डरीक (कमल) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

- ❖ रूपक के 8 भेद होते हैं।
- ❖ विश्वनाथ का उदाहरण

आहवे जगदुद्दण्ड राजमण्डलाराहवे।
श्रीनृसिंहमहीपाल स्वस्त्यस्तु तव बाहवे।।

5. उत्प्रेक्षा अलंकार

❖ **भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।**

साहित्यदर्पण पर (उपमान) के द्वारा प्रकृत (उपमेय) की सम्भावना ही उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

उदाहरणम्

❖ **पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः।**
कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः।।

यहाँ पर वायु के द्वारा पुष्पों के साथ की जाने वाली क्रीडा की सम्भावना की गई है। अतएव उत्प्रेक्षा अलंकार है।

❖ उत्प्रेक्षावाचक शब्द हैं-**मन्ये, शङ्के, ध्रुवम्, प्रायः, नूनम्, इव** आदि। इनमें इव का प्रयोग उपमा में भी होता है। अन्तर यह है कि इव शब्द जब उत्प्रेक्षा का वाचक होता है तब क्रिया के साथ प्रयुक्त होता है और जब उपमा का वाचक होता है तब संज्ञा के साथ।

❖ मम्मट का उदाहरण—

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

- ❖ विश्वनाथ के अनुसार उत्प्रेक्षा के कुल भेद-32
- ❖ विश्वनाथ का उदाहरण—

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव।।

6. अर्थान्तरन्यासः

❖ **भवेदर्थान्तरन्यासोऽनुषक्तार्थान्तराभिधा।**

मुख्य अर्थ का समर्थन करने वाले अर्थान्तर (दूसरे वाक्यार्थ) का प्रतिपादन (न्यास) अर्थान्तरन्यास अलंकार कहलाता है।

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः।
श्वा यदि क्रियते राजा तत्किं नाश्नात्युपानहम्।।

यहाँ पर पूर्वार्ध ये वाक्यार्थ का समर्थन उत्तरार्ध के वाक्यार्थ द्वारा किया गया है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

उदाहरणम्

❖ **सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।**
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।।

- ❖ अर्थान्तरन्यास का मम्मट के अनुसार कुल भेद-4
- ❖ विश्वनाथ के अनुसार भेद-8

7. श्लेष

❖ **वाच्यभेदेन भिन्ना यत् युगपद्भाषणस्पृशः।**
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।

अर्थात् अर्थ का भेद का होने से भिन्न-भिन्न शब्द एक साथ उच्चारण के कारण मिलकर एक हो जाते है, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

- ❖ मम्मट के अनुसार श्लेष के 8 भेद हैं।
- ❖ वर्णपदलिङ्गभाषाप्रकृतिप्रत्ययविभक्तिवचनानां **भेदादष्टधा**
- ❖ मम्मट का उदाहरण—

पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिः शेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं संप्रति सममावयोः सदनम्।।

छन्द

❖ वेदरूपी पुरुष के अङ्गों के रूप में वेदाङ्ग की कल्पना करते हुए पाणिनीय शिक्षा श्लोक 41-42 में वेदाङ्गों का महत्व बताते हुए कहा है—

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

अर्थात् छन्दों की गणना वेद पुरुष के पैरो के रूप में की जाती है। कल्प को हस्त के रूप में ज्योतिष को नेत्र एवं निरुक्त को कान के रूप में तथा शिक्षा को नासिका के रूप में एवं व्याकरण को वेदरूपी पुरुष का मुख कहा गया है।

❖ **छंद शास्त्र के प्रणेता**-पिंगलाचार्य

❖ **छन्द शब्द की व्यत्पत्ति क्या है-**

1. छन्द:, [ख], क्ली, (चन्दयति आह्लादयति चन्द्यतेऽनेन वा। चदि आह्लादे + "चन्देरा- देश्च छ:।" उणां। 4। 218। इति असुन् चस्य छश्च।
2. छन्द:, पुं, (छन्द्यते इति। छन्द+भावे घञ्।)

अत: इस छन्द शब्द के दो अर्थ है-

1. आह्लादन- लोगों को आह्लादित करने वाला।
2. आच्छादन- इसके द्वारा रस एवं भाव को आच्छादित किया जाता है।

❖ **छन्द की परिभाषा**-पद्ये यत्र अक्षराणां मात्राणां वा प्रतिपादं गणना भवति तत्र छन्द: इत्युच्यते छन्द: आह्लादकरं रसानुकूलं नाम।

वैदिक साहित्य तथा गद्य पद्य संस्कृत साहित्य में पद्य का पडला आज भी भारी है साहित्य की अभिवृद्धि के साथ-साथ छंदों की भी वृद्धि हुई है जिस का क्रमिक विकास इस प्रकार हुआ है।

❖ **वेदों में कुल 21 छंद पाए जाते हैं।**

इनमें भी प्रमुख सात छंद हैं।

❖ तदनंतर वाल्मीकीय रामायण में 13 छन्दों का प्रयोग हुआ है।

❖ महाभारत का साहित्य 18 छंदों द्वारा आबद्ध है।

❖ महाभारत में यह क्रम 25 तक पहुँचा है।

❖ इनके पश्चात् के काव्यो में इन छंदों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

इस शास्त्र के अन्तर्गत तीन प्रकार के ग्रन्थ हैं-

1. वैदिक छन्दों के निरूपक
2. वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के निरूपक
3. केवल लौकिक छन्दों के निरूपक ग्रन्थ। वैदिक ग्रन्थों से ही लौकिक का निर्माण हुआ है। छन्दों का निरूपण करने वाले ग्रन्थों में सबसे प्राचीन ग्रन्थ आचार्य पिंगल कृत 'छन्द:सूत्र' तथा जयदेव कृत 'छन्द:सूत्र' माने जाते हैं। इसके अनन्तर कालिदास कृत श्रुतबोध, क्षेमेन्द्र कृत सुवृत्ततिलक, हेमचन्द्र कृत छन्दोऽनुशासन केदार भट्ट कृत वृत्तरत्नाकर, गंगादास कृत छन्दोमंजरी, दामोदर मिश्र वाणीभूषण कृत वाग्वल्लभ प्रमुख ग्रन्थ हैं।

छन्द: को **वृत्तम्** भी कहा जाता है। कुछ लोग छन्द को **जाति** भी कहते हैं।

❖ छंद के भेद

छंद वर्णो एवं मात्राओ की गणना भेद से दो प्रकार का हो जाता है।

1. इस प्रकार जहाँ पर अक्षरों की गणना होती है उसे वर्णवृत्त अर्थात् वर्णिक छन्द-अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा इत्यादि।
2. जिस स्थान पर मात्राओं की गणना होती है, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं।-आर्या प्रत्येक श्लोक में 4 पाद या चरण होते हैं। श्लोक के चतुर्थांश को पाद या चरण कहते हैं।

वृत्त छन्द के भेद-इसके तीन भेद होते हैं—

1. समवृत्त-इसमें चारों पादों में वर्गों की संख्या बराबर होती है। जैसे-इन्द्रवज्रा वंशस्थ आदि।
2. अर्धसमवृत्त-इसमें प्रथम-तृतीय, और द्वितीय-चतुर्थ में वर्ण समान होते हैं। जैसे-वियोगिनी, पुष्पिताग्रा।
3. विषमवृत्त-उसमें प्रत्येक चरण में वर्गों की संख्या विषम होती है। जैसे-गाथा छन्द।

मात्रिक छन्द-मात्रिक छन्दों में प्रत्येक पाद की मात्राएँ गिनी जाती हैं। प्रत्येक मात्रिक गण में 4 मात्राएँ होती हैं।

कुछ प्रमुख नियम- (वर्णमात्रादि विचार)

छन्द शास्त्र में ह्रस्व स्वर को लघुकहते हैं। लघु स्वर ये हैं- अ, इ, उ, ऋ, लृ। दीर्घ स्वर को गुरू कहते हैं। गुरू स्वर ये हैं- आ, ई, ऊ, ॠ ए, ऐ, ओ, औ। इसके अतिरिक्त यदि लघु स्वर के बाद कोई अनुस्वार,। विसर्ग या संयुक्त व्यंजन होगा तो वह लघु स्वर भी गुरु माना जाता है।

पाद के अन्त का लघु स्वर भी आवश्यकता के अनुसार गुरु माना जा सकता है। जैसा कि कहा भी गया है-

लघुगुरू लक्षण

❖ **सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च य:।**
वा पदान्ते गुरुर्ज्ञेयोन्यो मात्रिको लघु:।।

अनुस्वार से युक्त (अं, कं, खम् इत्यादि), विसर्गान्त (अ: क:ख: इत्यादि), दीर्घ (आई ऊ का की इत्यादि), जिसके पर में संयोग हो (कृष्ण, विष्णु इत्यादि) ऐसे वर्ण गुरू हैं। पदान्त में स्थित वर्ण (चाहे वह हस्व या दीर्घ कैसा भी हो) विकल्प से गुरु माना जाता है। इससे अन्य जो भी है ऐसा 1 मात्रा वाला लघु माना जाता है।

गुरू = S (2 मात्रा), लघु = I (1 मात्रा)

❖ **गण विचार करने वाला सूत्र**

यमाताराजभानसलगा।

1. यगण: यमाता। SS
2. मगण: मातारा-SSS
3. तगण: ताराजSS।
4. रगण: राजभाS। S

5. जगण: जभान ।।+ ।
6. भगण: भानस ।।+ ।।
7. नगण: नसल- ।।।
8. सगण: सलगा ।।।। +

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौतुगुरुलाघवम्।।

यति-पद्यगाने विरामो यतिः अर्थात् श्लोक के 1 पाद के पढ़ने में जितने अक्षरों के बाद अल्पविराम होता है उसे यति कहते हैं।

मात्रिक छन्द

- **आर्या**

यस्याः पादे प्रथमेद्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीयेचतुर्थके पञ्चदशसाऽर्या।।

प्रथमपाद-12 मात्रा द्वितीयपाद-18 मात्रा,
तृतीयपाद-12 मात्रा, चतुर्थपाद
15 मात्रा वाला छन्द आर्या कहा जाता है।

उदाहरण

S ।।SS।।S, ।S ।SS ।S।SSS

आपरितोषाद्विदुषां, नसाधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्। -18 मात्राएँ
बलवदपि शिक्षितानाम्, आत्मन्यप्रत्ययं चेतः।।

वार्णिक छन्द

- **1-अनुष्टुप्-श्लोकेषष्ठं गुरुज्ञेयं, सर्वत्र लघुपञ्चमम्।**
  द्विचतुष्पादयोर्हस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अनुष्टुप् छन्द में प्रत्येक चरण में 8 वर्ण होते हैं। जिनमें केवल 5, 6, 7 इन तीनों वर्णों पर ही नियम लगता है। 5वाँ वर्ण चारों चरणों में लघु तथा 6ठा वर्ण गुरु होता है। सातवाँ वर्ण द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में ह्रस्व (लघु) तथा अन्य (प्रथम और तृतीय) चरणों में दीर्घ (गुरु) होता है।। उदाहरण।।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम।।

- **2-इन्द्रवज्रा**

लक्षण-स्यादिन्द्रवज्रायदितौ जगौगः।

त त ज ग ग
SS। SS। ।S। SS

विशेष-इसके प्रत्येक अब बाद में 11 वर्ण होते हैं। क्रमशः दो तगण, एक जगण, और दो गुरु होते हैं। अर्थात्

त त ज ग ग।।। उदाहरण।।
SS। SS।। S। SS

अर्थो हि कन्या परकीय एव। तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।।
जातो ममायं विशदः प्रकामं। प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

- **3-उपेन्द्रवज्रा (11)**

उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं।
क्रमशः एक जगण एक तगण एक जगण तथा अंत में दो गुरु होते हैं।

लक्षण-उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ

ज त ज ग ग
।S।SS।।S।SS ।। उदाहरण।।
।S।SS।।S।SS

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

- **4-उपजाति (11)**

लक्षण- अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौपादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

नोट- उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं
यह इंद्रवज्रा और उपेंद्र वज्रा दोनों छंदों के योग से बनता है

उदाहरण-
।S।SS।। S।SS

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति। तेनिर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः। समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।

- **5-शालिनी (11)**

लक्षण-"मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः"

इसमें क्रमशः एक मगण दो तगण तथा अंत में दो गुरु होते हैं।

म त त ग ग
SSSS S। SS। SS

उदाहरण-

SSSSS। SS। SS

कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।
एवं लोकस्तुल्यधर्मो वनानां काल काले छिद्यते रुह्यते च।।

यति-शालिनी छन्द में वेद (4) और लोक (7) वर्णों पर यति होती है।

- **6-वंशस्थ (12)**

लक्षण-जतौतुवंशस्थमुदीरितंजरौ

इस प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। एवं क्रमशः ज त ज र होते हैं।

ज त ज र

ISI SSI ISI SIS

उदाहरण।।

ISISSIISISIS

गजाननं भूतगणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

❖ **7-वसन्ततिलका (14)**

लक्षण-उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौग:।

त भ ज ज ग ग

SSI SII ISI ISI SS

उदाहरण।।

SSISIIISIISISS

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपादतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

इसके प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते हैं तथा चारों चरणों में क्रमशः तगण भगण जगण जगण तथा अंत में दो गुरू होते हैं।

❖ **8-मालिनी**

लक्षण- **ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकै**

न न म य य

III IIISSISSI SS

उदाहरण।।

IIII IISSSISSISS

वयमिह परितुष्टाः वल्कलैस्त्वं दुकूलैः
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् कोदरिद्रः।।

❖ यति-मालिनी में भोगी (8) और लोक (7) वर्णों पर यति होती है।

❖ मालिनी छन्द के प्रत्येक पद मे 15 वर्ण होते हैं।

❖ क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण होते हैं।

❖ **9. शिखरिणी**

लक्षण-रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी

य म न स भ ल ग

ISS SSS III IIS SIII S

उदाहरण।।

ISS SS SIIIII SSIIIS

यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

❖ यति- शिखरिणी में रस (6) और रुद्र (11) वर्णों पर यति होती है।

❖ शिखरिणी के प्रत्येक पद में 17 वर्ण होते हैं। क्रमशः एक यगण एक मगण नगण, एक सगण, एक भगण एक लघु एक गुरू होता है।

❖ **10. मन्दाक्रान्ता (17)**

लक्षण-मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्

म भ न त त ग ग

SSS SII III SSI SSI SS

उदाहरण।।

SSSS IIIIISSISSISS

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नान पुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

❖ यति-अम्बुधि (4), रस (6), नग (7) पर यतियाँ होती हैं।

❖ मंदाक्रांता में प्रत्येक पात्र में 17 वर्ण होते हैं।

❖ क्रमशः 1. मगण, 2. भगण, 1. नगण, 2. तगण दो गुरू होते है।

❖ **11. शार्दूलविक्रीडित (11) लक्षण**

सूर्याश्वैर्यदिमः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

म स ज स त त ग

SSS IIS ISI IIS SSI SSI S

उदाहरण।।

SSSIISISIIISSSISSIS

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्छत्रेण सूर्यातपो,
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

- यति-सूर्य (12) और अश्व (7) वर्णो पर शार्दूलविक्रीडित में यति होती है।
- शार्दूलविक्रीडित छंद के प्रत्येक पद में 19 वर्ण होते हैं।
- क्रमशः एक मगण एक सगण एक जगण एक जगण दो तगण तथा एक गुरु होता है।
- **12. स्रग्धरा (21)**
- लक्षण-**म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम।**

म र भ न य य य

SSSS।SS।।।।।SS।SS।SS

उदाहरण।।

SSSS।SS।।।।।।SS।SS।SS

जन्मध्वंसं ह्यतीतः प्रकृतिमथ निजामास्थितः सम्भवामि,
ग्लानो धर्मोऽप्यधर्मो भवति यदि बली स्वीयमायाबलेन।
साधुत्राणाय तद्वत्खलजनहतये धर्मसंस्थापनाय,
एवं मे दिव्यकर्म जननमपि च यो वेत्ति मुक्तः स पार्थ।।

- यति- इस छन्द में त्रिमुनि (7, 7, 7) वर्णों पर तीन यतियां तथा कुल 21 वर्ण होते हैं।

नाट्य तत्त्व

वस्तु, नेता और रस यह नाटक का तीन प्रमुख तत्त्व है। वस्तु का अभिप्राय कथावस्तु से है। नेता का तात्पर्य नायक से है।

- कथावस्तु के दो भेद हैं—

1. आधिकारिक-मुख्य कथावस्तु
2. प्रासंगिक (2 भेद)-पताका और प्रकरी

- पताका-**सानुबन्धं पताकाख्यम्**

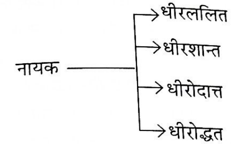
अर्थात्-अनुबन्ध सहित, प्रधान इतिवृत्त के साथ गौणरूप से दूर तक चलने वाला
उदाहरण-रामायण में सुग्रीव वृत्तान्त

- प्रकरी-**प्रकरी च प्रदेशभाक**

अर्थात् एक प्रदेश में सीमित रहनेवाला, थोड़ी दूर तक चलने वाला
उदाहरण -रामायण में शबरी वृत्तान्त

- पताका और प्रकरी का प्रख्यात, उत्पाद्य और मिश्र से तीन भेद होता है।
- नेता का तात्पर्य नायक से है।

- **नायक के चार भेद होते हैं—**



- दक्षिण, शठ, धृष्ठ और अनुकूल भेद से प्रत्येक नायक का 16 भेद होता है।
- नायक के 8 सात्विक गुण होते हैं।
- रस-आचार्य भरत मुनि के अनुसार **विभावानुभाव-व्यभिचारी-संयोगाद् रसनिष्पत्तिः**
  - भरत मुनि के अनुसार रस के 8 भेद
  - मम्मट एवं उद्भट के अनुसार रस के 9 भेद (अतिरिक्त रस-शांत)
  - विश्वनाथ के अनुसार रस के 10 भेद (अतिरिक्त रस-वात्सल्य)
  - रूपगोस्वामी के अनुसार-भक्ति रस
  - रुद्रट के अनुसार-प्रेयान रस

नाट्य तत्त्व सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द

- **नान्दी**-'नन्दन्ति देवता अस्याम् वा'

अर्थात् जिसमें अथवा जिसके द्वारा देवता प्रसन्न होते हैं उसे नान्दी कहते हैं।
आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-**आशीर्वचन-संयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।**
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।।
नान्दी के दो भेद होते हैं-1. अष्टपदा नान्दी 2. द्वादशपदा नान्दी
नान्दी नाटक के प्रारम्भ में होता है।

- **सूत्रधार**-'सूत्रं धारयतीति सूत्रधारः'

अर्थात् जो सूत्र को धारण करता है वह सूत्रधार कहलाता है। नाट्यशास्त्र में नाट्य के साधनों को '**सूत्र**' कहा जाता है और जो उस नाट्य सूत्र को धारण करता है, उसे सूत्रधार कहा जाता है।

नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो बुधैः।।

- **नटी**- सूत्रधार की पत्नी अथवा नाट्यमण्डली की किसी प्रमुख स्त्रीपात्र को नटी कहते हैं।
- **प्रस्तावना**-'स्थाप्यते प्रस्तूयते वा कथावस्तु अस्याम्' अर्थात् जिसमें कथावस्तु स्थापित या प्रस्तुत की जाती है उसे प्रस्तावना कहते हैं।

❖ **नेपथ्य**

नेपथ्य शब्द के अनेक अर्थ हैं-(1) पर्दा-'नेपथ्यं स्याज्जवनिका' (2) रङ्गभूमि (3) प्रसाधन (4) किसी अभिनयकर्ता का विशेष वेश- नेपथ्यं तु प्रसाधने रंगभूमी वेशभेदे। नट की वेशभूषा भी नेपथ्य कही जाती है।

❖ **कञ्चुकी**-यह राजा के अन्तः पुर की देखभाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण होता था। यह एक लम्बा चोगा पहनता था। सम्भवतः इसी कारण इसे कञ्चुकी कहा जाता होगा। नाट्यशास्त्र में कञ्चुकी का लक्षण इस प्रकार दिया गया है—

अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः।
सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते।।

यह धार्मिक प्रवृत्ति तथा शुद्ध चरित्र वाला होता था।

❖ **आकाशे अथवा आकाशभाषित**

किसी नाटक का अभिनय करते समय जब कोई पात्र आकाश की ओर दृष्टिपात करके ऐसे व्यक्ति से प्रश्न पूछने का अभिनय करता है जो रङ्गमञ्च पर उपस्थित ही नहीं है और उससे उत्तर प्राप्त करने का अभिनय सा करके 'क्या कह रहे हो' इस प्रकार का प्रश्न करके स्वयं ही उस उत्तर को दोहराता है तब इस प्रकार के प्रश्नोत्तर को 'आकाशे' अथवा 'आकाशभाषित' कहते हैं-किं ब्रवीषीत्येवमादि विना पात्रं ब्रवीति यत्। श्रुत्वेवानुक्तमप्येकस्तत्स्यादाकाशभाषितम्।।

❖ **स्वगतम् अथवा आत्मगतम्**

'अश्राव्यं स्वगतं मतम्' जो बात रङ्गमञ्च पर सबको सुनाने योग्य नहीं होती उसे 'स्वगतम्' अथवा 'आत्मगतम्' कहते हैं। इसमें रङ्गमञ्च का कोई पात्र अपने मन के भावों को प्रकट करने के लिए दूसरे पात्रों की तरफ से मुँह फेर कर इस तरह बात करता है कि दर्शक तो सुन लें परन्तु रङ्गमञ्च पर स्थित अन्य पात्र न सुन पाएँ। 'स्वगतम्' किसी भी पात्र की मानसिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है-'स्वगतं स्वहृदि स्थितम्'।

❖ **प्रकाश**-'सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यात्' जो बात सभी को सुनाने के उद्देश्य से कही जाती है उसे 'प्रकाश' कहते हैं।

❖ **जनान्तिकम्**

किसी के विषय में वार्तालाप करते हैं तब वह 'जनान्तिक' कहलाता है—

त्रिपताककरेणान्यान् अपवार्यान्तरा कथाम्।
अन्योन्यामन्त्रणं यत्स्यात् तज्जनान्ते जनान्तिकम्।।

जनान्तिक का उक्त लक्षण साहित्यदर्पण और दशरूपक में किया गया है।

❖ **अपवारित**

तद्भवेदपवारितम्। रहस्यं तु यदन्यस्यं परावृत्य प्रकाशते।।

अपनी मुख को दूसरी ओर करके जब कोई पात्र दूसरे व्यक्ति की गुप्त बात कहता है तो वह अपवारित कहलाता है।

❖ **प्रवेशक**

प्रवेशक दो अङ्कों के बीच एक प्रकार की अन्तर्वाता है जिसके द्वारा निम्न श्रेणी के पात्र संक्षेप में भूत तथा भविष्य की घटनाओं की सूचना देते हैं।

प्रवेशकोऽनुदात्तोक्तया नीचपात्रप्रयोजित।
अंकद्वयान्तविज्ञेयः शेषं विष्कम्भके यथा।।

❖ **विषकम्भक**

विषकम्भक का प्रयोग भी भूत अथवा भावी घटनाओं की सूचना के निमित्त किया जाता है। प्रवेशक और विषकम्भक का प्रयोजन लगभग समान ही है। विषकम्भक किसी अङ्क के प्रारम्भ में ही आ सकता है

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विषम्भक आदावङ्कस्य दर्शितः।।

विषकम्भक दो प्रकार का होता है- (1) शुद्ध और (2) मिश्र। एक अथवा अनेक मध्यम श्रेणी के पात्रों द्वारा किया गया वार्तालाप शुद्ध विषकम्भक कहलाता है। द्रष्टव्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् का तृतीय अङ्क। परन्तु एक मध्यम तथा एक नीच दो भिन्न वर्णो के पात्रों द्वारा कल्पित विषकम्भक मिश्र विषकम्भक कहलाता है।

विदूषक- यह संस्कृत नाटकों में हास्य रस का एक पात्र होता है जो नायक का मित्र तथा विश्वासपात्र इत्यादि होता है होता है। नायक के प्रेम व्यापारों में भी यह उसकी सहायता करता है। इसका शरीर, वेषभूषा, भाषा, कार्य इत्यादि सभी हास्योत्पादक होते हैं। इसे नायक का नर्मसचिव अथवा नर्मसुहृत् भी कहा जाता है। यह खाने का विशेषकर लड्डुओं का शौकीन होता है।

विकृतांगवग्रोवेषैर्हास्यकारी विदूषकः।

❖ **भरतवाक्य**

'भरतानां वाक्यम्'

भरत शब्द का अर्थ है-'नट' अथवा 'अभिनेता'। तदनुसार भरतवाक्य का अर्थ हुआ सभी पात्रों द्वारा गाया जाने वाला वाक्य। नाटक के अन्त में नाटकीय पात्रों की ओर से जो आशीर्वादात्मक श्लोक प्रस्तुत किया जाता है उसे भरतवाक्य कहते हैं।

यह नाटक के अन्त में होता है।

रस निष्पत्तिः

काव्यप्रकाशकार के अनुसार लोक में रति आदि स्थायी भावों के जो कारण, कार्य और सहकारी हैं, वे नाट्य और काव्य में प्रयुक्त होते हैं, तो वे विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव कहे जाते हैं। इन्हीं विभावादि से व्यक्त वह स्थायिभाव 'रस' कहा गया है- **स्थायी भावो रसः स्मृतः**। आचार्य भरतमुनि के अनुसार-

विभावानुभाव-व्यभिचारी-संयोगाद् रसनिष्पत्तिः।

अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। यहाँ संयोग और निष्पत्ति से कालान्तर में चार मत प्रचलित हुए।

संयोग-निष्पत्ति—
- → उत्पत्तिवाद-भट्टलोल्लट (मीमांसक)-उत्पाद्य-उत्पादक
- → अनुमितिवाद-शङ्कुक (नैयायिक)- अनुमाप्य-अनुमापक
- → भुक्तिवाद-भट्टनायक (सांख्य)-भोज्य-भोजक
- → अभिव्यक्तिवाद-अभिनवगुप्त (आलंकारिक)-आस्वाद्य-आस्वादक

1. **उत्पत्तिवाद**-भट्टलोल्लट का मत 'उत्पत्तिवाद' कहलाता है। उन्होंने संयोगात् पद का अर्थ 'उत्पाद्य-उत्पादक' तथा निष्पत्ति का अर्थ उत्पत्ति किया है। इनके मत में विभाव, अनुभाव, तथा संचारीभाव के योग से अनुकार्य राम-सीतादि में रस की उत्पत्ति होती है। विभाव सीतादि मुख्य रूप से रस को उत्पन्न करते हैं। अनुभाव उत्पन्न रस का बोध कराता है, तथा व्यभिचारिभाव उसका परिपोषण करता है।

2. **अनुमितिवाद**-आचार्य शङ्कुक ने रस की अनुभूति को अनुमान का विषय प्रतिपादित है। इस मत में संयोगात् पद का अर्थ अनुमाप्य-अनुमापक सम्बन्ध और निष्पत्ति का अर्थ अनुमिति किया है। इनके मत को आचार्य मम्मट ने निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है।

- **राम एवायम् अयमेव राम इति**-सम्यक् प्रतीति
- **न रामोऽयमित्यौत्तरकालिके बाधे रामोऽमिति**-मिथ्याप्रतीति
- **रामः स्वाद्वा न वाऽयमिति**-संशयात्मक प्रतीति
- **राम सदृशोऽयमिति**-सादृश्यात्मक प्रतीति

इन चारों प्रकार की प्रतीतियों से भिन्न **चित्रतुरग-न्याय** से होने वाली पञ्चम प्रकार की प्रतीति होती है।

3. **भुक्तिवाद**-आचार्य भट्टनायक के मत में वास्तविक रसानुभूति सामाजिकों को होती है। इन्होंने '**न ताटस्थ्येन नात्मगतत्वेन रसः प्रतीयते, नोत्पद्यते, नाभिव्यंज्यते**' के माध्यम से क्रमशः शङ्कुक, लोल्लट तथा अभिनवगुप्ताचार्य के मतों का खण्डन करके 'भुक्तिवाद' सिद्धान्त की व्याख्या की है।

इनके मत में विभाव, अनुभाव, तथा व्यभिचारिभाव के द्वारा भोज्य-भोजक भाव रूप सम्बन्ध से रस की निष्पत्ति (भुक्ति)होती है। अर्थात् सामाजिकों द्वारा रस का आस्वादन किया जाता है।

4. **अभिव्यक्तिवाद**- रस-सूत्र के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता अभिनवगुप्त के रस विषयक विवेचन का केन्द्रबिन्दु सामाजिक रसानुभूति है। सामाजिक के हृदय में रति इत्यादि स्थायी भाव

बीज रूप में स्थित होता है, जो काव्य के सीतादि रूप आलम्बन विभाव, उद्यानादि उद्दीपन विभाव, कटाक्षादि रूप अनुभाव तथा चापल्यादि व्यभिचारिभाव के साथ व्यष्टिशः तथा समष्टिशः संयोग रूप काव्य की तीसरी शब्दशक्ति, व्यञ्जना से अभिव्यक्त होकर शृंगारादि अलौकिक तथा चमत्कारिक रस कहलाता है।

आचार्य मम्मट ने भी '**व्यक्तः स तैः**' के माध्यम से अभिनवगुप्त का ही समर्थन किया है।

क्रमांक	रस	स्थायी भाव	वर्ण	देवता	विशेष
1.	शृंगार	रति	श्याम	विष्णु	2 भेद
2.	हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ	6 भेद
3.	करुण	शोक	कपोत	यमराज	
4.	रौद्र	क्रोध	लाल	रुद्र	
5.	वीर	उत्साह	सुवर्णवत्	महेन्द्र	4 भेद
6.	भयानक	भय	कृष्ण	कालाधिदैवत	
7.	वीभत्स	जुगुप्सा	नील	महाकाल	
8.	अद्भुत	विस्मय	पीला	गन्धर्व	
9.	शान्त	शम	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण	
10.	वात्सल्य (विश्वना-थानुसार अतिरिक्त रस)	स्नेह	पद्मगर्भ (कमल)	लोकमाता	

आचार्य और उनके मतानुसार अलंकार

- भरत-4
- मम्मट-67
- विश्वनाथ-82
- अप्पय दीक्षित-123
- भामह-38
- **संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र के छः सम्प्रदाय हैं—**

1. रस सम्प्रदाय,- भरतमुनि
2. अलंकार सम्प्रदाय-भामह
3. रीति या गुण सम्प्रदाय-वामन
4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय-कुन्तक
5. ध्वनि सम्प्रदाय-आनंदवर्धन
6. औचित्य सम्प्रदाय-क्षेमेन्द्र

- **बृहत्त्रयी**

1. किरातार्जुनीयम्-भारवि
2. शिशुपालवधम्-माघ
3. नैषधीयचरितम्-श्रीहर्ष

❖ **लघुत्रयी**

1. रघुवंश-कालिदास
2. कुमारसम्भवम्-कालिदास
3. मेघदूतम्-कालिदास

• • •

घटक-4

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

❖ लेखक-कालिदास
❖ काव्य विधा-नाटक
❖ कुल अङ्क-7
❖ प्रधान रस-शृंगार (सम्भोग)
❖ कथानक-राजा दुष्यन्त एवं का परस्पर प्रेम, विरह और मिलन का वर्णन है।
❖ प्रमुख पात्र-
❖ नायक-दुष्यन्त
- नायिका शकुन्तला
- कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका

❖ **अङ्कों के नाम**

प्रथम अङ्क	-	आश्रम प्रवेश
द्वितीय अङ्क	-	आश्रम निवेश
तृतीय अङ्क	-	मिलन
चतुर्थ अङ्क	-	विदा
पञ्चम अङ्क	-	प्रत्याख्यान
षष्ठ अङ्क	-	पश्चात्ताप
सप्तम अङ्क	-	पुनर्मिलन

❖ **मङ्गलाचरणः-**

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री।
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वरताभिरष्टाभिरीशः।।

❖ **भावार्थः-**

जिस सृष्टि को ब्रह्मा ने सबसे पहले बनाया, वह अग्नि जो विधि के साथ दी हुई हवन सामग्री ग्रहण करती है, वह होता जिसे यज्ञ करने का काम मिला है, वह चन्द्र और सूर्य जो दिन और रात का समय निर्धारित करते हैं, वह आकाश जिसका गुण शब्द हैं और जो संसार भर में रमा हुआ है, वह पृथ्वी जो सब बीजों को उत्पन्न करने वाली बताई जाती है, और वह वायु जिसके कारण सब जीव जी रहे हैं अर्थात् उस सृष्टि, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी और वायु इन आठ प्रत्यक्ष रूपों में जो भगवान शिव सबको दिखाई देते हैं, वे शिव आप लोगों का कल्याण करें।

- प्रस्तुत पद्य में अष्टमूर्ति भगवान् शिव की स्तुति की गयी है।
- आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग हुआ है।
- यहाँ पत्रावली नान्दी भी है।
- छन्द-स्रग्धरा
- अलङ्कार-अनुप्रास एवं समासोक्ति

❖ अभिज्ञानशाकुंतलम् की नायिका -**शकुंतला**

❖ भ्रमर से शकुंतला की रक्षा कौन करता है-**दुष्यंत**

❖ '**अर्थो हि कन्या परकीय एव**' किसने कहा-**कण्व ने**

❖ दुष्यंत और शकुंतला का विवाह किस प्रकार का था-**गान्धर्व**

❖ दुष्यंत ने जब आश्रम में प्रवेश किया तब महर्षि कण्व कहां गये हुए थे-**सोमतीर्थ**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का उपजीव्यग्रंथ कौनसा है- **महाभारत (आदि पर्व)**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक प्रयुक्त छंद कौनसा है-**आर्या**

❖ कण्व कौन थे-**तपस्वी**

❖ कालिदास ने सर्वाधिक किस रीति का प्रयोग किया है-**वैदर्भी**

❖ कालिदास के नाटकों में किस छंद की प्रमुखता है- **आर्या**

❖ 'अपीतेषु' पद में कौनसा समास है-**नञ्**

❖ 'कामी स्वतां पश्यति' 'कामी' पद में कौनसा प्रत्यय है- **णिनि**

❖ 'शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने' में कण्व ने किसे उपदेश दिया-**शकुंतला को**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक का क्या नाम है-**प्रत्याख्यान अंक**

❖ शकुंतला के साथ हस्तिनापुर तक कौन जाती है- **गौतमी**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अग्निगर्भा शमीमिव' कौन है-**शकुंतला**

❖ 'समिद्वन्त:' में प्रत्यय कौन है-**मतुप्**

❖ 'शुश्रूषस्व' में कौनसा लकार है-**लोट्**

❖ वनज्योत्स्ना और आश्रमवृक्षों के साथ सहोदरों जैसा स्नेह किसका है-**शकुंतला का**

❖ 'या सृष्टि: स्त्रष्टुराद्या' के 'सृष्टि:' पद में प्रकृति प्रत्यय है-**सृज+क्तिन्**

❖ शकुंतला को शाप किसने दिया था-**दुर्वासा ने**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक कौन है- **दुष्यंत**

❖ शकुंतला के पुत्र का नाम क्या था-**सर्वदमन (भरत)**

❖ शकुंतला की अंगूठी किसमें गिरी थी-**शचीतीर्थ में**

❖ नाट्यशास्त्र में 'नान्दी' से क्या अभिप्रेत है-**मङ्गलाचरण**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद किसने किया-**विलियम जोन्स**

❖ '**कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुं प्रभवति**' सूक्ति कहां से उद्धृत है-**अभिज्ञानशाकुन्तलम् से**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कण्व के शिष्य -**शार्ङ्गरव, शारद्वत**

❖ '**अचेतनं नाम गुणं न लक्षयेत्**' यह पंक्ति किसने किससे कही-**दुष्यंत ने अंगूठी से**

❖ कालिदास की कितनी नाट्यकृतियां हैं-**3**

❖ दुष्यंत के सेनापति का नाम क्या है-**भद्रसेन**

❖ '**ईषदीषद्चुम्बितानि भ्रमरै:**' नटी का यह गायन किस ऋतु से संबंधित है-**ग्रीष्म**

❖ '**उचितं ने ते मङ्गलकाले रोदितुम्**' किसने किससे कहा-**दोनों सखियों ने शकुंतला से**

❖ 'पातु न.. व्यवस्यति जलम्' रिक्तस्थान की पूर्ति करें-**प्रथमं**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में कालिदास ने किसकी वंदना की-**अष्टमूर्ति शिव की**

❖ कण्व का शिष्य कौन है- **शारद्वत**

❖ दुष्यंत द्वारा परित्यक्ता शकुंतला किस आश्रम में निवास करती है-**मारीचाश्रम में**

❖ शकुंतलापरित्याग की घटना किस अंक में है- **पञ्चम अङ्क में**

❖ तपस्वी होकर भी लौकिक व्यवहारों के कौन ज्ञाता हैं-**कण्व**

❖ कण्वाश्रम की वरिष्ठतपस्विनी कौन है-**गौतमी**

❖ कालिदास की 'नाट्यकृति' है-**विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)**

- मालविकाग्निमित्रम्
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में अंकों की संख्या कितनी है-7

❖ मृग का पीछा करते हुए राजा दुष्यंत किसके आश्रम में पहुँचे-**कण्व के आश्रम**

❖ शकुंतला की विदाई का वर्णन किस अंक में है-**चतुर्थ अङ्क**

❖ '**गण्डस्योपरि पिण्डक: संवृत्त:**' किसने कहा-**विदूषक**

❖ नाटक में 'जो बात सुनने योग्य न हो' उसे क्या कहते हैं-**आत्मगतम्**

❖ मारीच ऋषि का आश्रम कहां है-**हेमकूट पर्वत में**

❖ शकुंतला के जन्मदाता पिता कौन थे-**विश्वामित्र**

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलम् किसमें विभक्त है-**अङ्कों में**

- 'उपमासम्राट्' किस कवि को कहा जाता है-**कालिदास को**
- भ्रमर से शकुंतला की रक्षा करने का वर्णन किस अंक में है-**प्रथम अंक में**
- 'पश्यामीव पिनाकिनम्' यह वाक्य किसने कहा-**सूत ने दुष्यंत से**
- 'भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र' यह सूक्ति किसकी है-**अभिज्ञानशाकुन्तलम् की**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अभिज्ञान' शब्द से किससे संकेतित/संबंधित है-**अंगूठी**
- राजा दुष्यंत की प्रथम पत्नी कौन है- **हंसपदिका**
- 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' किसने, किसके लिए कहा-**दुष्यंत ने शकुंतला के लिए**
- ययाति की पत्नी कौन थी-**शर्मिष्ठा**
- 'भूयिष्ठम्' पद में क्या प्रत्यय है-**इष्ठन्**
- 'प्रत्यर्पितन्यास:' में कौनसा समास है-**बहुव्रीहि**
- शकुंतला को विदाई के समय रेशमी वस्त्र किसने दिये थे-**वृक्षों ने**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विदूषक है-**माधव्य**
- दुष्यंत की मन:स्थिति जानने के लिए मेनका ने अपनी किस सखी को भेजा था-**सानुमती को**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कौनसा अङ्गी रस है-**शृंगार**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पुरुष पात्रों में नहीं है-**वसन्तक**
- महर्षि कण्व का आश्रम कहां था-**मालिनी नदी के तट पर**
- दुष्यंत की विशेष रुचि किसमें नहीं है-**मृगया में**
- अनसूया किसकी सखी है-**शकुंतला की**
- कालिदास के सभी नाटक कैसे हैं-**सुखांत**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल पद्य/श्लोक हैं -**196**
- 'ग्रीवाभडाभिरामं .... स्तोकमुर्व्यां प्रयाति' यह श्लोक किस रस का उदाहरण है-**भयानकरस का**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् के कञ्चुकी किसका नाम है-**वातायन**
- 'सोऽयं न पुत्रकृतक: पदवीं मृगस्ते' यह कथन किसका है- **कण्व का शकुंतला से**
- 'सेयं याति शकुंतला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्' काश्यप (कण्व) का यह कथन किसके लिए है-**वृक्षों के लिए**
- 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमंत: करणप्रवृत्तय:' इस सूक्ति का वक्ता कौन है-**दुष्यन्त**
- 'अत: परीक्ष्य कर्त्तव्य विशेषात् सङ्गतं रह:' किसने कहा-**शार्ङ्गरव ने**
- 'संस्पृष्टमुत्कण्ठया' के संस्पृष्टम्' पद में प्रकृति प्रत्यय है-**सम् + स्पृश + क्त**
- द्वितीय अङ्क में राजा को मृगया न खेलने की सलाह कौन देता है-**माधव्य**

- शकुंतला की क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास कौन जाती है-**प्रियंवदा**
- शकुंतला का पालन-पोषण कहां हुआ था-**कण्व के आश्रम में**
- अभिज्ञानशाकुन्तमलम् में कौनसा प्रधान गुण है-**प्रसाद**
- शकुंतला पति के चिंतन में कहां बैठी है-**कुटिया के पास**
- शकुंतला की माता का नाम क्या था-**मेनका**
- नाटकों में भरतवाक्य का प्रयोग कहाँ होता है- **अन्त में**
- अभिनेता जहाँ वेशभूषा धारण करते हैं, उसे क्या कहते हैं- **नेपथ्य**
- शकुंतला की प्रियसखी कौन है-**प्रियंवदा और अनसूया**
- 'अहो रागपरिवाहिणी गीति:' राजा दुष्यंत का यह कथन किसकी प्रशंसा में है-**हंसपदिका के गाने पर**
- 'अतिस्नेह: पापशङ्की' सूक्ति किससे उद्धृत है-**अभिज्ञानशाकुन्तलम् से**
- 'दुर्लभमिदानीं में सखीमण्डनं भविष्यति' यह कथन किसका है-**शकुंतला का**
- महर्षि मारीच किसका शिष्य है-**गालव**
- 'न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति' किसने कहा-**प्रियंवदा ने**
- 'अस्तशिखर' से कौनसा समास है-**तत्पुरुषसमास**
- राजा दुष्यंत की दूसरी पत्नी कौन थी-**वसुमती**
- राजा दुष्यंत की तीसरी पत्नी/प्रेमिका कौन है-**शकुंतला**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'पुत्रकृतक: श्यामाक-मुष्टिपरिवर्धितक:' कौन है-**मृग: (दीर्घापाङ्ग:)**
- 'गुर्वपि विरहदु: खमाशाबन्ध: साहयति' किसकी उक्ति है-**अनसूया**
- 'न्यषिच्यत' में कौनसी संधि है-**यण्**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में सर्वाधिक सौंदर्य किसका वर्णित है-**शकुंतला का**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् सूक्तियाँ

।। प्रथम अङ्क:।।

- **बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेत:। (2 सूत्राधर)**
  विशेष रूप से शिक्षित लोगों का भी मन अपने विषय में विश्वास रहित होता है।
- **भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। (16-दुष्यन्त)**
  भावी घटनाओं के सभी स्थानों पर द्वार या मार्ग होते हैं।
- **सरसिजमनुविद्धंशैवलेनापि रम्यं**
  मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मी तनोति।
  इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
  किमिव मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्। (20-दुष्यन्त)

सिवाल से आच्छादित भी कमल मनोहर लगता है, मलिन कलंक भी चन्द्रमा की शोभा को बढ़ाता है, यह कृशाङ्गी (शकुन्तला) वल्कल वस्त्रों से भी अत्यन्त सुन्दर लग रही है, क्योंकि सुन्दर आकृतियों के लिए कौन सी वस्तु अलंकार नही होती हैं।

- **सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः। (22-दुष्यन्त)**
  सन्देहास्पद वस्तुओं के विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।
- **न प्रभातरल ज्योतिरुदेति वसुधातलात्। (25-दुष्यन्त)**
  कान्ति से उज्जवल तेज भूतल से उत्पन्न नही होता है।
- **बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः। (2 सूत्राधर)**
  विशेष रूप से शिक्षित लोगों का भी मन अपने विषय में विश्वास रहित होता है।
- **भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। (16-दुष्यन्त)**
  भावी घटनाओं के सभी स्थानों पर द्वार या मार्ग होते हैं।
- **आशङ्का से यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्। (27-दुष्यन्त)**
  जिसको अग्नि समझ रहे थे वह यह स्पर्श करने योग्य रत्न है।
- **अहो चेष्टाप्रतिरुपिका कामीजनमनोवृत्तिः। (दुष्यन्त)**
  गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चाद् संस्तुतं चेतः। (दुष्यन्त)

।।द्वितीय अङ्क।।

- **कामी स्वतां पश्यति। (2-दुष्यन्त)**
  कामी पुरुष स्वत्व या अपनी ही बात को देखता है।
- **शमप्रधानेषु तपोधनेषु**
  गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
  स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्ता
  -स्तदन्यतेजोऽभिभवाद् दहन्ति।। -(7दुष्यन्त)

शान्तिप्रधान तपस्वियों में जला देने वाला गुप्त तेज रहता है, क्योंकि स्पर्श के योग्य सूर्यकान्त मणियों के समान अन्य तेज से तिरस्कृत होने पर वे उस तेज को प्रकट करते हैं।

।। तृतीय अङ्कः।।

- **त्वमपि कुसुमबाणन् वज्रसारीकरोषि। (3 दुष्यन्त)**
  स्मर एव तापहेतुर्निर्वापयिता स एव मे जातः।
  दिवस दूर्वार्धश्यामस्तपात्यये जीवलोकस्य। (14 दुष्यन्त)

लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं
श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्। (16दुष्यन्त)
विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति। (दुष्यन्त)
अहो विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धयः। - (दुष्यन्त)

।। चतुर्थ अङ्क।।

- **यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया**
  कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
  वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं सेहादरण्यौकसः
  प्रीयन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।। (कण्व 6)

आज शकुन्तला चली जाएगी इसलिए मेरा हृदय उत्कण्ठा से भर रहा है। गला आँसुओं के बहने को रोकने के कारण रुंध गया है। दृष्टि चिन्ता के कारण जड़ हो गई है। वन में रहने वाले मुझको प्रेम के कारण इस प्रकार का दुःख हो रहा है गृहस्थ लोग नवीन या पहली बार पुत्री के वियोग के दुःख से कितना अधिक दुःखित होते होंगे?

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां रोहन या पल्लवम्।

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्। (9)

यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (18)

न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम (शार्ङ्गरव)

।। पञ्चम अङ्क।।

- भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव,
  रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति।
  शेषः सदैवाहितभूमिभारः
  षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः। (4 कञ्चुकी)

सूर्य ने एक ही बार अपने घोड़ो को जोता है, वायु दिन-रात चलती है, शेषनाग सदा ही पृथ्वी के भार को धारण किए हुए है, राजा का भी यही धर्म है।

- भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमै
  -र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
  अनुद्धताःसत्पुरुषाः समृद्धिभिः।
  स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।। (12 शार्ङ्गरव)

वृक्ष फलों के आ जाने पर नम्र हो जाते हैं, मेघ नवीन जल से अत्यन्त नीचे लटक आते हैं, इसी प्रकार सज्जन पुरुष समृद्धि पाकर अत्यन्त विनीत हो जाते हैं, क्योंकि परोपकारियों का यह स्वभाव ही है।

❖ **अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्। (दुष्यन्त)**
परस्त्री को देखना नहीं चाहिए।

❖ **तमस्तपति धर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति। (14 ऋषि)**
सूर्य के तपते हुए होने पर अन्धकार कैसे प्रकट हो सकता है।

अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्। (24 शार्ङ्गरव)

उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी। (26 शारद्वत)

।। षष्ठ अङ्क ।।

❖ **उत्सवप्रिया हि खलु मनुष्याः। (सानुमती)**
मनुष्य तो उत्सव के प्रेमी होते हैं।

❖ **हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मित्रा वर्जयत्यपः। (28 दुष्यन्त)**
हंस दूध को ग्रहण कर लेता है, उसमें मिश्रित पानी को छोड़ देता है।

।। सप्तम अङ्क ।।

❖ **सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः**
संभावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।
किं वाऽभविष्टादरुणस्तमसां विभेत्ता
तं चेत्सहस्त्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्। (4 दुष्यन्त)

❖ **अजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया। (24 दुष्यन्त)**
अन्धा शिर पर डाली गई माला को साँप समझकर फेंक देता है।

❖ **उदेति पूर्व कुसुम ततः फलं, धनोदयः प्राक्तदनन्तरं पयः। (30 दुष्यन्त)**
पहले फूल निकलता है, तत्पश्चात् फल आता है, पहले बादल आता है तत्पश्चात् पानी आता है।

❖ **छाया न मूर्छति मलोपहतप्रसादे शुद्धे दर्पणतले सुलभावकाशा (32 मारीच)**
मैल के कारण जिसकी स्वच्छता नष्ट हो गई है ऐसे शीशे पर प्रतिबिम्ब स्पष्ट नहीं दिखाई देता है, परन्तु स्वच्छ होने पर प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता है।

मेघदूतम्

❖ रचनाकार-महाकवि कालिदास
❖ काव्य विधा-खण्ड काव्य/गीति काव्य

❖ दूतकाव्य
❖ इसमें एक यक्ष की कथा है जिसे कुबेर अलकापुरी से निष्कासित कर देता है। निष्कासित यक्ष **रामगिरि पर्वत पर निवास करता** है। वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है। कामार्त यक्ष सोचता है कि किसी भी तरह से उसका अल्कापुरी लौटना संभव नहीं है, इसलिए वह प्रेमिका तक अपना संदेश दूत के माध्यम से भेजने का निश्चय करता है। वह मेघ के माध्यम से अपना संदेश विरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची।
❖ आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर उमड़ते मेघों ने कालिदास की कल्पना के साथ मिलकर एक अनन्य कृति की रचना कर दी।
❖ मेघदूतम् काव्य दो खंडों में विभक्त है।
❖ पूर्वमेघ और उत्तरमेघ
❖ मंदाक्रांता छंद

लक्षणः- मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्

म भ न त त ग ग

ऽऽऽ।। ।।। ऽऽ। ऽऽ। ऽ ऽ

।। उदाहरण ।।

ऽऽ ऽऽ । ।।।। ऽ ऽ।ऽऽ ।ऽऽ

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।

❖ **मेघदूत का विग्रह** –मेघः एव दूतं यस्य – मेघदूतम्
❖ मेघदूत का मंगलाचरण किस प्रश्नकार का है – वस्तुनिर्देशात्मक
❖ **मेघदूत में मुख्य रस कौन सा है** – विप्रलम्भ शृङ्गार
❖ **मेघदूत में छन्द है** – मन्दाक्रान्ता
❖ मेघदूत किसकी रचना है – **कालिदास**
❖ **मेघदूतम् – इसमे समास है** – बहुब्रीहि
❖ **मेघदूत कैसा काव्य है** – गीतिकाव्य
❖ मेघदूत का उपजीव्य काव्य है – रामायण, ब्रह्मवैवर्तपुराण
❖ मेघदूत कितने भागों में विभक्त है– 2

पूर्वमेघ, उत्तर मेघ

❖ मेघदूत मे पूर्व मेघ मे श्लोकों की संख्या – 67
❖ मेघदूत मे उत्तर मेघ मे श्लोकों की संख्या – 54
❖ मेघदूत का नायक है – यक्ष
❖ मेघदूत की नायिका है – यक्षिणी

- **यक्ष का नाम है** - हेममाली
- **नायिका का नाम है** - विशालाक्षी
- **मेघदूत पर मल्लिनाथ ने कौन सी टीका लिखी** -संजीवनी टीका
- मेघदूत के सर्व प्राचीन टीकाकार है - बल्लभदेव
- सर्वप्राचीन गीतिकाव्य है - मेघदूत
- यक्ष श्रापमुक्त कब होता है - देवोत्थान एकादशी को
- कुबेर ने यक्ष को कितने वर्ष का शाप दिया था - 1 वर्ष का
- यक्षो के स्वामी कौन थे - कुबेर
- विष्णु शेषशय्या से कब उठते हैं। - देवोत्थान एकादशी को
- यक्ष शाप के दिनों में कहां रहता है - रामगिरि चित्रकूट पर्वत पर।
- मेघदूत पर लिखी गयी कितनी टीकाये हैं - 50
- मेघदूत में कितने श्लोक प्रश्नमाणिक माने जाते हैं - पूर्व मेघ मे - 63 उत्तर मे - 52 - कुल संख्या है - 115
- पुष्कर एवं आवर्तक नामक बादलो के कुल में कौन उत्पन्न हुआ - मेघ
- कुटज (गिरिमल्लिका) पुष्प से मेघ को अर्घ दिया था - यक्ष ने
- अलका किसकी नगरी थी - कुबेर की
- मेघ का गर्जन पृथ्वी को किस पुष्प से युक्त कर देता है - शिलीन्ध्र पुष्पों से
- शिव के सिर पर स्थित चांदनी से उज्जवल महलों से युक्त नगरी थी - अलका
- अलका किसकी नगरी थी - कुबेर की
- कैलाश तक मेघ का साथी कौन था - राजहंस
- विंध्य के पठार में कौन सी नदी बहती है- रेवा(नर्मदा)नदी
- अवंतिका की राजधानी थी- उज्जयिनी
- बेतवा नदी कहां बहती थी- विदिशा मे
- दशार्ण की राजधानी थी - विदिशा
- इंद्र ने नीलगिरी नामक हाथी किसको दिया था- प्रश्नद्योत को
- महाकाल किस नदी के समीप थे- गन्धवती
- कैलाश के ऊर्ध भाग में स्थित नगरी है - अलका नगरी
- सूर्य की प्रेयसी किसको कहा जाता है- कमलिनी को
- अलका में सदैव ऋतुए रहती हैं-6 ऋतुएँ।
- अलका की स्त्रियाँ क्रीडा के लिए हाथों में लिए रहती हैं- कमल
- अलकापुरी की स्त्रियाँ बालों में लगाये रहती हैं- कुन्दपुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ मुख पर लगाये रहती हैं-लोध्रपुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ जूड़ों में सजाती-कुरबक

- अलकापुरी की स्त्रियाँ कानों में लगाती हैं-शिरीष पुष्प
- अलकापुरी की स्त्रियाँ माँग में सजाती हैं-कदम्ब पुष्प
- यक्ष हमेशा युवावस्था को प्राप्त रहते हैं- अलका में
- 'रतिफल' नामक मद्य प्राप्त होता है- कल्पवृक्ष से
- अलका के बाह्य उद्यान का नाम है- वैभ्राज
- वैभ्राज उद्यान बनाया गया था-चित्ररथ द्वारा
- वैभ्राज उद्यान की रक्षा करता है-विभ्राज
- शिव का गण है-विभ्राज
- यक्ष का घर किसके समान है?- इन्द्रधनष के
- अल्का में अलंकरण की समस्त सामग्री प्रश्नदान करता है-कल्पवृक्ष
- यक्ष का घर कुबेर के घर से किस दिशा में स्थित है?- उत्तर दिशा
- यक्ष के घर के समीप वृक्ष है-मन्दारवृक्ष
- मन्दारवृक्ष पोषित किया गया था- यक्षिणी द्वारा
- रक्त, अशोक और मौलसिरी नाम के दो वृक्ष हैं-क्रीडाशैल पर
- माधवीलता का कुंज है-क्रीडाशैल पर
- यक्षिणी के बायें पैर का इच्छुक है-अशोक वृक्ष
- यक्षिणी के 'मुख की मदिरा' का अभिलाषी है-मौलसिरी
- यक्ष के द्वार के दोनों ओर चित्र बने हैं- शंख और पद्म के
- अलकापुरी में यक्ष के घर में बने क्रीडाशैल पर बैठता है- मेघ
- यक्ष के घर में पाली गयी है-मैना
- यक्षिणी विरह के दिनों की गणना करती है-पुष्पों से
- यक्षिणी विरह के दिनों में सोती है- भूमि पर।
- 'अवन्ती' में किसकी कथा प्रश्नचलित है?- वत्सराज
- उदयन की देदीप्यमान स्वर्ग का टुकड़ा कहा गया है-उज्जयिनी को
- 'विशाला' कहा गया है- उज्जयिनी को
- उदयन ने प्रश्नद्योत की पुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था-उज्जयिनी मे
- प्रश्नद्योत का स्वर्णमय ताड़ वृक्षों का वन था-उज्जयिनी में
- प्रश्न-उज्जयिनी के महल की छत पर रात्रि व्यतीत करता है-मेघ
- उज्जयिनी के बाद मेघ के मार्ग में नदी आती है-गंभीरा
- यक्ष, 'जल' को 'गंभीरा' का बताता है-वस्त्र
- यक्ष किनारों को बताता है-नितम्ब
- यक्ष बेंत की शाखाओं को गम्भीरा का बताता है-हाथ
- चर्मवती नदी पार करके मेघ कहां की स्त्रियों की उत्सुकता का विषय बनेगा?-दशपुर

- ❖ प्रश्न-बलराम की पत्नी का नाम है-रेवती
- ❖ किसकी आँखों की उपमा सरस्वती नदी से की गयी है?-रेवती की
- ❖ 'कुरुक्षेत्र' के आगे 'कनखल' पर्वत के समीप बहती है- गङ्गा नदी
- ❖ गङ्गा नदी का नाम है-जह्नु कन्या
- ❖ हिमालय पर्वत पर परशुराम के पराक्रम का प्रश्नमाण है- क्रौञ्चरन्ध्र
- ❖ क्रौञ्चरन्ध्र से हंस जाते हैं-मानसरोवर
- ❖ क्रौञ्चरन्ध्र का दूसरा नाम है-हंसद्वार
- ❖ उत्तरमेघ के प्रश्नथम श्लोक में अलकानगरी की तुलना की गयी है-मेघ से
- ❖ मेघ के बिजली की तुलना की गयी है- अलकापुरी की स्त्रियों से
- ❖ इन्द्रधनुष की तुलना की गयी है-सुन्दर चित्रों से
- ❖ मेघ के गर्जन की तुलना की गयी है- अलकापुरी में बजाए जाने वाले मृदङ्गों से
- ❖ मेघ के जलधारण की तुलना की गयी है- मणिजड़ित फर्शों से
- ❖ मेघ की ऊँचाई की तुलना की गयी है- गगनचुम्बी शिखरों से
- ❖ निर्विंध्या अपनी भवररूपी नाभि किसको दिखाती है – मेघ को
- ❖ उज्जैनी जाते समय मेघ किस से मिलता है- निर्विंध्या से
- ❖ मेघ का मार्ग कहां जाते समय टेढ़ा होगा- उज्जयिनी
- ❖ वैश्याओ द्वारा प्रश्नयुक्त सुगंधित पदार्थों से युक्त गुफाओं वाला है- नीचैः पर्वत
- ❖ विदिशा में मेघा कहां पर ठहरता है- नीचैः पर्वत मे
- ❖ मालवा के भिलसा नामक स्थान को माना जाता है- विदिशा
- ❖ किस नदी की उपमा भूभंग युक्त नायिका से की गई है- वेत्रवती
- ❖ विदिशा किस नदी के तट पर स्थित है- वेत्रवती के
- ❖ 10 दुर्गों का प्रश्नदेश किसे कहा जाता है- दशार्ण को
- ❖ रेवा नदी को पार करके मेघ कहां पहुंचता है- दशार्ण देश
- ❖ धुआँ, अग्नि, जल एवं वायु से निर्माण हुआ है- मेघ का
- ❖ मेघ के बाँयी ओर शब्द कर रहा था- चातक
- ❖ अलकापुरी का वर्णन है-उत्तरमेघ में
- ❖ अलकापुरी का भवन है-सीतमञ्जिला
- ❖ 'पुष्पक' नामक बाजे बजाये जाते हैं- अलकापुरी में
- ❖ 'रतिफल' नामक मदिरा का सेवन करते हैं- यक्ष
- ❖ मेघ किस दिशा की ओर मुख करके अपनी यात्रा आरम्भ करता है?-उत्तर दिशा की ओर
- ❖ इन्द्रधनुष से मेघ की उपमा दी गयी है-गोपवेषधारी श्रीकृष्ण की
- ❖ मेघ की यात्रा में पहला पर्वत है-आम्रकूट

- ❖ मेघ के मार्ग में मिलने वाली प्रश्नथम नदी थी-रेवा (नर्मदा)
- ❖ किसका जल हाथियों के मदों से सुगन्धित तथा जामुन के कुञ्जों से अवरुद्ध है?-नर्मदा का
- ❖ मेघ की यात्रा में सर्वप्रश्नथम पड़ता है-माल प्रश्नदेश
- ❖ आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि पहले बुझायी थी- मेघ ने
- ❖ मित्रता के कारण आम्रकूट मेघ को धारण करेगा-सिर पर
- ❖ स्कन्द (कार्तिकेय) कहा नित्य निवास करते थे – देवगिरि पर
- ❖ कुरूक्षेत्र कहाँ है – ब्रह्मवर्त में
- ❖ स्वर्ण कमल कहा उत्पन्न होते हैं – मानसरोवर में
- ❖ सरस्वती नदी के जल का सेवन किसने किया था – बलराम ने।
- ❖ मेघदूत का जर्मन भाषा मे गद्यानुवाद किया है – वेट्ज ने
- ❖ **मेघदूत का जर्मन भाषा मे पद्यानुवाद किसने किया है** – मैक्समूलर ने
- ❖ मेघदूत का अंग्रेजी में पद्यानुवाद अनुवाद किसने किया है –आर्थर राइडर एवं एच जी रुक ने।
- ❖ हिन्दी भाषा मे मेघदूत के कितने पद्यानुवाद हो चुके हैं- 6
- ❖ **मेघदूत को शोक गीत (Elegy) किसने कहा है**- डॉ०कीथ ने।
- ❖ महाकवि कालिदास के मंदाक्रांता छंद की प्रश्नप्रशंसा किस कवि ने की है- क्षेमेन्द्र ने
- ❖ मेघ को अपनी प्रिया के पास संदेशवाहक बनाकर कौन भेजना चाहता है?- मेघ
- ❖ यक्षो के अधिपति कुबेर की राजधानी थी? – अलका
- ❖ मेघदूत मे प्रश्नयुक्त रीति कौन सी है?- वैदर्भी रीति
- ❖ मेघदूत में किस गुण की प्रधानता है- प्रसाद एवं माधुर्य
- ❖ मेघदूत में यक्ष किस कोटि का नायक है- धीरललित
- ❖ मेघदूत में यक्षिणी की कोटी कौन सी है- पद्मिनी
- ❖ मेघदूत में यक्ष की शाप अवधि का कितना समय शेष है – 4 माह
- ❖ मेघदूत के आरंभ में यक्ष की शाप किसने दिया था?- कुबेर ने
- ❖ यक्ष को अपने कार्य में प्रश्नमाद करने के कारण शाप किसने दिया था?- कुबेर ने
- ❖ यक्ष को श्राप मिलने का कारण क्या था – अपनी पत्नी मे आशक्ति

मेघदूत की प्रमुख सूक्तियाँ

पूर्व मेघ मे सूक्तियाँ

- ❖ यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु। 1
- ❖ आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानु। 2
- ❖ कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे। 3

- ❖ प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी। 4
- ❖ धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः। 5
- ❖ कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु। 5
- ❖ याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। 6
- ❖ आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां। 9
- ❖ वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु। 12
- ❖ प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः। 17
- ❖ सद्भावार्द्रः फलति न चिरेणोपकारो महत्सु। 17
- ❖ क न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय। 17
- ❖ रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय। 20
- ❖ स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। 28
- ❖ अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले। 36
- ❖ मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः। 40
- ❖ ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः। 43
- ❖ आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम्। 55
- ❖ केवा न स्युः परिभवपदं निष्फलारम्भयत्नाः। 56
- ❖ हेमाम्भोजप्रश्नसवि सलिलं मानसस्याददानः। 64

उत्तर मेघ -

- ❖ सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्-1
- ❖ वित्तेशानां न च खलु वयो यौवनादन्यदस्ति – 4
- ❖ मन्दाकिन्या सलिल शिशिरैः सेव्यमाना – 6
- ❖ मङ्गलानिं सुरजजनितां तन्तुजालावलम्बाः
- ❖ जातां मन्ये शिशिर मथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् – 23
- ❖ आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याल कुला वा–25
- ❖ वाचालं मां न खलु – 34
- ❖ कामोदन्तः सुहृदुपनतः सङ्गमात्किञ्चिदून:–40
- ❖ शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते शार्ङ्गपाणौ –50
- ❖ प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थ क्रियैव 54

मेघदूत में वर्णित क्रम

पर्वत	रामगिरि-आम्रकूट-विन्ध्य-नीचगिरि-देवगिरि-हिमाचल-क्रौञ्चपर्वत-कैलास
नदियाँ	रेवा-वेत्रवती-निर्विन्ध्या-सिन्धु-शिप्रा-गन्धवती-गम्भीरा-चर्मण्वती-सरस्वती-जाह्नवी-यमुना-मानसरोवर

पर्वत	रामगिरि-आम्रकूट-विन्ध्य-नीचगिरि-देवगिरि-हिमाचल-क्रौञ्चपर्वत-कैलास
नगर	मालदेश-दशार्ण-विदिशा-उज्जयिनी-विशाला-अवन्ति-दशपुर-ब्रह्मावर्त-कुरुक्षेत्र-कनखल-अलका

श्रीमद्भगवद्गीता

- ❖ महाभारत युद्ध आरम्भ होने से पहले भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया वह **श्रीमद्भगवद्गीता** के नाम से प्रसिद्ध है।
- ❖ यह महाभारत के **भीष्मपर्व** का अंग है।
- ❖ गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं।

भगवद्गीता अध्याय नाम और श्लोक संख्या	
	10 विभूतियोग 42
1 अर्जुनविषादयोग 47	11 विश्वरूपदर्शन योग 55
2 सांख्ययोग 72	**12 भक्तियोग 20**
3 कर्मयोग 43	13 क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग 34
4 ज्ञानकर्मसंन्यासयोग 42	14 गुणत्रयविभागयोग 27
5 कर्मसंन्यासयोग 29	15 पुरुषोत्तमयोग 20
6 आत्मसंयमयोग 47	16 दैवासुरसम्पद्विभागयोग 24
7 ज्ञानविज्ञानयोग 30	**17 श्रद्धात्रयविभागयोग 28**
8 अक्षरब्रह्मयोग 28	**18 मोक्षसंन्यासयोग 78**
9 राजविद्याराजगुह्ययोग 34	

- ❖ **योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजयः।**
  सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। 2/48।।
- ❖ **बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।**
  तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।। गीता 2/50।।

दूसरा अध्याय (सांख्य योग)

आत्मा की विशेषताएँ

अज	नित्य	शाश्वत	पुरातन	अविनाशी
अच्छेद्य-जिसे काटा न जा सके	अदाह्य-जिसे जलाया न जा सके	अशोष्य-जिसे सुखाया न जा सके	अव्यक्त	अचिन्त्य
अविकारी				

स्थितप्रज्ञ

- अर्जुन स्थिर बुद्धि पुरुष का क्या लक्षण है? कैसे बोलता है, कैसे बैठता है और कैसे चलता है?
- **जो मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देता** है और आत्मा से आत्मा में संतुष्ट रहता है, वह **स्थिरप्रज्ञ** कहा जाता है।
- जो व्यक्ति दुःख-सुख में एक समान हो, जिसके राग, भय, क्रोध नष्ट हो गए हो।
- जो सभी विषयों से अपनी इन्द्रियों को हटा लेता है। क्योंकि **विषयों से काम-काम से क्रोध-क्रोध से मूढ़भाव-स्मृति भ्रम-ज्ञान (बुद्धि) का नाश-पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।**

तीसरा अध्याय (कर्मयोग)

- अर्जुन बोले- हे जनार्दन! यदि आपको कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ मान्य है तो फिर हे केशव! मुझे भयंकर कर्म में क्यों लगाते हैं?
- दो प्रकार की निष्ठा का वर्णन-
  1. सांख्य वालो के लिए ज्ञानयोग
  2. योगियों के लिए कर्मयोग

  कर्म के बिना दोनों प्रकार की निष्ठा सम्भव नहीं है।
- जो मूढ़ बुद्धि मनुष्य समस्त इन्द्रियों को हठपूर्वक ऊपर से रोककर मन से उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन करता रहता है, वह **मिथ्याचारी** कहा जाता है। ।
- यज्ञ के बचे भाग को खाने से श्रेष्ठ मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाते है।

उत्पत्ति क्रम

सभी प्राणियों को उत्पत्ति अन्न से-अन्न की वृष्टि से-वृष्टि यज्ञ से-यज्ञ विहित कर्मों से दृकर्म समुदाय-वेद से-वेद को परमात्मा से उत्पन्न जान।

- **अर्जुन-यह मनुष्य बिना इच्छा के भी किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है?**

  कृष्ण-रजोगुण से उत्पन्न यह काम ही क्रोध है, यह पाप की ओर प्रेरित करता है। यह ज्ञान को ढक लेता है।
- **काम के वास स्थान**:- 1. इन्द्रियाँ 2. मन 3. बुद्धि
- **इन्द्रियों से:- मन से-बुद्धि से-आत्मा श्रेष्ठ है।** अतः बुद्धि के द्वारा मन को वश में करके काम को पराजित कर।

छठा अध्याय (आत्मसंयम योग)

संन्यासी की परिभाषा:- जो पुरुष कर्मफल का आश्रय न लेकर करने योग्य कर्म करता है, वह संन्यासी तथा योगी है।

- संन्यास को ही योग कहा जाता है।
- केवल संकल्पों, अग्नि, क्रियाओं का त्याग न करने वाला योगी नहीं होता।
- जीवात्मा इन्द्रियों को जीतने पर अपना मित्र और उनसे पराजीत होने पर अपना शत्रु है।

ध्यान योग

शुद्ध भूमि में, जिसके ऊपर **क्रमशः कुशा, मृगछाला और वस्त्र** बिछे हैं, जो न बहुत ऊँचा है और न बहुत नीचा, ऐसे अपने आसन को स्थिर स्थापन करके उस आसन पर बैठकर चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए मन को एकाग्र करके अन्तःकरण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करे।

ध्यानयोग के लिए आहार

- बहुत खाने वाले का, न बिलकुल न खाने वाले का, न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।
- दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

योगी की श्रेष्ठता

- योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्रज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करने वालों से भी योगी श्रेष्ठ है। इससे हे अर्जुन! तू योगी हो।

सप्तम अध्याय (ज्ञानविज्ञान योग)

- प्रकृति में आठ तत्त्व हैं, पंचभूत, मन, बुद्धि और अहंकार।
- माया द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, ऐसे आसुर-स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूढ़ लोग परमात्मा का भजन नहीं करते।
- भक्त के चार प्रकार:-

  1. आर्त 2. जिज्ञासु 3. अर्थार्थी 4. ज्ञानी
- **चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।**
  आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। 7.16।।

भक्त के प्रकार	परिभाषा
आर्त	संकटनिवारण के लिए भजने वाला
जिज्ञासु	ब्रह्म के यथार्थ रूप से जानने की इच्छा से भजने वाला
अर्थार्थी	सांसारिक पदार्थों के लिए भजने वाला
ज्ञानी	ईश्वर में एकीभाव से नित्य स्थित अनन्य प्रेमभक्ति वाला

❖ परमात्मा को सबसे प्रिय-ज्ञानी भक्त

द्वादश अध्याय (भक्तियोग)

❖ सगुण और निर्गुण उपासना का वर्णन किया गया है।

भगवत्प्राप्ति के विभिन्न उपाय

1. **ध्यान से भगवत्प्राप्तिः-** कृष्ण कहते हैं कि मुझमें मन और बुद्धि को लगा, इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा।
2. **अभ्यास से भगवत्प्राप्तिः-** मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए समर्थ नहीं है, तो अभ्यास योग के द्वारा मुझे प्राप्त करने की इच्छा कर।
3. **भगवदर्थ से भगवत्प्राप्तिः-** अभ्यास में भी असमर्थ है तो मेरे लिए कर्म करने के ही परायण हो इससे भी तू मुझे प्राप्त कर लेगा।
4. **सर्वकर्मों के फल-त्याग से भगवत्प्राप्तिः-** यदि मेरी प्राप्तिरूप योग के आश्रित होकर उपर्युक्त साधन को करने में भी तू असमर्थ है तो मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करने वाला होकर सब कर्मों के फल का त्याग कर।

❖ **श्रेष्ठता का क्रम**

मर्म को न जानकर किए **अभ्यास** से-ज्ञान-**ज्ञान** से ध्यान-**ध्यान** से सब **कर्मों के फल का त्याग** उत्तम है।

❖ **श्रेष्ठ भक्त के लक्षण**

सब भूतों में द्वेष भाव से रहित	जो योगी निरन्तर संतुष्ट है
स्वार्थ रहित सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु	मन-इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किए हुए है
ममता से रहित	और मुझमें दृढ़ निश्चय वाला है
अहंकार से रहित	ईश्वर को अर्पण किए हुए मन-बुद्धिवाला
सुख-दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान	जिससे कोई भी जीव उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता

सब भूतों में द्वेष भाव से रहित	जो योगी निरन्तर संतुष्ट है
सब भूतों में द्वेष भाव से रहित,	जो हर्ष, अमर्ष (दूसरे की उन्नति को देखकर संताप होने का नाम 'अमर्ष' है), भय और उद्वेगादि से रहित है
स्वार्थ रहित सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु	पुरुष आकांक्षा से रहित, बाहर-भीतर से शुद्ध चतुर, पक्षपात से रहित और दुःखों से छूटा हुआ है
जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है	जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में सम है तथा सर्दी, गर्मी और सुख-दुःखादि द्वंद्वों में सम है और आसक्ति से रहित है
जो निंदा-स्तुति को समान समझने वाला, मननशील	जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही संतुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है

❖ परन्तु जो श्रद्धायुक्त पुरुष मेरे परायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं, वे भक्त मुझको अतिशय प्रिय हैं।

चौदहवाँ अध्याय (गुणत्रय विभाग योग)

त्रिगुण विवेचन

स्थिति	सत्त्व गुण	रजस् गुण	तमस् गुण
स्वरूप	निर्मल, प्रकाशक, विकार रहित	तृष्णा (कामना), आसक्ति	अज्ञान से उत्पन्न
बन्धन	सुख	कर्म	प्रसाद
लक्षण	चेतना और विवेकशक्ति उत्पन्न	लोभ, प्रवृत्ति (स्वार्थबुद्धि), अशान्ति	अप्रकाश, कर्तव्य कर्मों में अप्रवृत्ति, प्रमाद (व्यर्थ चेष्टा) मोह
मृत्यु को प्राप्त लोक	स्वर्ग लोक	कर्मों के अनुसार मनुष्यलोक	मूढ़योनियों
फल	निर्मल फल	दुःख	अज्ञान
उत्पत्ति	ज्ञान	लोभ	अज्ञान

❖ रजोगुण और तमोगुण को दबाकर, सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाकर रजोगुण वैसे ही सत्त्वगुण और रजोगुण को दबाकर तमोगुण होता है।

षोडश अध्याय (दैवासुरसम्पद्विभागयोग)

❖ **दो प्रकार की सम्पदाः**- 1. दैवी 2. आसुरी

अभय	स्वाध्याय	त्याग (अभिमान)	ह्री (शास्त्र विरुद्ध आचरण में लज्जा)
शान्ति	तप	अन्तःकरण की पूर्ण निर्मलता	अचापलम् (व्यर्थ चेष्टाओं का अभाव)
धृति (धैर्य)	तेज	अपैशुनम् (किसी की निन्दा न करना)	आर्जव (शरीर, इन्द्रियों सहित अन्तःकरण शुद्धि)
सात्त्विक दान	क्षमा	दया	अहिंसा (मनसा, वाचा, कर्मणा)
इन्द्रियों का दमन	सत्य	अलोलुपता (कुछ होने पर उसमें आसक्ति न करना)	तत्त्वज्ञान के लिए ध्यान योग में निरन्तर दृढ़ स्थिति
यज्ञ (भगवान, देव, गुरु पूजा)	अक्रोध	मार्दव(कोमलता)	शौच (अन्तः एवं बाह्य)
अद्रोह (शत्रुभाव न होना)		नातिमानिता (अपने में पूज्यता के अभिमान का अभाव)	

आसुरी सम्पदा के लक्षण

दम्भ	क्रोध
दर्प (घमण्ड)	पारुष्य (कठोरता)
अभिमान	अज्ञान

❖ आसुर स्वभाव वाले मनुष्य **प्रवृत्ति और निवृत्ति**- इन दोनों को ही **नहीं** जानते।

विषय	सत्त्व	रजस्	तमस्
पूजन	देव	यक्ष, राक्षस	भूत-प्रेत
आहार	आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले	कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, बहुत गरम, तीखे, रूखे, दाहकारक और दुःख, चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले	अधपका, रसरहित, दुर्गन्धियुक्त, बासी और उच्छिष्ट है तथा जो अपवित्र हो

विषय	सत्त्व	रजस्	तमस्
यज्ञ	शास्त्र विधि से नियत, यज्ञ करना ही कर्तव्य है- इस प्रकार मन को समाधान करके, फल न चाहने वाले	केवल दम्भाचरण के लिए अथवा फल को भी दृष्टि में रखकर जो यज्ञ	शास्त्रविधि से हीन, अन्नदान से रहित, बिना मन्त्रों के, बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किए जाने वाले
तप	फल को न चाहने वाले योगी पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा से किए हुए उस पूर्वोक्त तीन प्रकार के तप को सात्त्विक कहते हैं।	जो तप सत्कार, मान और पूजा के लिए तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिए भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है, वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है।	मूढ़तापूर्वक हठ से, मन, वाणी और शरीर की पीड़ा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिए किया जाता है
दान	दान देश तथा काल और पात्र के प्राप्त होने पर उपकार न करने वाले के प्रति दिया जाता है।	क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृष्टि में रखकर फिर दिया जाता है।	बिना सत्कार के अथवा तिरस्कारपूर्वक अयोग्य देश-काल में और कुपात्र के प्रति दिया जाए

❖ इसलिए उनमें न तो बाहर-भीतर की शुद्धि है, न श्रेष्ठ आचरण है और न सत्य भाषण ही है।

❖ आसुरी प्रकृति वाले मनुष्य कहा करते हैं कि जगत् आश्रयरहित, सर्वथा असत्य और बिना ईश्वर के, अपने-आप केवल स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न है, अतएव केवल काम ही इसका कारण है। इसके अतिरिक्त और क्या है?।

❖ यह अपने कर्मों के कारण बार-बार आसुरी योनि को ही प्राप्त होते हैं।

❖ नरक के द्वार-3 **काम, क्रोध, लोभ** (इनसे मुक्त होने पर ही मनुष्य अपने कल्याण का आचरण करता है।)

सप्तदश अध्याय (श्रद्धात्रयविभागयोग)

❖ मनुष्यों की श्रद्धा तीन प्रकार (सात्विक, राजसिक और तामसिक) की होती है। जिसका अन्तःकरण जैसा होता है वह उसी प्रकार की श्रद्धा करता है वैसा ही हो जाता है।

❖ जो उद्वेग न करने वाला, प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण है (मन और इन्द्रियों द्वारा जैसा अनुभव किया हो, ठीक वैसा ही कहने का नाम 'यथार्थ भाषण' है।) तथा जो

वेद-शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम-जप का अभ्यास है- वही वाणी-सम्बन्धी तप कहा जाता है।

❖ मन की प्रसन्नता, शान्तभाव, भगवच्चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तःकरण के भावों की भली-भाँति पवित्रता, इस प्रकार यह मन सम्बन्धी तप कहा जाता है -

❖ **ऊँ तत् सत्** 3 प्रकार का ब्रह्म का नाम है।

❖ यज्ञ, दान और तप क्रियाएँ सदा ऊँ उच्चारण से आरम्भ करे।

❖ तत्-से की क्रियाएँ मोक्ष इच्छुक के लिए कही गई है।

❖ सत्- सत्य और श्रेष्ठ भाव में प्रयोग होता है।

❖ बिना श्रद्धा के हवन, दान, तप सभी असत् है, जिनका लोक और परलोक में कोई लाभ नहीं है।

अष्टादश अध्याय (मोक्षसंन्यासयोग)

❖ अर्जुन बोले- हे महाबाहो! हे अन्तर्यामिन्! हे वासुदेव! मैं संन्यास और त्याग के तत्त्व को पृथक्-पृथक् जानना चाहता हूँ।

❖ पण्डितजन तो काम्य कर्मों के (स्त्री, पुत्र और धन आदि प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति के लिए तथा रोग-संकटादि की निवृत्ति के लिए जो यज्ञ, दान, तप और उपासना आदि कर्म किए जाते हैं, उनका नाम काम्यकर्म है।) त्याग को **संन्यास** कहा जाता है।

❖ विचारकुशल पुरुष सब कर्मों के फल के त्याग को (ईश्वर की भक्ति, देवताओं का पूजन, माता-पितादि गुरुजनों की सेवा, यज्ञ, दान और तप तथा वर्णाश्रम के अनुसार आजीविका द्वारा गृहस्थ का निर्वाह एवं शरीर संबंधी खान-पान इत्यादि जितने कर्तव्यकर्म हैं, उन सबमें इस लोक और परलोक की सम्पूर्ण कामनाओं के त्याग का नाम सब कर्मों के फल का त्याग है) **त्याग** कहते हैं।

❖ यज्ञ, दान और तप कर्म यह सब त्याग करने योग्य नहीं है। यह सब कर्म आसक्ति रहित होकर और फलों को त्याग कर करने चाहिए।

विषय	सत्त्व	रजस्	तमस्
त्याग	शास्त्रविहित कर्म करना कर्तव्य है इसी भाव से आसक्ति और फल का त्याग	शारिरिक क्लेश भय से त्याग करना	मोह से किया गया त्याग
ज्ञान	मनुष्य पृथक्-पृथक् सब भूतों में एक अविनाशी परमात्मभाव को विभागरहित समभाव से स्थित देखता है	मनुष्य सम्पूर्ण भूतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाना भावों को अलग-अलग जानता है	शरीर में ही सम्पूर्ण के सदृश आसक्त है तथा जो बिना युक्तिवाला, तात्त्विक अर्थ से रहित और तुच्छ

विषय	सत्त्व	रजस्	तमस्
कर्म	शास्त्रविधि से और कर्तापन के अभिमान से रहित हो तथा बिना फल और राग-द्वेष रहित किया गया हो	कर्म भोगों कि इच्छा से अहंकारयुक्त पुरुष द्वारा किया जाए	परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को विचार रहित, अज्ञान से किया जाए
कर्ता	संगरहित, अहंकार के वचन न बोलने वाला, धैर्य और उत्साह से युक्त तथा कार्य के सिद्ध होने और न होने में हर्ष -शोकादि विकारों से रहित	आसक्ति से युक्त कर्मों के फल को चाहने वाला और लोभी है तथा दूसरों को कष्ट देने के स्वभाववाला, अशुद्धाचारी और हर्ष-शोक से लिप्त है	अयुक्त, शिक्षा से रहित घमंडी, धूर्त और दूसरों की जीविका का नाश करने वाला तथा शोक करने वाला, आलसी और दीर्घसूत्री (दीर्घसूत्री उसको कहा जाता है कि जो थोड़े काल में होने लायक साधारण कार्य को भी फिर कर लेंगे, ऐसी आशा से बहुत काल तक नहीं पूरा करता।
बुद्धि	प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्ति मार्ग को, कर्तव्य और अकर्तव्य को, भय और अभय को तथा बंधन और मोक्ष को यथार्थ जानती है।	धर्म और अधर्म को तथा कर्तव्य और अकर्तव्य को भी यथार्थ नहीं जानता	अधर्म को भी 'यह धर्म है' ऐसा मान लेती है तथा इसी प्रकार अन्य संपूर्ण पदार्थों को भी विपरीत मान लेती है
धृति	मनुष्य ध्यान योग के द्वारा मन, प्राण और इंद्रियों की क्रियाओं को धारण करता है।	जिससे अत्यंत आसक्ति से धर्म, अर्थ और कामों को धारण करता है	जिससे मनुष्य निद्रा, भय, चिंता और दुःख को तथा उन्मत्तता को भी नहीं छोड़ता
सुख	आरंभकाल में यद्यपि विष के तुल्य प्रतीत, परन्तु परिणाम में अमृत के तुल्य है।	विषय और इंद्रियों के संयोग से होता है, वह पहले- भोगकाल में अमृत के तुल्य प्रतीत होने पर भी परिणाम में विष के तुल्य	भोगकाल में तथा परिणाम में भी आत्मा को मोहित करने वाला है, वह निद्रा, आलस्य और प्रमाद से उत्पन्न।

❖ कर्म प्रेरणा-3 ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय

❖ कर्म संग्रह -3 कर्त्ता, करण और क्रिया

❖ **पञ्च हेतुः**- 1. अधिष्ठान 2. कर्ता 3. करण 4. नाना प्रकार की चेष्टाएँ 5. हेतु

❖ गृहस्थ में रहते हुए फल और आसक्ति को त्यागकर भगवदर्पण बुद्धि से केवल लोकशिक्षा के लिए राजा जनक की भाँति बरतने का नाम '**प्रवृत्तिमार्ग**' है।

❖ देहाभिमान को त्यागकर केवल सच्चिदानंदघन परमात्मा में एकीभाव स्थित हुए श्री शुकदेवजी और सनकादिकों की भाँति संसार से उपराम होकर विचरने का नाम 'निवृत्तिमार्ग' है।

चतुर्वर्ण के कर्म

- **ब्राह्मणः**:- अंतःकरण का निग्रह करना, इंद्रियों का दमन करना, धर्मपालन के लिए कष्ट सहना, बाहर-भीतर से शुद्ध रहना, दूसरों के अपराधों को क्षमा करना, मन, इंद्रिय और शरीर को सरल रखना, वेद, शास्त्र, ईश्वर और परलोक आदि में श्रद्धा रखना, वेद-शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना और परमात्मा के तत्त्व का अनुभव करना।
- **क्षत्रियः**:- शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता और युद्ध में न भागना, दान देना और स्वामिभाव।
- **वैश्यः**:- खेती, गोपालन और क्रय-विक्रय रूप सत्य व्यवहार।
- **शूद्रः**:-परिचर्या (सब वर्णों की सेवा करना)।
- समस्त प्राणियों में समभाव वाला योगी मेरी ही पराभक्ति को प्राप्त हो जाता है।

विशेष श्लोक

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। 2.23।।

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको अग्नि नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकती।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।। 2.37।।

या तो तू इस युद्ध में मारके स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा संग्राम में जीतकर पृथ्वी का राज्य भोगेगा। इस कारण हे अर्जुन! तू युद्ध के लिए निश्चय करके खड़ा हो जा।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। 2.47।।

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नही। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। 2.62।।

विषयों वस्तुओं के बारे में सोचते रहने से मनुष्य को उनसे आसक्ति हो जाती है। इससे उनमें कामना यानी इच्छा पैदा होती है और कामनाओं में विघ्न आने से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। 2.63।।

क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से यह पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 4.7।।

हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।। 4.8।।

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और अधर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।। 4.39।।

जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के तत्काल ही भगवत्प्राप्ति परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।। 6.5।।

अपने द्वारा अपना संसार समुद्र से उद्धार करे और अपने को अधोगति में न डाले, क्योंकि यह मनुष्य आप ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है।

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।। 6.34।।

यह मन बहुत चञ्चल, प्रमथन स्वभाववाला, बड़ा दृढ़ और बलवान् है। इसलिए उसका वश में करना मैं वायु को रोकने की भाँति अत्यन्त दुष्कर है।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। 7.16।।

उत्तम कर्म करने वाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझे को भजते है।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। 7.17।।

उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति वाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है, क्योंकि मुझको तत्त्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।। 12.15।।

जिससे किसी को कष्ट नहीं पहुँचता तथा जो अन्य किसी के द्वारा विचलित नहीं होता, जो सुख-दु:ख में, भय तथा चिन्ता में समभाव रहता है, वह मुझे अत्यन्त प्रिय है।

यज्ञदानतप: कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।। 18.5।।

यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्याग करने के योग्य नहीं है, बल्कि वह तो अवश्य कर्तव्य है; क्योंकि यज्ञ, दान और तप ये तीनों ही कर्म बुद्धिमान पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच:।। 18.66।।

सभी धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूँगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

नीतिशतकम्

मंगलाचरणम्

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे।।

दिशाओं और कालों से अपरिमित (मापा न जा सकने वाले), अनन्त तथा चैतन्यस्वरूप वाले, केवल व्यक्तिगत अनुभवों से जाने जा सकने वाले, शान्ति और ज्योति स्वरूप उस परब्रह्म को प्रणाम है।

छन्द:- अनुष्टुप् छन्द

छन्दलक्षणम्:- पंचमं लघु सर्वत्र, सप्तमं द्विचतुर्थयो:।
षष्ठं गुरू विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम्।।

नीतिशतकम्

- भर्तृहरि के तीन प्रसिद्ध शतकों जिन्हें 'शतकत्रय' कहा जाता है।
- नीतिशतक में नीति सम्बन्धी सौ श्लोक हैं।
- नीतिशतक में भर्तृहरि ने अपने अनुभवों के आधार पर तथा लोक व्यवहार पर आश्रित नीति सम्बन्धी श्लोकों की रचना की है।
- एक ओर तो उसने अज्ञता, लोभ, धन, दुर्जनता, अहंकार आदि की निन्दा की है तो दूसरी ओर विद्या, सज्जनता, उदारता, स्वाभिमान, सहनशीलता, सत्य आदि गुणों की प्रशंसा भी की है। नीतिशतक के श्लोक संस्कृत विद्वानों में ही नहीं, अपितु सभी भारतीय भाषाओं में समय-समय पर सूक्ति रूप में उद्धृत किये जाते रहे हैं।

- संस्कृत विद्वान और टीकाकार भूधेन्द्र ने नीतिशतक को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया है, जिन्हें 'पद्धति' कहा गया है-
- मूर्खपद्धति
- विद्वत्पद्धति
- मान-शौर्य-पद्धति
- अर्थपद्धति
- दुर्जनपद्धति
- सुजनपद्धति
- परोपकारपद्धति
- धैर्यपद्धति
- दैवपद्धति
- कर्मपद्धति
  - नीतिशतकम् के रचनाकार-भर्तृहरि
  - नीतिशतक किस श्रेणी का काव्य है -मुक्तक काव्य
  - नीतिशतक का वर्ण्य विषय क्या है -नीतिशास्त्र
  - चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार भर्तृहरि की मृत्यु कब हुई -652 ई.
  - वाक्यपदीयम् के रचनाकार कौन हैं-भर्तृहरि
  - संस्कृत साहित्य में कितने भर्तृहरि का उल्लेख मिलता है -**चार**।
    1. वाक्यपदीयम् के रचयिता भर्तृहरि
    2. मालवसम्राट भर्तृहरि
    3. योगी भर्तृहरि
    4. शतकत्रयकार भर्तृहरि
- भर्तृहरि का समय क्या है -द्वितीय-तृतीय शताब्दी।
- भर्तृहरि के पिता का क्या नाम था -गन्धर्वसेन।
- भर्तृहरि के सौतेले भाई कौन थे -विक्रम।
- भर्तृहरि की पत्नी का क्या नाम था -पिंगला।
- भर्तृहरि की कितनी रचनाएं हैं - **चार**।
  1. नीतिशतक
  2. शृंगार शतक
  3. वैराग्य शतक
  4. वाक्यपदीयम्।
- भर्तृहरि के गुरु कौन थे -गोरखनाथ।

- ❖ मुक्तक काव्य का लक्षण क्या है –मुक्तक वह रचना है जो अर्थ की दृष्टि से दूसरे पद्य पर आश्रित ना हो।
- ❖ मुक्तक काव्य कितने प्रकार के होते हैं –तीन प्रकार—
  1. नीतिप्रधान
  2. शृंगारप्रधान
  3. वैराग्य प्रधान।
- ❖ इत्सिंग के अनुसार भर्तृहरि किस धर्म को मानते थे –बौद्ध धर्म।
- ❖ भर्तृहरि ने नीतिशतक में कितने छन्दों का प्रयोग किया है –चौदह।
- ❖ नीतिशतक के मङ्गलाचरण में किसकी वन्दना की गई है –तेजोमय परब्रह्म।
- ❖ नीतिशतक के मङ्गलाचरण में कौन सा छन्द है–अनुष्टुप्
- ❖ नीतिशतक में मङ्गलाचरण का कौन सा प्रकार प्रयुक्त है –नमस्कारात्मक।
- ❖ 'मूर्त्तये' में कौन सी विभक्ति है–चतुर्थी विभक्ति।
- ❖ नीतिशतक के मङ्गलाचरण का श्लोक क्या है–
  दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्त्तये।
  स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे।।
- ❖ 'दिक्काला:' में कौन सा समास है– इतरेतर द्वन्द्व समास(दिशश्च कालश्च दिक्काला:)
- ❖ 'नम:' के योग में कौन सी विभक्ति होती है –चतुर्थी। (नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलम् वषट् योगाच्च चतुर्थी)।
- ❖ 'चिन्मात्र:' में कौन सा समास है –बहुव्रीही समास (चित् एव मात्रा यस्य)।
- ❖ 'अनन्त' में कौन सा समास है –बहुव्रीही समास (न विद्यते अन्तो यस्य)।
- ❖ मङ्गलाचरण कितने प्रकार का होता है –तीन प्रकार—
  1. नमस्कारात्मक
  2. आशीर्वादात्मक
  3. वस्तुनिर्देशात्मक।
- ❖ कवियों के सुन्दर वचन कहाँ नष्ट हो रहे हैं–शरीर में। (जीर्णमङ्गे सुभाषितम्)।
- ❖ स्मय शब्द का क्या अर्थ है– उत्तर अहंकार।
- ❖ बोद्धार: केन ग्रस्ता:– उत्तर, बोद्धार: मत्सरग्रस्ता:।
- ❖ प्रभव: शब्द का क्या अर्थ है–उत्तर, राजा या स्वामी।
- ❖ अनुष्टुप् छन्द का लक्षण क्या है–
  श्लोके षष्ठं गुरुं ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
  द्विचतुष्पादयोर्हस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो:।।
  अर्थात् अनुष्टुप् के प्रत्येक पाद का पञ्चम वर्ण लघु और छठा गुरु होता है। दूसरे तथा चतुर्थ चरण का सप्तम वर्ण लघु होता है। प्रथम तथा तृतीय चरण का सप्तम वर्ण गुरु होता है।

- ❖ अनुष्टुप् छन्द में कुल कितनी मात्राएँ होती हैं– बत्तीस (32)।
- ❖ मत्सरग्रस्ता: में कौन सा समास है–तृतीया तत्पुरुष। (मत्सरेण ग्रस्ता:)।
- ❖ प्रभव: केन दूषिता:–उत्तर, प्रभव: स्मयदूषिता:।
- ❖ सुखमाराध्य: क:–अज्ञ:।
- ❖ ब्रह्मा किसे प्रसन्न नहीं कर सकता है–(ब्रह्मा कं नरं न रञ्जयति?)
- ❖ कुछ जानकर स्वयं को सर्वज्ञ समझने वाले को। (ज्ञानलवदुर्विदग्धम्।)
- ❖ सुखतरं क: आराध्यते –विशेषज्ञ:।
- ❖ अज्ञ: सुखमाराध्य: सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ:।
  ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि च तं नरं न रञ्जयति।।
  अस्मिन् श्लोके क: छन्द:–आर्या छन्द।
- ❖ आर्या छन्द का लक्षण क्या है–
  यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
  अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सा आर्या।।
  अर्थात् जिस छन्द के पहले और तीसरे चरण में बारह मात्राएँ, दूसरे चरण में अठारह (18) मात्राएँ तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह (15) मात्राएँ होती हैं वहाँ आर्या छन्द होता है।
- ❖ किसे अनुकूल नहीं किया जा सकता है –दुराग्रही व्यक्ति के मन को।
- ❖ कोपितम् में कौन सा प्रत्यय है– इतच् प्रत्यय।
  (तदस्य संजातं तारकादिभ्य: इतच् सूत्र से।)
- ❖ न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्तमाराधयेत् में कौन सा छन्द है–पृथ्वी छन्द।
- ❖ पृथ्वी छन्द का लक्षण क्या है –जसौ जसयला वसुगृहयतिश्च पृथ्वी गुरु:। जहाँ प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण तथा लघु गुरु के क्रम से सत्रह (17) वर्ण होते हैं वहाँ पृथ्वी छन्द होता है।
- ❖ प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात् में कौन सा अलंकार है–अतिशयोक्ति अलंकार।
- ❖ ऊर्मि शब्द का क्या अर्थ है–उत्तर, लहर या तरङ्ग।
- ❖ क्षाराम्बुधि: में कौन सा समास है–उत्तर, कर्मधारय समास (क्षारश्चासौ अम्बुधि: क्षाराम्बुधि:)
- ❖ शार्दूलविक्रीडित छन्द का लक्षण क्या है–सूर्याश्वैर्मसजस्तत: सगुरव: शार्दूलविक्रीडितम्।
  अर्थात् जहाँ प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा गुरु के क्रम से उन्नीस (19) वर्ण होते हैं, उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहा जाता है।
- ❖ अपण्डितों (मूर्खों) का आभूषण क्या है–मौन अर्थात् चुप रहना (विभूषणं मौनमपण्डितानाम्)।
- ❖ स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञताया: में कौन सा छन्द है–उपजाति छन्द।

- सर्वज्ञता का अभिमान कब उतर जाता है–विद्वानों की सभा में जाने पर।
- कदा ज्वर इव मदो मे व्यपगत:–बुधजनसकाशादवगतम्।

हितोपदेश

- हितोपदेश के रचयिता–**नारायण पण्डित**
- पुस्तक के अंतिम पद्यों के आधार पर इसके रचयिता का नाम 'नारायण' ज्ञात होता है। **नारायणेन प्रचरतु रचित: संग्रहोऽयं कथानाम्।**
- नारायण ने **पंचतन्त्र** तथा अन्य नीति के ग्रंथों की मदद से हितोपदेश नामक इस ग्रंथ का सृजन किया। स्वयं नारायण जी ने स्वीकार किया है– **पञ्चतन्त्रान्तथाऽन्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते।**
- हितोपदेश की कथाओं को चार परिच्छेद में विभक्त किया गया है –

परिच्छेद	मुख्यकथा	उपकथा	श्लोक संख्या
1. मित्रलाभ	काक, कूर्म, मृग और चूहे की मित्रता	8	212
2. सुहृद्भेद	शेर व बैल की मित्रता तुड़वाने की कथा	9	184
3. विग्रह	हंस और मोरों के युद्ध की कथा	12	149
4. सन्धि	हंस व मोरों की राजाओं की सन्धि की कथा	1	47
प्रस्तावना	पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन के मूर्ख पुत्रों की कथा		कुल=726

- हितोपदेश में कुल पद्यों की संख्या–726
- हितोपदेश में कुल कथाएँ–43 (जिसमें 25 पञ्चतन्त्र से ली गयी है।)
- इसके आश्रयदाता का नाम धवलचंद्र है। धवलचंद्रजी बंगाल के माण्डलिक राजा थे तथा नारायण पण्डित राजा धवलचंद्रजी के राजकवि थे।
- मंगलाचरण तथा समाप्ति श्लोक में **शिव** स्तुति की गई है।
- उपदेशात्मक कथाएँ
- वाचस्पति गैरोला जी ने इसका रचनाकाल 14वीं शताब्दी के आसपास माना है।
- **प्रमुख सूक्तियाँ**
  - विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
  - एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च।
  - अनभ्यासे विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम्।
  - न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:।

• • •

परिशिष्ट
नवधा भक्ति

प्राचीन शास्त्रों में भक्ति के नौ प्रकार कहे गए हैं जिन्हें सयुक्त रूप से नवधा भक्ति कहते हैं–

श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

- **श्रवण:** ईश्वर की लीला, कथा, महत्व, शक्ति, स्रोत इत्यादि को परम श्रद्धा सहित अतृप्त मन से निरंतर सुनना।
- **कीर्तन:** ईश्वर के गुण, चरित्र, नाम, पराक्रम आदि का आनंद एवं उत्साह के साथ कीर्तन करना।
- **स्मरण:** निरंतर अनन्य भाव से परमेश्वर का स्मरण करना, उनके माहात्म्य और शक्ति का स्मरण कर उस पर मुग्ध होना।
- **पाद सेवन:** ईश्वर के चरणों का आश्रय लेना और उन्हीं को अपना सर्वस्व समझना।
- **अर्चन:** मन, वचन और कर्म द्वारा पवित्र सामग्री से ईश्वर के चरणों का पूजन करना।
- **वंदन:** भगवान की मूर्ति को अथवा भगवान के अंश रूप में व्याप्त भक्तजन, आचार्य, ब्राह्मण, गुरुजन, माता-पिता आदि को परम आदर-सत्कार के साथ पवित्र भाव से नमस्कार करना या उनकी सेवा करना।
- **दास्य:** ईश्वर को स्वामी और अपने को दास समझकर परम श्रद्धा के साथ सेवा करना।
- **सख्य:** ईश्वर को ही अपना परम मित्र समझकर अपना सर्वस्व उसे समर्पण कर देना तथा सच्चे भाव से अपने पाप-पुण्य का निवेदन करना।
- **आत्मनिवेदन :** अपने आपको भगवान के चरणों में सदा के लिए समर्पण कर देना और कुछ भी अपनी स्वतंत्र सत्ता न रखना। यह भक्ति की सबसे उत्तम अवस्था मानी गई है। श्रवण (परीक्षित), कीर्तन (शुकदेव), स्मरण (प्रह्लाद), पादसेवन (लक्ष्मी), अर्चन (पृथुराजा), वंदन (अक्रूर), दास्य (हनुमान), सख्य (अर्जुन) और आत्मनिवेदन (बलि राजा) - नवधा भक्ति के उदाहरण हैं।

ऋग्वैदिकदेवताः

देवताः / सूक्तानि (निवासस्थानम्)	विशेषणम्/उपाधिः
इन्द्रः/250 (अन्तरिक्षस्थानीयः)	शक्रः, पुरन्दरः, शचीपतिः, आखण्डलः धनञ्जयः वज्रहस्तः, वज्रबाहुः, हरिण्यबाहुः, सोमपा, सोमी, वृषा, सप्तरश्मिः हरिकेशः, हरिश्मश्रुः, पुरुहूतः, वज्री, सुशिप्रः, चित्रभानुः, वृत्रहा, मरुत्सखा, मरुत्वान्, अच्युतच्युत्, अपांनेता।
अग्निः/200 (पृथ्वीस्थानीयः)	ऋत्विक्, होता, पुरोहितः, रत्नधातमः, कविक्रतुः, चित्रश्रवस्तमः, हव्यवाहः, धूमकेतुः, गृहपतिः, दमूनस्, अंगिरस्, अपां नपात्, दूतः, कविः, सहस्राक्षः, त्रिमूर्द्धा, सप्तरश्मिः, शोचिषकेश, मंद्रजिह्वः, विशपतिः, ऊर्जानपात्, घृतपृष्ठः, घृतलोमः, घृतप्रतीकः।
सोमः / 150 (पृथ्वीस्थानीयः)	पवमानः, वनस्पतिः, वाचस्पतिः, विश्वचर्षणिः, उत्तमं हविः, रक्षोहा, वृत्रहन्ता, महिष्ठः, औषधिपतिः, इन्द्रपीतः, शुचिः, अमर्त्यः, अमृतः, सहस्रधारः, शुद्धः, शुक्रः, सोमः, मधुमान्, मौञ्जवत्, दिवः शिशुः।
अश्विनौ/50 (द्युस्थानीयः)	अश्विनौ, नासत्या, दस्रा, दिवोनपात्, नराः, मधुयुवा, मघवाना, तुविष्मा, हिरण्यवर्त्मनि, अधिग्रू, सुदानू।
उषस् / 20 (द्युस्थानीयः)	युवतिः, पुराणी, ऋतावरी, रेवती, गोमती, अश्ववती, भास्वती, नेत्री, मघोनी, सूनरी, अर्जुनी, सुभगा, सुजाता, सुप्रतीका, ऋतपा, अमृता, दिवःदुहिता, अन्तिवामा, अह्नी, भद्रा, अरुषा, हिरण्यवर्णा, सुदृशीक्सदृक्, विश्वावारा, गवां माता।
वरुणः/12 (द्युस्थानीयः)	असुरः, मायावी, ऋतगोपा, क्षत्रियः, धृतव्रतः, उरुशंसः, दूतदक्षः, स्वराट्।
बृहस्पतिः/11 (पृथ्वीस्थानीयः)	गणपतिः, ब्रह्मणस्पतिः, सदस्पतिः, सप्तरश्मिः, सप्तमुखः, सप्तजिह्वः, मन्द्रजिह्वः।

रामायण की टीकाएँ	
सर्वार्थसार	वेंकटेश (वेंकटाकृष्णध्वरी)
रामायणदीपिका	वैद्यनाथदीक्षित
विवरण	ईश्वरदीक्षित
रामायण-भूषण	अहोबल

रामायण की टीकाएँ	
वाल्मीकिगृद्य	महेश्वरतीर्थ
रामायण तत्त्वदीपिका	रामवर्मा
रामायणतिलक	नागोजी भट्ट
अमृतकटक	माधवयोगि
रामायण शिरोमणि	वंशीधर एवं शिवसहाय
धर्माकूतम्	त्र्यम्बक मखिन्
तीनश्लोकी	पेरियार वाचाम्बिल्लै
रामायण भूषण	प्रबल मुकुन्दसूरि

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम	
प्रथम	चित्रदर्शन
द्वितीय	पञ्चवटी प्रवेश
तृतीय	छाया
चतुर्थ	कौशल्याजनकयोग
पञ्चम	कुमारविक्रम
षष्ठ	कुमारप्रत्यभिज्ञान
सप्तम्	सम्मेलन

संस्कृत साहित्य के मुख्य लेखकों का कालक्रम

1. भरतमुनि 100 ई.पू. से 300 ई.
2. भास – 100 ई.पू. से 200 ई.
3. कालिदास – ई.पू. प्रथम शताब्दी
4. अश्वघोष प्रथम शताब्दी ई.
5. गुणाढ्य प्रथम शताब्दी ई.
6. विष्णुशर्मा – 2-6 शताब्दी ई.
7. शूद्रक- 3-4 श.
8. विशाखदत्त – 5-6 श.
9. कुमारदास – छठी श.
10. भारवि – छठी (560-615द्ध ई.
11. दण्डी छठी श.

12. भर्तृहरि – छठी श.
13. भट्टि – (500–650) ई.
14. भामह छठी
15. माघ – सातवीं श. (675 ई.)
16. बाणभट्ट – सातवीं श. पूर्वार्द्ध
17. सुबन्धु- सातवीं श. पू.
18. हर्ष –सातवीं श.पू.
19. भवभूति – सा.श.
20. अमरुक – सातवीं श.
21. वाक्पतिराज 750 ई. के आसपास
22. भट्टनारायण (7–8वीं श.)
23. मुरारि – 8वीं उत्तरार्ध
24. वामन 8वीं श.
25. आनन्दवर्धन- 850 ई.
26. रत्नाकर – 9वीं श.
27. राजशेखर 9वीं श.
28. त्रिविक्रमभट्ट – 10वीं पू.
29. क्षेमेन्द्र 11वीं
30. सोमदेव – 11वीं
31. बिल्हण 11वीं
32. कुन्तक 11वीं
33. भोज- 11वीं पू.
34. मम्मट- 11वीं उत्तरार्ध (12वीं श. पूर्वार्ध)
35. कल्हण 12वीं श.
36. मंखक 12वीं श.
37. श्रीहर्ष 12वीं श.उ.
38. जयदेव 12वीं श.
39. विश्वनाथ 14वीं श.
40. बल्लालसेन- 16वीं श.
41. अप्पयदीक्षित- 16वीं श.
42. जगन्नाथ 17वीं श. (1600–1660)

संस्कृत कवियों के माता-पिता	
बाणभट्ट	चित्रभानु-राजदेवी
भवभूति	नीलकण्ठ-जातुकर्णी
माघ	दत्तक-ब्राह्मी
भारवि	श्रीधर(नारायणस्वामी)-सुशीला
अश्वघोष	सुवर्णाक्षी
श्रीहर्ष	श्रीहीर-मामल्लदेवी
राजशेखर	दर्दुक-शीलवती
दण्डी	वीरदत्त-गौरी
जयदेव	भोजदेव-रामादेवी
पण्डित राजजगन्नाथ	पेरुभट्ट-लक्ष्मीदेवी
भट्टोजिदीक्षित	लक्ष्मीधर पाण्डेय

संस्कृत कवियों के उपनाम	
कालिदास	(i) दीपशिखा (ii) कविकुलगुरु (iii) उपमासम्राट (iv) कविताकामिनी (v) रघुकार
बाणभट्ट	(i) पञ्चवाणस्तु बाण: (ii) बाणस्तु पञ्चानन (iii) तुरङ्गबाण (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) (vi) वाणी वाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) कविताकानन (ix) गद्यसम्राट्
विश्वनाथ	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज
माघ	घण्टामाघ
भवभूति	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) उदम्बर (iii) शिखरिणीकवि (iv) परिणतप्रज्ञ (v) वश्यवाक् (vi) श्रीकण्ठपदलाञ्छन: (vii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ
दण्डी	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनववाण (v) भारतरत्न
अश्वघोष	(i) बौद्धभिक्षु (ii) आर्यभदन्त
कात्यायन	वररुचि
कणाद	उलूक
क्षेमेन्द्र	जनकवि
अभिनवगुप्त	लोचनकार
कुन्तक	राजानक
मम्मट	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापन परमाचार्य

• • •

CUET PG हलप्रश्नपत्रम् 2022

1. मेघदूते चेतनाचेतनेषु प्रकृतिकृपणः कः?
   A. कामार्तः B. मेघः C. शोकार्तः D. क्षुधार्तः
2. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य उपजीव्यमस्ति?
   A. हरिवंशपुराणम् B. रामायणम्
   C. ऋग्वेदस्य शकुन्तलोपाख्यान D. महाभारतस्य शकुन्तलोपाख्यान
3. हितोपदेश कस्य कृतिरस्ति?
   A. गुणाढ्यस्य B. कृष्णमिश्रस्य
   C. विष्णुशर्मणः D. नारायणपण्डितस्य
4. तिलेषु तैलम् अत्र आधारोऽस्ति?
   A. औपश्लेषिक B. अभिव्यापक
   C. वैषयिक D. अभिवैषयिक
5. द्वियमुनम् उदाहरणमस्ति?
   A. द्विगोः B. बहुव्रीहि C. अव्ययीभावस्य D. तत्पुरुषस्य
6. अपादानादि विशेषैरविवक्षितं कारकम् अस्ति?
   A. सम्प्रदानसंज्ञम् B. करणसंज्ञम् C. कर्मसंज्ञम् D. कर्तासंज्ञम्
7. अपवर्गे का विभक्ति युज्यते?
   A. तृतीया B. प्रथमा C. चतुर्थी D. द्वितीया
8. हरिहरौ इत्यत्र कः समासः?
   A. इतरेतरद्वन्द्वः B. एकशेषद्वन्द्वः C. समाहारद्वन्द्वः D. तत्पुरुषः
9. श्रीमद्भगवद्गीतायां तृतीय-अध्यायस्य किं नाम?
   A. संन्यासयोगः B. ज्ञानयोग C. कर्मयोग D. भक्तियोग
10. कुमारी इत्यत्र कः स्त्री प्रत्ययो भवति?
    A. ङीष् B. ङीप् C. ङीन् D. क्विप्
11. दाक्षी इत्यत्र कः स्त्री प्रत्ययो भवति?
    A. ङीष् B. ङीप् C. ईण् D. ङीन्

12. कार्यम् इत्यत्र कः प्रत्ययो भवति?
    A. ल्यप् B. क्यप् C. ण्यत् D. यत्
13. कुम्भकारः इत्यत्र कः प्रत्ययो भवति?
    A. क्रुन् B. अण् C. ण्वुल् D. तृच्
14. ग्रामीणः इत्यत्र कस्मिन्नर्थे प्रत्ययो भवति?
    A. अपत्यार्थे B. शैषिके C. रक्ताद्यर्थके D. मत्वर्थीये
15. शैवः इत्यत्र कः प्रत्ययो भवति?
    A. यण् B. खञ् C. अण् D. अञ्
16. वरुणस्य विशेषणम् अस्ति?
    A. गोपाः B. बलदाः C. उरुचक्षाः D. वज्रहस्तः
17. ततोऽहङ्कार इति अहङ्कारस्य उत्पत्ति कुतो भवति
    A. प्रकृतेः B. पञ्चभूतेभ्यः C. महतः D. षोडशगणात्
18. श्वेताश्वेतरोपनिषद् केन वेदेन सम्बद्धितमस्ति?
    A. यजुर्वेदेन B. सामवेदेन C. ऋग्वेदेन D. अथर्ववेदेन
19. शुल्बसूत्राणि केन वेदाङ्गेन सम्बद्धानि?
    A. छन्दसा B. निरुक्तेन C. कल्पेन D. व्याकरणेन
20. ऋग्वेदस्य ब्राह्मणम् अस्ति?
    A. तैत्तिरीयब्राह्मणम् B. आर्षेयब्राह्मणम्
    C. ऐतरेयब्राह्मणम् D. गोपथब्राह्मणम्
21. नीलोत्पलम् इत्यत्र नपुंसकत्वं केन सूत्रेण भवति?
    A. स नपुंसकम् B. परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः
    C. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य D. अव्ययीभावश्च
22. विष्णु+इमौ अत्र शुद्धं रूपं भवति?
    A. विष्णु इमौ B. विष्णविमौ
    C. विष्णाविमौ D. विष्णूं इमौ
23. यावज्जीवेत्सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।
    कस्य दर्शनस्यायं सिद्धान्तः?
    A. जैनदर्शनस्य B. वेदान्तदर्शनस्य
    C. चार्वाकदर्शनस्य D. बौद्धदर्शनस्य
24. महाभारते श्रीमद्भगवद्गीतायाः वर्णनं कस्मिन्पर्वाणि वर्तते?
    A. युद्धपर्वणि B. शान्तिपर्वणि
    C. कर्णपर्वणि D. भीष्मपर्वणि

25. रामायणे रीति-रसयोः कः समूहः समुचिति वर्तते?
 A. वैदर्भी-शान्तः B. वैदर्भी-करुणः
 C. पाञ्चाली-करुणः D. गौडी-करुणः

26. रामायणे कतिविधा भक्तिः वर्णिता वर्तते?
 A. नवधा B. सप्तधा C. दशधा D. अष्टधा

27. 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष' इति वचनं का उक्तवती?
 A. वसन्तसेना B. विद्योतमा C. सागरिका D. द्रौपदी

28. 'विश्वकोशः' इति नाम्ना किं पुराणं प्रसिद्धम्?
 A. अग्निपुराणम् B. गरुडपुराणम्
 C. भागवतपुराणम् D. ब्रह्माण्डपुराणम्

29. 'मा निषाद् ! प्रतिष्ठां........' इति वचनं वाल्मीके स्वरकण्ठात् कस्याः नद्याः तटे निर्गमत्?
 A. तमसायाः B. यमुनायाः C. नर्मदायाः D. गङ्गायाः

30. "विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा" इति पङ्क्तिः कुत्र लिखिता वर्तते?
 A. किरातार्जुनीये B. नैषधीयचरिते
 C. रघुवंशे D. शिशुपालवधे

31. आर्याछन्दसः कस्मिन् पादे अष्टादश (18) मात्रा भवन्ति?
 A. प्रथमे B. द्वितीये C. चतुर्थे D. तृतीये

32. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।
इत्यत्र कोऽलङ्कारः
 A. उपमा B. उत्प्रेक्षा C. रूपकम् D. मालोपमा

33. 'सुवृत्ततिलकम्' इति छन्दपरको ग्रन्थः केन लिखितः?
 A. भर्तृमेण्ठेन B. मातृगुप्तेन C. श्रीहर्षेण D. क्षेमेन्द्रेण

34. बुद्धचरिते गौतमबुद्धः कीदृशो नायकः वर्तते?
 A. धीरललितः B. धीरोद्धतः C. धीरोदात्तः D. धीरप्रशान्तः

35. मम्मटादिभिः उत्तरवर्तिभिः आचार्यैः नवमः रसः स्वीकृतः?
 A. अद्भुतः B. शान्तः C. हास्यः D. वीभत्सः

36. 'काव्यस्य आत्मा ध्वनिः' इति कस्य उक्ति?
 A. भामहस्य B. मम्मटस्य C. विश्वनाथस्य D. आनन्दवर्धनस्य

37. द्रविडधार्मिकस्य वर्णनं कुत्र सम्प्राप्यते?
 A. रघुवंशे B. हर्षचरिते C. कादम्बर्याम् D. विक्रमोर्वशीये

38. पुष्पोद्भवविशिष्टम् गद्यसाहित्यमस्ति?
 A. हर्षचरितम् B. कादम्बरी
 C. दशकुमारचरित D. उत्तररामचरित

39. किरातार्जुनीये महाकाव्ये युधिष्ठिरस्य गुप्तचरः कः?
 A. अर्जुनः B. भीमः C. वनेचरः D. सहदेवः

40. अधमकाव्यस्य नामान्तरम् अस्ति?
 A. ध्वनिकाव्यम् B. उत्तमकाव्यम्
 C. गुणीभूतव्यंग्यकाव्यम् D. चित्रकाव्यम्

41. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—
अभिकथनम् A : शकुन्तला विश्वामित्रस्य पुत्री अस्ति।
कारण R : कण्वः स्वाश्रमे तां पुत्रीव पालयति।
उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिक उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—
 A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।
 B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।
 C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।
 D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

42. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—
अभिकथन A : श्रीहर्षकृता रत्नावली नाटिका चतुभिरकैः निबद्धा विद्यते
कारण R : नायिका मुग्धा नवीनानुरागवती रत्नावली अस्ति।
उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—
 A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।
 B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।
 C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।
 D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

43. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—
अभिकथन A : गोपी' इत्यत्र स्त्रियाम् ङीष् प्रत्ययः।

कारण R : वयसि प्रथमे सूत्रेण डीष् प्रत्ययो भवति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

44. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथन A : पुराणेषु अवतारवादस्य सिद्धिर्भवति।

कारण R : भागवत पुराणे गजेन्द्रस्य उद्धाराय विष्णोः प्रादुर्भावः वर्णितः।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

45. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथन A : रामायणे प्रसंगवशात् आख्यानकानि उपलभ्यन्ते।

कारण R : तत्र "शुनः शेपाख्यानम्" यत्र शुनःशेप, इन्द्रदेव पूजयित्वा स्वस्य प्राण रक्षां कृतवान्—

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

46. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथन A : आचार्य भरतः, भारतीय-नाट्यशास्त्रस्य रचनाकारः अस्ति।

कारण R : नाट्यवेदस्य अन्तर्गताः धर्म-अर्थ-काम-शान्ति हास्यादयः विषयाः समाविष्टा भवन्ति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

47. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथन A : "परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः" समासोक्ति अलंकार इत्युच्यते।

कारण R : "लब्धा तव बाहुस्पर्श यस्याः स कोऽप्युल्लासः" इति उत्प्रेक्षा अलंकारस्य उदाहरणं अस्ति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

48. एध धातोः लट्, लिट्, लुट्, लृट, लोट् लकाराणां मध्यमैकवचनां रूपाणां क्रमं उचितं चिनुत—

A. एधसे B. एधाञ्चकृषे C. एधितासे D. एधिष्यसे

अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत-

1. B, A, C, D
2. A , B, C, D
3. C, D, A, B
4. C, B, A, D

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

49. लकाराणाम् समीचीनं क्रमं चिनुत्।

A. लट् B. लुट् C. लोट् D. लिट् E. लृट्

अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत-

1. A , D, B, E, C
2. B, C, E, D, A
3. D, A , C, B, E
4. E, A , B, C, D

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

50. रसभेदान क्रमेण योजयत

A. हास्य: B. करुण: C. रौद्र: D. वीर: E. भयानक:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत–

1. B, A, C, D, E
2. A, B, C, D, E
3. C, D, E, A, B
4. C, B, A, D, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

51. महाभारतस्य आदि षण्णाम् पर्वणाम् समीचीनं क्रमं चिनुत—

A. विराटपर्व: B. भीष्मपर्व: C. वनपर्व: D. उद्योगपर्व: E. आदिपर्व:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत–

1. A, B, C, D, E
2. E, A, C, D, B
3. C, B, A, D, E
4. E, C, A, D, B

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : साहित्यदर्पणानुसारं लक्षणाया: अशीती प्रभेदा: सन्ति।

कथन II : 'साहित्यदर्पण:' विश्वनाथस्य रचना अस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : वक्रोक्ति ग्रन्थ: अष्टादशाधिकरणेषु विभक्त:।

कथन II : सम्प्रति प्रथमाधिकरणमेव उपलभ्यते।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं

3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

54. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : जनक-याज्ञवल्क्यो: संवाद: बृहदारण्यकोपनिषदि उल्लेखौ विद्यते।

कथन II : अणोरणीयान् महतो महीयान् अस्मिन्नेव उपनिषदि वर्तते।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

55. वेदाङ्गानि उचित क्रमेण योजयत–

A. कल्प: B. शिक्षा C. व्याकरणम् D. निरुक्तम् E. छन्द:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत–

1. A, B, C, D, E
2. B, A, C, E, D
3. E, D, A, B, C
4. C, B, D, A, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : षडङ्गेषु व्याकरणं मुखं भवति।

कथन II : अस्मिन् वर्णोच्चारण-विधि: वर्णित:।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : भविता' इति लुट्-लकारस्य रूपम् अस्ति।

कथन II : अनद्यतने भूते लुट् लकारो भवति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : पुराणोक्तसृष्टिप्रक्रिया सांख्यदर्शनस्य आधारभूता।

कथन II : पुराणेषु नवविधसृष्टेः वर्णन प्रायः प्राप्यते।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

(1) कथन I और II दोनों सही हैं
(2) कथन I और II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : सांख्य दर्शने पुरुष प्रकृति नामकं तत्वद्वयमेव नित्य तत्वरूपेण स्वीक्रियते

कथन II : प्रकृतिः कारण मात्रमेव, किन्तु पुरुषः न कारणं न च कार्यम्

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

(1) कथन I और II दोनों सही हैं
(2) कथन I और II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

60. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. पाणिनीयशिक्षा सामवेदीय शिक्षाग्रन्थः
B. याज्ञवल्क्यशिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षाग्रन्थः
C. माण्डूकीशिक्षा अथर्ववेदीय शिक्षाग्रन्थः
D. नारदशिक्षा ऋग्वेदीय शिक्षाग्रन्थः
E. व्यासशिक्षा यजुर्वेदीय शिक्षाग्रन्थः

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल B एवं E, D
2. केवल A एवं C, B
3. केवल C एवं B
4. केवल C एवं E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

61. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. एधे लटः उत्तमैकवचने
B. एधेय – लुङः उत्तमैकवचने
C. एधै लोटः उत्तमैकवचने
D. ऐधे लिटः उत्तमैकवचने
E. ऐधिषि – विधिलिङ्गः उत्तमैकवचने

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल A एवं B, C
2. केवल B एवं E, D
3. केवल A एवं C
4. केवल C एवं D

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

62. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. तथा-युक्तं चानीप्सितम् -पञ्चमी
B. इत्थंभूतलक्षणे- तृतीया
C. हितयोगे च -षष्ठी
D. जनिकर्तुः प्रकृतिः- पञ्चमी
E. षष्ठी कृञः प्रतियत्ने- षष्ठी

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल D, B, C
2. केवल E, D, B
3. केवल E, D, C, B
4. केवल A, B, C

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

63. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. ईशावास्योपनिषदि – ज्ञानकर्मोपासनायाः
B. बृहदारण्यकोपनिषदि – उमा हैमवती आख्यानम्
C. कठोपनिषदि – अग्निविधायाः वर्णनम्
D. केनोपनिषदि – आरुणि आख्यानम्
E. तैत्तिरीयोपनिषदि – सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
F. अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत

1. केवल A, C एवं E
2. केवल A एवं B
3. केवल B एवं E, D
4. केवल E, D एवं C

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

64. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. मेनका विश्वामित्रस्य पुत्री
B. द्वारपालका वेत्रवती
C. गौतमी – कण्वाश्रमस्य अध्यक्षा
D. प्रियम्वदा – द्वारपालिकायाः सखी
E. सत्यवती – शकुन्तलायाः सखी

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल A एवं B
2. केवल B एवं C
3. केवल D एवं E
4. केवल C एवं E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

65. अधोलिखितेषु सम्बन्धदृष्ट्या समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. रामोपाख्यानम् –उद्योगपर्व:
B. मत्स्योपाख्यानम्– भीष्मपर्व:
C. शिशुपालोपाख्यानम्– सभापर्व:
D. ययात्युपाख्यानम्– शान्तिपर्व:
E. कृष्णोपाख्यानम् आदिपर्व:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत –

1. केवल E एवं D, C
2. केवल A एवं D
3. केवल A एवं C
4. केवल A एवं B

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

66. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. मीमांसा दर्शनम् – कपिल मुनि:
B. सांख्यदर्शनम् – जैमिनि:
C. वैशेषिक दर्शनम् – कणादमुनि:
D. न्यायदर्शनम् – गौतममुनि:
E. जैनदर्शनम् – पतञ्जलिमुनि:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल A एवं D
2. केवल D एवं B
3. केवल C एवं D
4. केवल B एवं E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

67. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. भद्रसेन	I. स्तुतिपाठक:
B. गौतम:	II. प्रजापति:
C. मारीच:	III. सेनापति:
D. वैतालिक:	IV. कण्वस्य शिष्य:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. A-III, B-IV, C-II, D-I
2. A-II, B-III, C-IV, D-I
3. A-III, B-I, C-IV, D-II
4. A-III, B-IV, C-I, D-II

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

68. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. सन्निकर्ष:	I. त्रिविध:
B. हेत्वाभास:	II. षड्विध:
C. असिद्ध:	III. चतुर्विध:
D. अभाव:	IV. पञ्च:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A-I, B-II, C-III, DIV
2. A-II, B-IV, C-III, D-I
3. A-II, B-IV, C-I, D-III
4. A-III, B-IV, C-II, D-I

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

69. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. शतपथ ब्राह्मणम्	I. उद्गातृभिरनुष्ठीयमानानां समस्तकार्याणाम्।
B. तैत्तिरीय ब्राह्मणम्	II. सम्पूर्णानां यज्ञयागादीनां समग्र वर्णनम्
C. ताण्ड्य ब्राह्मणम्	III. गायत्री महिमा, ब्रह्मचारिणां नियमा:
D. गोपथ ब्राह्मणम्	IV. राजसूयादीनां यज्ञानां विस्तृतं वर्णनम्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A-IV, B-II, C-III, D-1
2. IV, B-II, C-1, D-III
3. A -II, B-IV, C-1, D-III
4. A -II, B-IV, C-III, D-I

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

70. सूची के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. नर्तकी	I. टाप्
B. शार्ङ्गरवी	II. ङीष्
C. कुमारी	III. ङीन्
D. एता	IV. ङीप्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -III, B-II, C-IV, D-I
2. A -II, B-III, C-IV, D-I
3. A -IV, B-III, C-II, D-I
4. A -II, B-IV, C-III, D-I

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

71. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. देयम्	I. तव्यत्
B. शिष्य:	II. ण्यत्
C. कार्यम्	III. यत्
D. एधितव्यम्	IV. क्यप्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. A -II, B-III, C-IV- D-I
2. A -I, B-II, C-III, D-IV
3. A -III, B-IV, C-II, D-I
4. A -IV, B-III, C-II, D-I

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

72. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. सर्व: स्वार्थं समीहते	I. किरातार्जुनीयम्
B. हितं मनोहारि च दुर्लभं वच:	II. कुमारसम्भवम्
C. कार्यनिदानि गुणानधीते	III. नैषधीयचरितम्
D. कठिना: खलु स्त्रिय:	IV. शिशुपालवधम्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -IV, B-I, C-III, D-II
2. A -III, B-I, C-II, DIV
3. A -IV, B-II, C-I, D-III
4. A -III, B-IV, C-II, DI

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

73. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. विविधेषु पदार्थेषुलोक सीमातिवर्तिषु	I. भयम्
B. रौद्रशक्त्यात जनितं चित्त वैक्लव्यदम्	II. क्रोध:
C. वागादि वैकृतैश्चेतोविकास:	III. विस्मय:
D. प्रतिकूलेषु तैक्ष्ण्यावबोध:	IV. हास:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

1. A -III, B-I, C-IV, D-II
2. A -L, B-III, C-IV, D-II
3. A -III, B-I, C-II, D-IV
4. A -IV, B-III, C-I, D-II

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

74. अङ्कान् क्रमेण योजयत—

A. चिदर्शनम् B. छाया
C. पञ्चवटी प्रवेश: D. कौशल्याजनकयोग: E. गर्भांक:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A , C, B, D, E
2. B, C, D, A , E
3. A , B, C, D, E
4. E, A , B, C, D

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

75. कालानुसारं कवीनामुचितं क्रमं चिनुत—

A. भास: B. कालिदास: C. भारवि: D. भवभूति E. माघ:

अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत –

1. A , D, C, B, E
2. E, C, D, B, A
3. A , B, C, D, E
4. A , C, D, B, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

उत्तरमाला

1. A	2. D	3. D	4. B	5. C
6. C	7. A	8. A	9. C	10. B
11. A	12. C	13. B	14. B	15. C
16. C	17. C	18. A	19. C	20. C
21. B	22. Drop*	23. C	24. D	25. B
26. A	27. B	28. A	29. A	30. D
31. B	32. A	33. D	34. D	35. B
36. D	37. C	38. C	39. C	40. D
41. A	42. B	43. C	44. A	45. C
46. A	47. C	48. B	49. A	50. C
51. D	52. A	53. B	54. C	55. B
56. C	57. C	58. A	59. A	60. D
61. C	62. B	63. A	64. B	65. C
66. C	67. A	68. C	69. C	70. B
71. C	72. A	73. A	74. A	75. C

* आयोग द्वारा डिलीट कर दिया गया।

CUET PG आदर्शप्रश्नपत्रम्

1. 'आत्मन्यप्रत्ययम्' इत्यत्रविच्छेदः कथं भवति?
   A. आत्मन्य + अप्रत्ययम् B. आत्मनि + अप्रत्ययम्
   C. आत्मनिप्रत्ययम् D. आत्म + अन्यप्रत्ययम्
2. तर्कसंग्रहः इति ग्रन्थाभिधानेतर्कशब्दस्यार्थः भवति–
   A. अनुमानम् B. अयथार्थानुभवविशेषः
   C. वादः D. द्रव्यादिसप्तपदार्थाः
3. 'एतद्+मुरारिः' इत्यत्र संधिकार्यानन्तरं निष्पन्नं रूपं भविष्यति?
   A. एतत्मुरारिः B. एतन्मुरारिः C. एतङ् मुरारिः D. एतच्मुरारिः
4. कविराजराजिमुकुटालङ्काररहीरः मामल्लदेवी च कस्य पितरौ?
   A. भासस्य B. श्रीहर्षस्य C. दण्डिनः D. भारवेः
5. संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं किम्?
   A. स्मृतिः B. अनुभवः C. प्रज्ञा D. प्रतिभा
6. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम किम्?
   A. चारुदत्तः B. मैत्रेयः C. सजलकः D. माढव्य
7. अश्वघोषेण किं नाम प्रकरणं रचितम्?
   A. सौन्दर्यनन्दम् B. शारिपुत्रप्रक्ररणम्
   C. मृच्छकटिकम् D. जाम्बवतीपरिणयः
8. "गच्छतिपुरश्शरीरंधावतिपश्चादसंस्थितंचेतः चीनांशुकमिवकेतोःप्रतिवातंनीयमानस्य" इत्यत्रकोऽलङ्कारः?
   A. तुल्ययोगिता B. सन्देहः C. उपमा D. उत्प्रेक्षा
9. विष्णु+ए=विष्णवे इत्यत्र संधिविधायकं सूत्रमस्ति—
   A. एचोऽयवायावः B. इको यणचि
   C. आद्गुणः D. वान्तो यि प्रत्यये
10. काण्वशाखा केन वेदेन सम्बद्धा?
   A. शुक्लयजुर्वेदेन B. कृष्णयजुर्वेदेन
   C. सामवेद D. ऋग्वेद

11. वृद्धिसंज्ञाविधायक सूत्रं किम्?
   A. वृद्धिरादैच् B. वृद्धिरेचि
   C. मृजेर्वृद्धिः D. वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम्
12. बुद्धिमान् इत्यत्र कः प्रत्ययः अस्ति?
   A. मतुप् B. वतुप् C. क्तवतु D. तुमुन्
13. 'व्रजम् अवरुणद्धि गाम्' इत्यत्र व्रजम् पदे कस्य कारकस्य अविवक्षायां द्वितीया विभक्तिः विहिता—
   A. अपादानस्य B. करणस्य C. अधिकरणस्य D. कर्तुः
14. तर्कसंग्रहदिशा शब्दप्रमाणं नाम किम्?
   A. पदम् B. गुरुवाक्यम्
   C. यथार्थवक्तुः वाक्यम् D. वर्णः
15. 'शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्ति-हिरण्यमश्वान्' इति कथनमस्ति—
   A. वाजश्रवसः B. नचिकेतसः C. यमराजस्य D. याज्ञवल्क्यस्य
16. वृत्रहा कस्य विशेषणम् अस्ति?
   A. इन्द्रः B. अग्निः C. वरुणः D. उषस्
17. 'हरिं भजति इत्यत्र कर्मणि द्वितीया' इति सूत्रेण द्वितीया विभक्तिः भवति–
   A. हेतौ B. उक्तेकर्मणि
   C. अभिहितेकर्मणि D. अनभिहिते कर्मणि
18. तर्क संग्रहेकतिकर्माणि उक्तानि?
   A. चत्वारि B. पञ्च C. षड् D. सप्त
19. पदसंज्ञाविधायकंसूत्रंकिम्?
   A. सुप्तिङन्तं पदम् B. पदान्ते
   C. पदस्य D. पदात्
20. 'आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' इत्यंशः कुत्रप्राप्यते–
   A. अभिज्ञानशाकुन्तले B. रघुवंशे
   C. किरातार्जुनीये D. शिशुपालवधे
21. शिक्षावेदाङ्गं वेदपुरुषस्य किम् अंगम्?
   A. मुखम् B. घ्राणम् C. चक्षुः D. पादौ
22. 'गार्गी' इत्यस्यक कः अर्थः?
   A. गर्गस्य स्त्री B. गर्गस्य माता स्त्री
   C. गार्ग्यस्य अपत्यं स्त्री D. गर्गस्य अपत्यं स्त्री

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : काव्यप्रकाशानुसारं लक्षणायाः षड्भेदाः सन्ति।

कथन II : 'गौर्वाहीकः' सारोपागौणी लक्षणा अस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

24. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : काव्यप्रकाशानुसारम् आर्थीव्यञ्जनायाः दशभेदाः सन्ति।

कथन II : 'भद्रात्मनो दुरधिरोहतनोर्विशालवंशोन्नतेः' आर्थीव्यञ्जनायाः भेदः अस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : वाराहशुल्बसूत्रः शुक्लयजुर्वेदस्य अस्ति।

कथन II : 'शुल्बसूत्रः' आरण्यकस्य विषयोऽस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

26. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति

अभिकथनम् A : वीभत्सरस्य स्थायीभावः जुगुप्सा भवति।

कारण R : कालाधिदैवत भयानकरसस्य देवता अस्ति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिक उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

27. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति।

अभिकथनम् A : हंसपदिका विश्वामित्रस्य पुत्री अस्ति।

कारण R : दुष्यन्तस्वगृहे तां अनुचरीव पालयति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिक उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—

A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।

B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।

C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।

D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

28. 'गो+अग्रम' इत्यत्र न सम्भवति—

A. प्रकृतिभावः B. पूर्वरूपम्
C. अवङ्गादेशः D. संहिताया अभावः

29. 'प्रतिसर्गः' लक्षणमस्ति–

A. धर्ममार्गस्य B. पुराणस्य
C. काव्यस्य D. नीतिकाव्यस्य

30. कस्मिन् पुराणे 'काशीखण्डः' समुपलभ्यते?

A. लिङ्गपुराणे B. ब्रह्माण्डपुराणे
C. शिवपुराणे D. स्कन्दपुराणे

31. रामायणे कति श्लोकाः?

A. लक्षश्लोकाः B. चतुर्विंशतिसहस्रश्लोकाः
C. षड्विंशतिसहस्रश्लोकाः D. चत्वारिंशत्सहस्रश्लोकाः

32. युद्धकाण्डे सर्गाणां संख्या –

A. 128 B. 127 C. 75 D. 67

33. पञ्चमो वेदः कः?
A. आयुर्वेद B. महाभारत E. सर्पवेद F. धनुर्वेद

34. महाभारतस्य कः क्रमः–
A. जयः, भारतम्, महाभारतम्
B. भारतम्, जयः, महाभारतम्
C. महाभारतम्, जयः, भारतम्
D. जयः, विजयः, महाभारतम्

35. श्रीमद्भगवद्गीतायाः विश्वरूपदर्शनयोगः अस्ति?
A. दशमेऽध्याये
B. एकादशेऽध्याये
C. प्रथमाध्याये
D. त्रयोदशाध्याये

36. 'तलवकार-आरण्यकम्' केन वेदेन सह सम्बद्धमस्ति?
A. ऋग्वेदेन B. यजुर्वेदेन C. सामवेदेन D. अथर्ववेदेन

37. कस्य काव्यं विद्वदौषधं कथ्यते?
A. माघस्य B. श्रीहर्षस्य C. कालिदासस्य D. अश्वघोषस्य

38. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति?
A. रामायणस्य B. महाभारतस्य C. रघुवंशस्य D. शिशुपालवधस्य

39. कठोपनिषदि नचिकेतसः पिता के यागमनुष्ठितवान्?
A. अश्वमेधयागम् B. सर्वमेधयागम् C. सर्वजिद्यागम् D. पितृमेधयागम्

40. विलुप्ता मौद शाखा कस्य वेदस्य वर्तते?
A. सामवेदस्य B. ऋग्वेदस्य C. यजुर्वेदस्य D. अथर्ववेदस्य

41. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथनम् A : न्यादर्शनरीत्या आत्मवत्य सामान्यवान् आत्मा इति।

कारण R : बुद्धि-सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष-प्रयत्नगुणलिङ्गकत्वात्।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिक उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—
A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।
B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।
C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।
D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

42. निम्नलिखित प्रश्ने कथनद्वयं लिखितमस्ति तत्र प्रथमम् अभिकथनम् अस्ति। द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति—

अभिकथन A : वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः। श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।। श्लेषालङ्कारस्य लक्षणमस्ति।

कारण R : सर्वस्वं हर सर्वस्यं त्वं भवच्छेदतत्परः। विभक्ति श्लेषस्य उदाहरणमस्ति।

उपर्युक्त कथनयोः दृष्ट्या अधोलिखितविकल्पेषु सर्वाधिकं उपयुक्तम् उत्तरं चिनोतु—
A. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्यां करोति।
B. अभिकथनं कारणं च द्वे एव समीचीने कारणम् अभिकथनस्य सम्यग् व्याख्या न करोति।
C. अभिकथनं समीचीनम्, किन्तु कारणं समीचीनं नास्ति।
D. अभिकथनं समीचीनं नास्ति, किन्तु कारणं समीचीनम् अस्ति।

43. 'पुरा परम्परां बष्टि पुराणं तेन तत् स्मृतम्' इति उक्तमस्ति—
A. मत्स्यपुराणे B. वामनपुराणे C. पद्मपुराणे D. अग्निपुराणे

44. 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः' कस्य?
A. प्रकृतेः B. गुणत्रयस्य C. जलस्य D. तेजसः

45. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—
A. घटः पटः न- अन्योन्याभाव
B. भूतले घटः न- प्रध्वंसाभाव
C. इह घटो भविष्यति- प्रागभाव
D. घटो ध्वस्तः-अत्यन्ताभावः
1. केवल D, B
2. केवल E, D
3. केवल A, C
4. केवल A, B, C
A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

46. 'रूपवती भार्या यस्य' इत्यस्य समस्तपदं भवति—
A. रूपवतीभार्यः
B. रूपवतीभार्याम्
C. रूपवद्भार्यः
D. रूपवद्भार्या

47. 'गवाम् अक्षि इव' इत्यत्र समस्तपदमस्ति—
A. गवाक्षी B. गवाक्षा C. गवाक्षम् D. गवाक्षः

48. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—
A. कर्तृकर्मणोःकृति-युक्तयोगः
B. निष्ठा-जगतः कर्ता कृष्णः
C. विभाषोपसर्गे-शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति
4. अनेकमन्यपदार्थे-वीरपुरुषको ग्रामः
1. केवल A, D
2. केवल C, D
3. केवल B, C
4. केवल A
A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

49. 'एकस्मिन् धर्मिणि नानाधर्मावगाहि ज्ञानम्' इति लक्षण भवति–

A. अज्ञानस्य
B. समूहालम्बनज्ञानस्य
C. संशयस्य
D. शाब्दज्ञानस्य

50. क्रमेण योजयत—

A. सम्यक् वाक्
B. सम्यक् स्मृति
C. सम्यक् दृष्टि
D. सम्यक् समाधि
E. सम्यक् आजीव

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत–

1. B, A, C, D, E
2. A, B, C, D, E
3. C, A, E, B, D
4. C, B, A, D, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

51. रामायणस्य षण्णाम् काण्डानां समीचीनं क्रमं चिनुत—

A. अयोध्याकाण्ड:
B. युद्धकाण्ड:
C. सुन्दरकाण्ड:
D. बालकाण्ड:
E. अरण्यकाण्ड:

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत–

1. A, B, C, D, E
2. D, A, E, C, B
3. D, A, B, C, E
4. E, C, A, D, B

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : "सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते" इति शार्ङ्गरवस्य उक्ति: अस्ति।

कथन II : शार्ङ्गरव: मारीचस्य प्रियतम: शिष्य: अस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I : काव्यप्रकाशे दश उल्लासा: सन्ति।

कथन II : नवम उल्लासे शब्दालङ्कारा: सन्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

54. अधि रामे भू: इत्यत्र 'अधि' शब्दस्य कर्मप्रवचनीयसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं किमस्ति?

A. अधिरीश्वरे
B. उपोऽधिके च
C. अधि-परी अनर्थकौ
D. हीने

55. सत्कार्यवादस्य सिद्धि: कस्माद् हेतो: न भवति?

A. असद्करणात्
B. सर्वस्मात् सर्वसम्भवात्
C. शक्तस्य शक्यकरणात्
D. कारणभावात्

56. वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरे कस्य गणना न भवति?

A. बुद्धे:
B. मनस:
C. प्राणस्य
D. आकाशस्य

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

कथन I "जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्त्वात्" केवलव्यतिरेकी हेतो: उदाहरणम् अस्ति।

कथन II : मृत्पिण्ड: घटस्य असमवायिकारणम् अस्ति।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपर्युक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. कथन I और II दोनों सही हैं
2. कथन I और II दोनों गलत हैं
3. कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
4. कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही हैं

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

58. 'अधिगोपम्' इत्यत्राव्ययीभावसमास: कस्मिन्नर्थे भवति?

A. समीपर्थे B. अत्ययार्थे C. विभक्त्यर्थे D. साकाल्यर्थे

59. विश्वनाथानमतानुसारण् वीररस: कतिविध:

A. द्विविध: B. त्रिविध: C. पञ्चविध: D. चतुर्विध:

60. दशकुमारचरितस्य नायक: क:?

A. राजहंस: B. उपहारवर्मा C. राजवाहन: D. अपहारवर्मा

61. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. रघुवंशम्- 19 सर्ग
B. बुद्धचरितम्- 11 सर्ग
C. कुमारसम्भवम्- 7 सर्ग
D. सौन्दरनन्दः- 18 सर्ग
E. नैषधीयचरितम्- 21 सर्ग

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल A एवं B, C, E
2. केवल B एवं D, E
3. केवल A एवं D
4. केवल C एवं D

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

62. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. काव्यालङ्कार-भामह
B. काव्यादर्श-कुन्तक
C. व्यक्तिविवेक-महिमभट्ट
D. अभिधावृत्तमात्रिका-मुरारि मिश्र
E. सरस्वतीकण्ठाभरण-भोजराज

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल D, B, C
2. केवल E, D, B
3. केवल E, D, C
4. केवल A , C, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

63. अधोऽङ्कितानां केन सह कस्य सम्बन्धः?

सूची I	सूची II
A. प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्	I. जैना:
B. सप्तभङ्गिनयः	II. साङ्ख्यदर्शनम्
C. हेत्वाभासा:	III. चार्वाका:
D. सत्यकार्यवादः	IV. नैयायिका:

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -III, B-IV, C-II, D-I
2. A -II, B-III, C-IV, D-I
3. A -III, B-I, C-IV, D-II
4. A -III, B-IV, C-I, D-II

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

64. रामायणस्य बालकाण्डस्य सर्गानुसारम् उपाख्यानानां समुचितः क्रमोऽस्ति—

A. शुनः शेपाख्यानम्, ऋषिशृङ्गाख्यानम्, क्रौञ्चवधाख्याम्म्, अहिल्योद्धाराख्यानम्
B. अहिल्योद्धाराख्यानम्, शुनः शेपाख्यानम्, ऋषिशृङ्गाख्यानम्, क्रौञ्चवधाख्याम्म्
C. क्रौञ्चवधाख्याम्म्, ऋषिशृङ्गाख्यानम्, अहिल्योद्धाराख्यानम्, शुनः शेपाख्यानम्
D. अहिल्योद्धाराख्यानम्, क्रौञ्चवधाख्याम्म्, ऋषिशृङ्गाख्यानम्, शुनः शेपाख्यानम्

65. अधोलिखितेषु सम्बन्धदृष्ट्या समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. भारवि-रावणवधम्
B. शूद्रक-मृच्छकटिकम्
C. कुमारदास-सौन्दरनन्द
D. भट्टतौत-काव्यकौतुक

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत-

1. केवल B एवं D
2. केवल A एवं D
3. केवल B एवं C
4. केवल A एवं B

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

66. अधोलिखितेषु समीचीनम् उत्तरं चिनुत—

A. मीमांसा दर्शनम्-भावनायाः वर्णनम्
B. सांख्यदर्शनम्- ईश्वरस्य वर्णनम्
C. वैशेषिक दर्शनम्- द्रव्यस्यवर्णनम्
D. न्यायदर्शनम्-पञ्चीकरण
E. जैनदर्शनम्-त्रिपिटकः

अधोदन्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत—

1. केवल A एवं D
2. केवल D एवं B
3. केवल C एवं D
4. केवल A एवं C

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

67. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. पुरुषः	I. विकृतिः
B. वाक्	II. प्रकृतिर्विकृति
C. शब्दः	III. प्रकृतिः
D. मूलप्रकृतिः	IV. न प्रकृतिर्न विकृतिः

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -III, B-IV, C-II, D-I
2. A -II, B-III, C-IV, D-I
3. A -III, B-I, C-IV, D-II
4. A -IV, B-I, C-II, D-III

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

68. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. माध्यमिकाः	I. बाह्यार्थशून्यम्
B. योगाचाराः	II. बाह्यार्थप्रत्यक्षम्

C. सौत्रान्तिका: III. सर्वं शून्यम्

D. वैभाषिका: IV. बाह्यार्थनुमेयम्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -II, B-II, C-IV, D-I
2. A -II, B-I, C-IV, D-III
3. A -II, B-IV, C-I, D-III
4. A -III, B-I, C-IV, D-II

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

69. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए—

सूची I	सूची II
A. अपवर्गे तृतीया–	I. ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।
B. तथायुक्तं चाऽनीप्सितम्	II. प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति।
C. धारेरुत्तमर्णः	III. क्रोशेन अनुवाकोऽधीतः।
D. प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्	IV. भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A -III, B-I, C-II, D-IV
2. A - III, B-I, C-IV, D-II
3. A -II, B-I, C-1V, D-III
4. A -II, B-IV, C-III, D-I

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

70. 'द्राह्यायण श्रौतसूत्रम्' कस्य वेदस्य विद्यते?

A. अथर्ववेदस्य B. कृष्णयजुर्वेदस्य

C. ऋग्वेदस्य D. सामवेदस्य

71. 'हर्षचरितम्' कतिषु उच्छ्वासेषु रचितमस्ति?

A. त्रिषु B. पञ्चसु C. सप्तसु D. अष्टसु

72. गन्धवत्त्वं कस्य लक्षणम्

A. अपः B. पृथिव्याः C. अग्नेः D. वायोः

73. सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए

सूची I	सूची II
A. याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा	I. नीतिशतकम्
B. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति	II. मेघदूतम्
C. अनभ्यासे विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम्	III. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
D. विभूषणं मौनमपण्डितानाम्	IV. हितोपदेश

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए—

1. A -II, B-I, C-IV, D-III
2. A -II, B-III, C-IV, D-II
3. A -III, B-I, C-II, D-IV
4. A -IV, B-III, C-I, D-II

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

74. सर्वप्राचीनरचनायाः प्राथम्येन कालक्रमानुसारमुचितमुत्तरं चिनुत-

A. हर्षचरितम् B. नैषधीयचरितम्

C. रघुवंशम् D. नलचम्पूः

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. A , C, B, D
2. C, A , D, B
3. A , B, C, D
4. D, A , B, C

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

75. वैशेषिकदर्शनानुसार निम्नाङ्कितानां समुचितः क्रमोऽस्ति?

A. अभावः B. विशेषः C. कर्म D. सामान्यम् E. समवायः

अधोदत्तेषु विकल्पेषु समीचीनोत्तरस्य चयनं कुरुत –

A. A , D, C, B, E B. C, D, B, E, A

C. C, B, A , D, E D. C, A , D, B, E

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

उत्तरमाला

1. B	2. D	3. B	4. B	5. A
6. B	7. B	8. C	9. A	10. A
11. A	12. A	13. C	14. C	15. C
16. A	17. D	18. B	19. A	20. A
21. B	22. D	23. A	24. C	25. B
26. B	27. C	28. D	29. B	30. D
31. B	32. A	33. B	34. A	35. B
36. C	37. B	38. D	39. B	40. D
41. A	42. A	43. C	44. B	45. C
46. C	47. D	48. B	49. C	50. C
51. B	52. C	53. A	54. A	55. B

56. D	57. C	58. C	59. D	60. C
61. C	62. D	63. C	64. C	65. A
66. D	67. D	68. D	69. B	70. D
71. D	72. A	73. B	74. B	75. B

• • •

CUET संस्कृत जून, 2023

यद्यपि संस्कृत में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग होता रहा है, किन्तु हिन्दी में इसका अर्थ एकदम बदल गया है–उपन्यास (उप+नि+अस क्षेपण घञ्) का अर्थ है–वाक्योपक्रम, विचार, वक्तव्य, प्रस्ताव, भूमिका, प्रस्ताव निकट रखना आदि। 'निकट रखना' अर्थ आज के उपन्यास पर प्रक्षेपित कर दिया जाता है। इस साहित्यिक विधा को कुछ लोग कथा, आख्यायिका, परिकथा, उपकथा आदि से भी जोड़ने की कोशिश करते हैं, किन्तु उपन्यास को उनसे जोड़ना दूर की कौड़ी लाना है।

'उपन्यास' शब्द को अंग्रेजी 'नावेल' के अर्थ में प्रयोग करने वाले पहले व्यक्ति बालकृष्ण भट्ट हैं। 'हिन्दी प्रदीप की पुरानी फाइलों से पता लगता है कि उन्होंने छोटे-बड़े नौ उपन्यासों की रचना की है। पहले उपन्यास का नाम 'उपन्यास' शब्द लिये हुए हैं। 'रहस्यकथा उपन्यास' दूसरे उपन्यास का नाम है 'गुप्त बैरी उपन्यास' ये दोनों अधूरे हैं। पर उनके अंशों को 'हिन्दी प्रदीप' (नवम्बर 1879) और 'हिन्दी प्रदीप' (मई 1882) में देखा जा सकता है। 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886) की भूमिका में उन्होंने लिखा है। 'यह उपन्यास सन् 1886 की 'हिन्दी प्रतीप' की जिल्दों के कुछ अंको में से 4 या 5 अध्ययन निकालकर पुस्तकाकार छापकर उस समय के ग्राहकों को उपहार में बाँट दिया गया था। किशोरीलाल गोस्वामी ने 'प्रणयिनी परिणय' (1890) के उपोद्घात में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग किया है। सन् 1903 ई. में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'माधुरी' में उपन्यास पर एक लेख लिखा।

प्रेमचन्द ने उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।'' प्रेमचन्द पहले आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यासकार थे, बाद में यथार्थवादी हो गये। इसके बाद तो हिन्दी में यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक, प्रकृतिवादी, प्रगतिवादी प्रयोगपरक आदि उपन्यास लिखे गये।

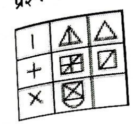
प्रस्तुत गद्यांश से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

1. किस भाषा में उपन्यास शब्द का उपयोग होता रहा है?
   A. उर्दू B. अरबी C. संस्कृत D. हिन्दी
2. नूतन ब्रह्मचारी उपन्यास के लेखक कौन हैं?
   A. किशोरी लाल गोस्वामी B. बालकृष्ण भट्ट
   C. प्रेमचंद D. रामचन्द्र शुक्ल

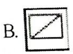
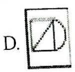
3. हिन्दी में कैसे उपन्यास नहीं लिखे गए?
   A. अतियथार्थवादी B. मनोवैज्ञानिक
   C. यथार्थवादी D. प्रकृतिवादी
4. नूतन ब्रह्मचारी उपन्यास किस सन् में प्रकाशित हुआ?
   A. 1882 B. 1883 C. 1886 D. 1879
5. किशोरीलाल गोस्वामी कृत "प्रणयिनी परिणय" उपन्यास का रचना वर्ष क्या है?
   A. 1879 B. 1890 C. 1886 D. 1903
6. प्रश्न का उत्तर देने के लिए दी गई जानकारी को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
   एक परिवार जिसमें 6 सदस्य P, Q, R, S, T और Z है, Q, R का पुत्र है, किन्तु R, की माता नहीं है। P और R विवाहित जोड़े हैं। T. R का भाई है। S, P की पुत्री है और Z, P का भाई है। परिवार में कितने पुरुष सदस्य हैं?
   A. एक B. दो C. तीन D. चार
7. शक् कैलेंडर (राष्ट्रीय कैलेंडर प्रणाली) का पहला महीना कौन-सा है?
   A. वैशाख B. माघ C. कार्तिक D. चैत्र
8. निम्नलिखित में कौन-से भारतीय राज्य चीन की सीमा को स्पर्श करते हैं?
   A. पश्चिम बंगाल B. हिमाचल प्रदेश
   C. पंजाब D. उत्तराखंड
   नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
   A. केवल A और D
   B. केवल B और D
   C. केवल A, C और D
   D. केवल C और D
9. 'प्रत्युपकार' का सन्धि–विच्छेद क्या होगा।
   A. प्रति + उपकार B. प्रत्यु + पकार
   C. प्रत्युप + कार D. प्र + त्युपकार
10. यदि Cot 20° tan (90°-A)=1, तो A का माना है:
   A. 50° B. 45° C. 70° D. 60°
11. यदि Rs. 5,000 की राशि 10% वार्षिक चक्रवृद्धि ब्याज की दर पर जमा की गई होगी 2 वर्ष पश्चात् राशि है–
   A. Rs. 6.000 B. Rs. 6050
   C. 7200 D. 8000

12. निम्नलिखित में कौन-सा उत्तर चित्र, जो आव्यूह प्रश्न चित्र को पूर्ण करता है, उसे ज्ञात कीजिए।

प्रश्न चित्र



उत्तर चित्र

A. 
B. 
C. 
D. 

13. उपसर्ग का प्रयोग होता है:
   A. शब्द के आरम्भ में B. शब्द के अन्त में
   C. शब्द के मध्य में D. इनमें से सभी
14. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
   (*i*) **कथन:** गगनयान भारतीय आंतरिक्ष यात्रियों को आंतरिक्ष में ले जाने वाला भारत का प्रथम मानव आंतरिक्ष उड़ान परियोजना है। व्योममित्र आंतरिक्ष मिशन के क्षेत्र में एक भारतीय आंतरिक्ष यात्रियों से संबंधित है।
   (*ii*) **कथन:** 'व्योममित्र' गगनयान आंतरिक्ष यान के साथ-जाने वाली एक प्रसिद्ध महिला अन्तरिक्ष यात्री है।
   उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
   A. कथन *i* और *ii* दोनों सही हैं
   B. कथन *i* और *ii* दोनों गलत हैं
   C. कथन *i* सही है, लेकिन कथन *ii* गलत है
   D. कथन *i* गलत है, लेकिन कथन *ii* सहीं है
15. राम के पास कुछ धनराशि है जो उषा को 30 दिन का वेतन देने के लिए अथवा मनिका को 60 दिन का वेतन देने के लिए पर्याप्त है। यदि वह दोनों को एक साथ काम पर रखता है, तो वह धनराशि उन्हें कितने दिन का वेतन देने के लिए पर्याप्त होगी?
   A. 30 B. 20 C. 12 D. 10

16. स्पीकर (लोकसभा अध्यक्ष) अपना त्यागपत्र निम्नलिखित में से किसे सौंपता है?
A. डिप्यूटी स्पीकर (लोकसभा उपाध्यक्ष)
B. प्रधानमंत्री
C. राष्ट्रपति
D. राज्यपाल

17. ''कलम का धनी'' मुहावरे का तात्पर्य है:
A. जिसके पास ज्यादा कलम हो B. जो अच्छा लेखक हो
C. जो धनवान हो D. जिसके पास कीमती कलम हो

18. दिए गए कथन सम्बन्धी तीन निष्कर्ष लिए गए हैं:
कथन: इस कक्षा के सभी विद्यार्थी पढ़ाई में सामान्य हैं। सविता एक मेधावी छात्रा है।

निष्कर्ष:
(*i*) कुछ छात्र पढ़ाई में होनहार हैं।
(*ii*) सविता बहुत मेहनत करती है।
(*iii*) सविता इस कक्षा की विद्यार्थी नहीं है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
A. केवल निष्कर्ष *i* अनुसरण करता है
B. केवल निष्कर्ष *ii* अनुसरण करता है
C. या तो *ii* अथवा *iii* अनुसरण करता है
D. या तो *i* ना ही *ii* अनुसरण करता है

19. यदि दक्षिण-पश्चिम को पश्चिम मान लिया जाए, उत्तर-पश्चिम को उत्तर मान लिया जाए और इत्यादि। तब पूरब किसके समतुल्य होगा:
A. दक्षिण-पूरब B. उत्तर-पूरब
C. उत्तर D. दक्षिण

20. यदि a का a% + b का b% = ab का 2%, तो b, a का कितने प्रतिशत है?
A. 50% B. 75% C. 100% D. 120%

21. फोटोसेल द्वारा प्रकाश ऊर्जा को किसमें रूपान्तरित किया जाता है?
A. ऊष्मा ऊर्जा B. विद्युत ऊर्जा
C. रासायनिक ऊर्जा D. यांत्रिक ऊर्जा

22. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन और तीन निष्कर्ष दिए गए हैं। कथन के आधार पर निष्कर्ष की जाँच कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प को चुनिए।

कथन:
A. सभी कुत्ते, जानवर हैं।
B. सभी जानवर, स्तनधारी हैं।

निष्कर्ष:
(*i*) कुछ कुत्ते, जानवर हैं।
(*ii*) कुछ स्तनधारी, जानवर हैं।
(*iii*) सभी कुत्ते, स्तनधारी हैं।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–
A. केवल *i* अनुसरण करता है
B. केवल *i* और *ii* अनुसरण करता है
C. केवल *ii* और *iii* अनुसरण करता है
D. सभी अनुसरण करता है

23. निम्न में से छंद का भेद नहीं है?
A. वार्णिक छंद B. अलंकार छंद C. मुक्तक छंद D. मात्रिक छंद

24. ''चारु चन्द्र की चंचल किरणें'' में कौन-सा अलंकार है?
A. उपमा B. श्लेष C. अनुप्रास D. यमक

25. एक बेलन का आयतन 1408 cm^3 है तथा इसकी ऊँचाई 7 cm है। बेलन का कुल पृष्ठ क्षेत्रफल ज्ञात करें (दशमलव के दो स्थान तक शुद्ध)। (यदि, इसकी पाई = 22/7)
A. 352.55 cm^2 B. 548.75 cm^2 C. 754.29 cm^2 D. 458.39 cm^2

Comprehension:

अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

परमेश्वरेण जगति समुत्पादितेषु सर्वद्रव्येषु विद्यैव सर्वश्रेष्ठ द्रव्यम्। विद्याद्रव्येण विहीनः यो मानवोऽस्ति सः असभ्यः मूर्खः ग्रामीणः च कथ्यते। ज्ञानेन विना यथा पशुः धर्माधर्मयोर्विचार कर्तुं न शक्नोति तथैव मानवोऽपि विद्यया विहीनः पापपुण्ययोः कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोर्विचारं कर्तुं न पारयति। विद्याविहीनो मानवोऽन्ध एव निगद्यते। उक्तञ्च।

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

अत्र शब्दाह्वयं ज्योतिर्विद्यैव। यदि नामेयं विद्याज्योतिरस्मिन् जगति न भवेत्। तर्हि जगदिदमखिलमपि अन्धकारावृतं सम्पत्स्येत। विद्ययैवास्य जगतः यावज्ज्ञेयं तत्त्वं तावदखिलं सम्प्रकाश्यते। किं नाम तद्वस्तु यद्विद्यया न साध्यते। अत एव विद्याधनस्य सर्वेतरधनेभ्यः प्रधानतोक्ता कविभिः। तथा हि–

''विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।''

26. विद्यैव इत्यत्र का सन्धिः?
A. गुणसन्धिः
B. वृद्धिसन्धिः
C. अयादिसन्धिः
D. दीर्घसन्धिः

27. ''ज्ञानेन विना यथा पशुः धर्माधर्मयोर्विचारं कर्तुं न शक्नोति'' – वाक्येऽस्मिन् कर्तृपदं चिनुत–
A. ज्ञानेन
B. यथा
C. पशुः
D. धर्माधर्मयोर्विचारम्

28. कः मानवः असभ्यः मूर्खः ग्रामीणः च कथ्यते?
A. धनविहीनः
B. वस्त्रविहीनः
C. भवनविहीनः
D. विद्याद्रव्येण विहीनः

29. अनुच्छेदानुसारं वाक्यानि क्रमेण व्यवस्थापयत–
A. पशुः धर्माधर्मयोर्विचारं कर्तुं न शक्नोति
B. सर्वद्रव्येषु विद्यैव सर्वश्रेष्ठं द्रव्यम्
C. अत्र शब्दाह्वयं ज्योतिर्विद्यैव
D. सः असभ्यः मूर्खः ग्रामीणः च कथ्यते
E. विद्याविहीनो मानवोऽन्ध एव निगद्यते अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
(1) B,A,D,E,C
(2) B,D,A,E,C
(3) D,A,E,B,C
(4) C,D,A,B,E

30. परमेश्वरेण जगति समुत्पादितेषु सर्वद्रव्येषु किं सर्वश्रेष्ठं द्रव्यम्?
A. धनम् B. जलम् C. विद्या D. वृक्षः

31. आश्रमाः कति भवन्ति?
A. पञ्च B. षड C. चत्वारः D. सप्त

32. कः आश्रमः सर्वैरपरिहार्यत्वेन सेव्यः?
A. ब्रह्मचर्यः
B. गृहस्थः
C. वानप्रस्थः
D. संन्यासः

33. अनुच्छेदानुसारं वाक्यानि क्रमेण व्यवस्थापयत–
A. तेषु प्रथमः सर्वैरपरिहार्यत्वेन सेव्यः
B. ब्रह्मचर्याश्रमानन्तरं गृहस्थाश्रमस्य चोपक्रमः विवाहसंस्कारेण सञ्जायते
C. यतः स एव शारीरिकी मानसीं च शक्ति विकासयति
D. चत्वारो विभागाः चत्वारः आश्रमाः उच्यन्ते
E. ब्रह्मचारिणो गुरुकुलाश्रमे निवसन्तः आचार्यसकाशात् विविधाः विद्याः शिल्पकलाः विज्ञानानि व शिक्षन्ते स्म

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. A, C, D, E, B
B. D, A, C, B, E
C. E, C, B, A, D
D. D, A, C, E, B

34. कति वर्षपर्यन्तम् एकस्मिन्नाश्रमे विश्रम्य चत्वारोऽप्याश्रमाः सेव्याः?
A. विंशतिवर्षपर्यन्तम्
B. पञ्चविंशतिवर्षपर्यन्तम्
C. षोडशवर्षपर्यन्तम्
D. अष्टादशवर्षपर्यन्तम्

35. ''मानवजीवनं चतुर्षु विभागेषु विभक्तं विद्यते''–वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं चिनुत–
A. मानवजीवनम्
B. चतुर्षु
C. विभागेषु
D. विभक्तम्

Comprehension:

अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

सज्जनानां सङ्गतिः जनेषु गुणोत्कर्षप्रकर्षाय सर्वश्रेष्ठं वस्तु भवति। यथा स्पर्शमणिसंसर्गात् लोहम् अपि स्वर्णतां याति तथैव गुणिजनसंसर्गात् गुणरहितः अपि जनः गुणवान् जायते। तथैव दुर्गुणिसम्बन्धाद् दुर्गुणी भवति इत्यत्र नास्ति सन्देहः। अतः सत्यमुक्तं कविना–

यादृशो यस्य संसर्गो भवेत्तद् गुणदोषभाक्।
अयस्कान्तमणेर्योगादयोऽप्याकर्षको भवेत्॥

वस्तुतः सत्सङ्गवशादेव मानवः समुन्नतो भवति। सज्जनानां सम्पर्केण जनः सज्जनः भवति दुर्जनानां संसर्गेण च दुर्जनः।

36. अनुच्छेदे लोहम् इत्यस्य कृते कः पर्यायशब्दः प्रयुक्तः?
A. संसर्गः B. अयः C. प्रकर्षः D. स्पर्शमणिः

37. केषां सम्पर्केण जनः सज्जनः भवति?

A. सज्जनानाम् B. मानवानाम्

C. दुर्जनानाम् D. आकर्षकाणाम्

38. अनुच्छेदे प्रयुक्ताः विभक्तीः क्रमेण व्यवस्थापयत–

A. प्रथमा B. चतुर्थी

C. षष्ठी D. पञ्चमी

E. सप्तमी

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. B, A, E, C, D

B. C, D, A, B, E

C. D, E, C, A, B

D. C, A, E, B, D

39. ''अयस्कान्तमणेर्योगादयोऽप्याकर्षकः'' इत्यस्य सन्धि-विच्छेदः अस्ति–

A. अयस्कान्तमणेः + योगाद् + अयः + अपि + आकर्षकः

B. अयस्क + अन्तमणेः + योगादयो + अपि + आकर्षकः

C. अयस्कान्तमणि + योग + आदयः + आकर्षकः

D. अयः कान्त + मणिः + योग + आदयः + अपि + आकर्षकः

40. स्पर्शमणिसंसर्गात् किं स्वर्णतां याति?

A. जनः B. अपि C. लोहम् D. गुणरहितः जनः

41. अधोलिखितेषु अव्ययीभावसमासस्य उदाहरणं नास्ति?

A. निर्जनम् B. चौरभयम्

C. उपनगरम् D. जितशत्रुः

E. पितरौ

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत –

A. केवलम् A, B, E

B. केवलम् A, C, D

C. केवलम् B, C, D

D. केवलम् B, D, E

42. अधः कथनद्वयं लिखितम्–

(*i*) **कथनः** योगस्य अष्टौ अङ्गानि सन्ति

(*ii*) **कथनः** अभ्यास-वैराग्याभ्यां चित्तवृत्तीनां निरोधः भवति

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. कथनम् *i* कथनम् *i* इत्युभे सत्ये स्तः

B. कथनम् *i* कथनम् *i* इत्युभे असत्ये स्तः

C. कथनम् *i* सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* असत्यम् अस्ति

D. कथनम् *i* असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* सत्यम् अस्ति

43. 'वीणापाणिः' इत्यत्र समासो वर्तते–

A. तत्पुरुषः B. द्वन्द्वः C. अव्ययीभावः D. बहुव्रीहिः

44. तददोषौ शब्दार्थौ सगुणौ अनलङ्कृती पुनः क्वापि इति कस्य उक्तिः?

A. वामनस्य B. मम्मटस्य C. क्षेमेन्द्रस्य D. कुन्तकस्य

45. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इति नाटकस्य रचयिता अस्ति–

A. कालिदासः B. अश्वघोषः C. भारविः D. भवभूतिः

46. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' : हास्यरसस्य स्थायिभावः 'हासः' इति अस्ति। कारणम् 'ख' : हास्य-रसस्य शुक्लवर्णः भवति।

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति

B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति

C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति

D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

47. रामायणस्य एतानि काण्डानि क्रमेण व्यवस्थापयत।

A. अयोध्याकाण्डम् B. बालकाण्डम्

C. किष्किन्धाकाण्डम् D. अरण्यकाण्डम्

E. सुन्दरकाण्डम्

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत

A. B, A, D, C, E

B. E, D, B, C, A

C. A, D, B, E, C

D. C, D, E, A, B

48. पुराणानां रचयिता अस्ति–
A. महर्षिवाल्मीकिः B. जैमिनिः
C. व्यासः D. शङ्कराचार्यः

49. निम्नलिखितेषु किं वेदाङ्गेषु न परिगण्यते?
A. छन्दः B. व्याकरणम्
C. शिक्षा D. काण्डम्
E. निरुक्तम्
अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. केवलम् A, E
B. केवलम् D
C. केवलम् D, C
D. केवलम् D, B

50. अधः कथनद्वयं लिखितम्–
(i) **कथनम्** : 'भविष्यति' इति रूपं लृट्लकारे सिद्ध्यति
(ii) **कथनम्** : 'भविष्यति' इति रूपं अस् – धातोः वर्तते
उपर्युक्तकथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-
A. कथनम् i कथनम् ii इत्युभे सत्ये स्तः
B. कथनम् i कथनम् ii इत्युभे असत्ये स्तः
C. कथनम् i सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् ii असत्यम् अस्ति
D. कथनम् i असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् ii सत्यम् अस्ति

51. अधः कथनद्वयं लिखितम्–
(i) **कथनम्** : 'वाचः' इति रूपं 'वाच्' इति शब्दस्य प्रथमा-बहुवचने सिद्ध्यति
(ii) **कथनम्** : 'वाचः' इति रूपं 'वाच्' इति शब्दस्य द्वितीया-बहुवचने सिद्ध्यति
उपर्युक्तकथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत-
A. कथनम् i कथनम् ii इत्युभे सत्ये स्तः
B. कथनम् i कथनम् ii इत्युभे असत्ये स्तः
C. कथनम् i सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् i असत्यम् अस्ति
D. कथनम् i असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् ii सत्यम् अस्ति

52. मृच्छकटिकम् कीदृशं रूपकम् अस्ति?
A. नाटकम् B. एकाङ्की
C. प्रकरणम् D. प्रहसनम्

53. 'लभे' इति रूपं विद्यते–
A. लिट्लकारस्य उत्तमपुरुषे B. लट्लकारस्य उत्तमपुरुषे
C. लृट्लकारस्य उत्तमपुरुषे D. लोट्लकारस्य उत्तमपुरुषे

54. उत्तररामचरितस्य उपजीव्यम् अस्ति–
A. पुराणम् B. महाभारतम्
C. रामायणम् D. वेदाङ्गानि

55. यद्यपि इत्यत्र वर्तते–
A. दीर्घसन्धिः B. गुणसन्धिः
C. अयादिसन्धिः D. यण् सन्धिः

56. शृंगाररसस्य स्थायिभावः अस्ति–
A. शोकः B. रतिः C. क्रोधः D. भयम्

57. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क': चावार्क मतानुसारं चत्वारि एव तत्त्वानि भवन्ति, आकाशस्य सत्तति न स्वीकुर्वन्ति। यतः चावार्कमते प्रत्यक्षमेव प्रमाणम् अस्ति, आकाशं च प्रत्यक्षेण न गृह्यते कारणम् खः।
उपर्युक्त कथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति
B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति
C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति
D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

58. शब्दस्य तिस्रः शक्तयः भवन्ति–
A. मनस् B. अभिधा
C. वाक् D. लक्षणा
E. व्यञ्जना
अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. केवलम् A, C, E
B. केवलम् C, D, E
C. केवलम् B, D, E
D. केवलम् A, B, C

59. 'ध्वनिप्रस्थानम्' अनेन आचार्येण स्थापितम्–
A. मम्मटेन B. भरतेन
C. दण्डिना D. आनन्दवर्द्धनेन

60. मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः ....॥
A. वृद्धः B. पथिकः C. द्रष्टा D. पण्डितः

61. अधः कथनद्वयं लिखितम्–
(*i*) **कथनम्** : मेघदूतस्य नायकः यक्षः अस्ति
(*ii*) **कथनम्** : अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायिका शकुन्तला अस्ति
उपर्युक्तकथनानाम् लोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. कथनम् *i* कथनम् *ii* इत्युभे सत्ये स्तः
B. कथनम् *i* कथनम् *i* इत्युभे असत्ये स्तः
C. कथनम् *i* सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* असत्यम् अस्ति
D. कथनम् *i* असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* सत्यम् अस्ति

62. अधः कथनद्वयं लिखितम्–
(*i*) **कथनम्** : जैनसम्प्रदाये षड्विंशतिः तीर्थङ्कराः सन्ति
(*ii*) **कथनम्** : जैनानां चतुर्विंशतितमः तीर्थङ्करः महावीरः आसीत्
उपर्युक्तकथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. कथनम् *i* कथनम् *i* इत्युभे सत्ये स्तः
B. कथनम् *i* कथनम् *i* इत्युभे असत्ये स्तः
C. कथनम् *i* सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *i* असत्यम् अस्ति
D. कथनम् *i* असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *i* सत्यम् अस्ति

63. वर्णसंख्यानुसारं छन्दसां क्रमं व्यवस्थापयत–
A. मालिनी B. इन्द्रवज्रा
C. अनुष्टुप् D. मन्दाक्रान्ता
E. वंशस्थम्
अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–
A. C, B, E, A, D
B. B, E, A, D, C
C. C, D, A, B, E
D. E, A, C, B, D

64. यमनचिकेतयोः संवादः कस्याम् उपनिषदि अस्ति?
A. श्वेताश्वतरोपनिषदि B. ईशावास्योपनिषदि
C. कठोपनिषदि D. मुण्डकोपनिषदि

65. 'किशोरी' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
A. ङीन् B. ङीप् C. ङीष् D. टाप्

66. असम्प्रज्ञात – समाधेः भेदाः सन्ति
A. विपर्ययः B. उपायप्रत्ययः
C. भवप्रत्ययः D. अविद्या
E. निद्रा
अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत
A. केवलम् A, B
B. केवलम् A, C
C. केवलम् B, C
D. केवलम् B, D

67. 'ऐतरेयारण्यकम्' केन वेदेन सम्बद्धम्?
A. ऋग्वेदेन B. सामवेदेन C. यजुर्वेदन D. अथर्ववेदेन

68. 'अपठत' इति रूपं वर्तते–
A. लुङ्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने
B. लुङ्लकारस्य मध्यमपुरुषस्य बहुवचने
C. लङ्लकारस्य प्रथमपुरुषस्य एकवचने
D. लङ्लकारस्य मध्यमपुरुषस्य बहुवचने

69. 'ग्राम् गच्छन् **तृणं** स्पृशति' इत्यस्मिन् वाक्ये अधोरेखाङ्कितं पदम् अस्ति–
A. ईप्सितकर्म B. ईप्सिततमकर्म
B. अनीप्सितकर्म D. अकथितकर्म

70. रूपकस्य कति भेदाः सन्ति?
A. पञ्चाशत् B. दश C. त्रयोदश D. चतुर्दश

71. "वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये" इत्यस्मिन् पद्यांशे कः अलङ्कारः?
A. उत्प्रेक्षा B. उपमा C. रूपकम् D. अर्थान्तरन्यासः

72. "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"
एषः पद्यांशः श्रीमद्भगवद्गीतायाः कस्मिन् अध्याये विद्यते?
A. प्रथमे B. द्वितीये C. तृतीये D. चतुर्थे

73. प्रथमां सूची द्वितीयया सूच्या सह मेलयत –

सूची I	सूची II
A. वीररसः	I. भयम्
B. वीभत्सरसः	II. उत्साहः
C. भयानकरमः	III. विस्मयः
D. अद्भुतरसः	IV. जुगुप्सा

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(1), (D)-(III)
B. (A)-(1), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
C. (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(1)
D. (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(1), (D)-(III)

74. 'भवता' इति रूपं वर्तते–

A. भवत् - शब्दस्य प्रथमेकवचने
B. भवत् - शब्दस्य द्वितीयेकवचने
C. भवत् - शब्दस्य तृतीयैकवचने
D. भवत् - शब्दस्य सप्तम्यैकवचने

75. अभिज्ञानशाकुन्तलानुसारं घटनाः क्रमेण व्यवस्थापयत–

A. शकुन्तला दुष्यन्तयोः प्रणयविवाहः
B. सर्वदमनस्य जन्म
C. राज्ञः दुष्यन्तस्य आश्रमप्रवेशः
D. दुष्यन्तस्य राजभवनं प्रत्यावर्तनम्
E. दुर्वासा ऋषेः शापः

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. C, A, D, E, B
B. A, D, E, B, C
C. C, A, E, B, D
D. B, C, D, A, E

76. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' : मेघदूते यक्षः एकवर्षाय शप्तः। कारणम् 'ख' : यतो हि तेन स्वकर्त्तव्ये प्रमादः कृतः

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति

B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति
C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति
D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

77. विभावानुभाव-व्यभिचारिभावानां संयोगात् कस्य निष्पत्तिः भवति?

A. रसस्य
B. आनन्दस्य
C. काव्यस्य
D. अलङ्कारस्य

78. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	सूची II
A. प्रथमा	I. ङीप्
B. देवी	II. ङीष्
C. सुन्दरी	III. ङीप्
D. वधूटी	IV. टाप्

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(III)
B. (A)-(IV), (B)-(1), (C)-(II), (D)-(III)
C. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(1)
D. (A)-(1), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

79. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' 'पीताम्बरः' इत्यत्र बहुव्रीहिसमासो विद्यते। कारणम् 'ख' अन्यपदार्थस्य प्राधान्यात्

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति
B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति
C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति
D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

80. अधोलिखितेषु सम्प्रदानसञ्ज्ञाविधायकं सूत्रं नास्ति–

A. तथायुक्तं चानीप्सितम्
B. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
C. आख्यातोपयोगे
D. यतश्च निर्धारणम्
E. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. केवलम् A, C, D

B. केवलम् A, B, D

C. केवलम् B, C, E

D. केवलम् C, D, E

81. अभिज्ञानशाकुन्तले पात्राणि सन्ति–

A. प्रियंवदा

B. शकुन्तला

C. अनसूया

D. दुष्यन्तः

E. पद्मावती

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततगम् उत्तरं चिनुत–

A. केवलम् C, D

B. केवलम् A, B, C, D

C. केवलम् B, C, D

D. केवलम् A, D

82. शतकत्रये न परिगण्यते–

A. नीतिशतकम्

B. शृंगारशतकम्

C. वैराग्यशतकम्

D. चण्डीशतकम्

83. श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति?

A. पञ्चदश B. षोडश C. सप्तदश D. अष्टादश

84. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' : श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य षष्ठे पर्वणि अस्ति। कारणम् 'ख' : श्रीमद्भगवद्गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः सन्ति उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति

B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति

C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति

D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

85. तर्कसंग्रहानुसारं प्रथमां सूची द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	सूची II
A. कर्माणि	I. सप्त
B. पदार्थाः	II. चतुर्विंशतिः
C. द्रव्याणि	III. पञ्च
D. गुणा	IV. नव

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

B. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(1), (D)-(III)

C. (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

D. (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)

86. तर्कसङ्ग्रहानुसारम् एतानि कर्माणि क्रमेण व्यवस्थापयत–

A. प्रसारणम्

B. उत्क्षेपणम्

C. आकुञ्चनम्

D. गमनम्

E. अपक्षेपणम्

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. B, D, C, E, A

B. A, D, C, B, E

C. B, E, C, A, D

D. E, D, C, B, A

87. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	सूची II
A. वेदव्यासः	I. नीतिशतकम्
B. भर्तृहरिः	II. पञ्चतन्त्रम्
C. विष्णुशर्माः	III. मेघदूतम्
D. कालिदासः	IV. श्रीमद्भगवद्गीता

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

B. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(1), (D)-(III)

C. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)

D. (A)-(III), (B)-(II), (C)-(I), (D)-(IV)

88. प्रथमां सूची द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	**सूची II**
A. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्	I. आनन्दवर्धनः
B. वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्	II. भामहः
C. काव्यस्यात्मा ध्वनिः	III. दण्डी
D. शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली	IV. कुन्तकः

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

B. (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)

C. (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

D. (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

89. प्रथमां सूची द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	**सूची II**
A. ननमयययुतेयं	I. यदि तौ जगौ गः
B. स्यादिन्द्रवज्रा	II. वंशस्थमुदीरितं जरौ
C. रसैः रुद्रैश्छिन्ना	III. मालिनी भोगिलोकैः
D. जतौ तु	IV. यमनसभला गः शिखरिणी

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

B. (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

C. (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

D. (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)

90. 'तभजा जगौ गः' इत्यनेन किं छन्दः परामृश्यते?

A. वसन्ततिलका B. वंशस्थम्

C. मालिनी D. मन्दाक्रान्ता

91. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' : शुक्लयजुर्वेदस्य एकमात्रम् आरण्यकं 'बृहदारण्यकम्' अस्ति। कारणम् 'ख' : आरण्यकानि वानप्रस्थीनां कृते लिखितानि।

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति

B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति

C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति

D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

92. अधः कथनद्वयं प्रदत्तम् : एकम् अभिकथनम् अस्ति, द्वितीयं च तस्य कारणम् अस्ति–अभिकथनम् 'क' : 'वामनः बलिं वसुधां याचते' इत्यत्र 'बलिम्' इत्यस्य कर्मसंज्ञा विहिता। करणकारकस्य अविवक्षित्वात्। कारणम् 'ख':।

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, अपि च 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या अस्ति

B. 'क' 'ख' इत्युभे सत्ये स्तः, परन्तु 'ख' 'क' इत्यस्य समुचिता व्याख्या नास्ति

C. 'क' इति सत्यम्, परन्तु 'ख' सत्यं नास्ति

D. 'क' इति सत्यं नास्ति, परन्तु 'ख' सत्यम् अस्ति

93. अधः कथनद्वयं लिखितम्–

(*i*) **कथनम्** : नाट्यशास्त्रं पञ्चमो वेदः इत्युच्यते

(*ii*) **कथनम्** : नाट्यशास्त्रानुसारं नाट्यशालायाः निर्माणं विश्वकर्मा अकरोत्

उपर्युक्तकथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. कथनम् *i* कथनम् *ii* इत्युभे सत्ये स्तः

B. कथनम् *i* कथनम् *ii* इत्युभे असत्ये स्तः

C. कथनम् *i* सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* असत्यम् अस्ति

D. कथनम् *i* असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* सत्यम् अस्ति

94. कालिदासेन विरचितं नाटकम् अस्ति?

A. मृच्छकटिकम् B. चारुदत्तम्

C. विक्रमोर्वशीयम् D. प्रतिमानाटकम्

95. प्रथमां सूचीं द्वितीयया सूच्या सह मेलयत–

सूची I	**सूची II**
A. वर्णसाम्यम्	I. उत्प्रेक्षा
B. प्रकृतस्य समेन सम्भावनम्	II. अनुप्रासः
C. उपमानोपमेययोः	III. यमकम्
D. अर्थे सति भिन्नानां वर्णानां पुनः श्रुतिः	IV. रूपकम्

अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

B. (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)

C. (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)

D. (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

96. शप्तः यक्षः शापावधौ कुत्र निवासं कृतवान्?

A. अलकापुर्याम्
B. रामगिर्याश्रमेषु
C. इन्द्रलोके
D. वरुणलोके

97. हितोपदेशस्य रचयिता अस्ति–

A. विष्णुशर्मा:
B. नारायणपण्डित:
C. अमरसिंह:
D. अमरकीर्ति:

98. रामायणे कति काण्डानि सन्ति?

A. पञ्च
B. चतुर्विंशति:
C. पञ्चाशत
D. सप्त

99. मेघदूतं कयोः द्वयोः भागयोः विभक्तम्–

A. मध्यममेघे
B. पूर्वमेधे
C. अधोमेघे
D. उच्चमेघे
E. उत्तरमेघे

अधोलिखितेषु विकलोषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत

A. केवलम् A, C

B. केवलम् B, E,

C. केवलम् A, D

D. केवलम् B, C

100. अधः कथनद्वयं लिखितम्–

(i) **कथनम्** : 'वैराग्यशतकम्' शतकत्रये परिगण्यते

(ii) **कथनम्** : हितोपदेशस्य चत्वारः भागाः सन्ति

उपर्युक्त कथनानाम् आलोके, अधोलिखितेषु विकल्पेषु उचिततमम् उत्तरं चिनुत–

A. कथनम् *i* कथनम् *ii* इत्युभे सत्ये स्त:

B. कथनम् *i* कथनम् *ii* इत्युभे असत्ये स्त:

C. कथनम् *i* सत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* असत्यम् अस्ति।

D. कथनम् *i* असत्यं अस्ति, परन्तु कथनम् *ii* सत्यम् अस्ति

उत्तरमाला

01. C	02. B	03. A	04. C	05. B	06. D	07. D
08. B	09. A	10. C	11. B	12. C	13. A	14. C
15. B	16. A	17. B	18. B	19. B	20. C	21. B

22. D	23. B	24. C	25. C	26. B	27. C	28. D
29. B	30. C	31. C	32. A	33. D	34. B	35. B,D
36. B	37. A	38. D	39. A	40. C	41. C	42. A
43. D	44. B	45. A	46. B	47. A	48. C	49. C
50. A	51. A	52. C	53. B	54. C	55. D	56. B
57. A	58. C	59. D	60. D	61. A	62. A	63. A
64. C	65. B	66. C	67. A	68. D	69. C	70. B
71. B	72. B	73. A	74. C	75. A	76. A	77. A
78. B	79. A	80. A	81. B	82. D	83. D	84. B
85. A	86. C	87. A	88. A	89. C	90. A	91. B
92. C	93. A	94. C	95. D	96. B	97. B	98. D
99. B	100. A					

●●●

CUET (PG)-2024 (Sanskrit)

1. ऋग्वेदस्य तृतीये मण्डले कति सूक्तानि सन्ति?
   A. 191 B. 193 C. 43 D. 196
2. महाभारते अङ्गी रसः कः?
   A. शृङ्गारः B. शान्तः C. करुणः D. वीरः
3. प्रश्नोपनिषद् केन वेदेन सह सम्बद्धा?
   A. ऋग्वेदेन B. अथर्ववेदेन C. यजुर्वेदेन D. सामवेदेन
4. 'मेघदूतम्' केन छन्दसा विरचितमस्ति?
   A. उपजातिच्छन्दसा B. मन्दाक्रान्ताच्छन्दसा
   C. मालिनीच्छन्दसा D. प्रहर्षिणीच्छन्दसा
5. अधोऽङ्कितानां वैयाकरणानां कालक्रमेण क्रमं चिनुत–
   A. कात्यायनः B. नागेशभट्टः C. कैय्यटः D. पाणिनिः
   E. भर्तृहरिः
   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–
   A. D,A,E,B,C B. A,B,C,D,E C. B,A,D,C,E D. E,C,B,D,A
6. विना इत्यव्यययोगे काः विभक्तः भवन्ति?
   A. द्वितीयाः चतुर्थी, पञ्चमी च B. षष्ठी, पञ्चमी, तृतीया च
   C. सप्तमी, तृतीया, द्वितीया च D. द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी च
7. अधोलिखितेषु वेदान्तसम्प्रदायेषु कालक्रमानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत–
   A. द्वैताद्वैतवादः B. शुद्धाद्वैतवादः C. अद्वैतवादः D. विशिष्टाद्वैतवादः
   E. द्वैतवादः
   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–
   A. C,D,A,E,B B. A,E,C,D,B
   C. B,A,D,C,E D. C,B,D,E,A
8. यजुर्वेदस्य ऋत्विक् कः?
   A. होता B. अध्वर्युः C. उद्गाता D. ब्रह्मा

9. शिशुपालवधमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?
   A. अष्टादशसर्गाः B. विंशतिसर्गाः C. पञ्चदशसर्गाः D. पञ्चविंशतिसर्गाः
10. अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते?
   A. कादम्बर्याम् B. रघुवंशे C. मेघदूते D. शाकुन्तले
11. रामायणस्य काण्डानि क्रमानुसारं चिनुत–
   A. युद्धकाण्डम् B. सुन्दरकाण्डम् C. अरण्यकाण्डम् D. किष्किन्धाकाण्डम्
   E. उत्तरकाण्डम्
   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–
   A. A,B,C,D,E B. E,A,B,C,D C. E,B,A,D,C D. C,D,B,A,E
12. योगदर्शनानुसारेण अधोऽङ्कितानां समुचित क्रमं चितुत–
   A. ध्यानम् B. प्राणायामः C. समाधिः D. प्रत्याहारः
   E. धारणा
   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–
   A. A,B,C,D,E B. B,D,E,A,C C. E,B,A,D,C D. C,B,D,A,E
13. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. शैवः	I. अग्निपुराणम्
B. वैष्णवः	II. पद्मपुराणम्
C. ब्राह्मः	III. मार्कण्डेपुराणम्
D. आग्नेयः	IV. गरुडपुरणम्

   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
   A. A-I, B-II, C-III, D- IV B. A-III, B-IV, C-II, D-I
   C. A-I, B-II, C-IV, D-III D. A-III, B-IV, C-I, D-II
14. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत्–

सूची I	सूची II
A. पाणिनीः	I. वृत्तिः
B. कात्यायनः	II. सूत्रम्
C. पतञ्जलिः	III. वार्तिकम्
D. जयादित्यः	IV. भाष्यम्

   अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
   A. A-I, B-II, C-II, C-III, D- IV B. A-II, B-III, C-IV, D-I
   C. A-I, B-II, C-IV, D-III D. A-III, B-IV, C-I, D-II
15. सामान्यतः व्यंजनसन्धयः कति प्रकाराः?
   A. एकादशप्रकाराः B. सप्तप्रकाराः C. दशप्रकाराः D. द्वादशप्रकाराः

16. विश्वनाथानुसारमधोलिखितेषु पूर्णोपमालङ्काराः सन्ति–

A. समासगता B. वाक्यगत C. क्यङ्प्रत्ययगता D. क्यच्प्रत्ययगता

E. तद्धितगता

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–

A. B,C,E केवलम्। B. B,C,D केवलम्।

C. A,D,C केवलम्। D. A,B,E केवलम्।

17. अधोलिखितानां माहेश्वरसूत्राणां क्रमं चिनुत्–

A. लण B. ऐऔच् C. हयवरट् D. ञमङ्णनम्

E. एओङ्

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–

A. A,E,C,D,B B. E,A,B,C,D C. E,B,C,A,D D. C,B,E,A,D

18. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. अलोऽन्त्यात्पूर्वम्	I. विभाषा
B. अचोऽन्त्यादि	II. अपृक्तम्
C. एकाल् प्रत्ययः	III. टि
D. निषेधविकल्पौ	IV. उपधा

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-IV, B-III, C-II, D-I B. A-III, B-II, C-I, D-IV

C. A-III, B-I, C-IV, D-II D. A-I, B-II, C-III, D-IV

19. कर्मपदे कर्मवाच्ये कास विभक्तिः भवति?

A. तृतीया B. प्रथमा C. पञ्चमी D. षष्ठी

20. अधोलिखितेषु यानि समीचीनानि उत्तराणि तानि चिनुत–

A. काव्यस्यात्मा ध्वनिः - आनन्दवर्धनः

B. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् - मम्मटः

C. वाक्यं रसात्मकं काव्यम् - विश्वनाथः

D. रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् - जगन्नाथः

E. वक्रोक्तिः काव्यजीवितम् - वामनः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A,C,D केवलम्। B. B,D,C केवलम्।

C. E,A,C केवलम्। D. B,C,A केवलम्।

21. ब्रह्माऽपि कं नरं न रंजयति?

A. अज्ञम् B. विशेषज्ञम्

C. ज्ञानलवदुर्विदग्धम् D. दरिद्रम्

22. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. अश्वघोषः	I. नैषधीयचरितम्
B. भारविः	II. कुमारसम्भवम्
C. माघः	III. बुद्धचरितम्
D. कालिदासः	IV. शिशुपालवधम्
E. श्रीहर्षः	IV. किरातार्जुनीयम्

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-III, B-V, C-IV, D-II, E-II B. A-I, B-II, C-III, D-IV, E-V

C. A-IV, B-II, C-I, D-III, E-V D. A-II, B-I, C-IV, D-III, E-V

23. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. मुरारिः	I. मुद्राराक्षसम्
B. शूद्रकः	II. प्रतिमानाटकम्
C. भासः	III. मृच्छकटिकम्
D. विशाखदत्तः	IV. अनर्घराघवम्

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-I, B-II, C-III, D-IV B. A-II, B-I, C-III, D-IV

C. A-IV, B-III, C-II, D-I D. A-III, B-IV, C-I, D-II

24. अधोलिखितानां नक्षत्राणां क्रमं चिनुत–

A. भरणी B. रोहिणी C. अश्विनी D. मृगशिरा

E. कृतिका

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–

A. E,B,A,C,D B. A,B,C,E,D C. B,A,D,C,E D. C,A,E,B,D

25. कति कारकाणि सन्ति?

A. पञ्च B. सप्त C. षट् D. चत्वारि

26. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. द्यूतक्रीडा	I. भीष्मपर्व
B. गीता-उपदेशः	II. महाप्रस्थानिकपर्व
C. अभिमन्युवधः	III. सभापर्व
D. पाण्डवानां हिमालययात्रार्णनम्	IV. द्रोणपर्व

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-III, B-I, C-IV, D-III B. A-II, B-IV, C-III, D-I

C. A-I, B-II, C-IV, D-III D. A-I, B-IV, C-II, D-III

27. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. ऋग्वेदः	I. आदित्यः
B. यजुर्वेदः	II. अङ्गिराः
C. सामवेदः	III. अग्निः
D. अथर्ववेदः	IV. वायुः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-III, B-II, C-I, D-IV B. A-IV, B-II, C-III, D-I
C. A-I, B-II, C-III, D-IV D. A-III, B-IV, C-I, D-II

28. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. कर्तृकर्मणोः कृतिः	I. युक्तयोगः
B. निष्ठा	II. शतस्य शतं वा प्रतिदीप्यति
C. विभाषोपसर्गे	III. वीरपुरुषको ग्रामः
D. अनेकमन्यपदार्थे	IV. जगतः कर्ता कृष्णः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-III, B-II, C-I, D-IV B. A-I, B-III, C-II, D-IV
C. A-IV, B-III, C-I, D-II D. A-IV, B-I, C-II, D-III

29. पंचतंत्रं केन विरचितम्?

A. विष्णुगुप्तेन B. विष्णुशर्मणा C. विष्णुदत्तेन D. विष्णुमिश्रेण

30. वामाः कुलस्याध्यः इति पंक्तौ प्रयुक्तस्याधयः– पदस्य कोऽर्थः?

A. मानसिकपीड़ा B. कुलवृद्धिकारकता
C. शारीरिकपीड़ा D. हितकारकता

31. विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः इति कस्यालङ्कारिकस्य रससूत्रमिदत्?

A. मम्मटस्य B. विश्वनाथ C. भरतस्य D. अभिनवगुप्तस्य

32. कालक्रमानुसारं चिनुत–

A. पण्डितराजजगन्नथः B. भरतः
C. कविराजविश्वनाथः D. मम्मटः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत्–

A. A,C,B,D B. A,B,C,D
C. B,D,C,A D. C,B,D,A

33. तालुस्थानीयाः उच्चारिताः वर्णाः–

A. च B. क C. ज D. अ
E. य

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A,C,E केवलम्। B. A,B,D केवलम्।
C. B,D,C केवलम्। D. B,D,E केवलम्।

34. अधोलिखितपदानि काव्यप्रकाशदिशा क्रमानुसारं सज्जयत–

A. शब्दार्थौ B. अनलङ्कृती C. तददोषौ D. पुनः क्वापि
E. सगुणौ

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. C,A,E,B,D B. E,A,B,C,D C. B,E,A,D,C D. C,B,E,D,A

35. कस्य नाटकस्य मंगलाचरणे अष्टविधशिवस्वरूपं विद्यते?

A. उत्तररामचरितस्य मंगलाचरणे B. मुद्राराक्षसस्य मंगलाचरणे
C. मालविकाग्निमित्रस्य मंगलाचरणे D. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य मंगलाचरणे

36. पञ्चनाट्यसन्धीनां क्रमं चिनुत–

A. निर्वहणसन्धिः B. विमर्शसन्धिः C. मुखसन्धिः D. गर्भसन्धिः
E. प्रतिमुखसन्धिः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. C,E,D,B,A B. A,E,B,D,C C. B,A,D,C,E D. C,B,D,A,E

37. मेघदूते अस्याः नद्याः उल्लेखः नास्ति–

A. तुंगभद्रायाः B. रेवायाः C. वेत्रवत्याः D. गंभीरायाः

38. अधस्तनानां कालक्रमानुसारम् उचितं क्रमं चिनुत–

A. दंडी B. वाग्भट्टः C. धनपालः D. जगन्नाथः
E. अम्बिकादत्तव्यासः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. E,D,C,B,A B. A,B,C,D,E C. B,A,C,D,E D. C,B,D,A,E

39. महाभारतपर्वणां नामानि क्रमानुसारं चिनुत–

A. भीष्मपर्व B. उद्योगपर्व C. D.र्पर्व D. द्रोणपर्व

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. B,A,D,C B. A,B,C,D C. B,D,A,C D. C,B,D,A

40. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I	सूची II
A. मम विरहजां न त्व शुचं गणयिष्यसि	I. उत्तररामचरितम्
B. यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	II. मृच्छकटिकम्
C. भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति	III. रत्नावली

D. आभाति मकरकेतोः IV. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
पार्श्वस्था चापयष्टिरिव

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–

A. A-IV, B-I, C-II, D-III B. A-III, B-I, C-II, D-IV
C. A-II, B-I, C-IV, D-III D. A-IV, B-III, C-I, D-II

41. 'तत्त्वार्थसूत्रम्' कस्य रचना अस्ति?
A. सिद्धसेनदिवाकरस्य B. हरिभद्रस्य
C. हेमचन्द्रस्य D. उमास्वातेः

42. 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' कुत्रास्ति इयं सूक्तिः?
A. श्रीमद्भागवतमहापुराणे B. नीतिशतके
C. श्रीमद्भगवद्गीतायाम् D. शिशुपालवधे

43. अधोलिखितेषु उपरूपकेषु सहित्यदर्पणानुसारं समुचितं क्रमं चिनुत–
A. गोष्ठी B. नाट्यरासकम् C. नाटिका D. त्रोटकम्
E. सट्टकम्

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
A. A,B,E,C,D B. E,A,B,C,D C. B,A,D,C,E D. C,D,A,E,B

44. नरेषु शार्दूल इव इत्यस्य समस्तपदं किं स्यात्?
A. नरशार्दूला B. नरशार्दूलः C. नरशार्दूलम् D. नरशार्दूलानि

45. सूचीद्वयमाश्रित्य साधु मेलयत–

सूची I		सूची II	
A.	आगमग्रन्थाः	I.	आचार्यशंकरः
B.	त्रिपिटकसाहित्यम्	II.	जैनदर्शनम्
C.	न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	III.	बौद्धसाहित्यम्
D.	निर्विशेषद्वैतवादः	IV.	विश्वनाथपञ्चाननः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
A. A-II, B-I, C-III, D-IV B. A-II, B-III, C-IV, D-I
C. A-I, B-II, C-IV, D-III D. A-III, B-IV, C-I, D-II

46. 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः' इत्यत्र लक्षणे भोगिशद्बेन का संख्या सूच्यते?
A. सप्त B. षट् C. अष्ट D. पञ्च

47. कौषितकीब्राह्मणे कति अध्यायाः सन्ति?
A. 30 B. 40 C. 38 D. 42

48. नीतिशतकानुसारं मनुष्याणां देहस्य शत्रुः कः?
A. निद्रा B. आलस्यम् C. बुभुक्षा D. क्रोधः

49. साहित्यदर्पणानुसारं पञ्चार्थप्रकृतीनां क्रमं चिनुत–
A. पताका B. प्रकरी C. बीजम् D. कार्यम्
E. बिन्दु

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
A. A,E,B,C,D B. E,A,B,C,D C. C,E,A,B,D D. D,E,A,B,C

50. उत्तमजनाः किं न परित्यजन्ति?
A. अध्ययनम् B. धनोपार्जनम् C. प्रारब्धं कार्यम् D. देवार्चनम्

51. श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति?
A. 600 B. 700 C. 800 D. 500

52. 'भारतमञ्जरीमहाकाव्यं' कस्य कृतिः?
A. कालिदासस्य B. क्षेमेन्द्रस्य C. जगन्नाथस्य D. अश्वघोषस्य

53. योगशास्त्रानुसारं कति चित्तविक्षेपाः सन्ति?
A. पञ्च B. नव C. अष्टौ D. षट्

54. कति उपरूपकाणि सन्ति?
A. 20 B. 10 C. 18 D. 12

55. विश्वनाथानुसारं कतिप्रकाराः लक्षणाः?
A. द्वाविंशतिप्रकाराः B. अशीतिप्रकाराः
C. चत्वारिंशत्प्रकाराः D. षट्प्रकाराः

56. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् इति कस्य मतम्?
A. वामनस्य B. भामहस्य C. भरतस्य D. कुंतकस्य

57. स्रग्धराच्छन्दसि एकस्मिन् पादे कति वर्णाः भवन्ति?
A. 19 B. 21 C. 17 D. 15

58. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र–इतीयं सूक्तिः कुत्र वर्तते?
A. मृच्छकटिके B. शिशुपालवधे
C. अभिज्ञानशाकुन्तले D. कादम्बरीकथामुखे

59. झलां जश् झशि इत्यत्र जश् वर्णानां समुचितं क्रमं चिनुत–
A. ग B. ब C. ज D. ड
E. द

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत–
A. A,B,E,D,C B. C,E,A,B,D C. B,A,D,C,E D. C,B,A,D,E

60. 'सुधी+उपास्यः =सुध्युपास्यः' इति प्रयोगसाधनाय प्रयुक्तानां सूत्रवार्तिकानां पूर्वापरक्रमं चिनुत–
A. यणः प्रतिषेधो वाच्यः B. अनचि च
C. इको यणचि D. झलां जश् झशि

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत-

A. C,B,A,D B. A,B,C,D C. B,A,D,C D. C,B,D,A

61. 'अशिष्' इति शद्वे 'आशिषः इति रूपम् आयाति-

A. पञ्चमीबहुवचने B. प्रथमाबहुवचने C. द्वितीयाबहुवचने D. पञ्चमी एकवचने
E. षष्ठी एकवचने

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत-

A. B,C,D,A केवलम्। B. B,C,D,E केवलम्।
C. A,B,C,D केवलम्। D. B,A,D,C केवलम्।

62. अधोलिखितेषु वेदाङ्गानि सन्ति-

A. शिक्षा B. धर्मः C. व्याकरणम् D. मीमांसा
E. छन्दः

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत-

A. B,C,E केवलम्। B. A,C,E केवलम्।
C. A,B,C केवलम्। D. A,C,D केवलम्।

63. द्विगुकर्मधारयसमासौ अस्यैव समासस्य विशेषभूतौ-

A. अव्ययीभावसमासस्य B. द्वन्द्वसमासस्य
C. तत्पुरुषसमासस्य D. बहुव्रीहिसमासस्य

64. सामवेदस्य धर्मसूत्रं किम्?

A. गौतमधर्मसूत्रम् B. विष्णुधर्मयसूत्रम्
C. वशिष्ठधर्मसूत्रम् D. हिरण्यकेशीधर्मसूत्रम्

65. 'साधर्म्यमुपमा भेद' इति उपमालङ्कारविषये कस्यालङ्कारिकस्य उक्तिरियम्?

A. भरतस्य B. पण्डितराजजगन्नाथस्य
C. विश्वनाथस्य D. मम्मटस्य

66. परभृतविरुतं कलं यथा इत्यत्र परभृतशद्वस्य कोऽर्थः-

A. चातकः B. काकः C. हंसः D. कोकिलः

67. पुराणस्य पञ्चलक्षणेषु सन्ति-

A. विसर्गः B. प्रतिसर्गः C. प्रलयः D. सर्गः
E. वंशानुचरितम्

अधोलिखितानां विकल्पानां मध्ये सम्यक् उत्तरं चिनुत-

A. A,B,D केवलम्। B. B,D,E केवलम्।
C. B,C,A केवलम्। D. A,B,E केवलम्।

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 68-71) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

संस्कृतसाहित्ये सन्ति बहूनि ग्रन्थरत्नानि, येषां पठनपाठनम् अनुसन्धानञ्च सहस्रेभ्यो वर्षेभ्यः राष्ट्रेऽस्मिन् निरन्तरं प्रवर्तते। वेदशास्त्रस्मृतिपुराणादिरूपं विशालकायं वाङ्मयं

संस्कृते उपलभ्यते। तदेतत् वाङ्मयं प्रतिष्ठितैः विद्वद्भिः तदा तदा महता परिश्रमेण महता च धनव्ययेन अंशतः प्रकाशितमप्यासीत्। परन्तु गच्छताकालेन संस्कृतमुद्रित-पुस्तकानामुपलब्धिः पण्डितेभ्यः छात्रेभ्यः सामान्यजनेभ्यः दुर्लभा जाता।

68. बहूनि ग्रन्थरत्नानि कुत्र सन्ति?

A. अपभ्रंशसाहित्ये B. मागधीसाहित्ये C. संस्कृतसाहित्ये
D. सन्थालीसाहित्ये

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 68-71) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

संस्कृतसाहित्ये सन्ति बहूनि ग्रन्थरत्नानि, येषां पठनपाठनम् अनुसन्धानञ्च सहस्रेभ्यो वर्षेभ्यः राष्ट्रेऽस्मिन् निरन्तरं प्रवर्तते। वेदशास्त्रस्मृतिपुराणादिरूपं विशालकायं वाङ्मयं संस्कृते उपलभ्यते। तदेतत् वाङ्मयं प्रतिष्ठितैः विद्वद्भिः तदा तदा महता परिश्रमेण महता च धनव्ययेन अंशतः प्रकाशितमप्यासीत्। परन्तु गच्छताकालेन संस्कृतमुद्रित-पुस्तकानामुपलब्धिः पण्डितेभ्यः छात्रेभ्यः सामान्यजनेभ्यः दुर्लभा जाता।

69. राष्ट्रेऽस्मिन् निरन्तरं किं प्रवर्तते?

A. ग्रन्थानामवमूल्यनम् B. ग्रन्थानां पठनपाठनम् अनुसन्धानं च
C. ग्रन्थानां चौर्यम् अपहरणं च D. ग्रन्थानां विरोधः अवरोधः च

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 68-71) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

संस्कृतसाहित्ये सन्ति बहूनि ग्रन्थरत्नानि, येषां पठनपाठनम् अनुसन्धानञ्च सहस्रेभ्यो वर्षेभ्यः राष्ट्रेऽस्मिन् निरन्तरं प्रवर्तते। वेदशास्त्रस्मृतिपुराणादिरूपं विशालकायं वाङ्मयं संस्कृते उपलभ्यते। तदेतत् वाङ्मयं प्रतिष्ठितैः विद्वद्भिः तदा तदा महता परिश्रमेण महता च धनव्ययेन अंशतः प्रकाशितमप्यासीत्। परन्तु गच्छताकालेन संस्कृतमुद्रित-पुस्तकानामुपलब्धिः पण्डितेभ्यः छात्रेभ्यः सामान्यजनेभ्यः दुर्लभा जाता।

70. गच्छता कालेन का दुर्लभा जाता?

A. संस्कृतपुस्तकानामुपलब्धिः B. प्रशासनपृष्ठपोषकता
C. टङ्कणसुविधा D. पुस्तकविक्रयव्यवस्था

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 68-71) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

संस्कृतसाहित्ये सन्ति बहूनि ग्रन्थरत्नानि, येषां पठनपाठनम् अनुसन्धानञ्च सहस्रेभ्यो वर्षेभ्यः राष्ट्रेऽस्मिन् निरन्तरं प्रवर्तते। वेदशास्त्रस्मृतिपुराणादिरूपं विशालकायं वाङ्मयं संस्कृते उपलभ्यते। तदेतत् वाङ्मयं प्रतिष्ठितैः विद्वद्भिः तदा तदा महता परिश्रमेण महता च धनव्ययेन अंशतः प्रकाशितमप्यासीत्। परन्तु गच्छताकालेन संस्कृतमुद्रित-पुस्तकानामुपलब्धिः पण्डितेभ्यः छात्रेभ्यः सामान्यजनेभ्यः दुर्लभा जाता।

71. संस्कृते कीदृशं वाङ्मयम् उपलभ्यते?

A. विशालकायम् B. लघुकायम् C. नगण्यम् D. अविशदम्

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 72-75) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

साहित्यसिद्धान्ते शब्दस्य तिस्रः शक्तयः सन्ति। अभिधा लक्षणा व्यञ्जना चेति। अभिधाशक्तिः साक्षात् सङ्केतितमर्थं बोधयति। स च सङ्केतः जातौ गुणे क्रियायां यदृच्छाशब्देषु च गृह्यते।

अभिधाशक्तिरपि त्रिविधा रूढिः यौगिको योगरुढिश्च। लक्षणायां मुख्यार्थस्य बाधः मुख्यार्थसम्बन्धो अर्थः रूढिः प्रयोजनविशेषो वा इति तत्त्वत्रयमावश्यकम्। कर्मणि कुशलः कलिङ्गः साहसिको वा रूढेरुदाहरणम्। अत्र कुशलशब्दो दक्षे कलिङ्गशब्दश्च कलिङ्गदेशजे रूढः गङ्गायां घोष इत्यत्र प्रयोजनवती लक्षणा। उपादानलक्षणायाः नामान्तरम् अजहत्स्वार्था लक्षणा।

72. उपादानलक्षणायाः नामान्तरं किम्?

A. अजहत्स्वार्था लक्षणा B. जहत्स्वार्था लक्षणा

C. लक्षणालक्षणा D. जहदजहत्स्वार्थालक्षणा

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 72-75) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

साहित्यसिद्धान्ते शब्दस्य तिस्रः शक्तयः सन्ति। अभिधा लक्षणा व्यञ्जना चेति। अभिधाशक्तिः साक्षात् सङ्केतितमर्थं बोधयति। स च सङ्केतः जातौ गुणे क्रियायां यदृच्छाशब्देषु च गृह्यते। अभिधाशक्तिरपि त्रिविधा रूढिः यौगिको योगरुढिश्च। लक्षणायां मुख्यार्थस्य बाधः मुख्यार्थसम्बन्धो अर्थः रूढिः प्रयोजनविशेषो वा इति तत्त्वत्रयमावश्यकम्। कर्मणि कुशलः कलिङ्गः साहसिको वा रूढेरुदाहरणम्। अत्र कुशलशब्दो दक्षे कलिङ्गशब्दश्च कलिङ्गदेशजे रूढः गङ्गायां घोष इत्यत्र प्रयोजनवती लक्षणा। उपादानलक्षणायाः नामान्तरम् अजहत्स्वार्था लक्षणा।

73. कर्मणि कुशल इत्यत्र कुशलशब्दः कस्मिन्नर्थे रूढः?

A. कुशले B. कर्मणि C. दक्षे D. कर्मत्वे

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 72-75) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

साहित्यसिद्धान्ते शब्दस्य तिस्रः शक्तयः सन्ति। अभिधा लक्षणा व्यञ्जना चेति। अभिधाशक्तिः साक्षात् सङ्केतितमर्थं बोधयति। स च सङ्केतः जातौ गुणे क्रियायां यदृच्छाशब्देषु च गृह्यते। अभिधाशक्तिरपि त्रिविधा रूढिः यौगिको योगरुढिश्च। लक्षणायां मुख्यार्थस्य बाधः मुख्यार्थसम्बन्धो अर्थः रूढिः प्रयोजनविशेषो वा इति तत्त्वत्रयमावश्यकम्। कर्मणि कुशलः कलिङ्गः साहसिको वा रूढेरुदाहरणम्। अत्र कुशलशब्दो दक्षे कलिङ्गशब्दश्च कलिङ्गदेशजे रूढः गङ्गायां घोष इत्यत्र प्रयोजनवती लक्षणा। उपादानलक्षणायाः नामान्तरम् अजहत्स्वार्था लक्षणा।

74. अभिधाशक्तिः कतिविधा?

A. द्विविधा B. त्रिविधा C. चतुर्विधा D. षोडशविधा

अधोलिखितानुच्छेदं पठित्वा (प्र० 72-75) प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

साहित्यसिद्धान्ते शब्दस्य तिस्रः शक्तयः सन्ति। अभिधा लक्षणा व्यञ्जना चेति। अभिधाशक्तिः साक्षात् सङ्केतितमर्थं बोधयति। स च सङ्केतः जातौ गुणे क्रियायां यदृच्छाशब्देषु च गृह्यते। अभिधाशक्तिरपि त्रिविधा रूढिः यौगिको योगरुढिश्च। लक्षणायां मुख्यार्थस्य बाधः मुख्यार्थसम्बन्धो अर्थः रूढिः प्रयोजनविशेषो वा इति तत्त्वत्रयमावश्यकम्। कर्मणि कुशलः कलिङ्गः साहसिको वा रूढेरुदाहरणम्। अत्र कुशलशब्दो दक्षे कलिङ्गशब्दश्च कलिङ्गदेशजे

रूढः गङ्गायां घोष इत्यत्र प्रयोजनवती लक्षणा। उपादानलक्षणायाः नामान्तरम् अजहत्स्वार्था लक्षणा।

75. लक्षणायां किम् आवश्यकम्?

A. ईश्वरसङ्केतः B. मुख्यार्थस्य अबाधः

C. चमत्कारार्थस्य प्रतीतिः D. मुख्यार्थस्य बोधः

उत्तरमाला

1.	Drop	2.	B	3.	B	4.	B	5.	A
6.	D	7.	A	8.	B	9.	B	10.	C
11.	D	12.	B	13.	B	14.	B	15.	B
16.	D	17.	C	18.	A	19.	B	20.	A
21.	C	22.	A	23.	C	24.	D	25.	C
26.	A	27.	D	28.	D	29.	B	30.	A
31.	C	32.	C	33.	A	34.	A	35.	D
36.	A	37.	A	38.	C	39.	A	40.	A
41.	D	42.	C	43.	D	44.	B	45.	B
46.	C	47.	A	48.	B	49.	C	50.	C
51.	Drop	52.	B	53.	B	54.	C	55.	B
56.	B	57.	B	58.	C	59.	D	60.	D
61.	B	62.	B	63.	C	64.	A	65.	D
66.	D	67.	B	68.	C	69.	B	70.	A
71.	A	72.	A	73.	C	74.	B	75.	D

• • •